भृगुसंहिता फलित-दर्पण

फलित-प्रकाश

BHRIGU-SANHITA PHALIT-DARPAN (PHALIT-PRAKASH)

[जन्मकुण्डली के द्वादश भावों में स्थित नवग्रहों का जातक के जीवन पर प्रभाव, ज्योतिष के सिद्धान्त एवं ग्रह-राशि आदि के विषय में विस्तृत जानकारी सहित संसार के प्रत्येक स्त्री-पुरुष की जन्मकुण्डली के फलादेश का अत्यन्त सरलतापूर्वक ज्ञान कराने वाला सर्वोपयोगी ग्रन्थ]

•

मूल ग्रन्थ के लेखक

भृगु ऋषि

महर्षि भृगु को भारत में जन्म लिये हजारों वर्ष व्यतीत हो गए हैं, परन्तु भारत की 60,00,00,000 (साठ करोड़) धर्मप्राण जनता आज भी उनके द्वारा लिखित इस ग्रन्थ-रत्न से प्रेरणा लेती है। जिस दैवज्ञ (ज्योतिषी) के पास यह ग्रन्थ-रत्न रहेगा, लक्ष्मी उसके सदा चरण-चुम्बन करेगी।

—राकेश दीक्षित

देहाती पुस्तक भण्डार (Regd.)

चावड़ी बाजार, दिल्ली-110006

फोन : 261030

समर्पण

●

हिन्दी-जगत् के मूर्द्धन्य विद्वान्, तपस्वी लेखक,
यशस्वी शैलीकार, अनुपम पत्रकार
सहारनपुर (उ० प्र०) के गौरव
पं० कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
के
कर-कमलों में सादर !

●

ज्योतिर्विज्ञान-प्रशंसा

•

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा ।
तद्वद्वेदाङ्गशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि स्थितम् ॥

* * *

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाशुभम् ।
ज्योतर्ज्ञानं तु यो वेद स याति परमां गतिम् ॥

* * *

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम् ।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥

* * *

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम् ।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते किं पुनर्दैववित् द्विजः ॥

* * *

सूर्यो यच्छतु भूपतां द्विजपतिः प्रीतिं परां तन्वतां
माङ्गल्यं विदधातु भूमितनयो बुद्धिं विधत्तां बुधः ।
गौरं गौरवमातनोतु च गुरुः शुक्रः सशुक्रार्थदः
सौरिर्वैरि - विनाशनं वितनुते रोगक्षयं सैंहिकः ॥

* * *

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः
सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः ।
राहुर्बाहुबलं करोतु विपुलं केतुः कुलस्योन्नतिं
नित्यं प्रीतिकराः भवन्तु भवतां सर्वे प्रसन्नाः ग्रहाः ॥

* * *

कल्याणं कमलासनः स भगवान् विष्णुः सजिष्णुः स्वयं
प्रालेयाद्रिसुतापतिः सतनयो ज्ञानं च निर्विघ्नताम् ।
मन्त्रशास्फुजिदर्कभौमधिषणच्छाया सुतैरन्वितस् :
ज्योतिश्चक्रमिदं सदैव भवतामायुश्चिरं यच्छतु ॥

दो शब्द
(Preface)

- 'यत्पिण्डे तत्ब्रह्माण्डे' की कल्पना के आधार पर, आज से सहस्रों वर्ष पूर्व भारतीय मनीषियों ने अपनी अन्तर्मुखी सूक्ष्म प्रज्ञा-शक्ति द्वारा गहन पर्यवेक्षण करके यह निष्कर्ष निकाला था कि प्रत्येक वस्तु की रचना का मूलाधार सूक्ष्म 'परमाणु' हैं तथा असंख्यों परमाणुओं के समाहार-स्वरूप निर्मित मानव-शरीर का आकार आकाशीय सौर-जगत् से न केवल मिलता-जुलता ही है, अपितु आकाशचारी ग्रह-नक्षत्रों का मानव-शरीरस्थ सूक्ष्म सौर-जगत् से अन्योन्याश्रय सम्बन्ध भी रहता है और वे उस पर अपनी गतिविधियों का निरन्तर प्रभाव भी डालते रहते हैं। यही कारण है कि आकाशीय ग्रहों की स्थिति के अनुसार पृथ्वीतलवासी मनुष्य के जीवन मे अहर्निशि विभिन्न प्रकार के परिवर्तन आते रहते हैं।

- मनुष्य जिस समय पृथ्वी पर जन्म लेता है, उस समय भचक्र (आकाश-मण्डल) में विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसका प्रभाव जातक के जीवन को निरन्तर प्रभावित करता रहता है। जन्म-कुण्डली जातक के जन्म-समय में भचक्रान्तर्गत विभिन्न ग्रहों की स्थिति की ही परिचायक होती है। यदि उसका गहन अध्ययन किया जाय तो जातक के जीवन में क्षण-क्षण पर घटने वाली सभी घटनाओं का सम्यक् ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

- कहावत है—'अदृष्ट का लेख कोई नहीं पढ़ पाता'—परन्तु जिस प्रकार दीपक के प्रकाश में तमसावृत वस्तुओं का स्वरूप दृष्टिगोचर हो उठता है, उसी प्रकार ज्योतिर्विज्ञान-रूपी दीपक का उजाला भी अदृष्टलेख-रूपी तिमिरावरण को चीर कर भूत, भविष्य एवं वर्तमानकाल में घटने वाली घटनाओं को उजागर कर देता है—इसमें कोई संदेह नहीं।

- ज्योतिष-शास्त्र के विभिन्न अंगों में 'गणित' तथा 'फलित' का स्थान मुख्य है। फलित-ज्योतिष द्वारा मानव-जीवन पर पड़ने वाले आकाशीय ग्रहों की गति-विधियों के प्रभाव का विश्लेषण किया जाता है। सहस्रों वर्षों के अनुभवों तथा अन्वेषणों के आधार पर यह विद्या अब एक सुनिश्चित विज्ञान का स्वरूप ग्रहण कर चुकी है तथा प्राणिमात्र के लिए परम उपयोगी भी सिद्ध हुई है।

- ''जन्मकुण्डली के किस भाव में स्थित कौन-सा ग्रह जातक के जीवन पर क्या प्रभाव डालता है''—प्रस्तुत ग्रंथ में इसी विषय का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत

किया गया है। ग्रहों के पारस्परिक सम्बन्ध, युति, अंश, उच्च-नीचादि स्थिति आदि अनेक ज्ञातव्य विषयों का विवरण भी इसमें संकलित है। फलित-ज्योतिष सम्बन्धी अन्य विषयों को भी स्थान देकर, इसे सर्वसाधारण के लिए अधिकाधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न भी किया गया है। परन्तु, इस एक ही ग्रंथ द्वारा ज्योतिष-विद्या से सर्वथा अपरिचित सामान्य व्यक्ति भी पर्याप्त लाभ उठा सकते हैं तथा किसी भी स्त्री-पुरुष की जन्मकुण्डली के ग्रहों का फलादेश ज्ञात कर सकते हैं। विषय-वस्तु को अधिकाधिक बोधगम्य बनाने की भी भरसक चेष्टा की गई है। अपने प्रयत्न में हम कहाँ तक सफल हुए हैं, इसे विज्ञ पाठकगण स्वयं ही अनुभव कर सकेंगे।

● आज से लगभग ५ वर्ष पूर्व भी हमने एक ऐसे ही ग्रंथ की रचना की थी, जिसे पाठकों का स्नेह प्राप्त हुआ था। प्रस्तुत ग्रंथ उसी परिपाटी में, अधिक बोधगम्य तथा सुगठित रूप में प्रस्तुत किया गया है। आशा है इसे भी पाठकों का स्नेह मिलेगा। ग्रंथ के प्रणयन में हमें जिन सूत्रों से सहायता मिली है, उन सबके प्रति हम हृदय से आभारी हैं।

● मानव-कृति दोष-विहीन नहीं होती, अतः विज्ञ सुधीजनों से निवेदन है कि वे इस ग्रंथ की त्रुटियों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करने की कृपा करें, ताकि इसके आगामी संस्करण में उनका निराकरण किया जा सके।

कृष्णपुरी, मथुरा
रामनवमी : सं० २०३२ वि०

—राजेश दीक्षित

विषय-सूची

प्रथम खण्ड
[आवश्यक ज्ञातव्य]

क्र० सं०		पृष्ठ-संख्या
१.	ग्रह-शान्ति के उपाय	१८
२.	प्रारम्भिक जानकारी	१९
३.	तिथि अथवा मिति	१९
४.	तिथियों के स्वामी	२०
५.	नक्षत्र	२०
६.	नक्षत्रों के स्वामी	२१
७.	नक्षत्रों के चरणाक्षर	२२
८.	वार	२२
९.	राशि	२३
१०.	राशि के चरणाक्षर	२४
११.	ग्रह—स्वभाव और प्रभाव	२५
१२.	राशि—स्वभाव और प्रभाव	२७
१३.	राशियों के स्वामी	२९
१४.	राशिप्रबोधक चक्र	३०
१५.	ग्रहों का राशि-भोग-काल	३०
१६.	ग्रहों की वक्री तथा अतिचारी गति	३१
१७.	ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री	३१
१८.	ग्रहों के अंश	३२
१९.	जन्मकुण्डली के द्वादश भाव	३३
२०.	भावों की त्रिकोण, केन्द्रादि संज्ञा	३६
२१.	मूल त्रिकोण	३७
२२.	ग्रहों की उच्च स्थिति	३९
२३.	ग्रहों की नीच स्थिति	४०
२४.	ग्रहों का बलाबल	४०
२५.	ग्रहों के पद	४२
२६.	ग्रहों के ६ प्रकार के बल	४२
२७.	ग्रहों की दृष्टि	४५
२८.	उच्चराशिस्थ ग्रहों का फलादेश	५१
२९.	मूल त्रिकोणस्थ ग्रहों का फलादेश	५३
३०.	स्वक्षेत्रस्थ ग्रहों का फलादेश	५६
३१.	मित्रक्षेत्रस्थ ग्रहों का फलादेश	५८
३२.	शत्रुक्षेत्रस्थ ग्रहों का फलादेश	६१
३३.	नीचराशिस्थ ग्रहों का फलादेश	६३
३४.	ग्रहों का दृष्टि-सम्बन्ध और स्थान-सम्बन्ध	६६
३५.	ग्रहों का जातक के जीवन पर प्रभाव	६७
३६.	लग्न और राशि	६७
३७.	स्थानाधिपति	७१
३८.	स्थानाधिपतियों के नाम	७१
३९.	विशिष्ट ज्ञातव्य विषय	७२
४०.	दैनिक ग्रहगोचर का प्रभाव	७६
४१.	सम्मिलित परिवार का फलादेश	७६
४२.	गलत जन्म-कुण्डली का संशोधन	७७

द्वितीय खण्ड
[फलादेश]

१.	विभिन्न लग्नों वाली जन्म-कुण्डलियों का फलादेश जानने की विधि	८०
	'मेष लग्न'	
२.	'मेष' लग्न का फलादेश	८२
३.	'सूर्य' का फलादेश	८३
४.	'चन्द्रमा' का फलादेश	८३
५.	'मंगल' का फलादेश	८४
६.	'बुध' का फलादेश	८४
७.	'गुरु' का फलादेश	८५
८.	'शुक्र' का फलादेश	८६
९.	'शनि' का फलादेश	८६
१०.	'राहु' का फलादेश	८७
११.	'केतु' का फलादेश	८७
१२.	'सूर्य'	८८
१३.	'चन्द्रमा'	९२
१४.	'मंगल'	९६
१५.	'बुध'	१००
१६.	'गुरु'	१०४
१७.	'शुक्र'	१०८
१८.	'शनि'	११२
१९.	'राहु'	११६
२०.	'केतु'	११९

'वृष' लग्न

क्रमांक		पृष्ठ-संख्या
२१.	'वृष' लग्न का फलादेश	१२३
२२.	'सूर्य' का फलादेश	१२४
२३.	'चन्द्रमा' का फलादेश	१२४
२४.	'मंगल' का फलादेश	१२५
२५.	'बुध' का फलादेश	१२५
२६.	'गुरु' का फलादेश	१२६
२७.	'शुक्र' का फलादेश	१२६
२८.	'शनि' का फलादेश	१२७
२९.	'राहु' का फलादेश	१२८
३०.	'केतु' का फलादेश	१२८
३१.	'सूर्य'	१२९
३२.	'चन्द्रमा'	१३३
३३.	'मंगल'	७
३४.	'बुध'	१४१
३५.	'गुरु'	१४५
३६.	'शुक्र'	१४९
३७.	'शनि'	१५३
३८.	'राहु'	१५७
३९.	'केतु'	१६१

'मिथुन' लग्न

४०.	'मिथुन' लग्न का फलादेश	१६६
४१.	'सूर्य' का फलादेश	१६७
४२.	'चन्द्रमा' का फलादेश	१६७
४३.	'मंगल' का फलादेश	१६८
४४.	'बुध' का फलादेश	१६९
४५.	'गुरु' का फलादेश	१६९
४६.	'शुक्र' का फलादेश	१७०
४७.	'शनि' का फलादेश	१७०
४८.	'राहु' का फलादेश	१७१
४९.	'केतु' का फलादेश	१७२
५०.	'सूर्य'	१७२
५१.	'चन्द्रमा'	१७६
५२.	'मंगल'	१८०
५३.	'बुध'	१८४
५४.	'गुरु'	१८८
५५.	'शुक्र'	१९२
५६.	'शनि'	१९६
५७.	'राहु'	२००
५८.	'केतु'	२०४

'कर्क' लग्न

क्रमांक		पृष्ठ-संख्या
५९.	'कर्क' लग्न का फलादेश	२०९
६०.	'सूर्य' का फलादेश	२१०
६१.	'चन्द्रमा' का फलादेश	२१०
६२.	'मंगल' का फलादेश	२११
६३.	'बुध' का फलादेश	२१२
६४.	'गुरु' का फलादेश	२१२
६५.	'शुक्र' का फलादेश	२१२
६६.	'शनि' का फलादेश	२१३
६७	'राहु' का फलादेश	२१४
६८.	'केतु' का फलादेश	२१५
६९.	'सूर्य'	२१५
७०.	'चन्द्रमा'	२१९
७१	'मंगल'	२२३
७२.	'बुध'	२२७
७३.	'गुरु'	२३१
७४.	'शुक्र'	२३५
७५.	'शनि'	२३९
७६.	'राहु'	२४३
७७.	'केतु'	२४७

'सिंह' लग्न

७८.	'सिंह' लग्न का फलादेश	२५२
७९.	'सूर्य' का फलादेश	२५३
८०.	'चन्द्रमा' का फलादेश	२५३
८१.	'मंगल' का फलादेश	२५४
८२.	'बुध' का फलादेश	२५५
८३.	'गुरु' का फलादेश	२५५
८४.	'शुक्र' का फलादेश	२५६
८५.	'शनि' का फलादेश	२५६
८६.	,राहु' का फलादेश	२५६
८७.	'केतु' का फलादेश	२५८
८८.	'सूर्य'	२५८
८९.	'चन्द्रमा'	२६२
९०.	'मंगल'	२६६
९१.	'बुध'	२७०
९२.	'गुरु'	२७४
९३.	'शुक्र'	२७८
९४.	'शनि'	२८२
९५.	'राहु'	२८६
९६.	'केतु'	२९०

'कन्या' लग्न

क्रमांक	पृ०सं०
९७. 'कन्या' लग्न का फलादेश	२९४
९८. 'सूर्य' का फलादेश	२९५
९९. 'चन्द्रमा' का फलादेश	२९५
१००. 'मंगल' का फलादेश	२९६
१०१. 'बुध' का फलादेश	२९७
१०२. 'गुरु' का फलादेश	२९७
१०३. 'शुक्र' का फलादेश	२९८
१०४. 'शनि' का फलादेश	२९८
१०५. 'राहु' का फलादेश	२९९
१०६. 'केतु' का फलादेश	३००
१०७. 'सूर्य'	३००
१०८. 'चन्द्रमा'	३०४
१०९. 'मंगल'	३०८
११०. 'बुध'	३१२
१११. 'गुरु'	३१६
११२. 'शुक्र'	३२०
११३. 'शनि'	३२४
११४. 'राहु'	३२८
११५. 'केतु'	३३२

तुला लग्न

११६. 'तुला' लग्न का फलादेश	३३६
११७. 'सूर्य' का फलादेश	३३७
११८. 'चन्द्रमा' का फलादेश	३३७
११९. 'मंगल' का फलादेश	३३८
१२०. 'बुध' का फलादेश	३३८
१२१. 'गुरु' का फलादेश	३३९
१२२. 'शुक्र' का फलादेश	३४०
१२३. 'शनि' का फलादेश	३४०
१२४. 'राहु' का फलादेश	३४१
१२५. 'केतु' का फलादेश	३४१
१२६. 'सूर्य'	३४२
१२७. 'चन्द्रमा'	३४६
१२८. 'मंगल'	३५०
१२९. 'बुध'	३५४
१३०. 'गुरु'	३५८
१३१. 'शुक्र'	३६२
१३२. 'शनि'	३६६

क्रमांक	पृ०सं०
१३३. 'राहु'	३७०
१३४. 'केतु'	३७४

वृश्चिक लग्न

१३५. 'वृश्चिक' लग्न का फलादेश	३७८
१३६. 'सूर्य' का फलादेश	३७९
१३७. 'चन्द्रमा' का फलादेश	३८०
१३८. 'मंगल' का फलादेश	३८०
१३९. 'बुध' का फलादेश	३८१
१४०. 'गुरु' का फलादेश	३८१
१४१. 'शुक्र' का फलादेश	३८२
१४२. 'शनि' का फलादेश	३८२
१४३. 'राहु' का फलादेश	३८३
१४४. 'केतु' का फलादेश	३८४
१४५. 'सूर्य'	३८४
१४६. 'चन्द्रमा'	३८८
१४७. 'मंगल'	३९२
१४८. 'बुध'	३९६
१४९. 'गुरु'	४००
१५०. 'शुक्र'	४०४
१५१. 'शनि'	४०८
१५२. 'राहु'	४१२
१५३. 'केतु'	४१६

'धनु' लग्न

१५४. 'धनु' लग्न का फलादेश	४२१
१५५. 'सूर्य' का फलादेश	४२२
१५६. 'चन्द्रमा' का फलादेश	४२२
१५७. 'मंगल' का फलादेश	४२३
१५८. 'बुध' का फलादेश	४२४
१५९. 'गुरु' का फलादेश	४२४
१६०. 'शुक्र' का फलादेश	४२५
१६१. 'शनि' का फलादेश	४२५
१६२. 'राहु' का फलादेश	४२६
१६३. 'केतु' का फलादेश	४२७
१६४. 'सूर्य'	४२७
१६५. 'चन्द्रमा'	४३१
१६६. 'मंगल'	४३५
१६७. 'बुध'	४३९
१६८. 'गुरु'	४४३

क्रमांक		पृ०सं०
१६९.	'शुक्र'	४४७
१७०.	'शनि'	४५१
१७१.	'राहु'	४५५
१७२.	'केतु'	४५६

मकर लग्न

१७३.	'मकर' लग्न का फलादेश	४६३
१७४.	'सूर्य' का फलादेश	४६४
१७५.	'चन्द्रमा' का फलादेश	४६४
१७६.	'मंगल' का फलादेश	४६५
१७७.	'बुध' का फलादेश	४६६
१७८.	गुरु का फलादेश	४६६
१७९.	'शुक्र' का फलादेश	४६७
१८०.	'शनि का फलादेश	४६७
१८१.	'राहु' का फलादेश	४६८
१८२.	'केतु' का फलादेश	४६९
१८३.	'सूर्य'	४६९
१८४.	'चन्द्रमा'	४७३
१८५.	'मंगल'	४७७
१८६.	'बुध'	४८१
१८७.	'गुरु'	४८५
१८८.	'शुक्र'	४८८
१८९.	'शनि'	४९३
१९०.	'राहु'	४९७
१९१.	'केतु'	५०१

कुम्भ लग्न

१९२.	'कुम्भ' लग्न का फलादेश	५०५
१९३.	'सूर्य' का फलादेश	५०६
१९४.	'चन्द्रमा' का फलादेश	५०६
१९५.	'मंगल' का फलादेश	५०७
१९६.	'बुध' का फलादेश	५०८
१९७.	'गुरु' का फलादेश	५०८
१९८.	'शुक्र' का फलादेश	५०९
१९९.	'शनि' का फलादेश	५०९
२००.	'राहु' का फलादेश	५१०
२०१.	'केतु' का फलादेश	५११
२०२.	'सूर्य'	५११
२०३.	'चन्द्रमा'	५१५
२०४.	'मंगल'	५१९
२०५.	'बुध'	५२३
२०६.	'गुरु'	५२७
२०७.	'शुक्र'	५३१
२०८.	'शनि'	५३५
२०९.	'राहु'	५३९
२१०.	'केतु'	५४३

'मीन' लग्न

२११.	'मीन' लग्न का फलादेश	५४८
२१२.	'सूर्य' का फलादेश	५४९
२१३.	'चन्द्रमा' का फलादेश	५४९
२१४.	'मंगल' का फलादेश	५५०
२१५.	'बुध' का फलादेश	५५१
२१६.	'गुरु' का फलादेश	५५१
२१७.	'शुक्र' का फलादेश	५५२
२१८.	'शनि' का फलादेश	५५२
२१९.	'राहु' का फलादेश	५५३
२२०.	'केतु' का फलादेश	५५३
२२१.	'सूर्य'	५५४
२२२.	'चन्द्रमा'	५५८
२२३.	'मंगल'	५६२
२२४.	'बुध'	५६६
२२५.	'गुरु'	५७०
२२६.	'शुक्र'	५७४
२२७.	'शनि'	५७८
२२८.	'राहु'	५८२
२२९.	'केतु'	५८६

तृतीय खण्ड
[ग्रहों की युति का फलादेश]

१.	ग्रहों का युति	५९२
२.	दो ग्रहों का युति फलादेश	५९३
३.	तीन ग्रहों का युति ,,	५९८
४.	चार ग्रहों का युति ,,	६०७
५.	पाँच ग्रहों का युति ,,	६१५
६.	छः ग्रहों का युति ,,	६२१
७.	सात ग्रहों का युति ,,	६२४
८.	स्त्री-जातक ,,	६२१
९.	विशिष्ट योग	६३१
१०.	विविध	

□

हम भारतवासी उन ऋषियों, मुनियों तथा आचार्यों के चिर-ऋणी हैं, जिन्होंने अपने तप, त्याग से दीर्घायु प्राप्त करके सैकड़ों वर्षों से शोध-स्वरूप ऐसे ग्रन्थों की रचना की जिन्हें आज तक विश्व का कोई भी मानव (वैज्ञानिक) असत्य सिद्ध नहीं कर पाया।

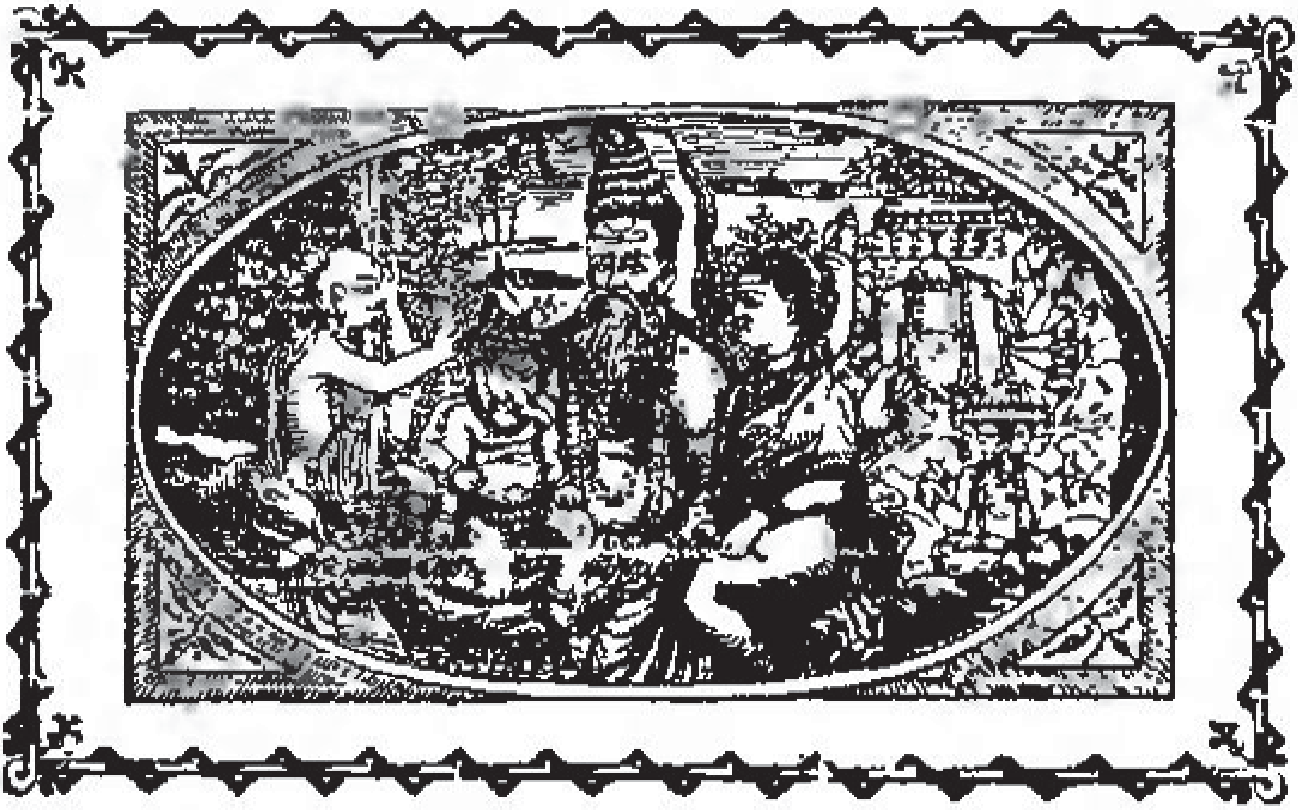

गाँवों तथा नगरों से दूर, घोर जंगलों के मध्य, तपश्चर्या में लीन, साधु-महात्माओं के आगे वन्य हिंसक जन्तु भी नत हो जाते हैं, उन्हीं ने आत्मिक प्रेरणास्वरूप सर्वजन - हिताय ऐसे महाग्रन्थों की रचना की है।

हस्तलिखित, असली, प्राचीन

भृगुसंहिता फलित प्रकाश

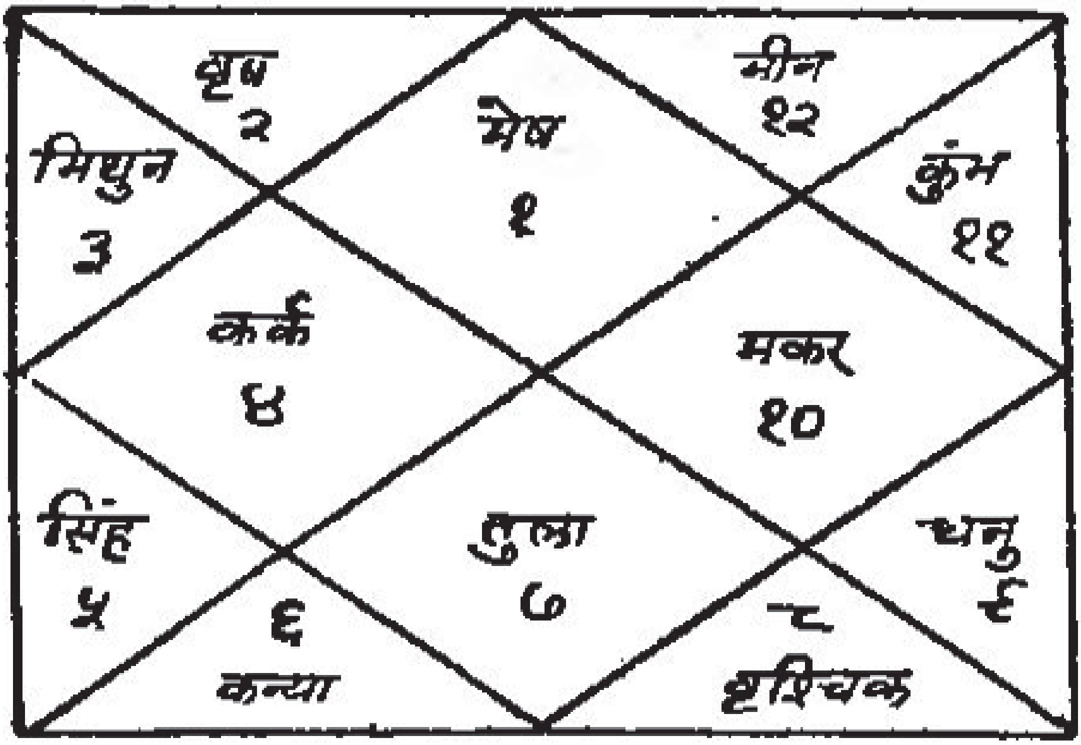

1

प्रथम खण्ड

[आवश्यक ज्ञातव्य]

ग्रह-शान्ति के उपाय

यदि कोई ग्रह किसी जातक के लिए अशुभ हो तो उसकी शान्ति के लिए निम्नलिखित वस्तुओं का दान करके, उस ग्रह के मन्त्र का जप करना चाहिए—

(१) सूर्य—माणिक्य, तांबा, लाल चन्दन, लाल वस्त्र, गेहूं, गुड़, लाल कमल, गाय।

(२) चन्द्र—मोती, चाँदी, कपूर, श्वेतवस्त्र, चावलों से भरी बाँस की पिटारी, जल-पूर्ण घट, गाय, शंख।

(३) मंगल—प्रवाल, लाल रंग का वस्त्र, स्वर्ण, लाल रंग का बैल, मसूर, तांबा, गेहूं तथा कनेर के फूल।

(४) बुध—पन्ना, स्वर्ण, घृत, पीतवस्त्र, नीलवस्त्र, कांसी, मूंगा, हाथी दांत।

(५) गुरु—पुखराज, स्वर्ण, पीतवस्त्र, हल्दी, पीले रंग का अन्न, नमक, घोड़ा।

(६) शुक्र—हीरा, स्वर्ण, चित्र-विचित्र रंग का वस्त्र, चावल, गाय, घृत, सुगन्धित वस्तुएं तथा श्वेत रंग का घोड़ा।

(७) शनि—नीलम, लोहा, काले तिल, बैल, कृष्णवस्त्र, स्वर्ण, नीले रंग का कम्बल, काले रंग की गाय, उड़द तथा भैंस।

(८) राहु—गोमेद, स्वर्ण, कृष्णवस्त्र, कम्बल, तलवार, तिल का तैल तथा घोड़ा।

(९) केतु—वैदूर्य, कस्तूरी, स्वर्ण, कम्बल, तिल का तैल, शस्त्र तथा बकरा।

प्रारंभिक जानकारी

जन्मकुण्डलीस्थ ग्रहों का फलादेश जानने से पूर्व ज्योतिष-विषयक प्रारम्भिक जानकारी, यथा—तिथि, वार, नक्षत्र, राशि, ग्रहों का पारस्परिक सम्बन्ध आदि का ज्ञान होना अत्यावश्यक है। अस्तु, इस प्रथम-खण्ड में उन्हीं सब प्रारम्भिक, परन्तु अत्यावश्यक ज्ञातव्य विषयों का उल्लेख किया जा रहा है, जिन्हें जाने बिना ज्योतिष विद्या के क्षेत्र में प्रवेश ही नहीं मिल सकता।

तिथि अथवा मिती

भारतीय ज्योतिष में चन्द्रमा की एक 'कला' को 'तिथि' कहते हैं। सामान्य बोलचाल की भाषा में तिथि को ही 'मिती' के नाम से पुकारा जाता है।

विक्रम-सम्वत्सर का प्रारम्भ चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से होता है तथा अन्त चैत्र कृष्णपक्ष की अमावस्या को होता है। जिस रात्रि में चन्द्रमा बिल्कुल दिखाई नहीं देता, वह तिथि कृष्णपक्ष की 'अमावस्या' कही जाती है। कृष्णपक्ष की अमावस्या के दूसरे दिन से शुक्लपक्ष की प्रतिपदा आरम्भ होती है।

जिन पन्द्रह दिनों में चन्द्रमा प्रतिदिन आकाश में थोड़ा-थोड़ा बढ़ना आरंभ होता है तथा पन्द्रहवें दिन अपने पूर्णरूप में दिखाई देता है, उसे 'शुक्लपक्ष' कहते हैं तथा बाद के जिन पन्द्रह दिनों में चन्द्रमा आकाश में प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा करके घटने लगता है तथा पन्द्रवें दिन बिल्कुल दिखाई नहीं देता, उसे 'कृष्णपक्ष' कहते हैं। इस प्रकार प्रत्येक महीने में पन्द्रह-पन्द्रह दिन के दो पक्ष हुआ करते हैं—(१) शुक्ल-पक्ष और (२) कृष्णपक्ष। पक्ष को आम बोलचाल की भाषा में 'पखवाड़ा' कहा जाता है।

यद्यपि नवीन संवत्सर का प्रारम्भ चैत्र मास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से होता है, परन्तु प्रत्येक मास (महीने) का प्रारम्भ कृष्णपक्ष से ही माना जाता है अर्थात् प्रत्येक महीने का पहला आधा भाग कृष्णपक्ष का और दूसरा आधा भाग शुक्लपक्ष का होता है।

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से जो पन्द्रह दिन की पन्द्रह तिथियाँ होती हैं, उन्हें क्रमशः (१) प्रतिपदा, (२) द्वितीया, (३) तृतीया, (४) चतुर्थी, (५) पंचमी, (६) षष्ठी, (७) सप्तमी, (८) अष्टमी, (९) नवमी, (१०) दशमी, (११) एकादशी, (१२) द्वादशी, (१३) त्रयोदशी, (१४) चतुर्दशी, तथा (१५) पूर्णिमा के नाम से अभिहित किया जाता है। इसके बाद कृष्णपक्ष की तिथियों को भी प्रतिपदा से चतुर्दशी तक इन्हीं नामों से पुकारा जाता है परन्तु कृष्णपक्ष की अन्तिम अर्थात् पन्द्रहवीं तिथि को 'अमावस्या' कहा जाता है। दोनों पक्षों की प्रतिपदा से चतुर्दशी तक की तिथियों को क्रमशः १, २, ३, ४ आदि अंकों में लिखा जाता है, परन्तु पूर्णिमा को १५ तथा अमावस्या तिथि को ३०, अंक के रूप में लिखा जाता है।

तिथियों के स्वामी

विभिन्न देवताओं को विभिन्न तिथियों का स्वामी माना गया है। किस तिथि का स्वामी कौन-सा देवता होता है, इसे नीचे बताया गया है। जिस तिथि के स्वामी का जैसा स्वभाव है, वही स्वभाव उस तिथि का तथा उस तिथि में जन्म लेने वाले व्यक्ति का भी समझना चाहिए—

तिथि	स्वामी	तिथि	स्वामी
प्रतिपदा	अग्नि	नवमी	दुर्गा
द्वितीया	ब्रह्मा	दशमी	काल
तृतीया	गौरी	एकादशी	विश्वेदेवा
चतुर्थी	गणेश	द्वादशी	विष्णु
पंचमी	शेषनाग	त्रयोदशी	कामदेव
षष्ठी	कार्तिकेय	चतुर्दशी	शिव
सप्तमी	सूर्य	पूर्णिमा	चन्द्रमा
अष्टमी	शिव	अमावस्या	पितर

नक्षत्र

ज्योतिषियों ने सम्पूर्ण आकाश-मण्डल को २७ भागों में विभक्त कर, प्रत्येक भाग को एक-एक 'नक्षत्र' की संज्ञा दी है। अर्थात् जिस प्रकार पृथ्वी पर स्थान की दूरी को किलोमीटर आदि में नापा जाता है, उसी प्रकार आकाश में एक स्थान से दूसरे स्थान की दूरी को नक्षत्रों के माध्यम से नापा जाता है। जिस प्रकार पृथ्वी पर नापने की दूरी में किलोमीटर के अन्तर्गत मीटर, सेन्टीमीटर आदि होते हैं, उसी प्रकार प्रत्येक नक्षत्र को भी ४ चरण तथा ६० अंशों में विभाजित किया गया है। नक्षत्रों के 'अंश' को 'घटी' नाम से भी सम्बोधित किया जाता है।

नक्षत्रों के नाम क्रमशः निम्नानुसार हैं—

१ अश्विनी	८ पुष्य	१५ स्वाति	२२ श्रवण
२ भरणी	९ अश्लेषा	१६ विशाखा	२३ धनिष्ठा
३ कृत्तिका	१० मघा	१७ अनुराधा	२४ शतभिषा
४ रोहिणी	११ पूर्वाफाल्गुनी	१८ ज्येष्ठा	२५ पूर्वाभाद्रपद
५ मृगशिरा	१२ उत्तराफाल्गुनी	१९ मूल	२६ उत्तराभाद्रपद
६ आर्द्रा	१३ हस्त	२० पूर्वाषाढ़ा	२७ रेवती
७ पुनर्वसु	१४ चित्रा	२१ उत्तराषाढ़ा	

उत्तराषाढ़ा की अन्तिम १५ घटी तथा श्रवण नक्षत्र की पहली ४ घड़ी—इस प्रकार कुल १९ घड़ी का एक नक्षत्र 'अभिजित्' भी माना जाता है। 'अभिजित्' सहित नक्षत्रों की कुल संख्या २८ हो जाती है। २८ नक्षत्रों के क्रम में अभिजित २२वाँ नक्षत्र माना जाता है उसके बाद श्रवण से रेवती पर्यन्त क्रमशः २३ से २८ तक की संख्या वाले नक्षत्र वाले जाते हैं।

नक्षत्रों के स्वामी

पूर्वोक्त २८ नक्षत्रों के स्वामी २८ विभिन्न देवता माने गये हैं। जिस देवता का जो स्वभाव है, उसी के अनुरूप नक्षत्र तथा उस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक का स्वभाव भी माना जाता है। विभिन्न नक्षत्रों के स्वामी निम्नानुसार हैं—

नक्षत्र	स्वामी	नक्षत्र	स्वामी
१ अश्विनी	अश्विनीकुमार	१५ स्वाति	पवन
२ भरणी	काल	१६ विशाखा	शुक्राग्नि
३ कृत्तिका	अग्नि	१७ अनुराधा	मित्र
४ रोहिणी	ब्रह्मा	१८ ज्येष्ठा	इन्द्र
५ मृगशिरा	चन्द्रमा	१९ मूल	निर्ऋति
६ आर्द्रा	रुद्र	२० पूर्वाषाढ़ा	जल
७ पुनर्वसु	अदिति	२१ उत्तराषाढ़ा	विश्वेदेवा
८ पुष्य	बृहस्पति	२२ अभिजित्	ब्रह्मा
९ अश्लेषा	सर्प	२३ श्रवण	विष्णु
१० मघा	पितर	२४ धनिष्ठा	वसु
११ पूर्वाफाल्गुनी	भग	२५ शतभिषा	वरुण
१२ उत्तराफाल्गुनी	अर्यमा	२६ पूर्वाभाद्रपद	अजैकपाद
१३ हस्त	सूर्य	२७ उत्तराभाद्रपद	अहिर्बुध्न्य
१४ चित्रा	विश्वकर्मा	२८ रेवती	पूषा

नक्षत्रों के चरणाक्षर

ऊपर बताया जा चुका है कि प्रत्येक नक्षत्र को ४ चरण तथा ६० अंशों में विभाजित किया गया है। ज्योतिषियों ने प्रत्येक नक्षत्र के प्रत्येक चरण का एक-एक 'अक्षर' भी निर्धारित किया है। जिस नक्षत्र के जिस चरण के लिए जो अक्षर निश्चित है, उसका उल्लेख नीचे किया गया है। जो मनुष्य जिस नक्षत्र के जिस चरण के भोग-काल में जन्म लेता है, उसका नाम उसी चरणाक्षर के आधार पर रखा जाता है। उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति का जन्म अश्विनी नक्षत्र के तीसरे चरण में हुआ हो तो उसका नाम का आदि अक्षर 'चो' होगा और उसी के आधार पर उसका नाम 'चोखसिंह', 'चोइथराम' आदि रखा जाएगा।

किस नक्षत्र के किस चरण के लिए कौनसा अक्षर नियत है, इसे निम्नानुसार समझ लें।

नक्षत्र नाम	चरणाक्षर प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	नक्षत्र नाम	चरणाक्षर प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
१. अश्विनी	चू	चे	चो	ला	१५. स्वाति	रू	रे	रो	ता
२. भरणी	ली	लू	ले	लो	१६. विशाखा	ती	तू	ते	तो
३. कृत्तिका	अ	ई	उ	ए	१७. अनुराधा	ना	नी	नू	ने
४. रोहिणी	ओ	वा	वी	वू	१८. ज्येष्ठा	नो	या	यी	यू
५. मृगशिरा	वे	वो	का	की	१९. मूल	ये	यो	भा	भी
६. आर्द्रा	कू	घ	ङ	छ	२०. पूर्वाषाढ़ा	भू	धा	फा	ढा
७. पुनर्वसु	के	को	हा	ही	२१. उत्तराषाढ़ा	भे	भो	जा	जी
८. पुष्य	हू	हे	हो	डा	२२. अभिजित्	जू	जे	जो	खा
९. अश्लेषा	डी	डू	डे	डो	२३. श्रवण	खी	खू	खे	खो
१०. मघा	मा	मी	मू	मे	२४. धनिष्ठा	गा	गी	गू	गे
११. पू. फाल्गुनी	मो	टा	टी	टू	२५. शतभिषा	गो	सा	सी	सू
१२. उ. फाल्गुनी	टे	टो	पा	पी	२६. पू. भाद्रपद	से	सो	दा	दी
१३. हस्त	पू	ष	ण	ठ	२७. उ. भाद्रपद	दू	थ	झ	ञ
१४. चित्रा	पे	पो	रा	री	२८. रेवती	दे	दो	चा	ची

वार

भारतीय ज्योतिष के अनुसार आकाश-मण्डल में मुख्य ग्रहों की संख्या ७ है। ये ग्रह हैं—(१) शनि, (२) बृहस्पति, (३) मंगल, (४) रवि, (५) शुक्र, (६) बुध और (७) चन्द्रमा। इन ग्रहों की अवस्थिति क्रमशः एक दूसरे से नीचे है। अर्थात् शनि की कक्षा सबके ऊपर तथा चन्द्रमा की कक्षा सबसे नीचे है।

एक दिन-रात २४ घंटे का होता है। ज्योतिष में एक घंटे के समय के लिए 'होरा' शब्द प्रचलित है। यह 'होरा' शब्द 'अहोरात्र' शब्द का संक्षिप्त रूप है अर्थात्

'अहोरात्र' शब्द में से 'अहो' का अन्तिम अक्षर 'हो' तथा 'रात्र' का आदि अक्षर 'रा' लेकर 'होरा' शब्द का निर्माण हुआ है। इस तरह 'होरा' शब्द को घण्टे का पर्याय-वाची भी कहा जा सकता है।

सृष्टि के प्रारंभ में सर्वप्रथम सूर्य दिखाई दिया, अतः पहली 'होरा' का स्वामी 'सूर्य' को माना गया तथा सृष्टि के पहले दिन का नामकरण किया गया—'रविवार' अर्थात् सूर्यवार। तत्पश्चात् अगली प्रत्येक होरा पर अन्य एक-एक ग्रह का अधिकार माना गया। फलतः एक दूसरे के समीपी क्रम में दूसरी होरा का स्वामी शुक्र, तीसरी का बुध, चौथी का चन्द्रमा, पाँचवीं का शनि, छठी का बृहस्पति तथा सातवीं का मंगल हुआ। इसी क्रम के पुनरावर्तन के फलस्वरूप पहले दिन की चौबीसवीं अर्थात् अन्तिम होरा बुध के स्वामित्व पर समाप्त हुई, तब दूसरे दिन की पहली होरा का स्वामी चन्द्रमा हुआ, अतः उस दिन का नाम रखा गया—सोमवार अर्थात् चन्द्रवार। इसी क्रमानुसार तीसरे दिन की पहली होरा का स्वामी 'मंगल', चौथे दिन का बुध, पाँचवें दिन का बृहस्पति, छठे दिन का शुक्र तथा सातवें दिन की पहली होरा का स्वामी शनि हुआ। फलतः सृष्टि के पहले वारों का क्रम हुआ—(१) रविवार, (२) सोमवार, (३) मंगलवार, (४) बुधवार, (५) गुरुवार, (६) शुक्रवार और (७) शनिवार। आठवें दिन फिर पहली होरा का स्वामी सूर्य हुआ। इसी क्रम से अगले दिनों की पहली होरा के स्वामी पूर्ववत् ग्रह होते चले आ रहे हैं। अस्तु इन सात वारों का चक्र निरन्तर चल रहा है। सात दिनों के इस समूह को ही 'सप्ताह' कहा जाता है।

प्रत्येक वार का स्वामी उसी का अधिपति ग्रह होता है। गुरु, सोम, बुध तथा शुक्र—इन चार वारों को 'सौम्य' तथा मंगल, रवि एवं शनि—इन तीन वारों को 'क्रूर' संज्ञक माना गया है। जिस वार के स्वामी का जैसा स्वभाव है, वही स्वभाव उस वार का तथा उस वार में जन्म लेने वाले जातक का भी माना जाता है।

राशि

जिस प्रकार सम्पूर्ण खमण्डल को २७ या २८ नक्षत्रों में बाँटा गया है, उसी प्रकार उसे १२ राशि, १०८ भाग यथा ३६० अंशों में भी बाँटा गया है। बारह राशियों के नाम इस प्रकार हैं—

१. मेष	४. कर्क	७. तुला	१०. मकर
२. वृष	५. सिंह	८. वृश्चिक	११. कुम्भ
३. मिथुन	६. कन्या	९. धनु	१२. मीन

अस्तु, खमण्डल अर्थात् भ-चक्र के ३० अंश अथवा ९ भागों की एक राशि होती है। पहले बताया जा चुका है कि एक-एक नक्षत्र को चार-चार भागों में बाँटा

गया है और प्रत्येक भाग के लिए एक-एक चरणाक्षर भी निश्चित किया गया है अस्तु २७ नक्षत्रों के कुल १०८ भाग अर्थात् 'चरण' हुए और एक राशि के अन्तर्गत आये ९ भाग अर्थात् नक्षत्रों के ९ चरण। इस प्रकार सवा दो नक्षत्रों की हुई एक राशि।

किस राशि के अन्तर्गत कौन-कौन सा नक्षत्र समाहित है, इसे नक्षत्रों के चरणाक्षरों के आधार पर निम्नानुसार समझ लेना चाहिए—

राशि का नाम	राशि के चरणाक्षर								
१. मेष	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	अ
२. वृष	ई	ऊ	ए	ओ	वा	वी	वू	वे	वो
३. मिथुन	का	की	कू	घ	ङ	छ	के	को	हा
४. कर्क	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो
५. सिंह	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे
६. कन्या	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
७. तुला	रा	री	रू	रे	रो	ता	ती	तू	ते
८. वृश्चिक	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू
९. धनु	ये	यो	भा	भी	भू	धा	फा	ढा	भे
१०. मकर	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी
११. कुम्भ	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा
१२. मीन	दी	दू	थ	झ	ञ	दे	दो	चा	ची

टिप्पणी—'अभिजित्' नक्षत्र के चारों चरणों—जू, जे, जो, खा—की गणना 'मकर' राशि के अन्तर्गत की जाती है।

ग्रह : उनका स्वभाव और प्रभाव

अकाशमण्डलस्थ असंख्य ज्योतिष्पिण्डों में से जो पिण्ड पृथ्वी स्थित सभी जड़-चेतन पदार्थों को अपने प्रभाव से प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं, उनकी गणना ग्रहों में की जाती है। प्राचीन भारतीय-ज्योतिष में ऐसे ग्रहों की कुल संख्या ७ बताई गई है। वे हैं—१. सूर्य, २. चन्द्र, ३. मंगल, ४. बुध, ५. बृहस्पति, ६. शुक्र और ७. शनि।

परवर्ती ज्योतिषियों ने अपने अनुसन्धानों के बल पर यह सिद्ध किया कि भूमण्डल की दोनों ओर पड़ने वाली छाया भी ग्रहों जैसी ही प्रभावशालिनी है, अत: उन्होंने 'राहु', 'केतु' नामक दो अन्य छायाग्रहों की कल्पना करके ग्रहों की कुल संख्या ९ कर दी।

आधुनिक काल के पाश्चात्य ज्योतिषियों ने आकाशमण्डल में ३ अन्य ग्रहों की भी खोज की है। वे हैं—(१) हर्षल, (२) नेपच्यून और (३) प्लूटो। ये सभी ग्रह पूर्वोक्त ७ ग्रहों से भी अत्यधिक ऊँचाई पर स्थित हैं। इस प्रकार कुल ग्रहों की संख्या १२ हो जाती है। परन्तु भारतीय-ज्योतिष में अभी तक पाश्चात्य ज्योतिषों द्वारा नवीन-आविष्कृत तीन ग्रहों को स्थान नहीं दिया गया है। अत: उसमें छायाग्रह राहु-केतु सहित केवल ९ ग्रहों का ही उल्लेख मिलता है।

चन्द्र, बृहस्पति तथा शुक्र इन तीन ग्रहों को शुभ ग्रह माना जाता है। बुध को नपुंसक ग्रह माना गया है, यह जिस ग्रह के साथ बैठता है, उस जैसा ही प्रभाव देता है। सूर्य, मंगल तथा शनि क्रूर ग्रह कहे गये हैं। राहु-केतु की गणना भी क्रूर ग्रहों में की जाती है। परन्तु कुछ विद्वानों के मतानुसार 'केतु' को भी शुभ ग्रह माना जाता है।

उक्त ९ ग्रहों में कौनसा ग्रह किस स्वभाव, बल तथा प्रभाव वाला है तथा उसके द्वारा किन विषयों का विशेष रूप से विचार करना चाहिए, इसे निम्नानुसार समझ लें—

(१) सूर्य—यह ग्रह 'पाप' संज्ञक, पूर्व दिशा का स्वामी, पुरुष जाति, रक्त-वर्ण एवं पित्त प्रकृति का है। स्नायु, मेरुदण्ड, नेत्र, हृदय आदि अवयवों पर इसका विशेष प्रभाव होता है। इसके द्वारा आत्मा आरोग्य, स्वभाव, पिता, राज्य, देवालय, शोक, अपमान, कलह तथा रोग—अतिसार, क्षय, मंदाग्नि, मानसिक रोग, नेत्र विकार आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए।

यह लग्न से सप्तम स्थान में बली एवं मकर से ६ राशियों तक चेष्टा-बली होता है।

(२) चन्द्र—यह ग्रह 'शुभ' संज्ञक, पश्चिमोत्तर दिशा का स्वामी, स्त्री जाति, श्वेत वर्ण एवं जलीय प्रकृति का है। यह रक्त का स्वामी तथा वातश्लेष्मा धातु वाला है। इसके द्वारा मन, चित्त वृत्ति, सम्पत्ति, माता, पिता, निरर्थकभ्रमण, राजकीय अनुग्रह, उदर, मस्तिष्क एवं शारीरिक स्वास्थ्य तथा कफज एवं जलीय रोग, स्त्रीजन्य रोग, मानसिक रोग तथा पीनस रोग आदि के विषय में विचार करना चाहिए।

यह लग्न से चतुर्थ स्थान में बली तथा मकर से ६ राशियों तक चेष्टा बली होता है।

कृष्णपक्ष की षष्ठी से शुक्लपक्ष की दशमी तक यह क्षीण रहता है। इस अवधि में इसे पाप ग्रह तथा क्षीण माना जाता है। शुक्ल पक्ष की दशमी से कृष्ण पक्ष की पंचमी तक यह पूर्ण ज्योतिर्मान्, बली तथा शुभ ग्रह माना है।

चतुर्थभाव में बली चन्द्रमा ही पूर्ण फलदायी होता है, क्षीण चन्द्रमा नहीं।

(३) मङ्गल—यह ग्रह 'पाप' संज्ञक, दक्षिण दिशा का स्वामी, पुरुष जाति, रक्त वर्ण, पित्त प्रकृति तथा अग्नि तत्व वाला है। यह उत्तेजक, तृष्णाकारक तथा दुःखदायी है। इसके द्वारा धैर्य, पराक्रम, भाई-बहिन, शक्ति तथा रक्त सम्बन्धी विचार करना चाहिए।

यह तीसरे तथा छठे स्थान में बली, दशम स्थान में दिग्बली। चन्द्रमा के साथ चेष्टा बली तथा द्वितीय भाग में बलहीन होता है।

(४) बुध—यह ग्रह 'नपुंसक', संज्ञक उत्तर दिशा का स्वामी, श्यामवर्ण, त्रिदोष तथा पृथ्वी तत्त्व वाला है। यह व्यवसाय, चिकित्सा, ज्योतिष, शिल्प, कानून, चतुर्थ एवं दशम स्थान का कारक है। इसके द्वारा बुद्धिभ्रम, विवेक, शक्ति, जिह्वा एवं तालु से उच्चारण किये जाने वाले शब्द एवं अवयव तथा गुप्त रोग, श्वेतकुष्ठ, गूंगापन, वातरोग, संग्रहणी आदि का विचार किया जाता है।

बुध चतुर्थ स्थान में 'निर्बल' होता है। यह जैसे ग्रह के साथ बैठा हो उसी के स्वभाव का बन कर, शुभ अथवा अशुभ फल देने वाला शुभग्रह अथवा पापग्रह बन जाता है। पूर्ण चन्द्र, गुरु तथा शुक्र के साथ शुभ फलदायक तथा सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु के साथ अशुभ फलदाता होता है। यदि यह अकेला हो तो शुभ फल देता है।

(५) बृहस्पति—यह ग्रह 'शुभ' संज्ञक, पूर्वोत्तर दिशा का स्वामी, पीतवर्ण तथा आकाश तत्त्व वाला है। यह हृदय की शक्ति का कारक है। इसके द्वारा पारलौकिक सुख, आध्यात्मिक-सुख, घर, विद्या, पुत्र, पौत्र तथा शोथ, गुल्म आदि रोगों का विचार किया जाता है।

लग्न में बैठा हुआ बृहस्पति बली तथा चन्द्रमा के साथ कहीं भी बैठा हुआ चेष्टा-बली होता है।

(६) शुक्र—यह ग्रह 'शुभ' संज्ञक, दक्षिण-पूर्व दिशा का स्वामी, श्याम-गौर वर्ण तथा जलीय तत्त्व वाला है। यह कफ, वीर्य आदि धातुओं तथा काव्य-संगीत, वाहन, शय्या, कामेच्छा, पत्नी (स्त्री), आँख, वस्त्राभूषण आदि का कारक है। इसके द्वारा सांसारिक-सुख, व्यावहारिक-सुख, एवं चातुर्य्य का विचार किया जाता है। यदि जातक का जन्म दिन में हुआ हो तो इसके द्वारा उसकी माता के सम्बन्ध में भी विचार किया जाता है।

यह छठे स्थान में निष्फल तथा सातवें स्थान में अनिष्टकर होता है।

(७) शनि—यह ग्रह 'क्रूर' संज्ञक, नपुंसक जाति, पश्चिम दिशा का स्वामी कृष्णवर्ण, वातश्लेष्मिक प्रकृति का तथा वायुतत्त्व वाला है। इसके द्वारा आयु, शारीरिक बल, दृढ़ता, ऐश्वर्य, यश, मोक्ष, योगाभ्यास, नौकरी, विदेशी भाषा, विपत्ति एवं मूर्च्छा आदि रोगों का विचार किया जाता है। यदि जातक का जन्म रात्रि में हुआ हो तो यह ग्रह माता-पिता का कारक होता है। पापग्रह होने पर भी इसका अन्तिम परिणाम सुखदायक होता है। यह जातक को दुर्भाग्य एवं संकटों का शिकार बनाने के बाद उसे शुद्ध एवं सात्विक बना देता है।

यह सप्तम स्थान में बली तथा चन्द्रमा अथवा किसी अन्य वक्री ग्रह के साथ रहने पर चेष्टा बली होता है।

(८) राहु—यह ग्रह 'क्रूर' संज्ञक, दक्षिण दिशा का स्वामी तथा कृष्णवर्ण है। यह गुप्त युक्ति-बल, कष्ट एवं त्रुटियों का कारक है। यह जिस स्थान में बैठता है वहाँ की उन्नति को रोक देता है।

(९) केतु—यह ग्रह 'क्रूर' संज्ञक, उत्तर दिशा का स्वामी तथा कृष्णवर्ण है। कुछ विद्वान इसे 'शुभ ग्रह' भी मानते हैं। यह गुप्त-शक्ति-बल, कठिन कर्म, भय एवं त्रुटियों का कारक है। इसके द्वारा जातक के हाथ-पाँव, क्षुधाजनित कष्ट, मातामह (नाना) एवं चर्म रोगों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

राशि : उनका स्वभाव और प्रभाव

कुल राशियाँ १२ हैं। किस राशि का क्या स्वभाव, प्रभाव है तथा उसके द्वारा किन विषयों का विशेष रूप से विचार किया जाता है, निम्नानुसार समझ लें—

(१) मेष—यह राशि 'पुरुष' जाति, पूर्व दिशा की स्वामिनी, लाल-पीले रंग वाली, कान्तिहीन, क्षत्रिय वर्ण, चर-संज्ञक, अग्नि तत्त्व, समान अंग, अल्प-सन्तति तथा पित्त प्रकृति वाली है। यह अहंकारी, साहसी तथा मित्रों के प्रति दयालु-स्वभाव

रखने वाली है। इसके द्वारा जातक के मस्तक के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(२) वृष—यह राशि 'स्त्री' जाति, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, श्वेत रंग वाली, कान्ति-हीन, वैश्य वर्ण, स्थिर संज्ञक, शिथिल शरीर, शुभकारक, महा कष्ट-कारी तथा भूमितत्त्व वाली है। यह स्वार्थी तथा सांसारिक कार्यों में दक्षता एवं बुद्धिमत्ता से काम लेने वाली है। इसके द्वारा जातक के मुँह तथा कपोलों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। इसे 'अर्द्ध जलराशि' भी कहते हैं।

(३) मिथुन—यह राशि 'पुरुष' जाति, पश्चिम दिशा की स्वामिनी, हरित रंग, चिकनी, उष्ण स्वभाव, शूद्रवर्ण, शिथिल शरीर, विषमोदयी तथा महाशब्दकारी है। यह शिल्पी तथा विद्या-व्यसनी स्वभाव की है। इसके द्वारा जातक के स्कन्ध तथा बाहुओं के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(४) कर्क—यह राशि 'स्त्री' जाति, उत्तर दिशा की स्वामिनी, रक्त-धवल मिश्रित रंग वाली, जलचारी, सौम्य, कफ प्रकृति, बहु सन्ततिवान्, बहुत पाँवों वाली, रात्रिबली एवं समोदयी है। यह लज्जालु स्वभाव की, समयानुसार चलने वाली तथा सांसारिक उन्नति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहने वाली है। इसके द्वारा जातक के वक्षस्थल एवं गुर्दों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(५) सिंह—यह राशि 'पुरुष' जाति, पूर्व दिशा की स्वामिनी, पीले रंग वाली, क्षत्रिय-वर्ण, उष्ण-स्वभाव, पुष्ट शरीर, पित्त प्रकृति, अग्नि तत्त्व वाली, निर्जल एवं अल्प सन्ततिवान् है। इसका स्वभाव मेष राशि जैसा है, परन्तु इसमें स्वातन्त्र्य-प्रियता एवं उदारता अधिक है। इसके द्वारा जातक के हृदय के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(६) कन्या—यह राशि 'स्त्री' जाति, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, पिंगल रंग वाली, द्वि-स्वभाव, पृथ्वीतत्त्व वाली, वायु एवं शीत-प्रकृति, अल्प सन्ततिवान् तथा रात्रिबली है। इसका स्वभाव मिथुन राशि जैसा है, परन्तु यह अपनी उन्नति एवं सम्मान पर अधिक ध्यान देती है। इसके द्वारा जातक के पेट के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(७) तुला—यह राशि 'पुरुष' जाति, पश्चिम दिशा की स्वामिनी, श्याम रंग की, शूद्रवर्ण, क्रूर-स्वभाव, वायुतत्त्व वाली, शीर्षोदयी, चर-संज्ञक, दिनबली, अल्प सन्ततिवान् एवं पादजलराशि है। यह स्वभाव से ज्ञानप्रिय, राजनीतिज्ञ, विचारशील तथा कार्य-सम्पादक है। इसके द्वारा जातक के नाभि से नीचे के अंगों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(८) वृश्चिक—यह राशि 'स्त्री' जाति, उत्तर दिशा की स्वामिनी, शुभ्र रंग वाली, ब्राह्मणवर्ण, कफ प्रकृति, रात्रि बली, अर्द्ध जल तत्त्व वाली तथा बहु सन्ततिवान्

है। इसका स्वभाव निर्मल, स्पष्टवादी, हठी, दम्भी तथा दृढ़-प्रतिज्ञ है। इसके द्वारा जातक की जननेन्द्रिय के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(९) धनु—यह राशि 'पुरुष' जाति, पूर्व दिशा की स्वामिनी, सुनहरे रंग वाली, क्षत्रियवर्ण, अग्नि तत्त्व वाली, पित्त-प्रकृति, द्वि-स्वभाव, दिनबली, दृढ़-शरीर, अल्प सन्ततिवान् तथा अर्द्ध जल राशि है। इसका स्वभाव करुणामय, अधिकार प्रिय तथा मर्यादा युक्त है। इसके द्वारा जातक के पाँवों की संधि एवं जांघों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(१०) मकर—यह राशि 'स्त्री' जाति, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, पिंगल रंग की, वैश्य वर्ण, पृथ्वी तत्त्व वाली, शिथिल शरीर, वात प्रकृति तथा रात्रिबली है। इसका स्वभाव उच्चस्थिति का अभिलाषी है। इसके द्वारा जातक के पांवों के घुटनों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(११) कुम्भ—यह राशि 'पुरुष' जाति, पश्चिम दिशा की स्वामिनी, विचित्र रंग वाली, शूद्र वर्ण, वायुतत्त्व एवं त्रिदोष प्रकृति वाली, उष्ण-स्वभाव, क्रूर, मध्यम सन्तति वाली, दिनबली तथा शीर्षोदयी है। इसका स्वभाव नवीन वस्तुओं का आविष्कारक, विचारशील, धार्मिक तथा शान्त है। इसके द्वारा जातक के पेट के भीतरी भागों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(१२) मीन—यह राशि 'स्त्री' जाति, उत्तर दिशा की स्वामिनी, पिंगल रंग वाली, ब्राह्मणवर्ण, कफ प्रकृति, जल तत्त्ववाली तथा रात्रिबली है। यह पूर्णतः जल-राशि है। इसका स्वभाव श्रेष्ठ, दयालु तथा दानशीलता का है। इसके द्वारा जातक के पाँवों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

राशियों के स्वामी

विभिन्न राशियों के विभिन्न ग्रहस्वामी माने गये हैं। कौनसा ग्रह किस राशि का स्वामी है, इसे निम्नानुसार समझना चाहिए—

मेष एवं वृश्चिक—इन दोनों राशियों का स्वामी 'मंगल' है।
१ ८

वृष एवं तुला—इन दोनों राशियों का स्वामी 'शुक्र' है।
२ ७

मिथुन एवं कन्या—इन दोनों राशियों का स्वामी 'बुध' है।
३ ६

कर्क—इस राशि का स्वामी 'चन्द्रमा' है।
४

सिंह—इस राशि का स्वामी 'सूर्य' है।
५

धनु एवं मीन—इन दोनों राशियों का स्वामी 'बृहस्पति' है।
९ १२
मकर एवं कुम्भ—इन दोनों राशियों का स्वामी 'शनि' है।
१० ११

टिप्पणी—राहु तथा केतु छाया-ग्रह होने के कारण किसी राशि के स्वामी नहीं माने जाते, परन्तु कुछ ज्योतिर्विद बुध की राशि 'कन्या' पर 'राहु' तथा 'मिथुन' पर 'केतु' का भी आधिपत्य स्वीकार करते हैं।

राशीश बोधक चक्र

राशि	स्वामी	राशि	स्वामी
१. मेष	मंगल	७. तुला	शुक्र
२. वृष	शुक्र	८. वृश्चिक	मंगल
३. मिथुन	बुध/केतु	९. धनु	बृहस्पति
४. कर्क	चन्द्रमा	१०. मकर	शनि
५. सिंह	सूर्य	११. कुम्भ	शनि
६. कन्या	बुध/राहु	१२. मीन	बृहस्पति

ग्रहों का राशि-भोग काल

भ-चक्र में सभी ग्रह क्रमशः सभी राशियों में विचरण करते हैं। कौनसा ग्रह एक राशि में कितने समय तक ठहरता है, इसे निम्नानुसार समझना चाहिए—

ग्रह का नाम	एक राशि पर ठहरने की अवधि	ग्रह का नाम	एक राशि पर ठहरने की अवधि
१. सूर्य	एक मास	६. शुक्र	पौन मास
२. चन्द्र	सवा दो दिन	७. शनि	ढाई वर्ष
३. मंगल	डेढ़ मास	८. राहु	डेढ़ वर्ष
४. बुध	पौन मास	९. केतु	डेढ़ वर्ष
५. बृहस्पति	तेरह मास		

ग्रहों की वक्री तथा अतिचारी गति

सूर्य, चन्द्र, राहु तथा केतु—इन चार ग्रहों के अतिरिक्त शेष पाँचों ग्रह—अर्थात् मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि—कभी-कभी वक्री अथवा अतिचारी हो जाते हैं।

ग्रह के राशियों में क्रमशः परिभ्रमण को 'मार्गी', शीघ्रतापूर्वक परिभ्रमण को 'अतिचारी' तथा अगली राशि की ओर बढ़ने की बजाय पीछे की राशि में लौट पड़ने को 'वक्री' गति कहा जाता है।

अतिचारी तथा वक्री ग्रह एक राशि पर अपने भ्रमण को निश्चित अवधि में पूरा करने की बजाय कुछ आगे पीछे भी हो जाते हैं। आकाश-मण्डल में किस समय कौनसा ग्रह मार्गी, वक्री अथवा अतिचारी चल रहा है, इसका ज्ञान पंचांग देखकर हो सकता है। जातक के जन्म के समय जो ग्रह आकाश-मण्डल में जिस गति से भ्रमण कर रहा होता है उसका वैसा ही प्रभाव जातक के ऊपर जीवन भर पड़ता रहता है।

ग्रहों की नैसर्गिक-मैत्री

कौनसा ग्रह किस ग्रह का मित्र, सम अथवा शत्रु है, इसे नीचे प्रदर्शित 'निसर्ग मैत्री चक्र' में देख कर समझ लेना चाहिए—

निसर्ग मैत्री चक्र

सम्बन्ध का स्वरूप	ग्रहों के नाम						
	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चन्द्र मंगल बुध	सूर्य बुध	सूर्य चन्द्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चन्द्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र
सम	बुध	मंगल बुध शुक्र शनि बुध	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	बुध
शत्रु	शुक्र शनि		बुध	चन्द्र	शुक्र बुध	सूर्य चन्द्र	सूर्य चन्द्र मंगल

टिप्पणी (१)—कुछ विद्वानों के मतानुसार चन्द्रमा गुरु से शत्रुता मानते हैं।

(२) राहु केतु छायाग्रह हैं, अतः 'निसर्ग मैत्री चक्र' में इनका उल्लेख नहीं किया गया है। परन्तु ये दोनों ग्रह शुक्र तथा शनि से मित्रता मानते हैं तथा सूर्य, चन्द्र, मंगल, एवं गुरु—इन चारों से शत्रुता रखते हैं। बुध इन दोनों के लिए सम है। इसी प्रकार सूर्य, चन्द्र, मंगल और गुरु—ये चारों ग्रह राहु तथा केतु से शत्रुता मानते हैं, बुध इन दोनों से समभाव रखता है तथा शुक्र और शनि इन दोनों से मित्रता मानते हैं।

ग्रहों के अंश

प्रत्येक ग्रह के ३० अंश होते हैं। 'जातक के जन्म के समय कौनसा ग्रह कितने अंश पर था', इसका ज्ञान उस समय के पंचांग द्वारा ज्ञात हो सकता है। इस विषय में किसी ज्योतिषी से जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

३ से ६ अंश तक का ग्रह किशोरावस्था का, १० से २२ अंश तक युवावस्था का, २३ से २८ अंश तक वृद्धावस्था का तथा २६ से २ अंश (२६, ३०, १ और २) तक मृतक अवस्था का माना जाता है।

किशोर एवं वृद्धावस्था वाले ग्रह बालक पर अपना प्रभाव अल्प परिमाण में तथा युवावस्था वाले ग्रह पूर्ण परिमाण में प्रकट करते हैं। मृतक-अवस्था वाले ग्रहों का प्रभाव न के बराबर होता है।

जन्म कुण्डली के द्वादशभाव

जन्म-कुण्डली इस बात को परिचायक है कि जातक के जन्म के समय आकाश-मण्डल में कौन-सा ग्रह, किस राशि में, कितने अंशों पर परिभ्रमण कर रहा था। बारह राशियों के प्रतीक रूप जन्म-कुण्डली में बारह खाने होते हैं, जिन्हें 'भाव', 'स्थान' अथवा 'घर' आदि नामों से पुकारा जाता है।

जन्म-कुण्डली के द्वादशभावों के नाम निम्नलिखित हैं—

(१) तनु, (२) धन, (३) सहज,
(४) सुहृद्, (५) पुत्र, (६) रिपु,
(७) जाया (स्त्री), (८) आयु, (९) धर्म,
(१०) कर्म, (११) आय (लाभ) और (१२) व्यय।

जन्म-कुण्डली के द्वादशभाव

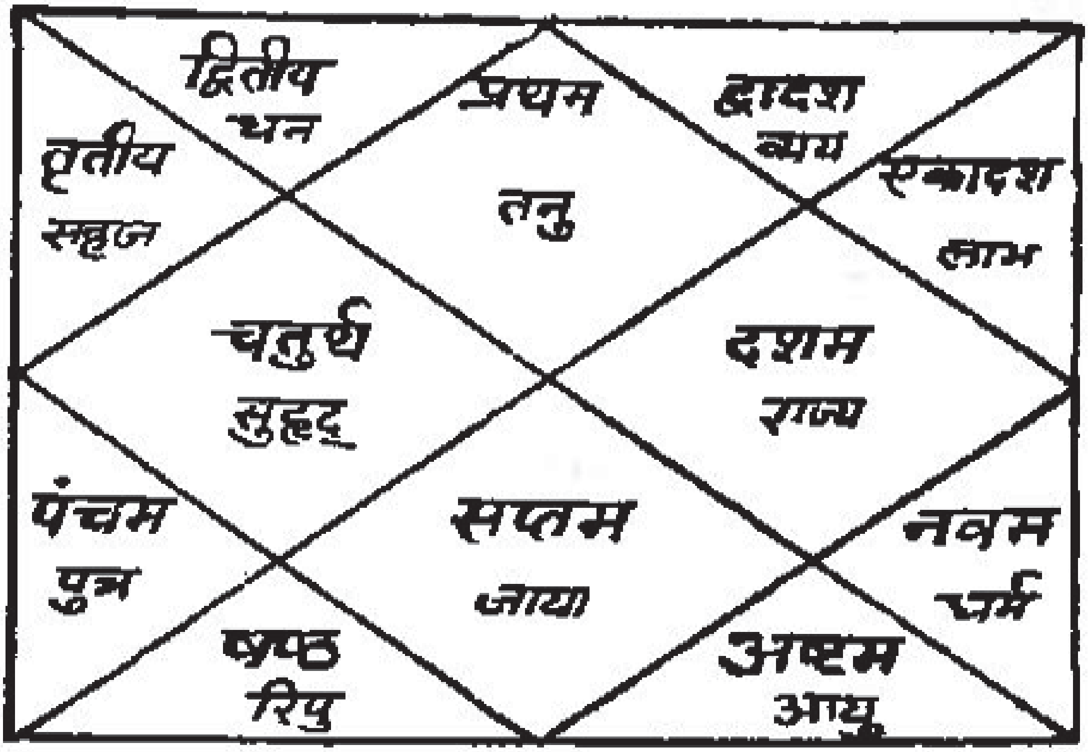

२

उक्त नामों को अन्य नामों से भी पुकारा जाता है। द्वादश भावों के विभिन्न नाम तथा किस भाव द्वारा किन-किन विषयों का विचार किया जाता है, इसे निम्नानुसार समझना चाहिए—

(१) पहला भाव—इसे प्रथम, तनु, लग्न, केतु आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के स्वरूप, आकृति, आयु, चिह्न, जाति, मस्तिष्क, विवेक, शील, सुख-दुःख आदि के विषय में विचार किया जाता है। लग्नेश की स्थिति एवं बलाबल के आधार पर जातक की कार्यकुशलता एवं जातीय-उन्नति-अवनति का ज्ञान भी इसी भाव से प्राप्त होता है।

इस भाव का कारक 'सूर्य' है। यदि इस भाव में मिथुन, कन्या, तुला अथवा कुम्भ—इनमें से कोई राशि हो तो उसे बलवान माना जाता है।

(२) दूसरा भाव—इसे द्वितीय, धन, वित्त, पणफर आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के स्वर, सौन्दर्य, सत्यवादन, आंख, नाक, कान, कुल, कुटुम्ब मित्र, सुखोपभोग, बन्धन, गायन, क्रय-विक्रय, रत्न, स्वर्ण-चाँदी, धन, संचित पूँजी आदि के विषय में विचार किया जाता है।

(३) तीसरा भाव—इसे तृतीय, सहज पराक्रम, भ्रातृ, आपोक्लिम आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के पराक्रम, शौर्य, धैर्य, साहस, कर्म, सहोदर, सेवक, आयुष्य, काम, योगाभ्यास तथा क्षय-श्वास, दमा आदि रोगों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

(४) चौथा भाव—इसे चतुर्थ, सुहृद्, सुख, केन्द्र आदि नामों से भी पुकारा

जाता है। इसके द्वारा जातक की माता, पिता का सुख, अन्तःकरण, घर, गांव, उपवन, चतुष्पद, सम्पत्ति, वाहन, निधि, दयालुता, उदारता, छल-कपट तथा यकृत् एवं उदर रोग आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। यह स्थान विशेष कर 'माता' का है।

इस भाव के कारक चन्द्रमा तथा बुध हैं।

(५) पाँचवाँ भाव—इसे पंचम, बुध, विद्या, पणफर, त्रिकोण आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक की विद्या, बुद्धि, सन्तान, विनय, नीति, प्रबन्ध-कुशलता, देवभक्ति, धन प्राप्ति के उपाय, आकस्मिक-धन की प्राप्ति, नौकरी छूटना, मामा का सुख, हाथ का यश तथा बस्ति, गर्भाशय, मूत्रपिण्ड आदि के विषय में विचार किया जाता है।

इस भाव का कारक बुध है।

(६) छठा भाव—इसे षष्ठ, रिपु, त्रिक, उपचय, आपोक्लिम आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के शत्रु, चिन्ता, सन्देह, जागीर, यश, मामा की स्थिति, गुदा तथा पीड़ा, व्रण, रोग आदि के विषय में विचार किया जाता है।

इस भाव के कारक शनि तथा मंगल हैं।

(७) सातवाँ भाव—इसे सप्तम, जाया, केतु आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक की स्त्री, कामेच्छा, काम चिंता, रमणशक्ति, विवाह, स्वास्थ्य, मित्र, दैनिक आय, व्यवसाय, झगड़े-झंझट, जननेन्द्रिय तथा बवासीर की बीमारी आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इस भाव में 'वृश्चिक' राशि को बलवान मानते हैं।

(८) आठवाँ भाव—इसे अष्टम, आयु, जीवन, मृत्यु, चतुरस्र, पणफर आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक की आयु, जीवन, मृत्यु, मृत्यु के कारण, मानसिक चिन्ताएं, पुरातत्त्व, संकट, ऋण, समुद्र-यात्रा, जननेन्द्रियों के रोग आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इस भाव का कारक 'शनि' है।

(९) नवाँ भाव—इसे नवम, धर्म, भाग्य, त्रिकोण आदि नामों से पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के पुण्य, धर्म, तप, शील, तीर्थ-यात्रा, दान, प्रवास, विद्या, मानसिक वृत्ति, पिता का सुख एवं भाग्योदय आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इस भाव के कारक 'सूर्य' तथा 'गुरु' हैं।

(१०) दसवाँ भाव—इसे दशम, कर्म, राज्य, केन्द्र आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के ऐश्वर्य-भोग, यश, नेतृत्व, प्रभुत्व, सम्मान, राज्य-संबंध व्यवसाय, नौकरी, अधिकार तथा पिता के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इस भाव में मेष, वृष तथा सिंह राशियां, धनु राशि का उत्तरार्द्ध तथा मकर राशि का पूर्वार्द्ध बलवान होता है।

इस भाव के कारक सूर्य, बुध, बुध तथा शनि हैं।

(११) ग्यारहवां भाव—इसे एकादश, लाभ, आय, उपचय, पणफर आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक की आय, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, रत्न, वाहन, मांगलिक-कार्य आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इस भाव का कारक 'गुरु' है।

(१२) बारहवां भाव—इसे द्वादश, व्यय, त्रिक आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके द्वारा जातक के व्यय, व्यसन, दान, बाहरी-सम्बन्ध, यात्रा, रोग, दण्ड, हानि आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इस भाव का कारक 'शनि' है।

विभिन्न नामों से प्रमुख विचारणीय विषय निम्नांकित कुण्डली चक्र में प्रदर्शित हैं :—

विभिन्न भावों के विचारणीय विषय

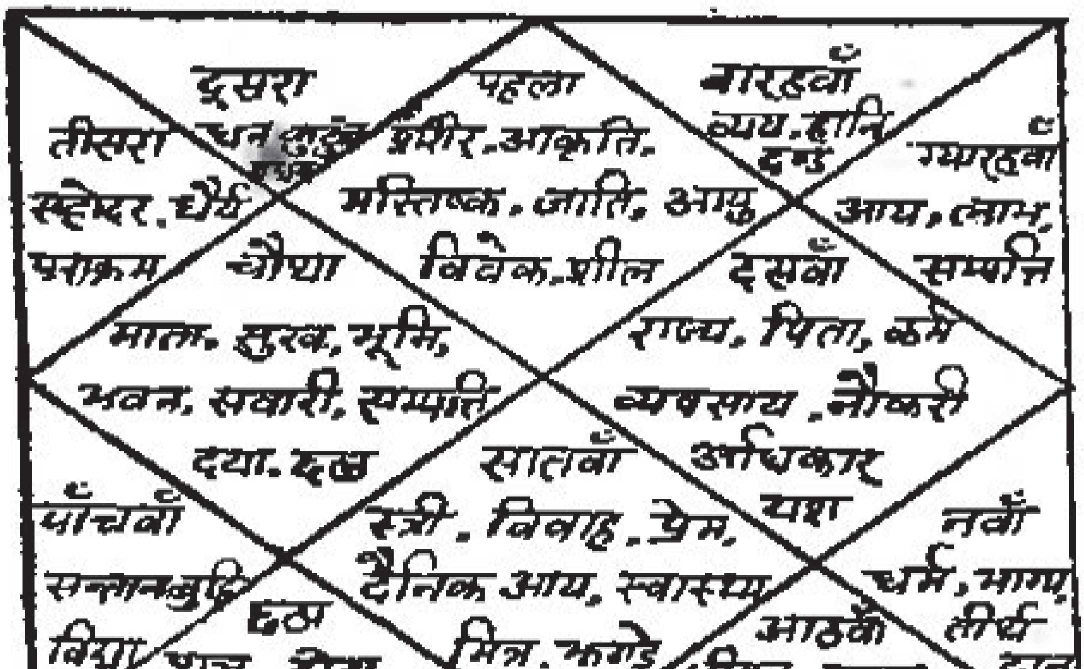

४

विभिन्न भाव के कारक ग्रहों को आगे दिए गए कुण्डलीचक्र में प्रदर्शित किया गया है—

विभिन्न भावों के कारक

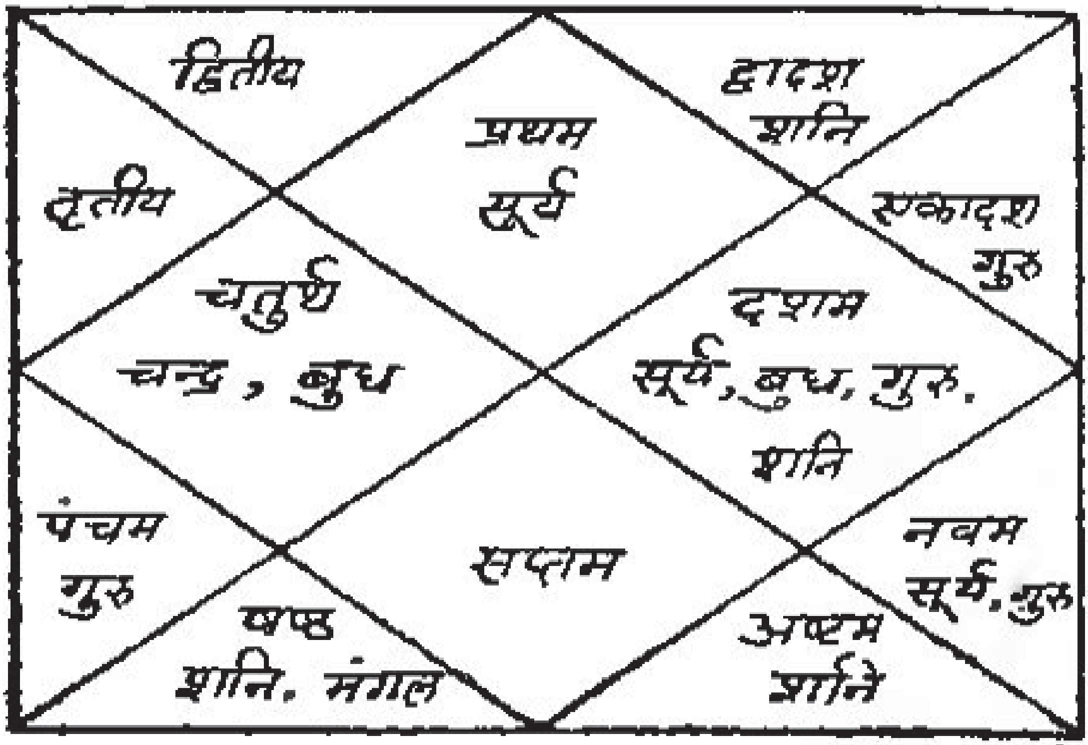

५

भावों की त्रिकोण, केन्द्रादि संज्ञा

नामों की (१) त्रिकोण, (२) केन्द्र, (३) पणफर, (४) आपोक्लिम तथा (५) मारक—ये पांच विशिष्ट संज्ञाएँ भी हैं, इनके विषय में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) त्रिकोण—पाँचवें तथा नवें भाव को 'त्रिकोण' कहते हैं।

(२) केन्द्र—पहले, चौथे, सातवें तथा दसवें—इन चारों भावों को 'केन्द्र' कहा जाता है।

(३) पणफर—दूसरे, पाँचवें, आठवें तथा ग्यारहवें—इन चारों नामों के 'पणफर' कहा जाता है।

(४) अपोक्लिम—तीसरे, छठे, नवें तथा बारहवें—इन चारों भावों को 'आपोक्लिम' कहा जाता है।

(५) मारक—दूसरे तथा सातवें भाव को 'मारक' कहा जाता है।

टिप्पणी—कुछ विद्वान् दूसरे तथा दसवें भाव को 'पणफर' तथा तीसरे और ग्यारहवें भाव को 'आपोक्लिम्' मानते हैं। कुछ अन्य विद्वान् छठे तथा आठवें भाव को 'पणफर' तथा दूसरे और बारहवें भाव को 'आपोक्लिम' मानते हैं।

त्रिकोणादि बोधक चक्र

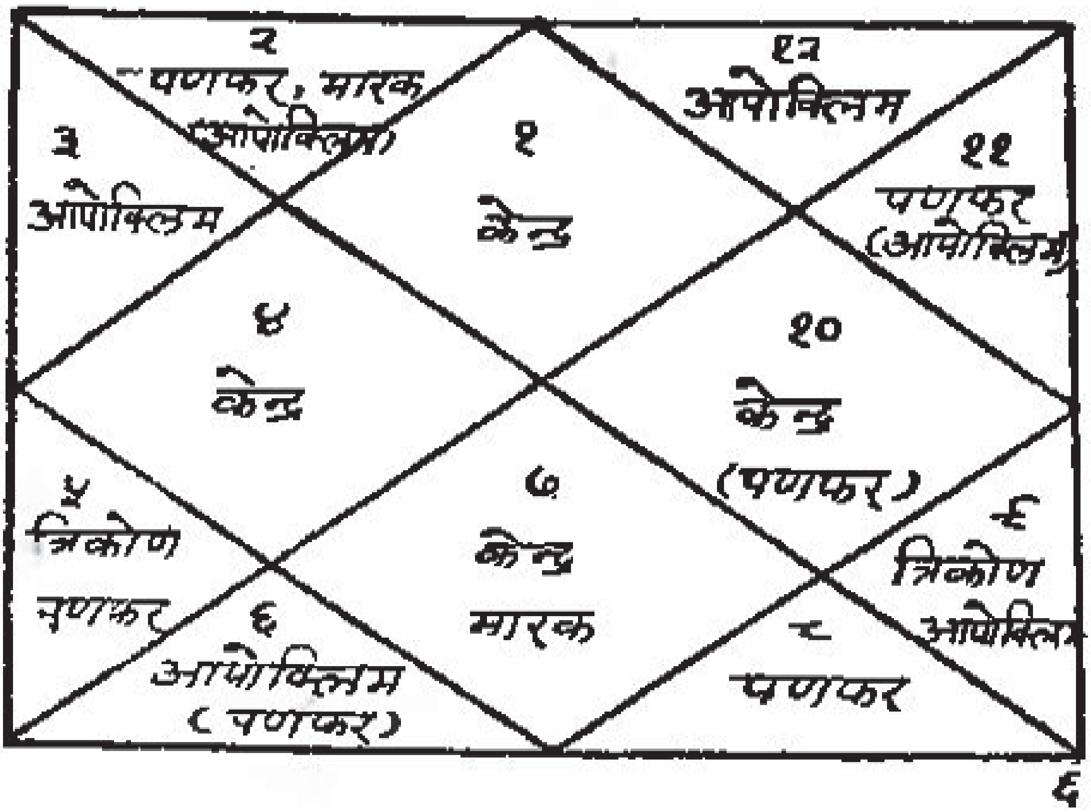

टिप्पणी—मतान्तरों को कुण्डली चक्र के कोष्ठकों में प्रदर्शित किया गया है।

मूल त्रिकोण

निम्नानुसार जो ग्रह जिस राशि से जितने अंश पर हो उसे मूल त्रिकोण-स्थित समझना चाहिए—

१. सूर्य—सिंह राशि में १ से २० अंश तक।

२. चन्द्र—वृष राशि में ४ से ३० अंश तक।

३. मंगल—मेष राशि में १ से १८ अंश तक।

४. बुध—कन्या राशि में १ से १५ अंश तक।

५. गुरु—धनु राशि में १ से १३ अंश तक।

६. शुक्र—तुला राशि में १ से १० अंश तक।

७. शनि—कुम्भ राशि में १ से २० अंश तक।

टिप्पणी—राहु को कर्क राशि में तथा केतु को मकर राशि में मूल त्रिकोण का माना जाता है।

मूल त्रिकोण की राशि एवं ग्रह-बोधक चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बुध	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	सिंह १ से २० अंश तक	वृष ४ से ३० अंश तक	मेष १ से १८ अंश तक	कन्या १ से १५ अंश तक	धनु १ से १३ अंश तक	तुला १ से १० अंश तक	कुम्भ १ से २० अंश तक	कर्क	मकर

नीचे को पहली ६ उदाहरण कुण्डलियों में विभिन्न ग्रहों को उनके मूल त्रिकोण में स्थित अलग-अलग दिखाया गया है। अन्तिम उदाहरण कुण्डली में सभी ग्रहों को एक साथ अपनी-अपनी मूल त्रिकोण राशियों में स्थित दिखाया गया है। ये सभी कुण्डलियाँ मेष लग्न की हैं। इन्हीं के आधार पर अन्य लग्न वाली कुण्डलियों के विषय में भी समझ लेना उचित है:—

मूल त्रिकोणस्थ 'सूर्य'

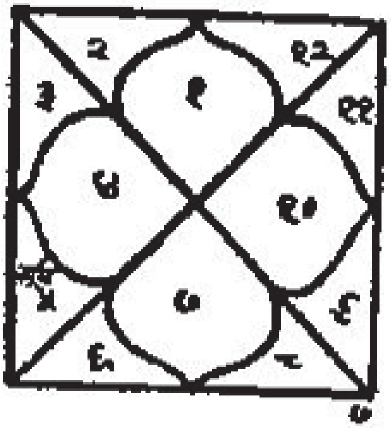

मूल त्रिकोणस्थ 'चन्द्र'

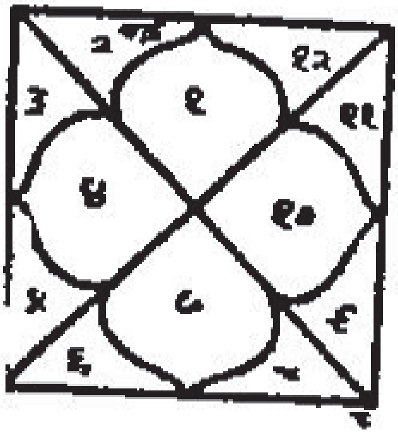

मूल त्रिकोणस्थ 'मंगल'

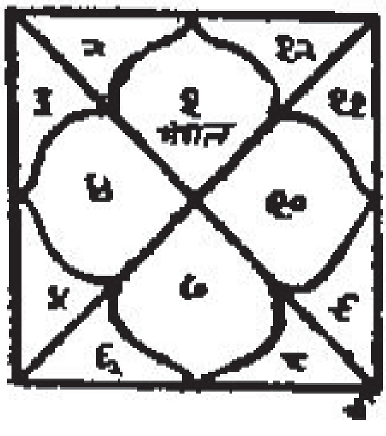

मूल त्रिकोणस्थ 'बुध'

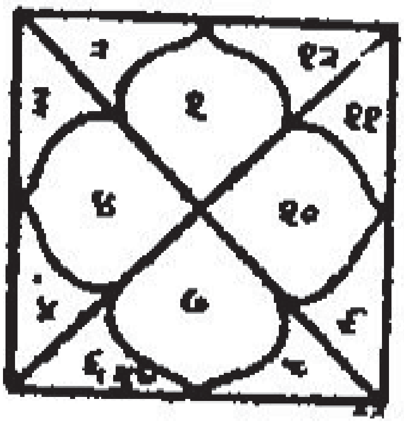

मूल त्रिकोणस्थ 'गुरु'

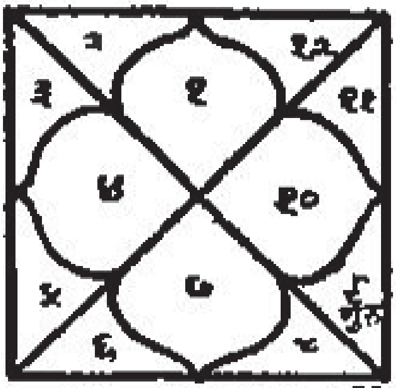

२१

मुख त्रिकोणस्थ 'शुक्र'

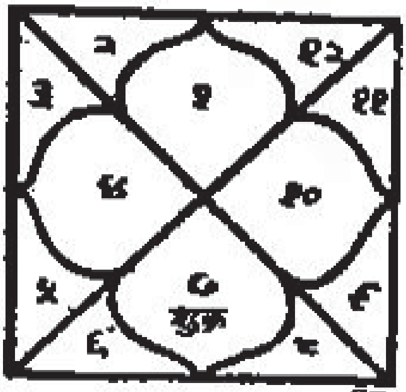

२२

सुख त्रिकोणस्थ 'शनि'

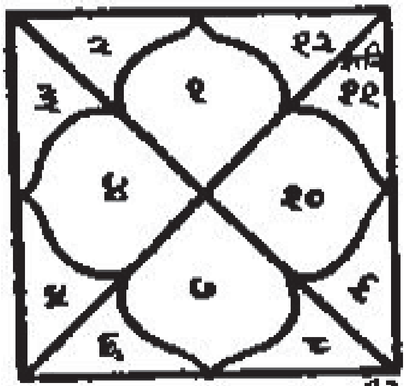

२३

मूल त्रिकोणस्थ 'राहु'

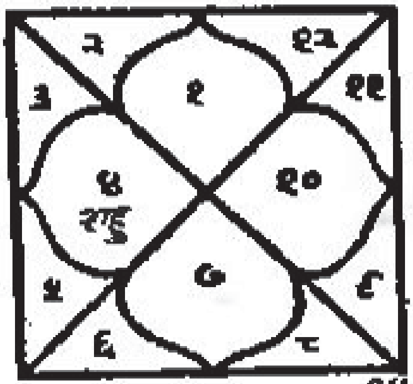

२४

मूल त्रिकोणस्थ 'केतु'

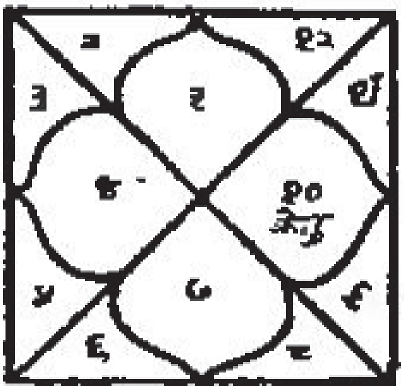

२५

मूल त्रिकोणस्थ 'सभी ग्रह'

२६

ग्रहों की उच्च स्थिति

कौनसा ग्रह किस राशि के कितने अंश बीत जाने पर उच्च का माना जाता है, इसे निम्नानुसार समझना चाहिए—

१. सूर्य—'मेष' राशि के १० अंश पर।

२. चन्द्र—'वृष' राशि के ३ अंश पर।

३. मंगल—'मकर' राशि के २८ अंश पर।

४. बुध—'कन्या' राशि के १५ अंश पर।

५. गुरु—'कर्क' राशि के ५ अंश पर।

६. शुक्र—'मीन' राशि के २७ अंश पर।

७. शनि—'तुला' राशि के २० अंश पर।

टिप्पणी—कुछ विद्वान् मिथुन राशि के १५ अंश पर तथा कुछ वृष राशि में 'राहु' को उच्च मानते हैं। इसी प्रकार, कुछ के मत में धनु राशि के १५ अंश पर तथा कुछ वृश्चिक राशि में 'केतु' को उच्च का मानते हैं।

ग्रहों की नीच स्थिति

जिस ग्रह को जिस राशि के जितने अंशों पर उच्च का माना जाता है, उससे सातवीं राशि पर उतने ही अंशों में वह नीच का माना जाता है। यथा—

१. सूर्य—'तुला' राशि के १० अंश पर।

२. चन्द्र—'वृश्चिक' राशि के ३ अंश पर।

३. मंगल—'कर्क' राशि के २८ अंश पर।

४. बुध—'मीन' राशि के १५ अंश पर।

५. गुरु—'मकर' राशि के ५ अंश पर।

६. शुक्र—'कन्या' राशि के २७ अंश पर।

७. शनि—'मेष' राशि के २० अंश पर।

टिप्पणी—कुछ विद्वानों के मतानुसार 'राहु' धनु राशि के १५ अंश पर तथा कुछ के मतानुसार वृश्चिक राशि में नीच का माना जाता है। इसी प्रकार, कुछ के मत में मिथुन राशि के १५ अंश तक तथा कुछ वृष राशि में 'केतु' को नीच का मानते हैं।

ग्रहों का बलाबल

ग्रहों के बल चार प्रकार के कहे गये हैं—

१. सर्वोच्चबली—उच्च का होने पर।

२. उच्च बली—मूल त्रिकोण में होने पर।

३. बली—स्वक्षेत्री (अपने घर) का होने पर।

४. निर्बल—नीच का होने पर।

टिप्पणी—जो ग्रह जिस राशि का स्वामी होता है, यदि वह उसी राशि में बैठा हो तो उसे 'स्वग्रही' अथवा 'स्वक्षेत्री' कहा जाता है।

विभिन्न ग्रहों के उच्च क्षेत्रीय, मूल त्रिकोणस्थ, स्वक्षेत्री तथा नीच का होने के सम्बन्ध में और अधिक स्पष्टता को नीचे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए—

१. सूर्य—'सिंह' राशि स्थित सूर्य स्वक्षेत्री होता है। सिंह राशि के १ से २० अंश तक उसका मूलत्रिकोण, तथा २१ से ३० अंश तक स्वक्षेत्र माना जाता है। मेष राशि के १० अंश तक उच्च का और तुला राशि के १० अंश तक नीच का होता है।

२. चन्द्र—'कर्क' राशि स्थित चन्द्र स्वक्षेत्री होता है। वृष राशि के ३ अंश तक उच्च का, एवं वृष राशि के ४ से ३० अंश तक मूलत्रिकोण स्थित माना जाता है। वृश्चिक राशि के ३ अंश तक नीच का होता है।

३. मंगल—'मेष' अथवा 'वृश्चिक' राशि में स्थित मंगल स्वक्षेत्री होता है, परन्तु मेष राशि के १ से १० अंश तक मूलत्रिकोणगत तथा १९ से ३० अंश तक स्वक्षेत्री माना जाता है। मकर राशि के २८ अंश तक उच्च का तथा कर्क राशि के २८ अंश तक नीच का होता है।

४. बुध—'कन्या' अथवा 'मिथुन' राशि में स्थित बुध स्वक्षेत्री होता है, परन्तु कन्या राशि के १ से १८ अंश तक मूलत्रिकोणगत तथा १९ से ३० अंश तक स्वक्षेत्री माना जाता है। कन्या राशि के १५ अंश तक उच्च का तथा मीन राशि के १५ अंश तक नीच का होता है। इसी प्रकार कन्या राशि स्थित बुध १ से १५ अंश तक उच्च का, साथ ही १ से १८ अंश तक मूलत्रिकोणगत तथा १९ से ३० अंश तक स्वक्षेत्री माना जाता है।

५. गुरु—'धनु' अथवा 'मीन' राशि में स्थित स्वक्षेत्री होता है, परन्तु धनु राशि के १ से १३ अंश तक उसे मूलत्रिकोणगत तथा १४ से ३० अंश तक स्वक्षेत्री माना जाता है। कर्क राशि के ५ अंश तक उच्च का तथा मकर राशि के ५ अंश तक नीच का होता है।

६. शुक्र—'वृष' अथवा 'तुला' राशि स्थित शुक्र स्वक्षेत्री होता है, परन्तु तुला राशि के १ से १० अंश तक उसका मूलत्रिकोण तथा ११ से ३० अंश तक स्वक्षेत्र माना जाता है। मीन राशि के २७ अंश तक उच्च का तथा कन्या राशि के २७ अंश तक नीच का होता है।

७. शनि—'मकर' अथवा 'कुम्भ' राशि स्थित शनि स्वक्षेत्री होता है, परन्तु कुम्भ राशि के १ से २० अंश तक उसका मूलत्रिकोण तथा २१ के ३० अंश तक स्वक्षेत्र माना जाता है। तुला राशि के २० अंश तक उच्च का तथा मेष राशि के २० अंश तक नीच का होता है।

८. राहु—कन्या राशि में स्थित राहु स्वक्षेत्री होता है। मिथुन राशि के १५ अंश तक उच्च का तथा धनु राशि के १५ अंश तक नीच का माना जाता है। इसके विपरीत कुछ विद्वानों की राय में राहु वृष राशि में उच्च का तथा वृश्चिक राशि में नीच का होता है। कर्क राशि को राहु का मूल त्रिकोण माना जाता है।

९. केतु—मिथुन राशि में स्थित केतु स्वक्षेत्री होता है। धनु राशि के १५

अंश तक उच्च का, मिथुन राशि के १५ अंश तक नीच का माना जाता है। इसके विपरीत कुछ विद्वानों की राय में केतु वृश्चिक राशि में उच्च का तथा वृष राशि में नीच का होता है। मकर राशि को केतु का मूलत्रिकोण माना जाता है।

ग्रहों के पद

नवग्रहों में सूर्य तथा चन्द्र को राजा, बुध को युवराज, मंगल को सेनापति, गुरु तथा शुक्र को मन्त्री एवं शनि को सेवक का पद दिया गया है। अस्तु, जिस जातक के ऊपर जिस ग्रह का जितना अधिक प्रभाव होता है, वह उसे अपने ही अनुरूप बनाने की चेष्टा करता है।

ग्रहों के ६ प्रकार के बल

ग्रहों के बल ६ प्रकार के कहे गये हैं, उन्हें निम्नानुसार समझ लेना चाहिए—

(१) स्थान बल—उच्च, स्वग्रही, मित्रग्रही अथवा मूल त्रिकोणस्थ ग्रह को 'स्थान बली' माना जाता है।

चन्द्र तथा शुक्र 'सम राशि' अर्थात् वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर एवं मीन राशि में स्थित होने पर तथा सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शनि, राहु एवं केतु 'विषम राशि' अर्थात् मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु एवं कुम्भ में स्थित होने पर भी 'स्थान बली' कहे जाते हैं।

स्थान-बल निरूपण चक्र

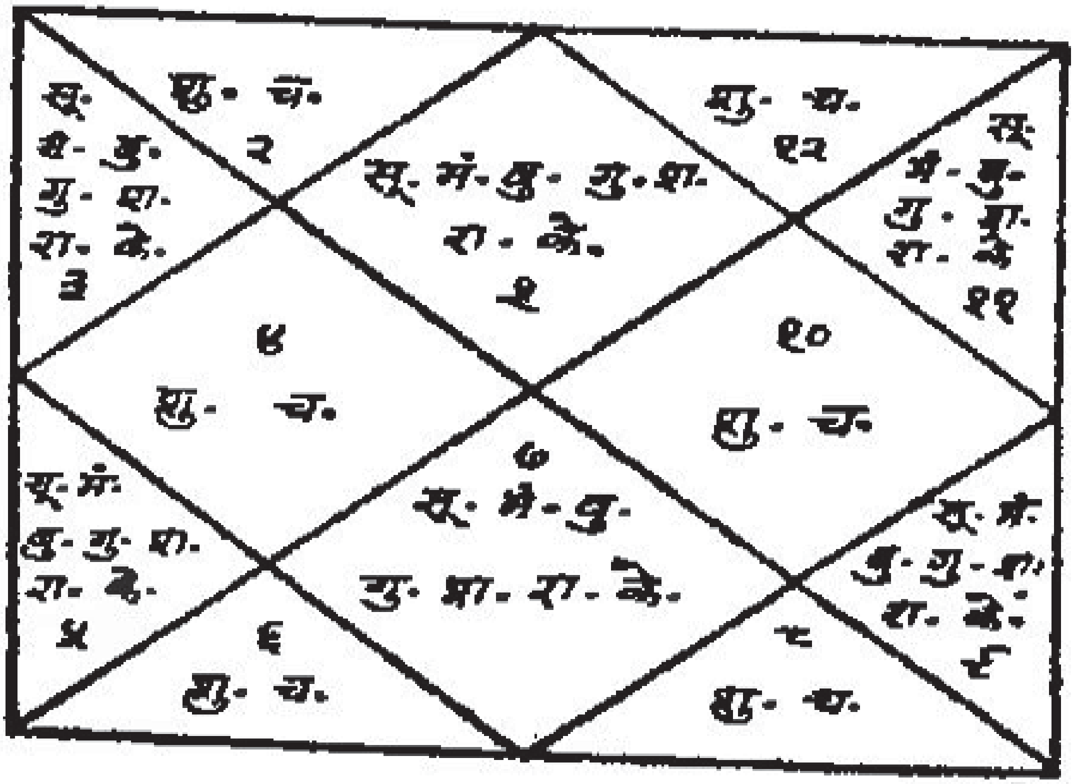

१०

उक्त उदाहरण कुण्डली की भाँति ही अन्य कुण्डलियों में भी ग्रहों के स्थानबल के विषय में समझ लेना चाहिए।

(२) दिग्बल—जन्मकुण्डली में प्रथम भाव की पूर्व, चतुर्थ की उत्तर, सप्तम की पश्चिम तथा दशमभाव को दक्षिण दिशा माना जाता है।

गुरु तथा गुरु प्रथमभाव अर्थात् लग्न (पूर्व दिशा) में, चन्द्रमा तथा शुक्र चतुर्थभाव (उत्तर दिशा) में, शनि सप्तमभाव (पश्चिम दिशा) में तथा मंगल दशम-भाव (दक्षिण दिशा) में स्थित हों तो उन्हें 'दिग्बली' माना जाता है।

निम्नांकित उदाहरण कुण्डली में दिशाओं तथा दिग्बली ग्रहों की स्थिति को प्रदर्शित किया गया है—

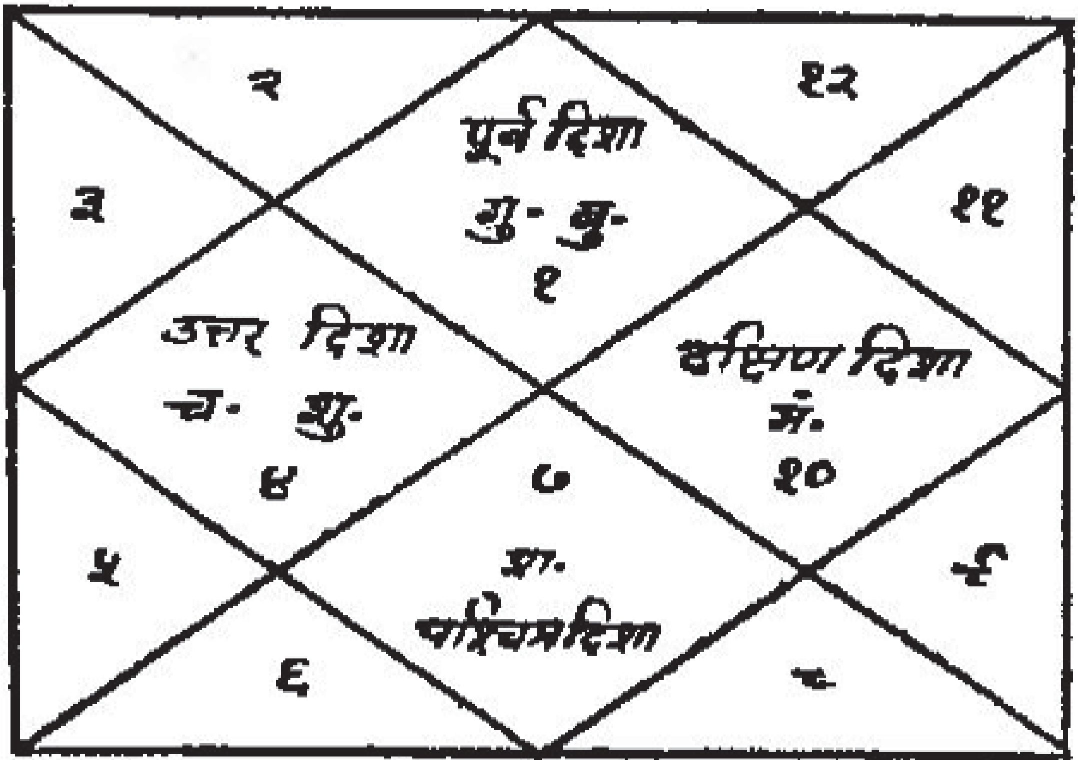

(३) कालबल—यदि जातक का जन्म रात्रि के समय हुआ हो तो उसकी जन्मकुण्डली के ग्रहों में से (१) चन्द्रमा, (२) मंगल और (३) शनि—ये तीनों ग्रह कालबली होते हैं और यदि जातक का जन्म दिन में हुआ हो तो (१) सूर्य, (२) बुध और (३) शुक्र—ये तीनों ग्रह कालबली होते हैं।

मतान्तर में, 'बुध' को दिन-रात्रि दोनों ही समय में कालबली माना जाता है।

(४) नैसर्गिक बल—शनि, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र तथा सूर्य—ये ग्रह उत्तरोत्तर एक दूसरे से अधिक बली होते हैं। अर्थात् शनि से मंगल अधिक बलवान होता है, मंगल से बुध, बुध से गुरु, गुरु से शुक्र, शुक्र से चन्द्र तथा चन्द्र से सूर्य अधिक बलवान होता है। इसी क्रम की विपरीत स्थिति में ग्रह एक दूसरे से उत्तरोत्तर कम बलवान होते हैं अर्थात् सूर्य से चन्द्रमा कम बलवान है तथा चन्द्र से शुक्र, शुक्र से गुरु, गुरु से बुध, बुध से मंगल तथा मंगल के शनि कम बली होता है।

(५) **चेष्टाबल**—मकर से मिथुन तक (मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृष और मिथुन) किसी भी राशि में स्थित सूर्य तथा चन्द्रमा चेष्टाबली होते हैं और मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि—ये पाँचों ग्रह चन्द्रमा के साथ रहने पर चेष्टाबली होते हैं।

निम्नांकित उदाहरण कुण्डली में ग्रहों के 'चेष्टाबल' को प्रदर्शित किया गया है इसी भाँति अन्य कुण्डलियों में भी समझलें।

ग्रहों का चेष्टाबल निरूपण चक्र

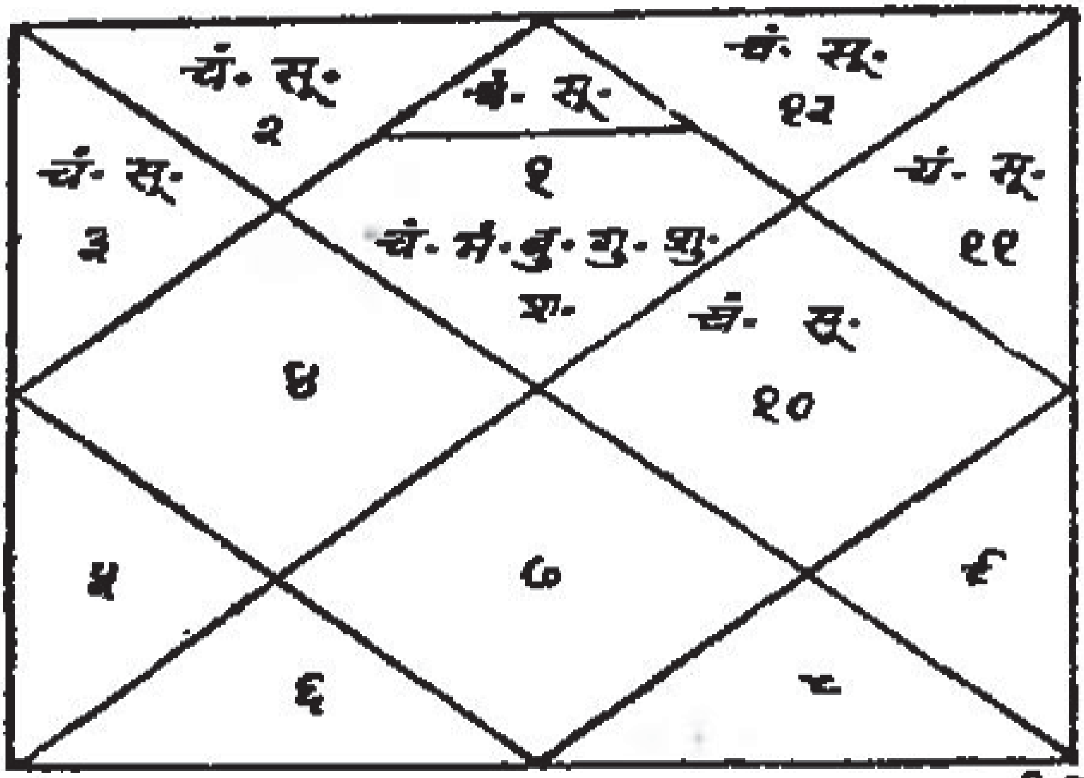

१-

(६) **दृग्बल**—जन्मकुण्डली में जिन क्रूर (दुष्ट या पाप) ग्रहों के ऊपर शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ती है, वे उनकी शुभ दृष्टि को पाकर 'दृग्बली' हो जाते हैं। जैसे—किसी जातक की कुण्डली में शनि पंचम भाव में बैठा हो तथा बुध लग्न में बैठा हो तो क्रूर-ग्रह शनि के ऊपर शुभ ग्रह गुरु की पूर्ण दृष्टि पड़ने के कारण शनि दृग्बली हो जाएगा। किस ग्रह की दृष्टि किन-किन भावों पर पड़ती है इसका वर्णन आगे किया गया है।

नीचे का उदाहरण कुण्डली में क्रूर-ग्रहों के ऊपर शुभ ग्रहों की दृष्टि को प्रदर्शित किया गया है। इसी के अनुसार अन्यत्र भी समझ लेना चाहिए।

हों का दृग्बल निरूपण चक्र

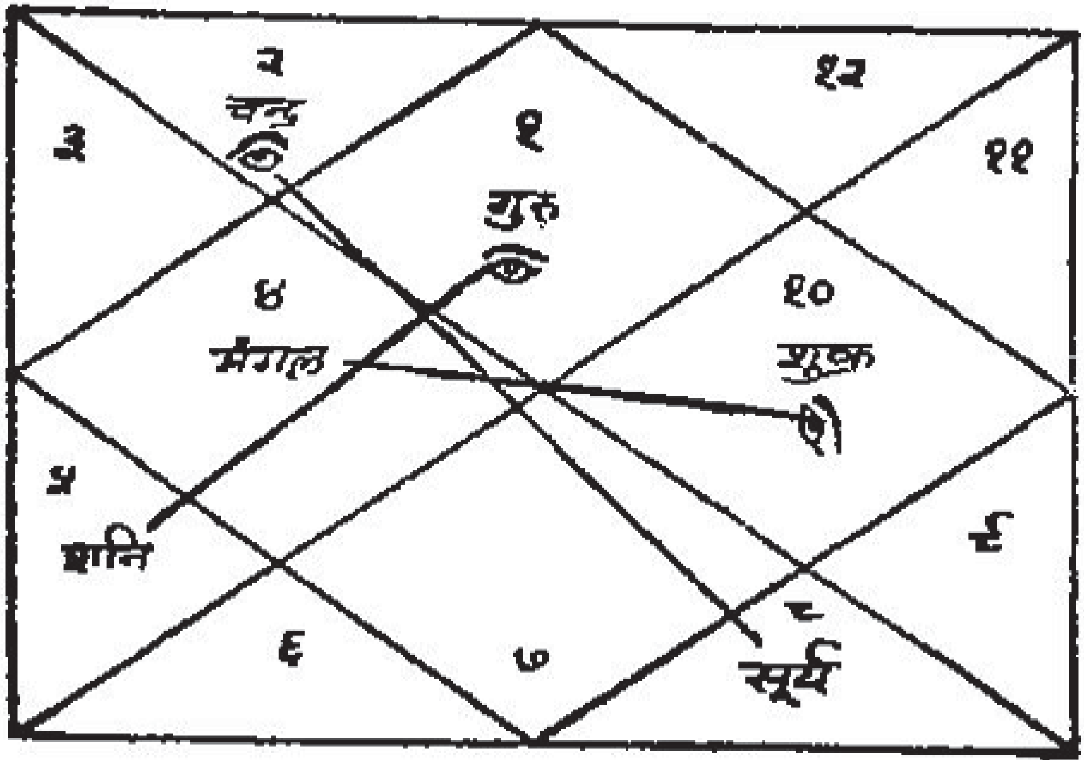

आवश्यक ज्ञातव्य—पूर्वोक्त ६ प्रकार के बलों में से किसी भी प्रकार के बल को प्राप्त बलवान ग्रह जिस भाव में बैठा होता है जातक को उस भाव का विशेष फल अपने स्वभावानुसार देता है। किसी भाव स्थित किसी भी ग्रह के फलाफल को यथार्थ जानकारी के लिए उस भाव में स्थित राशि तथा ग्रह के स्वभाव एवं बल आदि का समन्वयन करके ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए।

ग्रहों की दृष्टि

ग्रहों की दृष्टियाँ चार प्रकार की मानी गई हैं—

(१) एक पाद या एक चरण दृष्टि (चतुर्थांश दृष्टि)।
(२) द्विपाद या दो चरण दृष्टि (अर्द्धांश दृष्टि)।
(३) त्रिपाद या तीन चरण दृष्टि (तीन चौथाई दृष्टि)।
(४) पूर्ण दृष्टि (सम्पूर्ण दृष्टि)।

जन्मकुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में बैठा होता है, उस भाव से तृतीय तथा दशम भाव को एकपाद दृष्टि से, पंचम तथा नवम भाव को द्विपाद दृष्टि से, चतुर्थ तथा अष्टम भाव को त्रिपाद दृष्टि से तथा सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। यह नियम सभी ग्रहों पर समान रूप से लागू होता है। परन्तु इन दृष्टियों के अतिरिक्त मंगल जिस भाव में बैठा होता है, वहाँ से सप्तम भाव के अतिरिक्त चतुर्थ तथा अष्टम भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है। इसी प्रकार गुरु जिस भाव में बैठा हो, वहाँ से सप्तम भाव के अतिरिक्त पंचम तथा नवम भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है एवं शनि जिस भाव में बैठा हो, वहाँ के सप्तम भाव के अतिरिक्त

तृतीय तथा दशम भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है। अपूर्ण दृष्टि को 'खण्ड दृष्टि' भी कहते हैं।

राहु तथा केतु की दृष्टि अन्य ग्रहों के समान सीधी न पड़कर उल्टी पड़ती है। जैसे लग्न में बैठा हुआ मंगल तृतीय तथा दशम भाव को एक पाद दृष्टि से देखेगा तो लग्न में बैठे हुए राहु-केतु एकादश तथा चतुर्थ भाव को एक पाद दृष्टि से देखेंगे।

आगे दी गई मेष राशि की उदाहरण कुण्डलियों में लग्न (प्रथम भाव) स्थित विभिन्न ग्रहों की विभिन्न भावों पर पड़ने वाली एक पाद, द्विपाद, त्रिपाद तथा पूर्ण दृष्टि को अलग-अलग प्रदर्शित किया गया है। इसी भाँति अन्यत्र भी समझ लेना चाहिए।

'सूर्य' की विभिन्न भावों पर दृष्टि

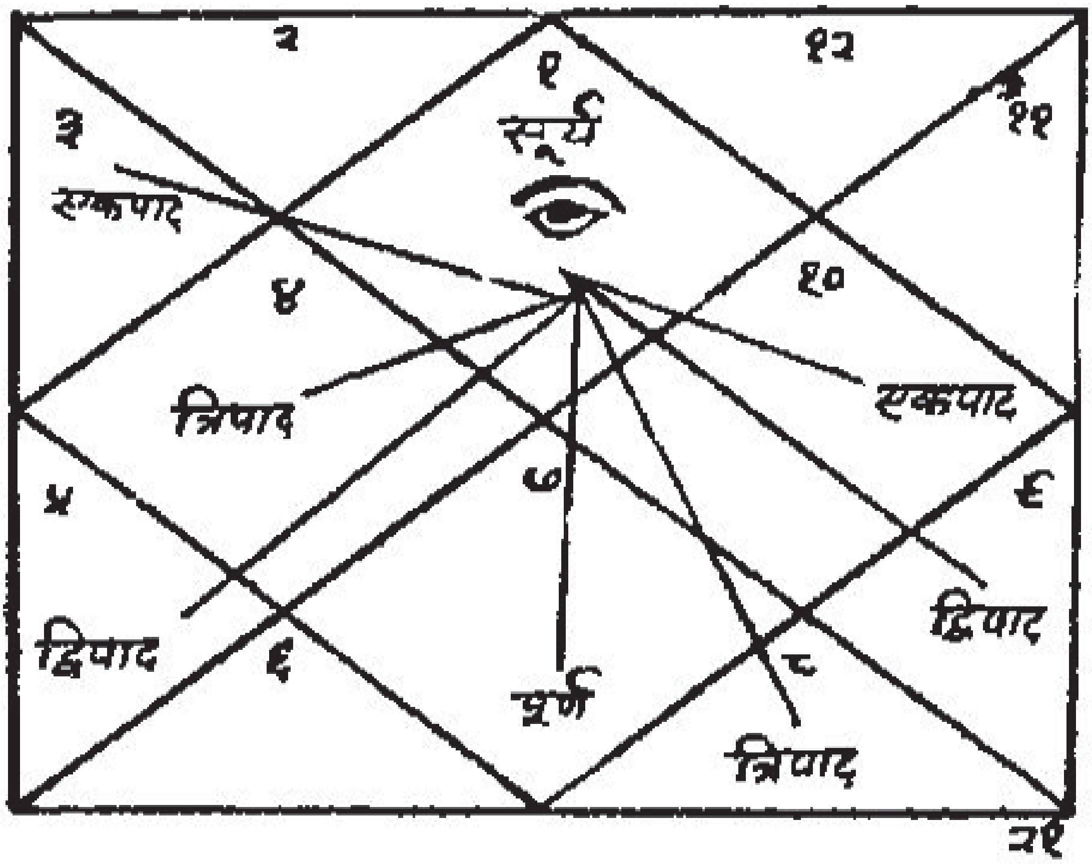

टिप्पणी—जिस भाव में भी 'सूर्य' बैठा हो, उस भाव से उपर्युक्त आधार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

'चन्द्रमा' की विभिन्न भावों पर दृष्टि

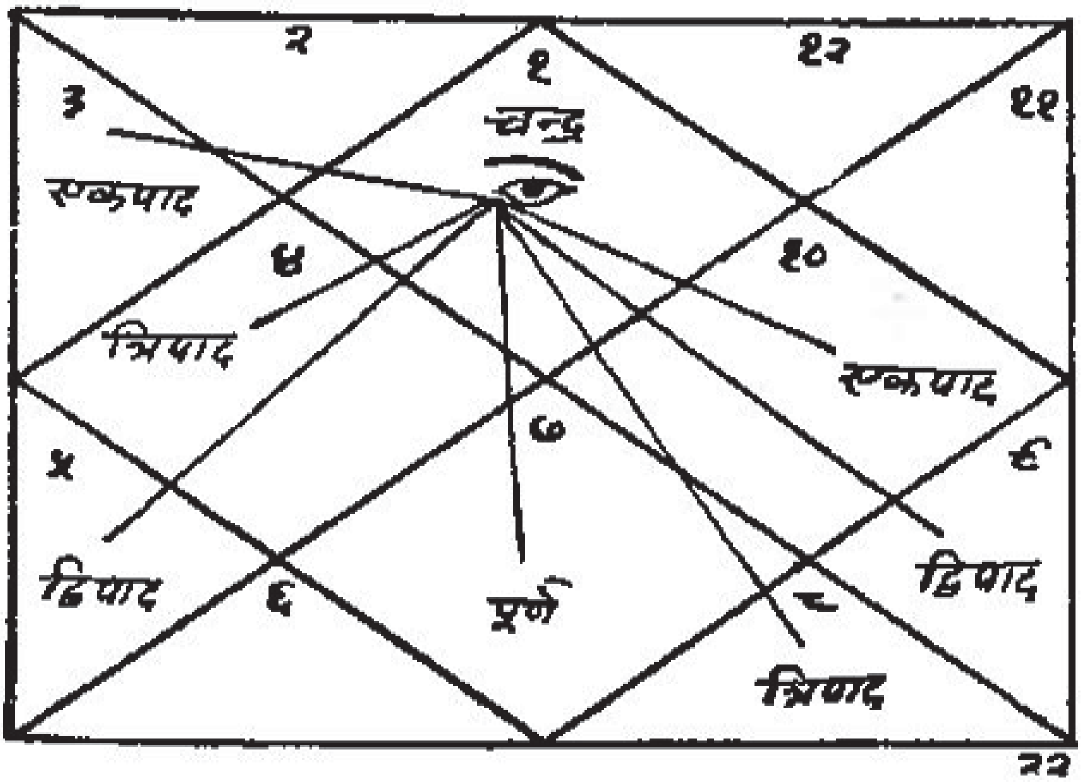

टिप्पणी—जिस भाव में भी 'चन्द्रमा' बैठा हो, उस भाव से उपर्युक्त आधार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

'मंगल' की विभिन्न भावों पर दृष्टि

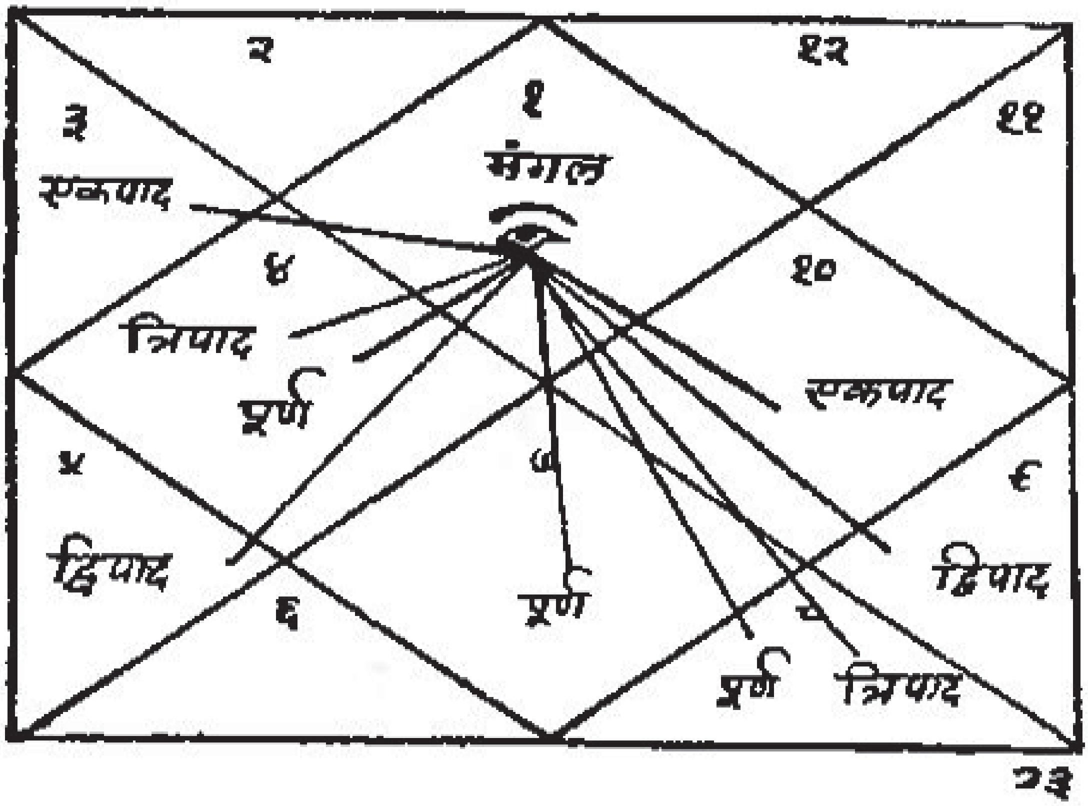

टिप्पणी—जिस भाव में भी मंगल बैठा हो, उस भाव से उपर्युक्त आधार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

'बुध' की विभिन्न भावों पर दृष्टि

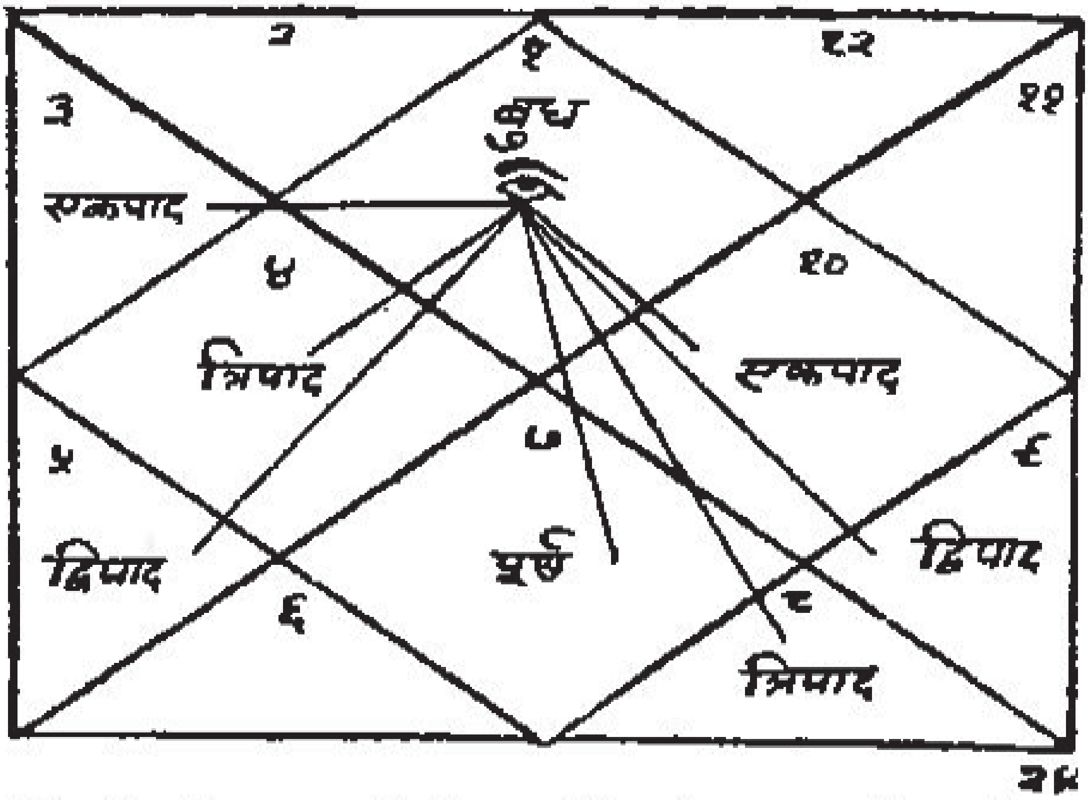

टिप्पणी—जिस भाव में भी 'बुध' बैठा हो, उस भाव से उपर्युक्त आधार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

'गुरु' की विभिन्न भावों पर दृष्टि

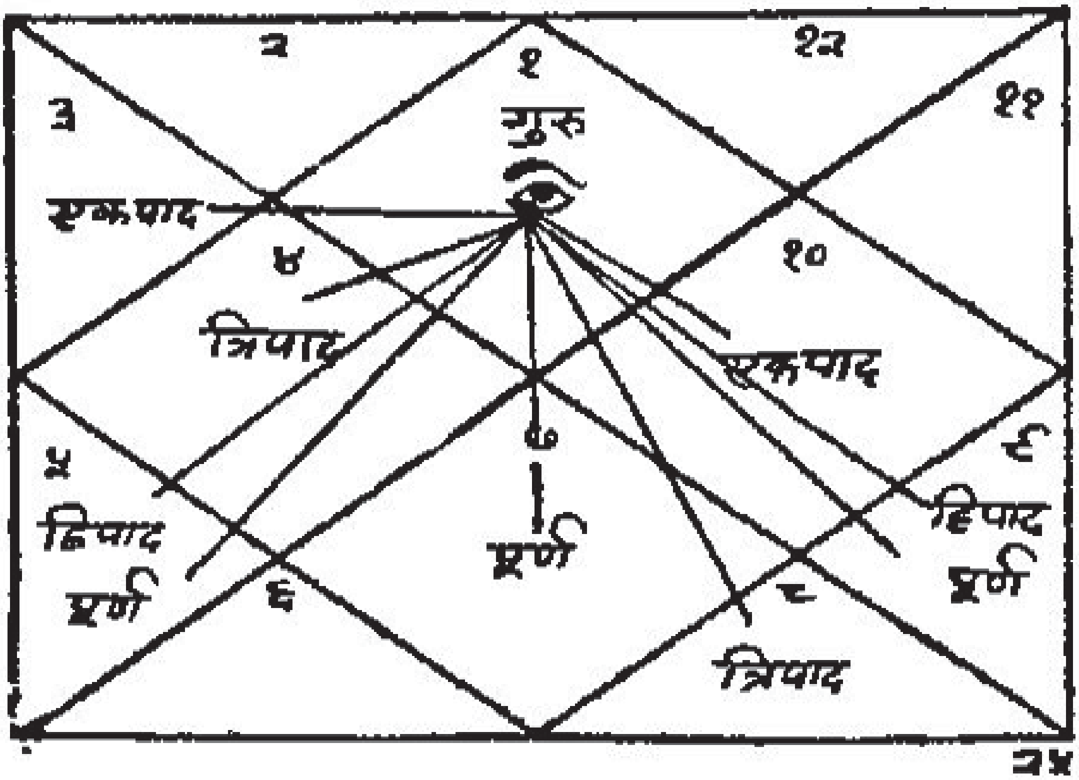

टिप्पणी—जिस भाव में भी 'गुरु' बैठा हो, उस भाव से उपर्युक्त आधार पर उसका खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

'शुक्र' की विभिन्न भावों पर दृष्टि

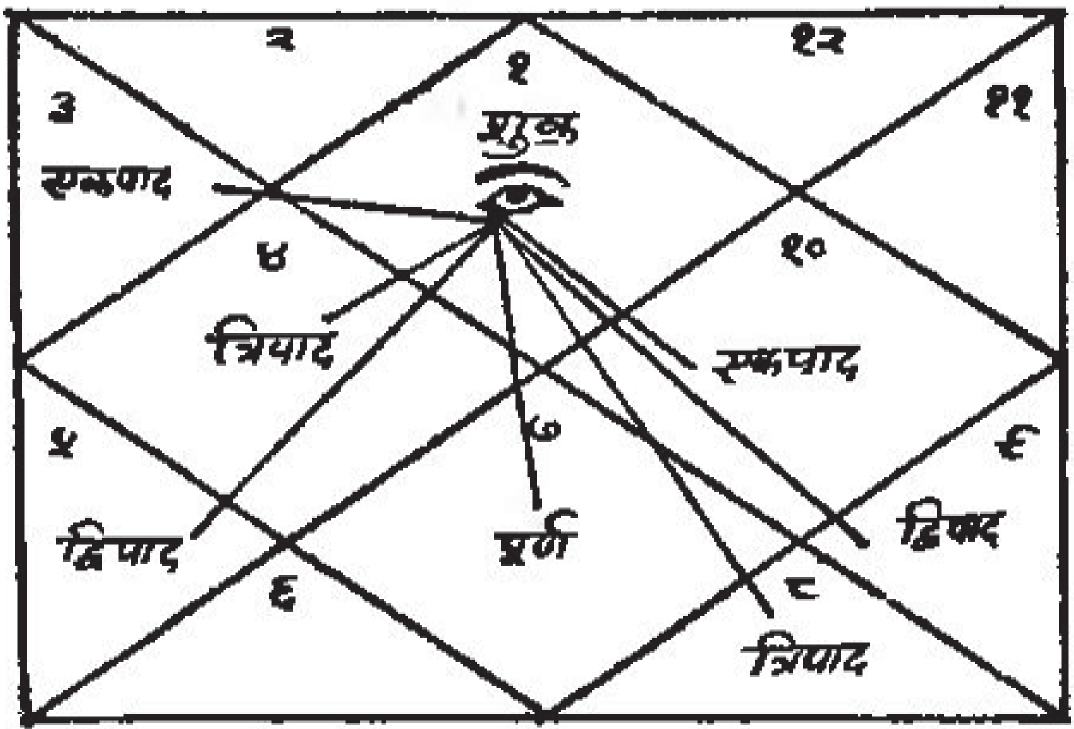

२६

टिप्पणी—जिस भाव में भी 'शुक्र' बैठा हो, उस भाव से उपर्युक्त आधार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

'शनि' की विभिन्न भावों पर दृष्टि

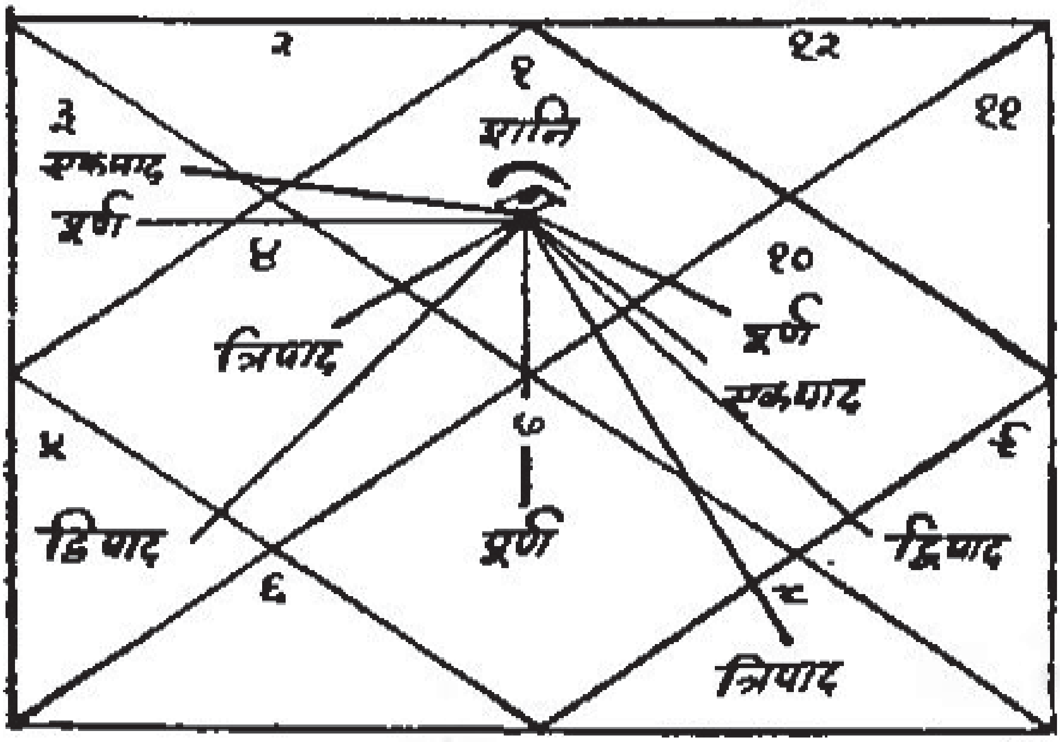

२६

टिप्पणी—जिस भाव में भी 'शनि' बैठा हो, उस भाव से उपर्युक्त आधार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

'राहु' की विभिन्न भावों पर दृष्टि

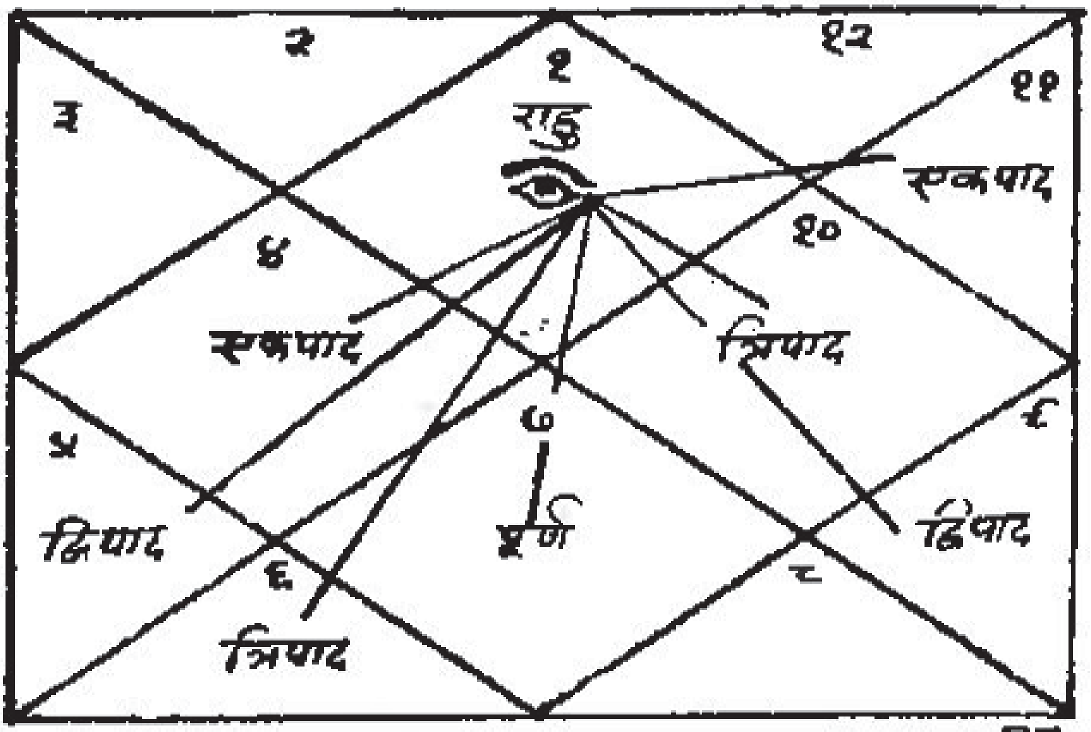

२८

टिप्पणी—जिस भाव में भी 'राहु' बैठा हो, उस भाव से उपर्युक्त आधार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

'केतु' की विभिन्न भावों पर दृष्टि

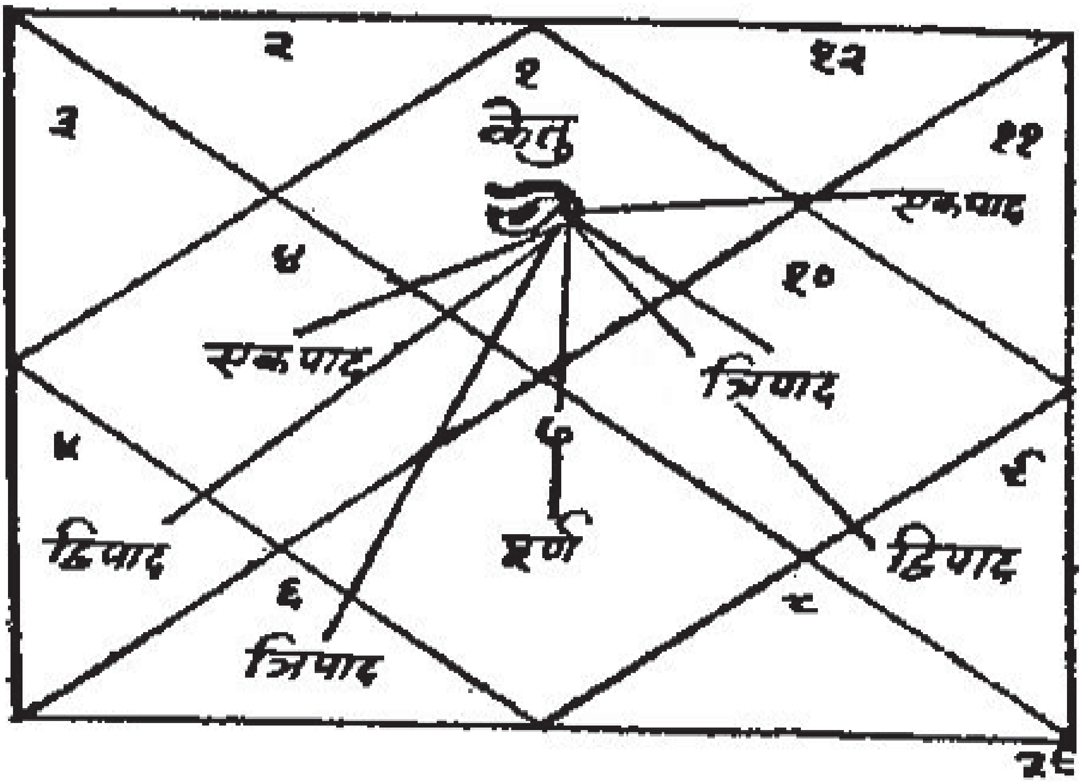

२९

टिप्पणी—जिस भाव में भी 'केतु' बैठा हो, उस भाव से उपर्युक्त आधार पर, उसकी खण्ड तथा पूर्ण दृष्टि के विषय में समझ लेना चाहिए।

विशेष टिप्पणी—कुछ विद्वानों के मतानुसार राहु तथा केतु की खण्ड दृष्टियाँ एकपाद, द्विपाद तथा त्रिपाद होती ही नहीं हैं। प्राचीन भारतीय ज्योतिष में राहु-केतु की न तो ग्रहों के अन्तर्गत गणना की गई है और न इनके दृष्टि-सम्बन्ध का ही

उच्चराशिस्थ ग्रहों का फलादेश

उच्चराशिस्थ ग्रहों का संक्षिप्त विशिष्ट फलादेश निम्नानुसार समझना चाहिए। यहां प्रदर्शित सभी उदाहरण कुण्डलियां मेष लग्न की हैं। अन्य लग्नों की कुण्डलियों के विषय में भी इन्हीं के आधार पर जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

उच्चराशिस्थ 'सूर्य'

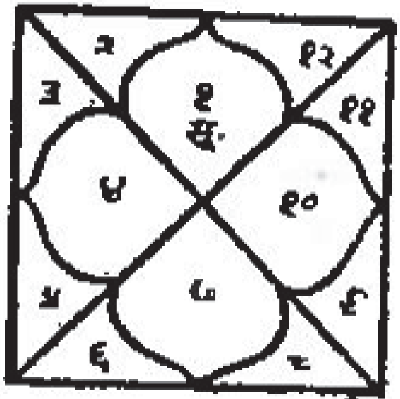

३०

उच्चराशिस्थ 'सूर्य'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'सूर्य' उच्च (मेष) राशि का हो, वह गौरवर्ण, भाग्यवान, धैर्यवान, धनी, सम्पन्न, यशस्वी, सुखी, विद्वान्, दण्डाधिकारी, सेनापति, शूरवीर तथा बलवान् होता है।

उच्चराशिस्थ 'चन्द्र'

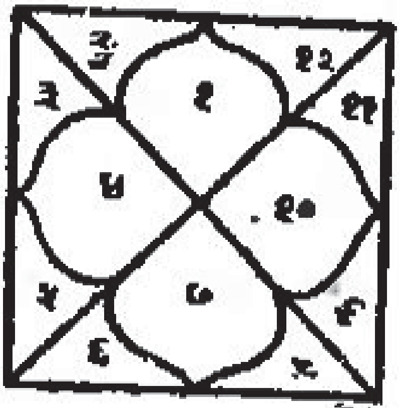

३१

उच्चराशिस्थ 'चन्द्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'चन्द्र' उच्च (वृष) राशि का हो, वह सुखी, यशस्वी, सम्मानित, स्त्री-वियोगी, अलंकार-प्रिय, विलासी, मिष्ठान्न भोजी, चपल स्वभाव, लोकप्रिय तथा उदार हृदय वाला होता है।

उच्चराशिस्थ 'मंगल'

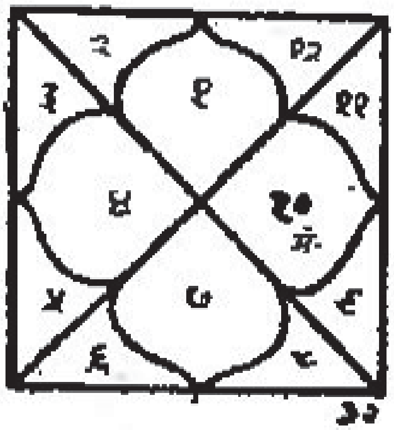

३२

उच्चराशिस्थ 'मंगल'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'मंगल' उच्च (मकर) राशि का हो, वह उग्र स्वभाव, शस्त्रविद्या में निष्णात, संग्रामजयी, साहसी, कर्तव्यनिष्ठ, शूर-वीर, बलिष्ठ, क्रोधी तथा राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाला होता है।

उच्चराशिस्थ 'बुध'

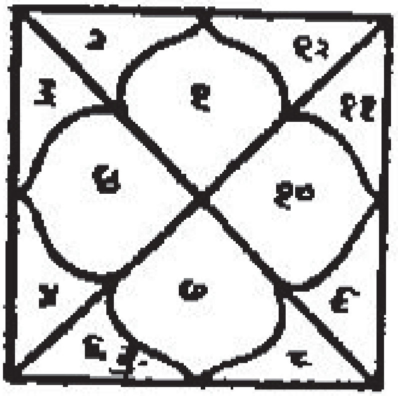

33

उच्चराशिस्थ 'बुध'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'बुध' उच्च (कन्या) राशि का हो, वह बड़ा विद्वान्, अत्यन्त बुद्धिमान, लेखक, सम्पादक, सुखी, राजा अथवा राजमान्य, शत्रु-नाशक तथा अपने वंश की वृद्धि करने वाला, निष्पाप, धैर्यवान, परन्तु आलसी स्वभाव का होता है।

उच्चराशिस्थ 'बुध'

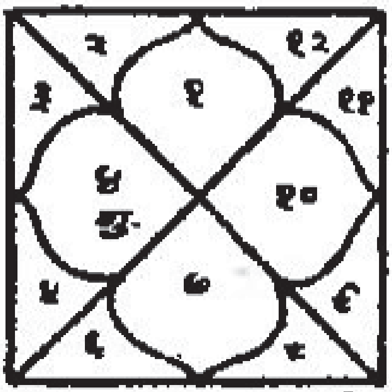

34

उच्चराशिस्थ 'गुरु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'गुरु' उच्च (कर्क) राशि का हो, वह सुन्दर, विद्वान्, चतुर, सुशील, सद्गुणी, सुखी, राजप्रिय, मंत्री, शासक, ऐश्वर्य-शाली, सत्कर्म करने वाला, अनेक सेवकों से युक्त तथा सदाचारी होता है।

उच्चराशिस्थ 'शुक्र'

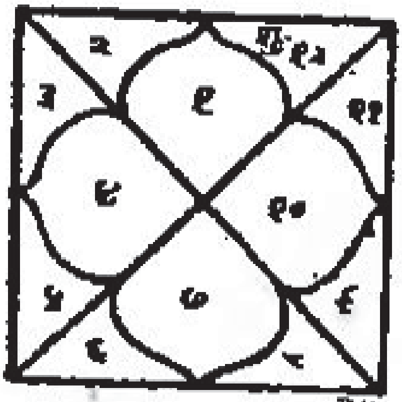

35

उच्चराशिस्थ 'शुक्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शुक्र' उच्च (मीन) राशि का हो, वह सुखी, भाग्यवान, संगीतप्रिय, कामी, विलासी, कला-प्रेमी, यन्त्र-मंत्र का ज्ञाता, ज्योतिषी, कवि, संगीतज्ञ तथा यशस्वी होता है।

उच्चराशिस्थ 'शनि'

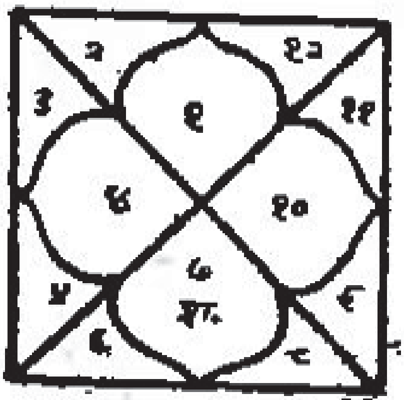

36

उच्चराशिस्थ 'शनि'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शनि' उच्च (तुला) राशि का हो, वह सुखी, यशस्वी, ऐश्वर्यशाली, पृथ्वीपति, राजा, कृषक, सम्पन्न, मायावी, वाहनों से युक्त, साहसी, दुष्कर्म करने वाला, लोक-प्रसिद्ध सम्मानित तथा मूर्ख होता है।

उच्चराशिस्थ 'राहु'

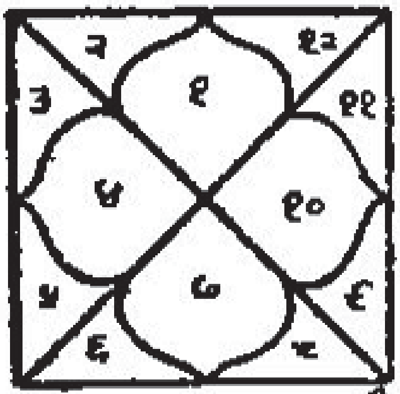

१

उच्चराशिस्थ 'राहु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'राहु' उच्च (मिथुन, मतान्तर से वृष) राशि का हो, वह धनी, साहसी, लम्पट, सरदार, शूर-वीर, गुप्त-स्वभाव वाला, दुष्ट, क्रूर, राजा द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाला, प्रतापी तथा धैर्यवान होता है।

उच्चराशिस्थ 'केतु'

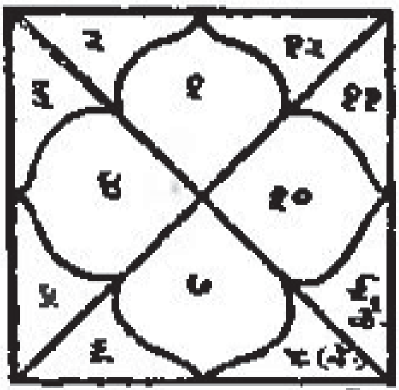

३८

उच्चराशिस्थ 'केतु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'केतु' उच्च (धनु, मतान्तर से वृश्चिक) राशि का हो वह भ्रमण-प्रिय, सरदार, नीच प्रकृति वाला, सुखी, अधिकार सम्पन्न व मिथ्यावादी, नीच तथा वृद्धों जैसा आचरण करने वाला होता है।

टिप्पणी—किसी ग्रह का केवल उच्च होना ही पूर्ण फलदायक नहीं होता, उसके साथ ही अन्य विषयों पर भी विचार करके निष्कर्ष निकालना चाहिए।

मूलत्रिकोणस्थ ग्रहों का फलादेश

मूल त्रिकोणस्थ ग्रहों का संक्षिप्त विशिष्ट फलादेश निम्नानुसार समझना चाहिए। यहाँ प्रदर्शित सभी उदाहरण कुण्डलियाँ मेष लग्न की हैं। अन्य लग्नों की कुण्डलियों के विषय में भी इन्हीं के आधार पर जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

मूलत्रिकोणस्थ 'सूर्य'

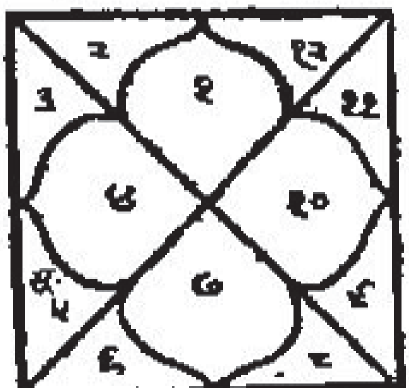

३९

मूल त्रिकोणस्थ 'सूर्य'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'सूर्य' मूल त्रिकोणस्थ (सिंह राशि के २० अंश तक) हो, वह सम्मानित, पूज्य, यशस्वी, सुखी, धनी तथा सब कार्यों में कुशल होता है।

मूल त्रिकोणस्थ 'चन्द्र'

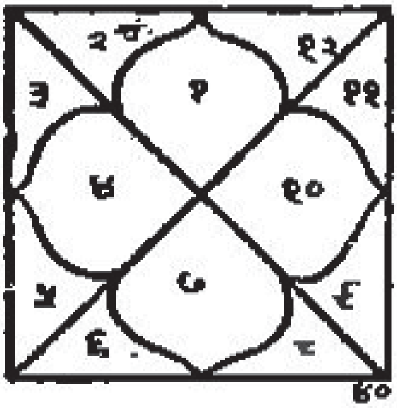

६०

मूल त्रिकोणस्थ 'चन्द्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'चन्द्रमा' मूल त्रिकोणस्थ (वृष राशि के ४ से ३० अंश तक) हो, वह सुन्दर, भाग्यवान, ऐश्वर्यशाली धन-वान, भोगी तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

मूल त्रिकोणस्थ 'मंगल'

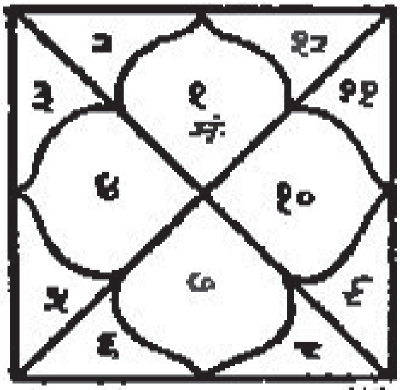

६१

मूल त्रिकोणस्थ 'मंगल'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'मंगल' मूल त्रिकोणस्थ (मेष राशि के १८ अंश तक) हो, वह सामान्य धनी, अपयशी, स्वार्थी, क्रोधी, दुष्ट, निर्दय, लम्पट, खल, चरित्रहीन क्रूर, धर्मी तथा साहसी होता है।

मूलत्रिकोणस्थ 'बुध'

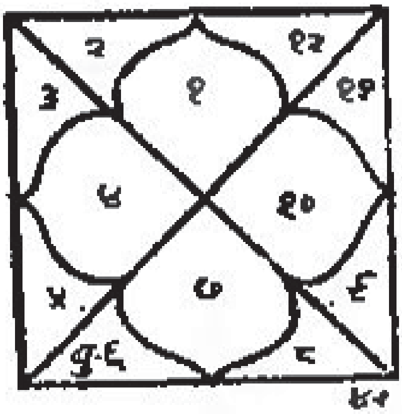

६२

मूल त्रिकोणस्थ 'बुध'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'बुध' मूल त्रिकोणस्थ (कन्या राशि के १६ से २० अंश तक) हो, वह विद्वान्, राजमान्य, धनवान, अध्यापक चिकित्सक, सैनिक, व्यवसायी, महत्वाकांक्षी, विजयी, विनोदी तथा बुद्धिमान होता है।

मूलत्रिकोणस्थ 'गुरु'

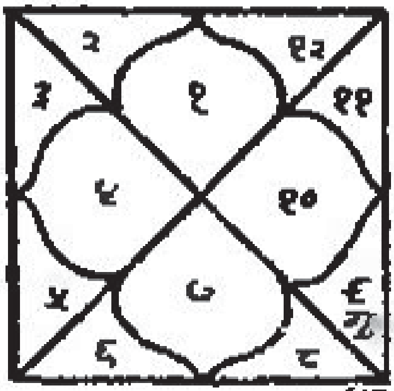

६३

मूल त्रिकोणस्थ 'गुरु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'गुरु' मूल त्रिकोणस्थ (धनु राशि के १३ अंश तक) हो, वह तपस्वी, सुखी, यशस्वी, सम्मानित, राजप्रिय, भोगी, उच्च अधिकारी, परम बुद्धिमान तथा नगर या मठ का स्वामी होता है।

मूलत्रिकोणस्थ 'शुक्र'

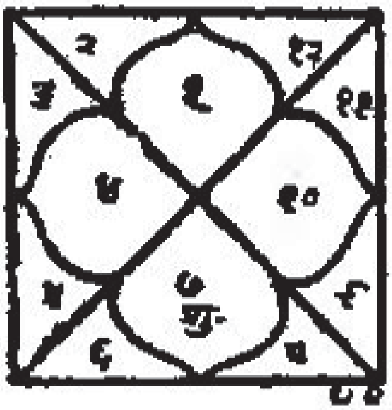

मूलत्रिकोणस्थ 'शुक्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शुक्र' मूल त्रिकोणस्थ (तुला राशि के १० अंश तक) हो, वह अनेक पुरस्कारों का विजेता, स्त्रियों को प्रिय, जागीरदार तथा वाहन, भूमि, भवन आदि के सुखों से सम्पन्न, राजा के समान ऐश्वर्यवान्, प्रतापी तथा यशस्वी होता है।

मूलत्रिकोणस्थ 'शनि'

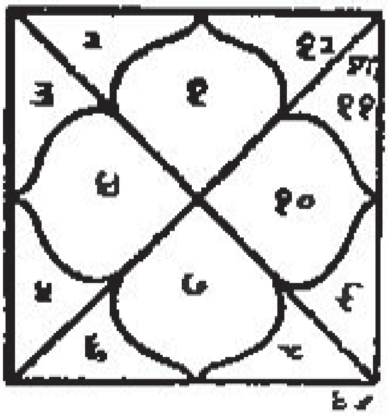

मूलत्रिकोणस्थ 'शनि'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शनि' मूल-त्रिकोणस्थ कुम्भ (राशि के २० अंश तक) हो, वह कर्त्तव्य-निष्ठ, वैज्ञानिक, अस्त्र-शस्त्रों का निर्माता एवं ज्ञाता, यान-चालक, शूर-वीर, साहसी, सेनापति, कुल का पालन करने वाला, सुखी तथा धन-धान्य से पूर्ण होता है।

मूलत्रिकोणस्थ 'राहु'

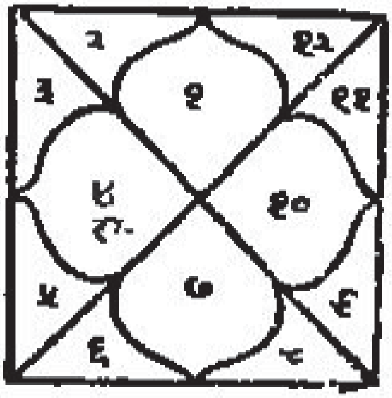

मूलत्रिकोणस्थ 'राहु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'राहु' मूल त्रिकोणस्थ (कर्क राशि में) हो, वह धनी, लोभी तथा वाचाल होता है।

टिप्पणी—प्राचीन ज्योतिषी 'राहु' का मूलत्रिकोण नहीं मानते।

मूलत्रिकोणस्थ 'केतु'

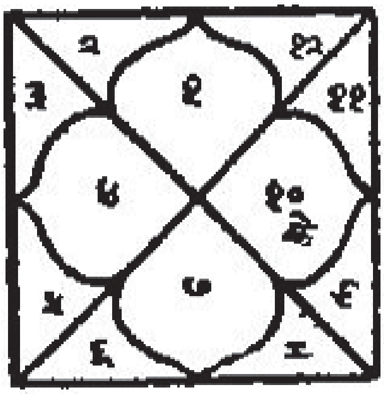

मूलत्रिकोणस्थ 'केतु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'केतु' मूल-त्रिकोणस्थ (मकर राशि में) हो, वह सुखी, धनी, वाचाल, प्रवासी तथा गुप्त युक्तियों वाला होता है।

टिप्पणी—प्राचीन ज्योतिषी 'केतु' का मूलत्रिकोण नहीं मानते।

स्वक्षेत्रस्थ ग्रहों का फलादेश

स्वक्षेत्री अर्थात् अपनी राशि में स्थित विभिन्न ग्रहों का संक्षिप्त फलादेश निम्नानुसार समझना चाहिए। यहां प्रदर्शित सभी उदाहरण कुण्डलियां मेष लग्न की हैं। अन्य लग्नों की कुण्डलियों के विषय में भी इन्हीं के आधार पर जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

स्वक्षेत्रस्थ 'सूर्य'

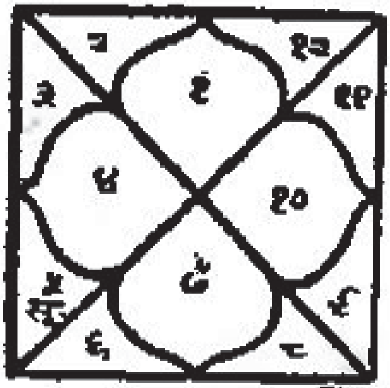

४८

स्वक्षेत्रस्थ 'सूर्य'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'सूर्य' स्वक्षेत्री (सिंह राशि का) हो, वह सुन्दर, सुखी, ऐश्वर्यवान्, पराक्रमी, व्यभिचारी, निरन्तर उद्योग तथा परिश्रम करने वाला, धैर्यवान, साहसी, तेजस्वी तथा अत्यन्त उग्रस्वभाव का होता है।

स्वक्षेत्रस्थ 'चन्द्र'

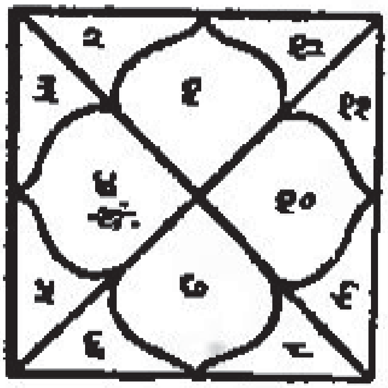

४९

स्वक्षेत्रस्थ 'चन्द्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'चन्द्र' स्वक्षेत्री (कर्क राशि का) हो, वह सुन्दर, धनी, तेजस्वी, भाग्यवान् विनम्र, साधु चरित्र, परोपकारी, दयालु, मनस्वी, यशस्वी तथा सहृदय होता है।

स्वक्षेत्रस्थ 'मंगल'

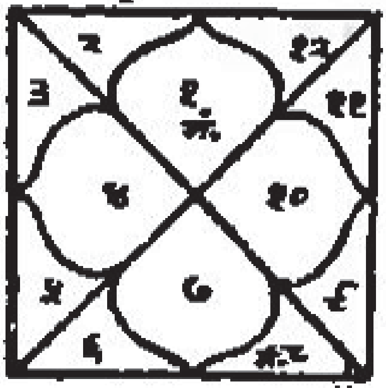

५०

स्वक्षेत्रस्थ 'मंगल'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'मंगल' स्वक्षेत्री (मेष अथवा वृश्चिक राशि का) हो, वह साहसी, बलवान, यशस्वी, कृषक, भूस्वामी अथवा सैनिक, धनी तथा चंचल स्वभाव वाला होता है।

स्वक्षेत्रस्थ 'बुध'

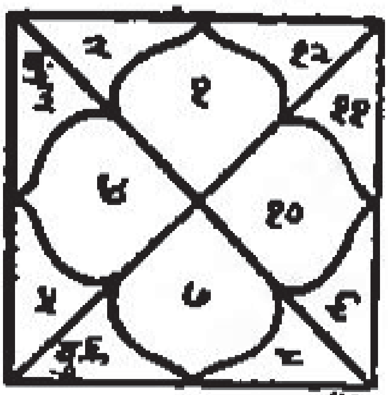

५१

स्वक्षेत्रस्थ 'बुध'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'बुध' स्वक्षेत्री (कन्या अथवा मिथुन राशि का) हो, वह विद्वान्, बुद्धिमान, सम्पादक, शास्त्रज्ञ, लेखक तथा अनेक कलाओं का ज्ञाता होता है।

स्वक्षेत्रस्थ 'गुरु'

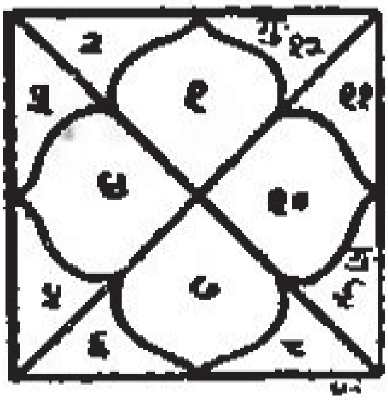

स्वक्षेत्रस्थ 'गुरु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'गुरु' स्वक्षेत्री (धनु अथवा मीन राशि का) हो, वह सुखी, शास्त्रज्ञ, वैद्य, काव्य-प्रेमी, कवि, विद्वान्, आत्मबली तथा धनवान होता है।

स्वक्षेत्रस्थ 'शुक्र'

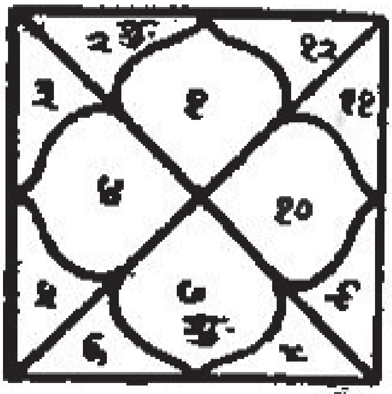

५३

स्वक्षेत्रस्थ 'शुक्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शुक्र' स्वक्षेत्री (वृष अथवा तुला राशि का) हो, वह विद्वान्, गुणी, विचारक, धनवान, स्वतन्त्र प्रकृति का, कृषि-सम्बन्धी व्यवसाय करने वाला तथा सुन्दर होता है।

स्वक्षेत्रस्थ 'शनि'

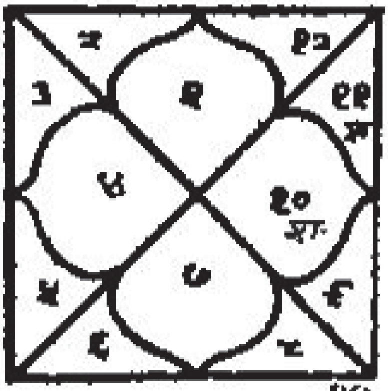

५४

स्वक्षेत्रस्थ 'शनि'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शनि' स्वक्षेत्री (मकर अथवा कुम्भ राशि का) हो, वह पराक्रमी, कष्ट-सहिष्णु, उग्र स्वभाववाला, सुन्दर नेत्रोंवाला, यशस्वी तथा लोकप्रिय होता है।

स्वक्षेत्रस्थ 'राहु'

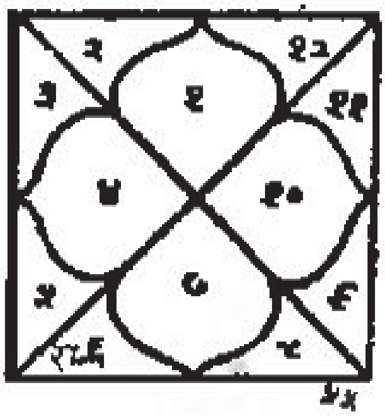

स्वक्षेत्रस्थ 'राहु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली से 'राहु' स्वक्षेत्री (कन्या राशि का) हो, वह सुन्दर, यशस्वी तथा भाग्यवान् होता है।

स्वक्षेत्रस्थ 'केतु'

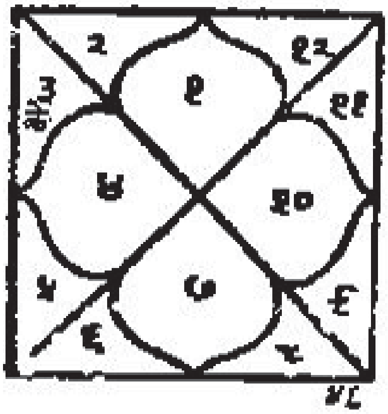

स्वक्षेत्रस्थ 'केतु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'केतु' स्वक्षेत्री (मिथुन राशि का) हो, वह धैर्यवान्, कष्ट-सहिष्णु, कर्मठ, चिन्ताशील तथा गुप्त-युक्तियों वाला होता है।

मित्र क्षेत्रस्थ ग्रहों का फलादेश

अपने मित्रग्रह की राशि में स्थित विभिन्न ग्रहों का संक्षिप्त फलादेश निम्नानुसार समझना चाहिए। यहाँ प्रदर्शित सभी उदाहरण-कुण्डलियाँ मेष लग्न की हैं। अन्य लग्नों की कुण्डलियों के विषय में भी इन्हीं के आधार पर जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

मित्रक्षेत्रस्थ 'सूर्य'

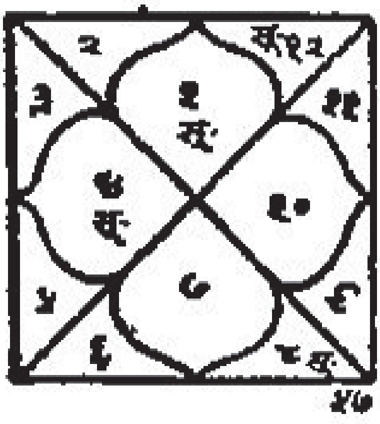

मित्रक्षेत्रस्थ 'सूर्य'

जिस जातक की कुण्डली में 'सूर्य' अपने मित्रग्रहों (चन्द्रमा, मंगल अथवा गुरु) की राशि (कर्क, मेष, धनु, वृश्चिक अथवा मीन) में स्थित हो, वह व्यवहार-कुशल, यशस्वी, दानी, सौभाग्यवान्, शास्त्रज्ञ, सुप्रसिद्ध तथा दृढ़मैत्री करने वाला होता है।

मित्रक्षेत्रस्थ 'चन्द्र'

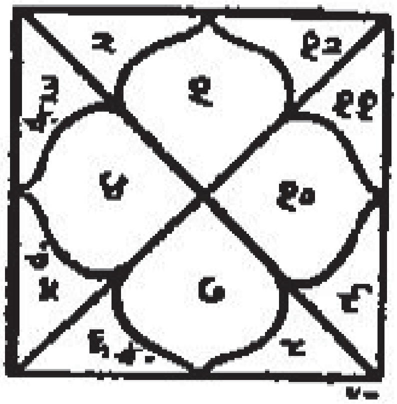

मित्रक्षेत्रस्थ 'चन्द्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'चन्द्रमा' अपने मित्रग्रहों (सूर्य अथवा बुध) की राशि (सिंह, कन्या अथवा मिथुन) में बैठा हो, वह सुखी, धनी, गुणी, चतुर तथा भाग्यवान होता है।

मित्रक्षेत्रस्थ 'मंगल'

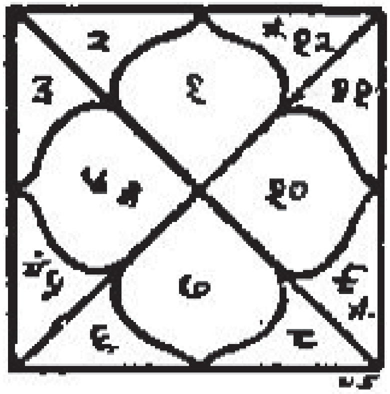

मित्रक्षेत्रस्थ 'मंगल'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'मंगल' अपने मित्र ग्रहों (सूर्य, चन्द्र अथवा गुरु) की राशि (सिंह, कर्क, धनु अथवा मीन) में बैठा हो, वह धनी, मित्र-प्रेमी, तेजस्वी, पराक्रमी, शक्तिशाली, शास्त्र द्वारा जीविकोपार्जन करने वाला तथा उग्र स्वभाव वाला होता है।

मित्रक्षेत्रस्थ 'बुध'

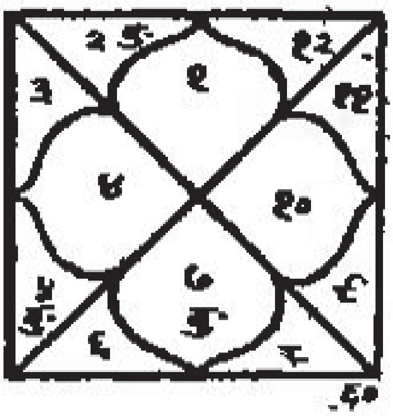

मित्रक्षेत्रस्थ 'बुध'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'बुध' अपने मित्रग्रहों (सूर्य अथवा शुक्र) की राशि (सिंह, वृष अथवा तुला) में बैठा हो, वह हास्यप्रिय, विनोदी-स्वभाव का, कार्यदक्ष, सुन्दरस्वरूप वाला, यशस्वी, ज्ञानी तथा धनवान् होता है।

मित्रक्षेत्रस्थ 'गुरु'

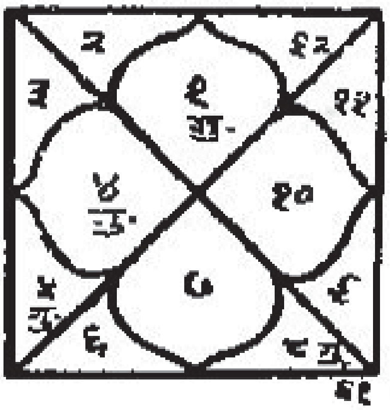

मित्रक्षेत्रस्थ 'गुरु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'गुरु' अपने जिस ग्रहों (सूर्य, चन्द्र अथवा मंगल) की राशि (सिंह, कर्क, मेष अथवा वृश्चिक) में बैठा हो, वह सुखी, उन्नतिशील, बुद्धिमान, प्रसिद्ध यशस्वी, सत्कर्म करने वाला तथा श्रेष्ठ लोगों द्वारा पूजित होता है।

मित्रक्षेत्रस्थ 'शुक्र'

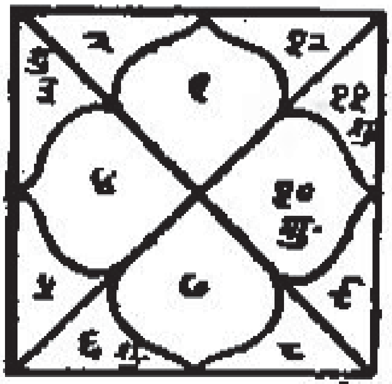

६८

मित्रक्षेत्रस्थ 'शुक्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शुक्र' अपने मित्र ग्रहों (बुध अथवा शनि) की राशि (कन्या, मिथुन, मकर अथवा कुम्भ) में बैठा हो, वह सुखी, गुणी, सन्तानवान, धनवान तथा बन्धु-बान्धवों को प्रिय होता है।

मित्रक्षेत्रस्थ 'शनि'

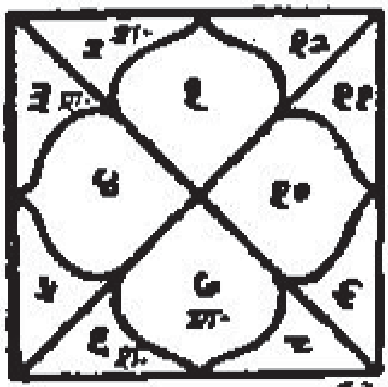

६९

मित्रक्षेत्रस्थ 'शनि'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शनि' अपने मित्र ग्रहों (बुध अथवा शुक्र) की राशि (कन्या, मिथुन, वृष अथवा तुला) में बैठा हो, वह सुखी, धनी, परान्न-भोजी, प्रेमी-स्वभाव का, कुकर्म करने वाला तथा कभी-कभी दुःख पाने वाला होता है।

मित्रक्षेत्रस्थ 'राहु'

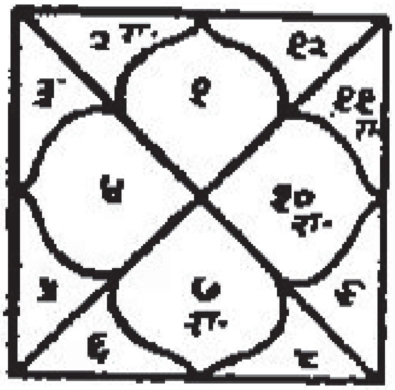

७०

मित्रक्षेत्रस्थ 'राहु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'राहु' अपने मित्र ग्रहों (शुक्र अथवा शनि) की राशि (वृष, तुला मकर अथवा कुम्भ) में बैठा हो, वह धनी, गुप्त योजना-कर्ता, सुखी, मिथ्यावादी, बुद्धिमान, पराक्रमी, साहसी तथा कुकर्म-रत होता है।

मित्रक्षेत्रस्थ 'केतु'

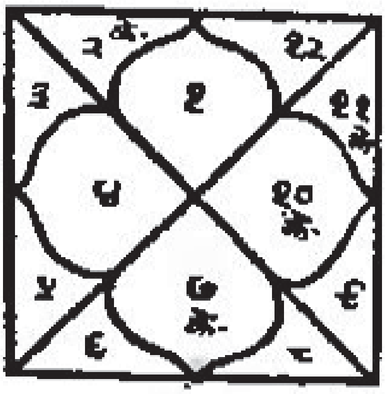

७१

मित्रक्षेत्रस्थ 'केतु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'केतु' अपने मित्र ग्रहों (शुक्र अथवा शनि) की राशि (वृष, तुला, मकर अथवा कुम्भ) में बैठा हो, वह भ्रमणशील, दुःखी तथा परोपकारी होता है।

शत्रुक्षेत्रस्थ ग्रहों का फलादेश

अपने शत्रु की राशि में स्थित विभिन्न ग्रहों का संक्षिप्त फलादेश निम्नानुसार समझना चाहिए। यहाँ प्रदर्शित सभी उदाहरण-कुण्डलियाँ मेष लग्न की हैं। अन्य लग्नों की कुण्डलियों के विषय में भी इन्हीं के आधार पर जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। जिस जातक की जन्मकुण्डली में जितने अधिक ग्रह शत्रुक्षेत्री होते हैं, वह उतना ही दुःखी, दरिद्र, भाग्यहीन, चिन्तित तथा निराश रहता है। यदि तीन या इससे अधिक ग्रह शत्रुक्षेत्री हों, तो वह जीवनभर दुःखी रहकर अन्तिम भाग में सुख पाता है।

शत्रुक्षेत्रस्थ 'सूर्य'

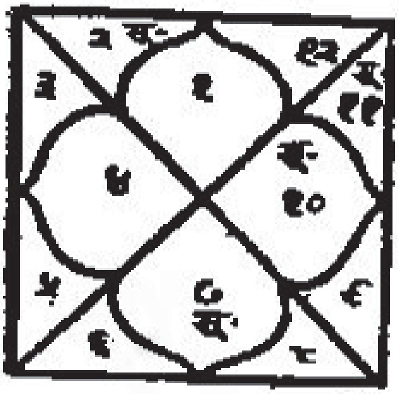

५६

शत्रुक्षेत्रस्थ 'सूर्य'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'सूर्य' अपने शत्रु (शुक्र अथवा शनि) की राशि (वृष, तुला, मकर अथवा कुम्भ) में बैठा हो, वह सदैव दुःख पाने वाला, नौकरी करने वाला, विषयों से पीड़ित तथा नीच स्वभाव का होता है।

शत्रुक्षेत्रस्थ 'चन्द्र'

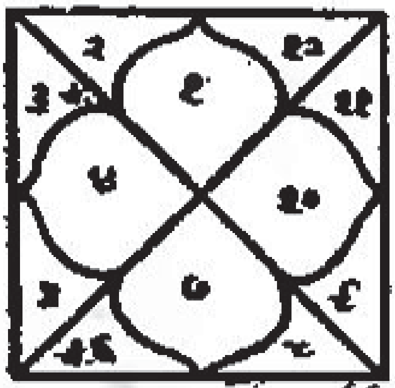

५७

शत्रुक्षेत्रस्थ 'चन्द्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'चन्द्रमा' अपने शत्रु (राहु अथवा केतु) की राशि (कन्या अथवा मिथुन) में बैठा हो, वह हृदयरोगी तथा अपनी माता के कारण दुःख पाने वाला होता है।

शत्रुक्षेत्रस्थ 'मंगल'

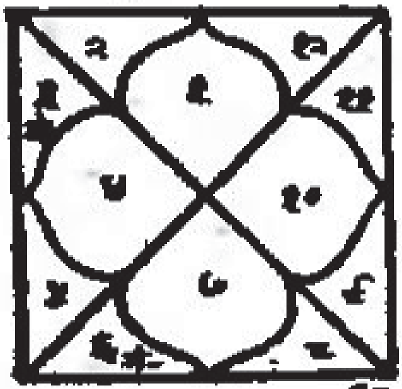

५८

शत्रुक्षेत्रस्थ 'मंगल'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'मंगल' अपने शत्रु (बुध) की राशि (मिथुन अथवा कन्या) में बैठा हो, वह विकलांग, व्याकुल, दीन-मलीन तथा स्त्रियों के वश में रहने वाला होता है।

शत्रुक्षेत्रस्थ 'बुध'

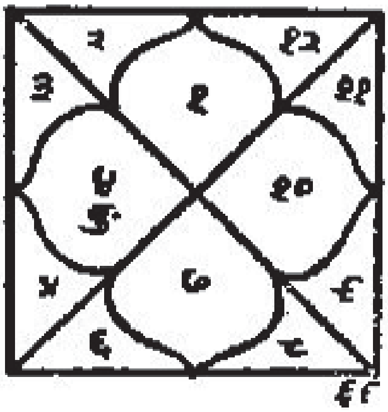

शत्रुक्षेत्रस्थ 'बुध'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'बुध' अपने शत्रु ग्रह (चन्द्रमा) की राशि (कर्क) में बैठा हो, वह सामान्य सुख पाने वाला, वासनाशील, कर्त्तव्यहीन, दुःखी, मूर्ख परन्तु अपनी बात का धनी होता है।

शत्रुक्षेत्रस्थ 'गुरु'

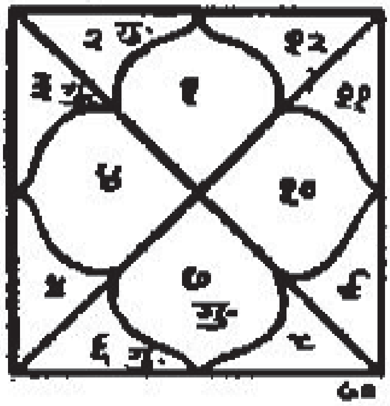

शत्रुक्षेत्रस्थ 'गुरु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'गुरु' अपने शत्रु (शुक्र अथवा बुध) की राशि (वृष, तुला, कन्या अथवा मिथुन) में बैठा हो, वह भाग्यशाली, क्रोधी, चतुर, क्षुधातुर तथा अपनी आजीविका को स्वयं ही नष्ट कर लेने वाला होता है।

शत्रुक्षेत्रस्थ 'शुक्र'

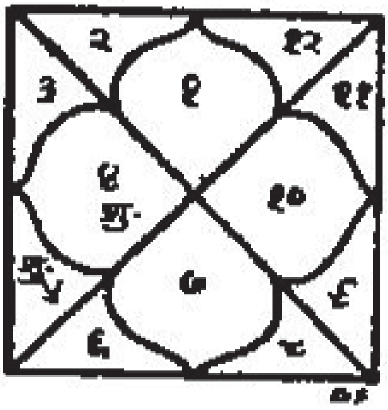

शत्रुक्षेत्रस्थ 'शुक्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शुक्र' अपने शत्रु (बुध अथवा चन्द्रमा) की राशि (सिंह अथवा कर्क) में बैठा हो, वह दास्य-वृत्ति (नौकरी) करके अपनी आजीविका का उपार्जन करने वाला, दुःखी तथा दुर्बुद्धि होता है।

शत्रुक्षेत्रस्थ 'शनि'

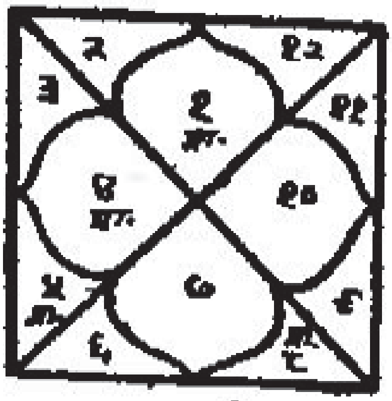

शत्रुक्षेत्रस्थ 'शनि'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शनि' अपने शत्रु (सूर्य, चन्द्र अथवा मंगल) की राशि (सिंह, कर्क, मेष अथवा वृश्चिक) में बैठा हो, वह किसी-न-किसी कारण से निरंतर चिन्तित एवं दुःखी बना रहने वाला, मलिन-हृदय वाला, रोगी तथा धनहीन होता है।

शत्रुक्षेत्रस्थ 'राहु'

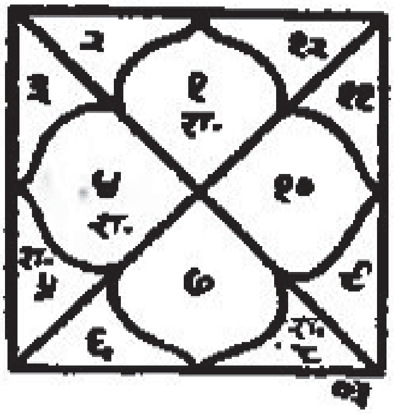

शत्रुक्षेत्रस्थ 'राहु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'राहु' अपने शत्रु (सूर्य, चन्द्र, अथवा मंगल) की राशि (सिंह, कर्क, मेष अथवा वृश्चिक) में बैठा हो, वह शत्रुक्षेत्री शनि जैसा फल प्राप्त करता है। सूर्य अथवा चन्द्रमा की राशि पर बैठा हो तो उनके प्रभाव को अधिक हानि पहुँचाता है।

शत्रुक्षेत्रस्थ 'केतु'

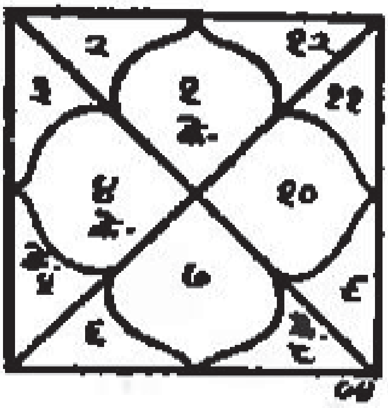

शत्रुक्षेत्रस्थ 'केतु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'केतु' अपने शत्रु (सूर्य, चन्द्र अथवा मंगल) की राशि (सिंह, कर्क, मेष अथवा वृश्चिक) में बैठा हो, वह शत्रुक्षेत्री शनि जैसा फल प्राप्त करता है। सूर्य अथवा चन्द्रमा की राशि पर बैठा हो तो उनके प्रभाव में बहुत कमी ला देता है।

नीच राशिस्थ ग्रहों का फलादेश

नीच राशिस्थ विभिन्न ग्रहों का संक्षिप्त फलादेश निम्नानुसार समझना चाहिए। यहाँ प्रदर्शित सभी उदाहरण-कुण्डलियाँ मेष लग्न की हैं। अन्य लग्नों की कुण्डलियों के विषय में भी इन्हीं के आधार पर जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। जिस जातक की जन्मकुण्डली में जितने अधिक ग्रह नीच राशिस्थ होते हैं, वह उतना ही अशुभ फल प्राप्त करता है। यदि तीन या अधिक ग्रह नीच राशि के हों तो वह जातक मूर्ख होता है।

नीचराशिस्थ 'सूर्य'

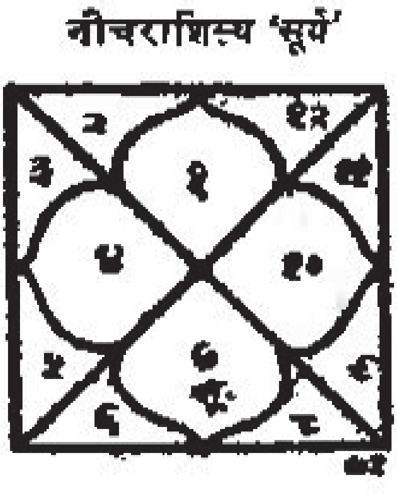

नीचराशिस्थ 'सूर्य'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'सूर्य' नीच राशि (तुला) का हो, वह बन्धु-सेवी, पाप कर्म करने वाला, कटुभाषी, आत्म-बलहीन, किसी पर विश्वास न करने वाला, अल्पकेशी तथा विकृत दाँतों वाला होता है।

नीचराशिस्थ 'चन्द्र'

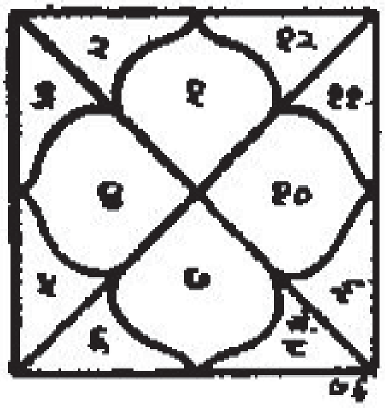

नीचराशिस्थ 'चन्द्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'चन्द्रमा' नीच राशि (वृश्चिक) का हो, वह नीच प्रकृति वाला, रोगी, अल्पधनी, कुबुद्धि, बकवादी, संशयालु तथा धूर्तों एवं नाचने तथा बाजा बजाने वालों की संगति करने वाला होता है।

नीचराशिस्थ 'मंगल'

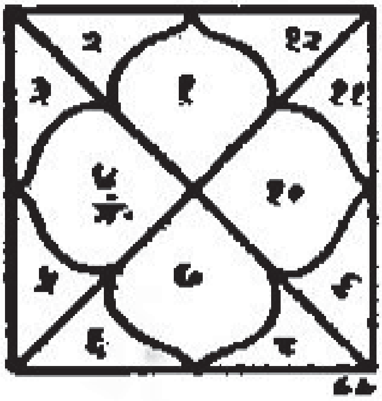

नीचराशिस्थ 'मंगल'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'मंगल' नीच राशि (कर्क) का हो, वह नीच स्वभाव का, कृतघ्न, चोर, दुष्ट हृदय वाला, रात्रि में भ्रमण करने वाला, परन्तु बुद्धिमान, गुणवान तथा धनवान होता है।

नीचराशिस्थ 'बुध'

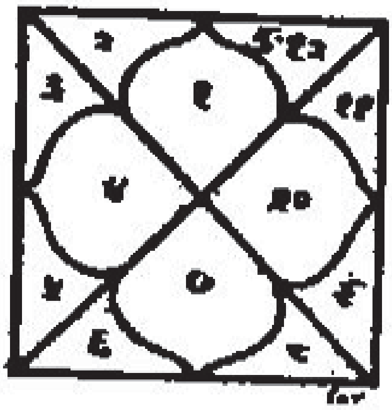

नीचराशिस्थ 'बुध'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'बुध' नीचराशि (मीन) का हो, वह बन्धु-विरोधी, चंचल-स्वभाव वाला तथा उग्र प्रकृति वाला, क्षुद्र बुद्धि एवं सन्तान-विहीन होता है। उसकी पत्नी सुशीला तथा पतिव्रता होती है।

नीचराशिस्थ 'गुरु'

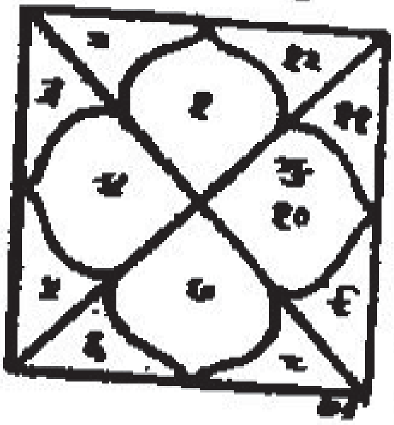

नीचराशिस्थ 'गुरु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'गुरु' नीचराशि (मकर) का हो, वह अपयश प्राप्त करने वाला, अपवादी, दुष्ट होता है। परन्तु इसके साथ ही सुख भोगने वाला, बहुत से लोगों का भरण-पोषण करने वाला, परदेश में रहने वाला तथा फल-फूल एवं सुन्दर स्त्री से युक्त भी होता है।

नीचराशिस्थ 'शुक्र'

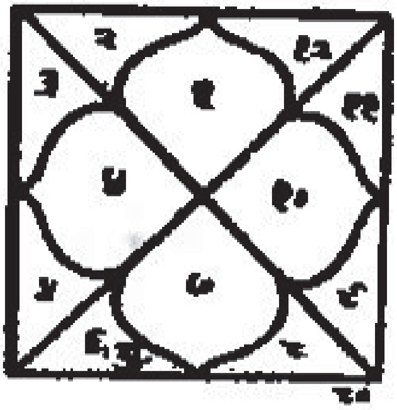

नीचराशिस्थ 'शुक्र'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शुक्र' नीचराशि (कन्या) का हो, वह किसी-न-किसी कारणवश निरन्तर दुःखी बना रहने वाला, विनोदी, कौतुकी, चतुर, पंडित तथा सब कलाओं में कुशल होता है।

नीचराशिस्थ 'शनि'

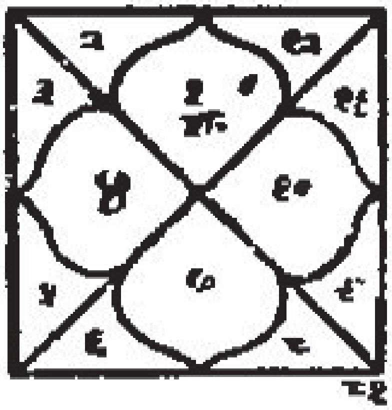

नीचराशिस्थ 'शनि'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'शनि' नीचराशि (मेष) का हो, वह स्वतन्त्र-विचारक, बन्धु-बान्धवों से युक्त, स्वेच्छाचारी, दृढ़ शरीर वाला, उच्च अधिकारी, ग्राम आदि का अधिपति, सुखी, सुन्दर तथा चंचल स्वभाव का होता है। मतान्तर से वह दुःख एवं दरिद्रता भी भोगता है।

नीचराशिस्थ 'राहु'

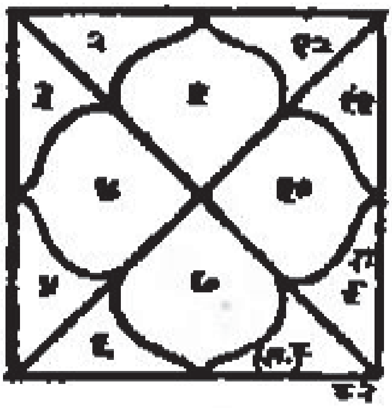

नीचराशिस्थ 'राहु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'राहु' नीचराशि (धनु, मतान्तर से वृश्चिक) का हो, वह कुरूप, पापी, दुर्बुद्धि, बन्धु-बान्धवों से हीन, खल तथा दुष्ट हृदय वाला होता है।

नीचराशिस्थ 'केतु'

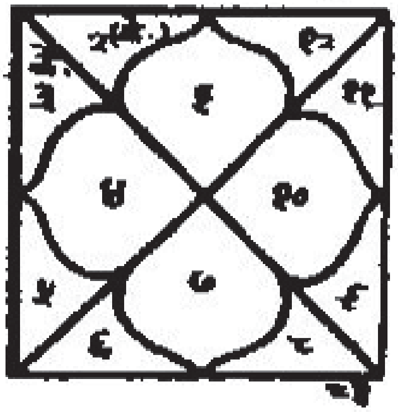

नीचराशिस्थ 'केतु'

जिस जातक की जन्मकुण्डली में 'केतु' नीचराशि (मिथुन, मतान्तर से वृष) का हो तो वह सुशील, दुःखी, काना, कामी, क्षयरोगी तथा स्त्री-विहीन होता है।

ग्रहों का दृष्टि-सम्बन्ध और स्थान-सम्बन्ध

ग्रहों के दृष्टि सम्बन्ध दो प्रकार के होते हैं—(१) सामान्य दृष्टि सम्बन्ध और (२) पारस्परिक दृष्टि सम्बन्ध। इनके विषय में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सामान्य दृष्टि-सम्बन्ध

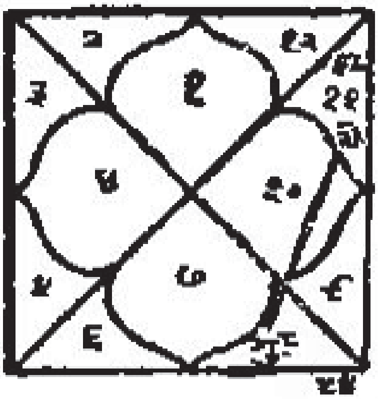

सामान्य दृष्टि-सम्बन्ध

जब कोई ग्रह अपने स्थान से किसी अन्य स्थान (भाव) को देखता है अथवा उस स्थान (भाव) में बैठे हुए किसी ग्रह को देखता है तो उसे 'सामान्य दृष्टि-सम्बन्ध' कहा जाता है।

उदाहरण कुण्डली में एकादश भाव में बैठा हुआ शनि अपने स्थान से दसवें अष्टम भाव में बैठे हुए गुरु को देख रहा है, अतः इसे गुरु के साथ शनि का 'सामान्य दृष्टि-सम्बन्ध' कहा जाएगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के 'सामान्य दृष्टि-सम्बन्ध' के विषय में भी समझ लेना चाहिए। कौन-सा ग्रह अपने स्थान से किन-किन भावों को किन दृष्टियों से देखता है, इस विषय का वर्णन पहले ही किया जा चुका है।

पारस्परिक दृष्टि-सम्बन्ध

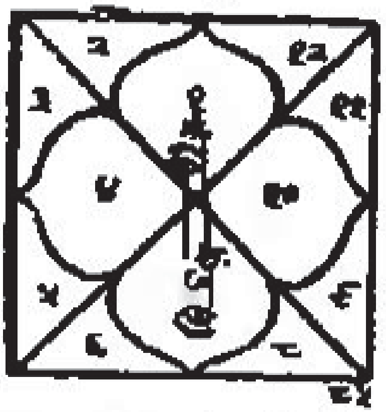

पारस्परिक दृष्टि-सम्बन्ध

जब कोई दो ग्रह अलग-अलग भावों में बैठे हुए एक दूसरे के ऊपर अपनी दृष्टि डालते हैं तो उसे उन ग्रहों का 'पारस्परिक दृष्टि-सम्बन्ध' कहा जाता है।

उदाहरण कुण्डली में लग्न में बैठा हुआ मंगल सप्तम भाव में बैठे हुए शनि पर अपनी पूर्ण दृष्टि डाल रहा है तथा सप्तम भाव में बैठा हुआ शनि लग्न में बैठे हुए मंगल को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। अतः यह दोनों ग्रहों का पारस्परिक दृष्टि-सम्बन्ध हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के बारे में भी समझ लेना चाहिए।

स्थान सम्बन्ध

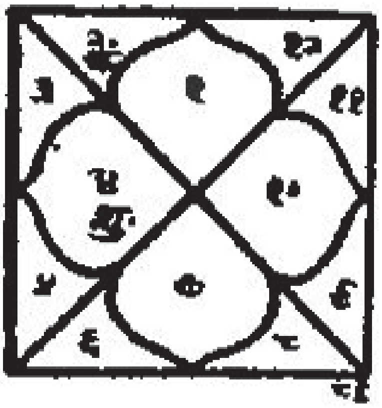

स्थान-सम्बन्ध

जब कोई दो ग्रह अलग-अलग एक दूसरे के स्थान (भाव) में बैठे हों, तो उसे उन ग्रहों का 'स्थान-सम्बन्ध' कहा जाएगा।

उदाहरण कुण्डली में चन्द्रमा की कर्क राशि में शुक्र बैठा है तथा शुक्र की वृष राशि में चन्द्रमा बैठा है। इस प्रकार ये दोनों ग्रह एक-दूसरे के स्थान में बैठे हैं।

फलतः इनमें 'स्थान-सम्बन्ध' हो गया। इसी भाँति अन्य ग्रहों के 'स्थान-सम्बन्ध' के बारे में भी समझ लेना चाहिए।

ग्रहों का जातक के जीवन पर प्रभाव

उक्त 'सामान्य दृष्टि-सम्बन्ध', 'पारस्परिक दृष्टि-सम्बन्ध' तथा 'स्थान-सम्बन्ध' के कारण ग्रह अपने गुण-कर्म-स्वभाव आदि का एक दूसरे से मिलकर, जातक के जीवन पर प्रभाव डालते हैं। तात्पर्य यह कि ऐसे सम्बन्धों से एक ग्रह का स्वभाव दूसरे में सम्मिलित हो जाता है। ऐसी स्थिति में, यदि दोनों ग्रह परस्पर 'मित्र' हुए तो वे जातक के जीवन पर अपना विशेष प्रभाव प्रदर्शित करेंगे, यदि 'शत्रु' हुए तो एक-दूसरे के विपरीत प्रभाव डालेंगे, और यदि 'सम' हुए तो संयुक्त सामान्य-प्रभाव डालेंगे।

ग्रहों के उक्त पारस्परिक सम्बन्धों का विचार करते समय उनकी उच्च-नीच, स्वक्षेत्री, शत्रुक्षेत्री आदि स्थितियों पर भी विचार करना आवश्यक है। उन सबके समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलेगा, वही सच्चा फलादेश होगा।

लग्न और राशि

जन्मकुण्डली में द्वादश भाव होते हैं। जातक के जन्म के समय जो राशि आकाशमण्डल में दिखाई दे रही होती है, उसी को 'लग्न' मान कर कुण्डली के प्रथम भाव में स्थापित किया जाता है, शेष राशियों को क्रमशः उससे आगे के भावों में स्थापित किया जाता है। उदाहरण के लिए यदि किसी जातकका जन्म आकाशमण्डल में सिंह राशि के दिग्दर्शन के समय हुआ तो सिंह राशि के सूचक अंक ५ को जन्म-कुण्डली के प्रथम भाव में लिखा जाएगा और यह कहा जाएगा कि जातक का जन्म सिंह लग्न में हुआ है। उसी समय भचक्र में चन्द्रमा यदि सिंह राशि में ही भ्रमण कर रहा होगा तो चन्द्रमा को भी कुंडली के पहले भाव अर्थात् लग्न वाले खाने में ही लिखा जाएगा और यह कहा जाएगा कि जातक का जन्म सिंह लग्न तथा सिंह राशि में ही हुआ है। परन्तु यदि चन्द्रमा उस समय भचक्र की तुला राशि में भ्रमण कर रहा होगा तो चन्द्रमा को कुंडली के तीसरे खाने अर्थात् अंक ७ वाली जगह में लिखा जायगा और यह कहा जायगा कि जातक का जन्म सिंह लग्न में तथा तुला राशि में हुआ है।

लग्न और राशि के इस अन्तर को खूब अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। जातक की जन्मकुंडली के प्रथम भाव में जिस राशि का अंक होगा, उसे जातक की 'लग्न' कहा जाएगा तथा जिस भाव में चन्द्रमा की स्थिति होगी, उसे जातक की 'राशि' कहा जाएगा।

आगे १२ उदाहरण कुण्डलियों के माध्यम से यह बताया गया है कि विभिन्न लग्नों की कुंडलियों का स्वरूप कैसा होता है।

कुण्डली में कौन-सा ग्रह कहाँ बैठेगा, इसका निर्णय जातक के जन्म के समय तथा उस समय भचक्र में विभिन्न ग्रहों की स्थिति के अनुसार पञ्चांग के आधार पर किया जाता है। इस विषय के सम्यक्-ज्ञान के लिए या तो किसी ज्योतिषी से सम्पर्क करना चाहिए अथवा हमारी लिखी पुस्तक 'ज्योतिष शास्त्र' का अध्ययन करना चाहिए।

'मेष' लग्न की कुण्डली

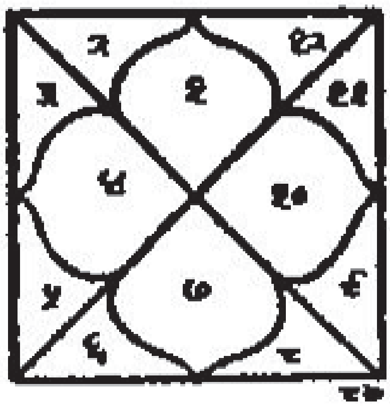

'वृष' लग्न की कुण्डली

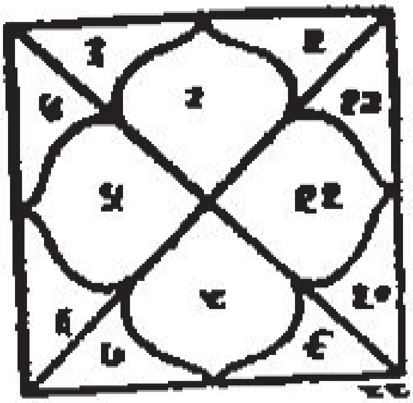

'मिथुन' लग्न की कुण्डली

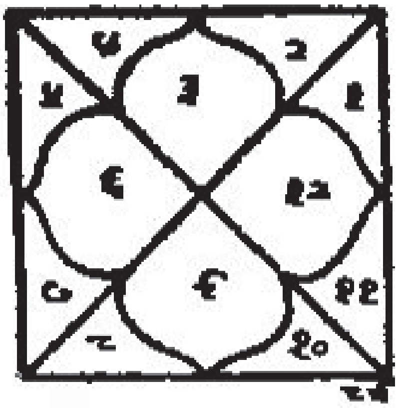

'कर्क' लग्न की कुण्डली

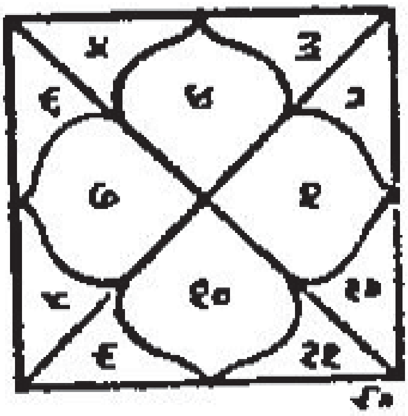

'सिंह' लग्न की कुण्डली

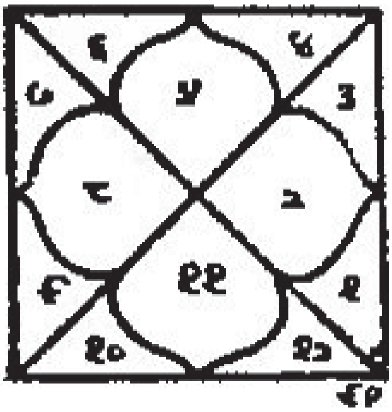

'कन्या' लग्न की कुण्डली

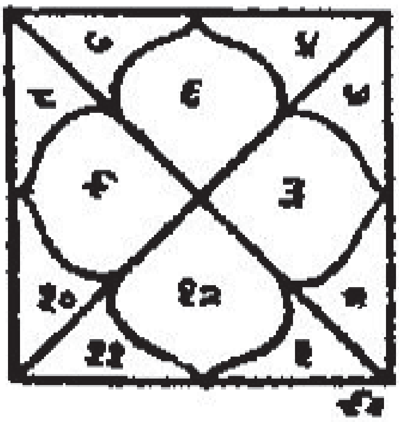

'तुला' लग्न की कुण्डली

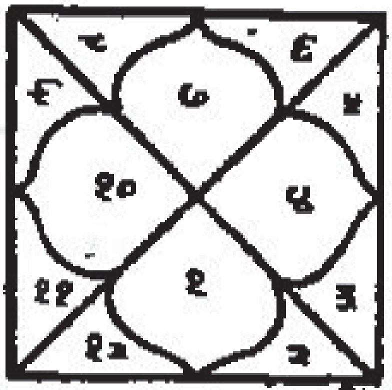

६३

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली

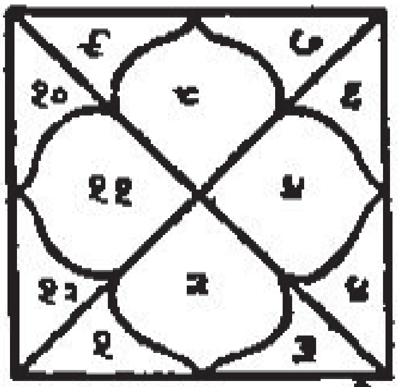

६४

'धनु' लग्न की कुण्डली

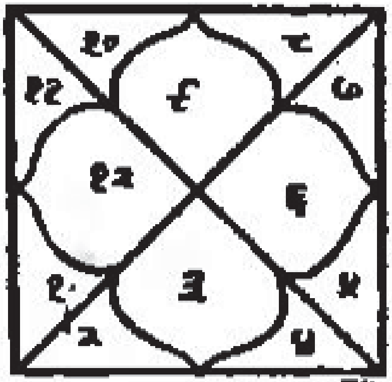

६५

'मकर' लग्न की कुण्डली

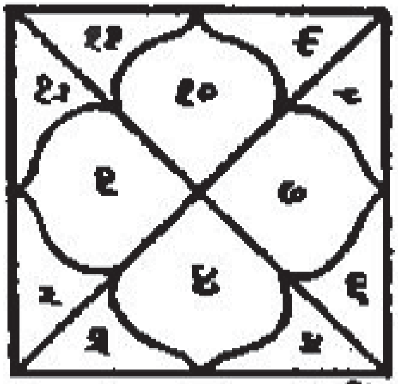

६६

'कुम्भ' लग्न की कुण्डली

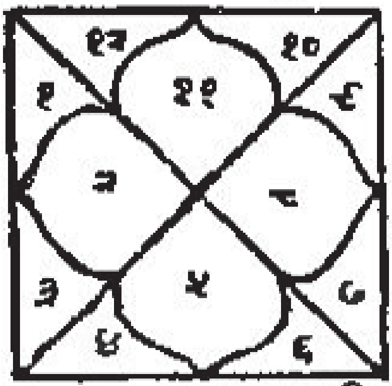

६७

'मीन' लग्न की कुण्डली

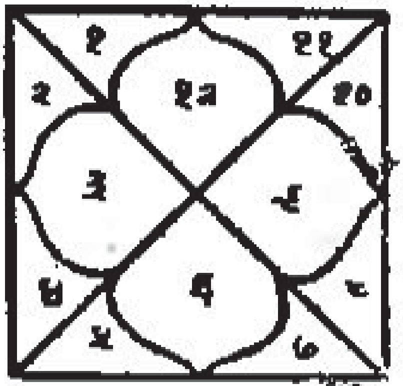

६८

विभिन्न राशियों की कुण्डली के स्वरूप को नीचे प्रदर्शित उदाहरण कुण्डलियों के आधार पर समझ लेना चाहिए। ये सभी कुण्डलियाँ मेष लग्न की हैं, परन्तु इनमें 'चन्द्रमा' की स्थिति को अलग-अलग भावों में दिखाया गया है। जिस कुण्डली के जिस भाव में चन्द्रमा बैठा है उस भाव में स्थित राशि ही जातक की जन्मकालीन राशि मानी जायेगी। इन कुण्डलियों के आधार पर अन्य लग्न वाली कुण्डलियों से भी राशि का निश्चय किया जा सकता है।

'मेष' राशि की कुण्डली

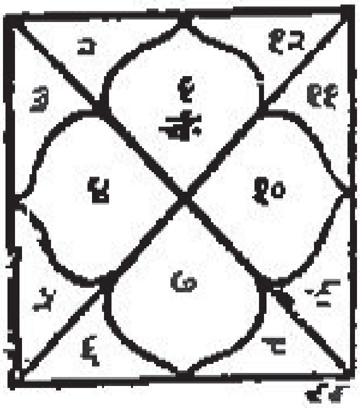

९९

'वृष' राशि की कुण्डली

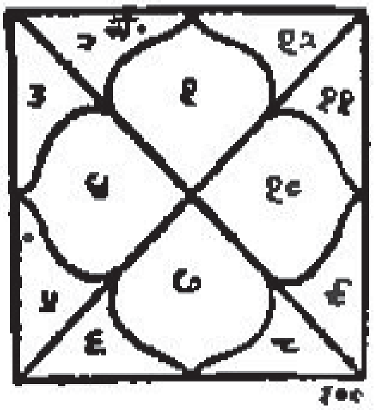

१००

'मिथुन' राशि की कुण्डली

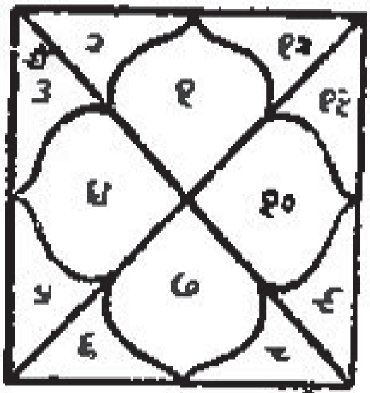

१०१

'कर्क' राशि की कुण्डली

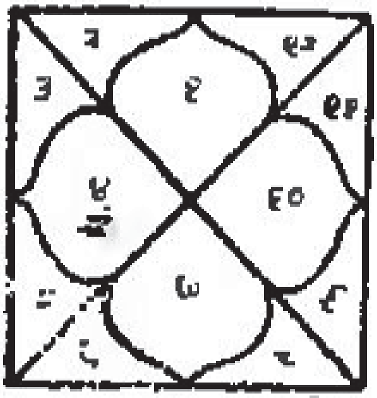

१०२

'सिंह' राशि की कुण्डली

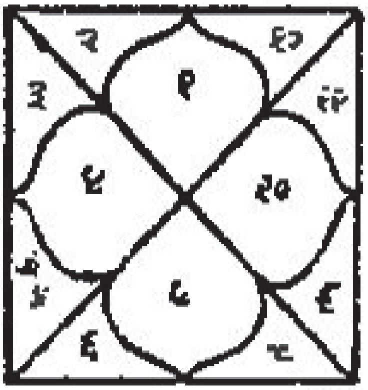

१०३

'कन्या' राशि की कुण्डली

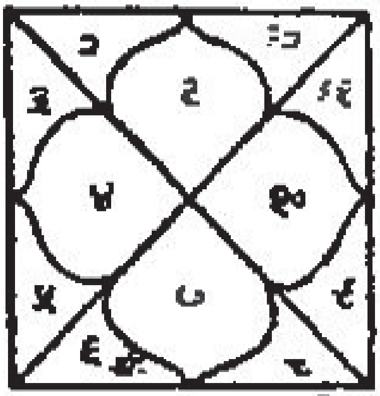

१०४

'तुला' राशि की कुण्डली

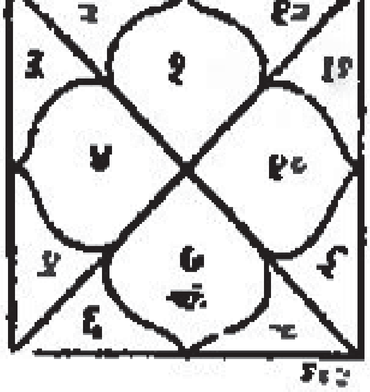

१०५

'वृश्चिक' राशि की कुण्डली

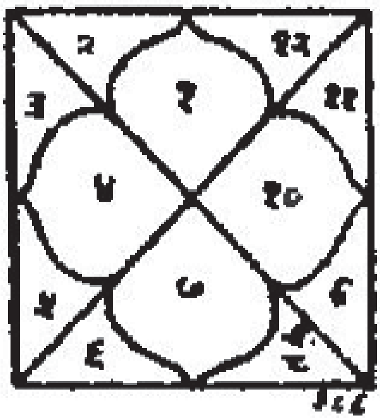

१०६

'धनु' राशि की कुण्डली

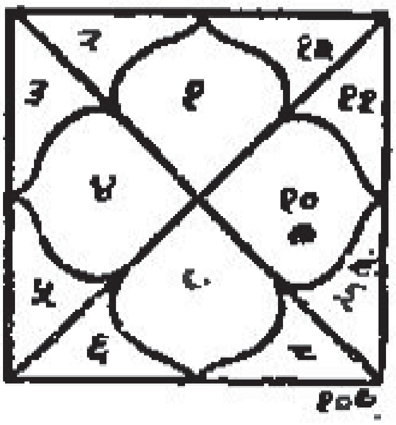

'मकर' राशि की कुण्डली

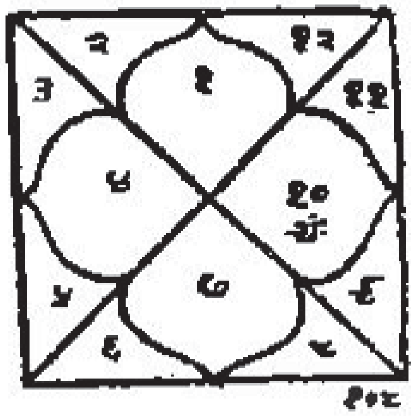

'कुम्भ' राशि की कुण्डली

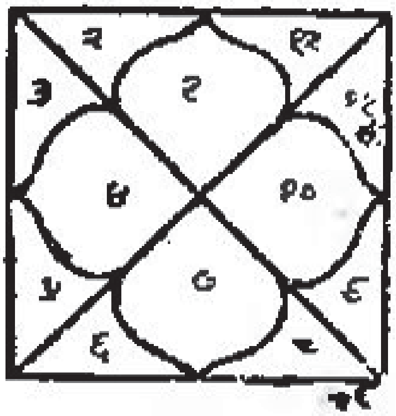

'मीन' राशि की कुण्डली

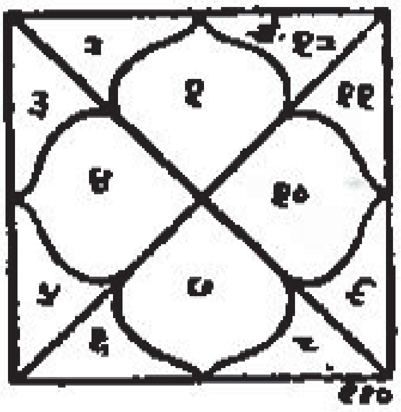

स्थानाधिपति

जातक की जन्मकुण्डली में जो राशि जिस स्थान (भाव या खाने) में स्थित होती है, उस राशि का स्वामी ग्रह ही उस स्थान भाव का अधिपति अर्थात् 'स्थानाधिपति' होता है। जैसे—किसी कुण्डली के चतुर्थभाव में सिंह राशि (५) स्थित है तो सिंह राशि के स्वामी 'सूर्य' को ही उस स्थान अर्थात् भाव का अधिपति अर्थात् 'सुखेश' माना जायेगा, फिर चाहे वह सूर्य कुण्डली के अन्य किसी भी भाव में स्थित क्यों न हो। मान लीजिए कि वह चतुर्थभाव में न रह कर दशमभाव में बैठा है तो यह कहा जायेगा कि 'चतुर्थेश या सुखेश राज्य अर्थात् दशमभाव में चला गया है।' इसी प्रकार सब भावों, राशियों तथा ग्रहों के सम्बन्ध में समझ कर किस भाव का स्थानाधिपति कहाँ बैठा है, इसकी जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

स्थानाधिपतियों के नाम

विभिन्न भावों के स्वामियों को निम्नलिखित नामों से पुकारा जाता है :

१. प्रथम भाव के स्वामी को—प्रथमेश, लग्नेश, देहाधीश।

२. द्वितीयभाव के स्वामी को—द्वितीयेश, धनेश, द्रव्येश।

३. तृतीयभाव के स्वामी को—तृतीयेश, सहजेश, पराक्रमेश।

४. चतुर्थभाव के स्वामी को—चतुर्थेश, सुखेश, सुहृदेश।
५. पंचमभाव के स्वामी को—पंचमेश, सन्तानेश, विद्येश।
६. षष्ठ भाव के स्वामी को—षष्ठेश, द्वेषेश, शत्रुवेश।
७. सप्तमभाव के स्वामी को—सप्तमेश, जायेश, मदनेश।
८. अष्टमभाव के स्वामी को—अष्टमेश, जीवनेश, कालेश।
९. नवमभाव के स्वामी को—नवमेश, भाग्येश, धर्मेश।
१०. दशमभाव के स्वामी को—दशमेश, राज्येश, कर्मेश।
११. एकादशभाव के स्वामी को—एकादशेश, लाभेश, उत्तमेश।
१२. द्वादशभाव के स्वामी को—द्वादशेश, व्ययेश, दण्डेश।

विशिष्ट ज्ञातव्य-विषय

१. भावों की गणना लग्न से आरंभ की जाती है। लग्न को पहला भाव (घर) मान कर क्रमशः उसके बाईं ओर को गिनते हुए द्वादश भावों की गणना करनी चाहिए। लग्न कोई भी क्यों न हो, इससे क्रमिक-गणना में कोई अन्तर नहीं आता।

२. जन्मकुण्डली के द्वादश भावों में स्थित विभिन्न राशियों के भावों को उनके लिए निश्चित अंकों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। जैसे—मेष के लिए १, वृष के लिए २, मिथुन के लिए ३, कर्क के लिए ४, सिंह के लिए ५, कन्या के लिए ६, तुला के लिए ७, वृश्चिक के लिए ८, धनु के लिए ९, मकर के लिए १०, कुम्भ के लिए ११ और मीन के लिए १२।

३. उच्चस्थ, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री अथवा उच्चक्षेत्र एवं स्वक्षेत्र पर दृष्टि डालने वाले ग्रह जिस स्थान पर बैठे होते हैं अथवा जहाँ दृष्टि डालते हैं, उस स्थान के फल की वृद्धि करते हैं। यथा—

'सूर्य' सिंह, मेष, वृश्चिक, धनु अथवा मीन राशि पर बैठा हो अथवा इन पर दृष्टि डालता हो।

'चन्द्रमा' कर्क, वृष, सिंह, मिथुन अथवा कन्या राशि पर बैठा हो अथवा इन पर दृष्टि डालता हो।

'मंगल' मेष, वृश्चिक, मकर, सिंह, कर्क, धनु अथवा मीन राशि पर बैठा हो अथवा इन पर दृष्टि डालता हो।

'बुध' मिथुन, कन्या, सिंह, वृष अथवा तुला राशि पर बैठा हो अथवा इन पर दृष्टि डालता हो।

'गुरु' धनु, मीन, कर्क, सिंह, मेष अथवा वृश्चिक राशि पर बैठा हो अथवा इन पर दृष्टि डालता हो

'शुक्र' वृष, तुला, मीन, कन्या, मिथुन, मकर अथवा कुंभ राशि पर बैठा हो अथवा इन पर दृष्टि डालता हो।

'शनि' मकर, कुम्भ, तुला, कन्या, मिथुन, वृष अथवा तुला राशि पर बैठा हो अथवा इन पर दृष्टि डालता हो।

'राहु' मिथुन (मतान्तर से वृष) राशि पर बैठा हो, अथवा लग्न से तीसरे, छठे अथवा ग्यारहवें में से किसी भी ऐसे स्थान में बैठा हो, जहाँ धनु राशि न हो।

'केतु' धनु (मतान्तर से वृश्चिक) राशि पर बैठा हो अथवा लग्न से तीसरे, छठे अथवा ग्यारहवें में से किसी भी ऐसे स्थान में बैठा हो, जहाँ मिथुन राशि न हो।

केन्द्र अर्थात् पहले, चौथे, सातवें एवं दसवें भाव में बैठे हुए सभी ग्रह विशेष शक्तिशाली होने के कारण अपना पूर्ण प्रभाव प्रदर्शित करते हैं।

५. त्रिकोण अर्थात् पाँचवें एवं नवें भाव में बैठे हुए सभी ग्रह जातक के धन की वृद्धि करते हैं।

६. दूसरे तथा ग्यारहवें भाव में बैठे हुए सभी ग्रह जातक के धन की वृद्धि करते हैं। विशेषत: ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ प्रत्येक ग्रह विशेष लाभकारी होता है।

७. तृतीय भाव में बैठे हुए ग्रह जातक के पराक्रम को बढ़ाते हैं।

८. प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम, दशम तथा एकादश भाव में बैठे हुए ग्रह उत्तम फल देते हैं।

९. षष्ठ, अष्टम तथा द्वादश भाव में बैठे हुए ग्रह जातक के लिए कठिनाइयाँ उपस्थित करते हैं।

१०. लग्न से तीसरे, छठे तथा ग्यारहवें भाव में क्रूर ग्रहों—शनि, केतु का बैठना शक्ति एवं शुभफल देने वाला होता है।

११. ग्यारहवें भाव में बैठे हुए सभी ग्रह शुभफल देते हैं।

१२. आठवें तथा बारहवें भाव में बैठे हुए सभी ग्रह जातक को थोड़ी-बहुत हानि अवश्य पहुँचाते हैं।

१३. जिस भाव का जो ग्रह कारक माना गया है, वह यदि अकेला उसी भाव में बैठा हो तो उस भाव को बिगाड़ देता है।

१४. जिस भाव का स्वामी उच्च राशिस्थ, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री अथवा मूल त्रिकोण स्थित होता है, उस भाव का शुभ फल प्राप्त होता है।

१५. जिस भाव में शुभ ग्रह बैठा हो, उसका फल उत्तम होता है तथा जिसमें पाप ग्रह बैठा हो, उसके शुभ फल की हानि पहुँचती है।

१६. जो ग्रह सूर्य के बराबर अथवा उसके निकटवर्ती अंशों पर होता है, उसे 'पूर्ण अस्त' माना जाता है। जो ग्रह सूर्य से ८ अंश की दूरी पर होता है, उसे 'आधा अस्त' माना जाता है तथा जो ग्रह सूर्य के 15 अंश की दूरी पर होता है उसे 'पूर्ण उदय' माना जाता है।

पूर्ण उदय ग्रह पूर्ण प्रभाव देता है, आधा अस्त ग्रह आधा प्रभाव देता है तथा पूर्ण अस्त ग्रह प्रभावहीन होता है।

१७. जिस भाव का अधिपति किसी शुभग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो, अथवा जिस भाव में शुभ ग्रह बैठा हो अथवा जिस भाव को शुभग्रह देख रहा हो, उसका फल शुभ होता है।

१८. जिस भावमें कोई पाप ग्रह बैठा हो अथवा उस भाव के अधिपति के साथ कोई पाप ग्रह बैठा हो अथवा उस भाव या उस भाव के अधिपति पर पाप ग्रह की दृष्टि पड़ रही हो तो उसका फल अशुभ होता है।

१९. किसी भाव का स्वामी पाप ग्रह हो और वह लग्न से तृतीय स्थान में बैठा हो तो शुभ फल देगा, परन्तु किसी भाव का स्वामी शुभ ग्रह हो और वह उस भाव से तीसरे स्थान पर बैठे तो मध्यम फल देगा।

२०. जिस भाव में उसका अधिपति ग्रह अथवा शुक्र, बुध या गुरु में से कोई बैठा हो अथवा इन पर दृष्टि पड़ रही हो अथवा वह अपने भाव के स्वामी के अतिरिक्त किसी अन्य ग्रह संयुक्त अथवा दृष्ट न हो तो वह शुभ फल देने वाला सिद्ध होगा।

२१. आठवें भाव में जो राशि हो, उसका स्वामी जिस भाव में बैठा होता है, उसे बिगाड़ देता है।

२२. राहु, केतु जिस भाव में रहते हैं, उसे बिगाड़ देते हैं।

२३. चन्द्रमा, बुध, शुक्र, केतु तथा गुरु—ये सब क्रमशः एक दूसरे से अधिक शुभ ग्रह हैं। ये ग्रह यदि अपनी राशियों में बैठे हों तो अधिक शुभ फल देते हैं और यदि पाप ग्रहों (सूर्य, मंगल, शनि तथा राहु) की राशि में बैठे हों तो अल्प शुभ फल देते हैं। स्मरणीय है कि फल का विचार करते समय केतु को प्रायः पापग्रह माना जाता है, परन्तु वैसे केतु की गणना शुभ ग्रहों में की जाती है।

२४. सूर्य, मंगल, शनि तथा राहु—ये सब क्रमशः एक दूसरे से अधिक पाप ग्रह हैं। ये ग्रह यदि अपनी राशि में बैठे हों तो अधिक शुभ फल देते हैं। यदि अपने मित्र की राशि, अपनी उच्च राशि अथवा किसी शुभ ग्रह की राशि में बैठे हों तो न्यून मात्रा में अशुभ फल देते हैं।

२५. राहु जिसे अशुभ फल देता है, केतु उसे शुभ फल देता है तथा केतु जिसे अशुभ फल देता है, राहु उसे शुभ फल देता है—यह इन दोनों ग्रहों की एक विशिष्टता है।

२६. आठवें भाव का अधिपति अर्थात् अष्टमेश जिस भाव में बैठा होता है, उस भाव को बिगाड़ता है।

२७. राहु-केतु जिस भाव में बैठे होते हैं, उसे बिगाड़ देते हैं।

दैनिक ग्रहगोचर का प्रभाव

जन्मकुण्डली जातक के जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति की परिचायक होती है तथा उन ग्रहों को स्थिति का जातक के जीवन पर स्थायी प्रभाव पड़ता रहता है, परन्तु आकाशमण्डल में विभिन्न ग्रह निरन्तर भ्रमण करते रहते हैं जिनका तात्कालिक-अस्थायी प्रभाव भी जातक के दैनिक-जीवन पर पड़ता रहता है। इस प्रकार प्रत्येक ग्रह प्रत्येक प्राणी के जीवन पर अपना दो प्रकार से प्रभाव डालता है। अस्तु, स्थायी प्रभाव के साथ ही ग्रहों के अस्थायी प्रभाव का विचार करना भी आवश्यक होता है। दैनिक ग्रह गोचर में किस समय कौनसा ग्रह किस स्थान पर चल रहा है, इसका ज्ञान 'पंचांग' द्वारा प्राप्त किया जाता है। इस विषय की जानकारी किसी ज्योतिषी से पूछ कर, अथवा एतद् विषयक हमारी अन्य पुस्तकों का अध्ययन करके प्राप्त की जा सकती है।

इस पुस्तक के द्वितीय खण्ड में जन्मकुण्डली के जिस भाव तथा राशि में स्थित स्थायी ग्रहों के जिस फलादेश का उल्लेख किया गया है, दैनिक ग्रहगोचर कुण्डली के विभिन्न भावों तथा राशियों में स्थित विभिन्न ग्रहों का फलादेश भी ठीक वैसा ही होता है। किस दिन, मास अथवा वर्ष में दैनिक ग्रह गोचरस्थ ग्रहों का फलादेश किस उदाहरण कुण्डली द्वारा ज्ञात करना चाहिए, इसका उल्लेख द्वितीय खण्ड में प्रत्येक लग्न की उदाहरण-कुण्डलियों का फलादेश आरंभ करने से पूर्व ही कर दिया गया है।

जन्म कुण्डलीस्थ ग्रह के स्थायी तथा दैनिक ग्रहगोचर के अस्थायी फलादेश के समन्वय स्वरूप जो भी निष्कर्ष निकले, उसी को सच्चा फलादेश समझना चाहिए।

'वर्ष कुण्डली' स्थित ग्रहों के फलादेश का ज्ञान भी जन्मकुण्डली स्थित ग्रहों के फलादेश की भाँति इसी पुस्तक की सहायता द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। वर्षकुण्डली स्थित 'मुंथा' एवं 'वर्षेश' के विशिष्ट फलादेश के विषय में किसी ज्योतिषी द्वारा जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। अथवा हमारी लिखी पुस्तक 'वर्षकुण्डली फल विचार' का अध्ययन करना चाहिए।

सम्मिलित परिवार का फलादेश

सम्मिलित परिवार होने पर उस परिवार के सभी सदस्यों की जन्मकुण्डली के ग्रहों का थोड़ा-बहुत प्रभाव एक दूसरे पर पड़ता रहता है। अतः सम्मिलित-परिवार के किसी सदस्य के विषय में ग्रहों का फलादेश ज्ञात करते समय यदि उस परिवार के अन्य सदस्यों की जन्मकुण्डलियों का भी सम्यक् अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला जाय तो उचित रहेगा। इस पुस्तक की सहायता के किसी भी स्त्री, पुरुष, बालक युवा अथवा वृद्ध मनुष्य की जन्मकुण्डलीस्थ ग्रहों के शुभाशुभ प्रभाव की जानकारी सरलतापूर्वक प्राप्त की जा सकती है।

गलत जन्मकुण्डली का संशोधन

जन्मकुण्डलीस्थ ग्रहों के फलादेश की यथार्थता शुद्ध लग्न पर निर्भर करती है। यदि लग्न ठीक न होगी तो जन्मकुण्डली के ग्रहों का फलादेश भी ठीक नहीं बैठेगा।

शुद्ध 'लग्न' का निर्णय जातक के ठीक जन्म समय के आधार पर किया जाता है। समय में थोड़ा-सा भी अन्तर पड़ जाने से लग्न के अशुद्ध हो जाने की सम्भावना रहती है, अतः लग्न की शुद्धता का विचार कर लेना आवश्यक है।

लग्न की शुद्धता का विचार करने की एक सरल विधि यहाँ दी जा रही है। इसके आधार हर गलत लग्न वाली कुण्डली का बिना किसी विशेष परिश्रम के सुधार किया जा सकता है। विधि इस प्रकार है—

उपस्थित जन्मकुण्डली के ग्रहों के फलादेश से यदि ज्ञात हो कि वह जातक के जीवन से ठीक मिल रहा है, तब तो कोई बात ही नहीं, परन्तु यदि फलादेश ठीक न मिले तो लग्न को अशुद्ध समझ कर दो कुण्डलियाँ ऐसी तैयार करनी चाहिए, जिनमें से एक में लग्न आगे की तथा दूसरी में पीछे की हो, फिर उन दोनों कुण्डलियों के विभिन्न भावों में उपस्थित कुण्डली के आधार पर ग्रहों को लिखकर उनके फलादेश का अध्ययन करें तथा जिस कुण्डली का फलादेश ठीक बैठता हो, उसी लग्न की कुण्डली को शुद्ध समझें।

उदाहरण के लिए नीचे तीन कुण्डली-चित्र दिये जा रहे हैं। उपस्थित कुण्डली 'वृश्चिक' लग्न की है, जिसे बीच में प्रदर्शित किया गया है। पहली तथा तीसरी उसी के आधार पर धनु तथा मकर लग्न की कुण्डलियाँ दिखाई गई हैं। इन तीनों कुण्डलियों में से जिसका फलादेश जातक के जीवन पर ठीक-ठीक घटे, उसी की लग्न शुद्ध समझनी चाहिए।

'धनु' लग्न की कुण्डली

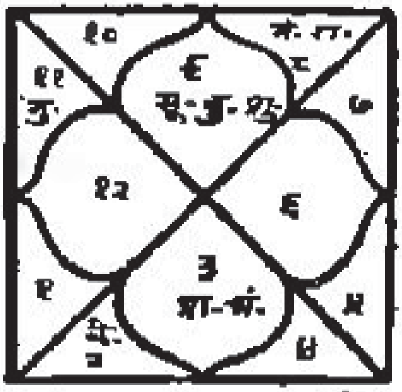

१११

'वृश्चिक' लग्न की कुण्डली

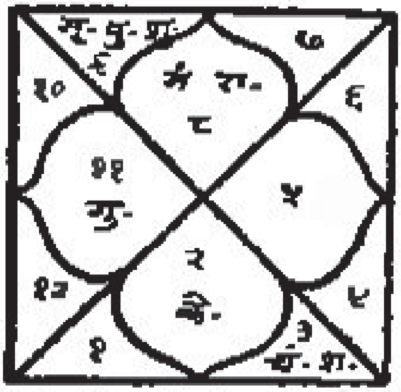

११२

'मकर' लग्न की कुण्डली

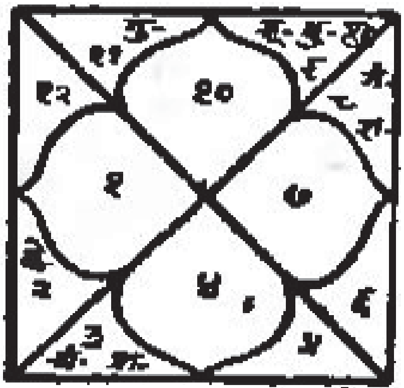

११३

इन उदाहरण-कुण्डलियों में जिस प्रकार लग्न को बदल कर उसके आधार पर विभिन्न भावों में विभिन्न ग्रहों को बैठाया गया है, इसी आधार पर किसी भी गलत लग्न वाली कुण्डली को शुद्ध किया जा सकता है।

हस्तलिखित, असली, प्राचीन

भृगुसंहिता फलित प्रकाश

●

फलादेश

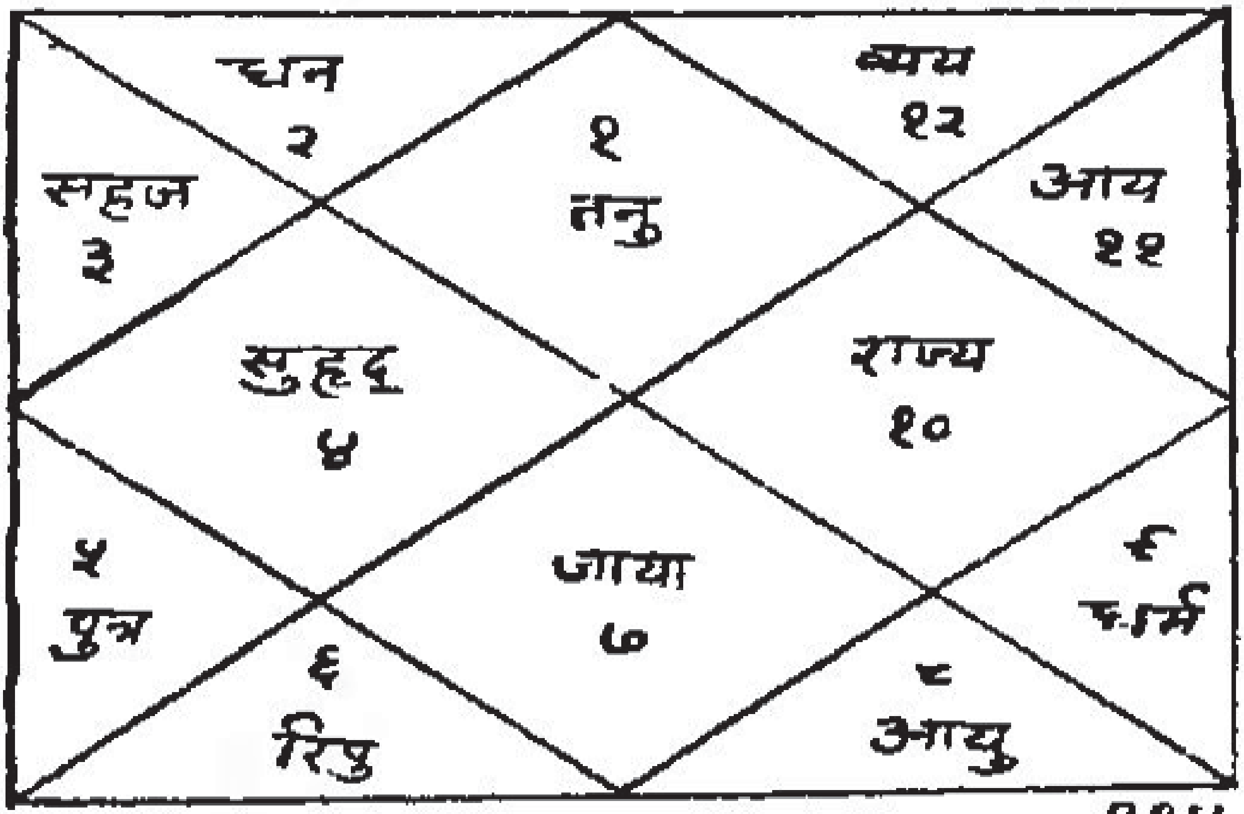

२१४

2

द्वितीय खण्ड

[द्वादश लग्नों की कुण्डलियों का फलादेश]

विभिन्न लग्नों वाली जन्मकुण्डलियों का फलादेश जानने की विधि

इस द्वितीय खण्ड में विभिन्न लग्नो वाली कुण्डलियों के विभिन्न भागों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन अलग-अलग उदाहरण-कुण्डलियों द्वारा प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक लग्न की उदाहरण कुण्डलियो को अलग-अलग अध्यायो में बाँट कर, विभिन्न ग्रहों के फलादेश को सूर्यादि के क्रम से अलग-अलग लिखा गया है। किस लग्न वाली कुण्डली का फलादेश किन संख्याओं वाली उदाहरण कुण्डलियों में देखना चाहिए, इसे निम्नानुसार समझ लें—

१. 'मेष लग्न'—उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६ से २२३ तक
२. 'वृष' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या २२५ से ३३२ तक
३. 'मिथुन' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या ३३४से ४४१ तक
४. 'कर्क' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४३ से ५५० तक
५. 'सिंह' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या ५५२ से ६५६ तक
६. 'कन्या' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६१ से ७६८ तक
७. 'तुला' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या ७७० से ८७७ तक
८. 'वृश्चिक' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या ८७९ से ९८६ तक
९. 'धनु' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या ९८८ से १०९५ तक
१०. 'मकर' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या १०९७ से ११०४ तक
११. 'कुम्भ' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०६ से १२१३ तक
१२. 'मीन' लग्न—उदाहरण-कुण्डली संख्या १२१५ से १३२२ तक

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों का जातक के जीवन पर स्थायी प्रभाव पड़ता है, परन्तु तात्कालिक गोचर कुण्डली के ग्रह भी उसके जीवन पर अपने स्थितिकाल में अस्थायी प्रभाव डालते रहते हैं। अतः जिस समय जो ग्रह जिस राशि पर चल रहा हो, उसके बारे में पंचांग अथवा किसी ज्योतिषी द्वारा जानकारी प्राप्त करके तात्कालिक प्रभाव के विषय में भी अवश्य जान लेना चाहिए।

उदाहरण के लिए 'सूर्य' किसी जातक की मेष लग्न वाली जन्मकुण्डली के द्वितीय भाव में बैठा है तो वह उदाहरण-कुण्डली संख्या ११७ के अनुसार जातक के जीवन पर अपना स्थायी प्रभाव डालता रहेगा। परन्तु जब वह तात्कालिक गोचर में मिथुन राशि पर चल रहा होगा, तब जातक के ऊपर मेष लग्न वाली कुण्डली के, मिथुन राशि वाले तृतीय भाव में स्थित सूर्य के अनुसार उदाहरण-कुण्डली संख्या

११८ में वर्णित फलादेश रूपी प्रभाव भी तब तक डालता रहेगा, जब तक कि वह गोचर में उस राशि से हट कर आगे कर्क राशि में नहीं चला जाता। कर्क राशि में पहुँच कर उदाहरण-कुण्डली संख्या ११९ के अनुसार प्रभाव डाल उठेगा। इसी प्रकार गोचर की सब राशियों तथा उनके ग्रहों के-अस्थायी-फलादेश के विषय में समझ लेना चाहिए।

उक्त विधि के प्रत्येक ग्रह के स्थायी तथा अस्थायी प्रभाव को जानकर, उसके समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने वर्तमान काल का यथार्थ फलादेश समझना चाहिए। गोचर के आधार पर किस ग्रह का फलादेश किस उदाहरण-कुण्डली में देखा जाय, इसका निर्देश प्रत्येक लग्न की उदाहरण-कुण्डलियों के आरम्भ में यथास्थान किया गया है।

स्मरणीय है कि इस ग्रंथ में प्रदर्शित प्रत्येक लग्न की उदाहरण-कुण्डलियों में विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन अलग-अलग किया गया है, अतः प्रत्येक जन्मकुण्डली का फलादेश ज्ञात करने के लिए ९ उदाहरण-कुण्डलियों के अध्ययन की आवश्यकता पड़ेगी। यही नियम गोचर कुण्डली के फलादेश पर भी लागू होगा।

यदि लग्न कुण्डली के किसी भाव में दो या उससे अधिक ग्रह एक साथ बैठे हों तो उनके विशिष्ट प्रभाव को 'ग्रहों' की युति, सम्बन्धी वाले तृतीय खण्ड में देखना चाहिए।

स्मरणीय है कि जो ग्रह जितने अंश का होता है, उसी के अनुरूप वह न्यूनाधिक फल प्रदान करता है। अतः ग्रहों के अंशों की जानकारी रखना भी आवश्यक है। यह जानकारी पंचांग अथवा किसी ज्योतिषी द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

उक्त विधि से इस पुस्तक द्वारा संसार के किसी भी स्त्री-पुरुष की जन्म कुण्डली का फलादेश ज्ञात किया जा सकता है। यदि ग्रंथ में वर्णित किसी विषय को समझने में कोई कठिनाई हो अथवा जन्मपत्र-निर्माण आदि ज्योतिष सम्बन्धी भी कोई जानकारी प्राप्त करनी हो तो जवाबी-पत्र लिख कर निम्न पते पर पूछताछ की जा सकती है। पता यह है—

पं० राजेश दीक्षित, कृष्णापुरी, मथुरा (उ० प्र०)

'मेष लग्न'

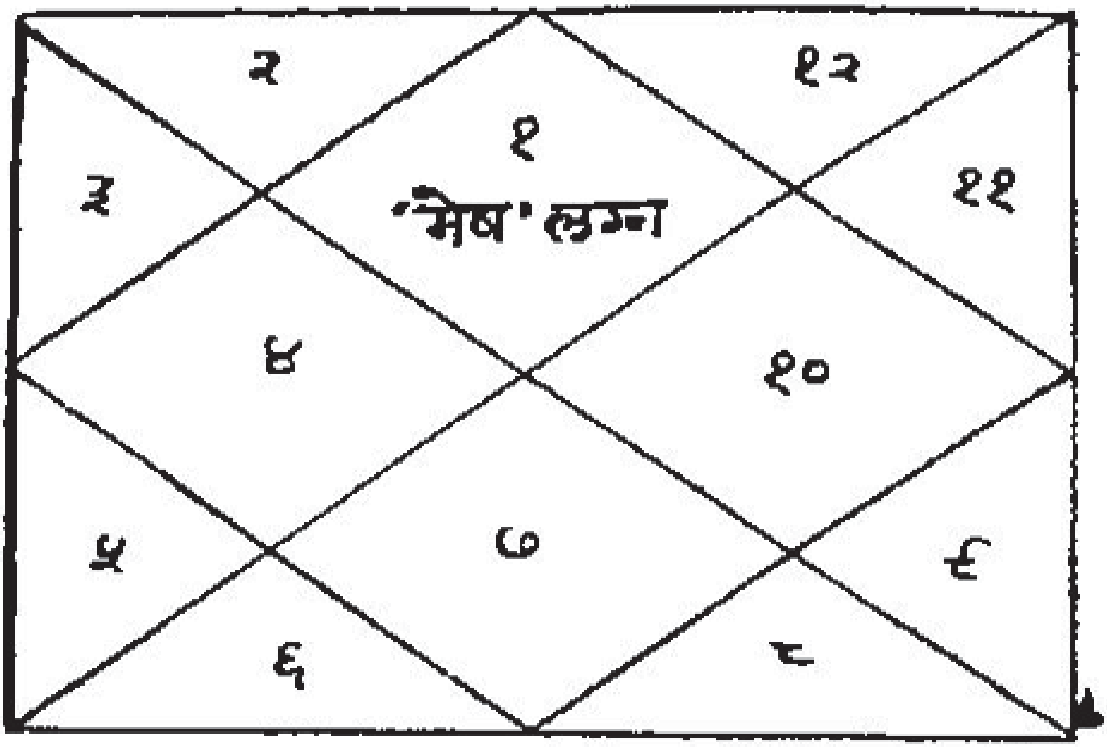

११५

['मेष' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'मेष' लग्न का फलादेश

'मेष' लग्न में जन्म लेने वाले जातक का शरीर दुबला तथा कुछ लालिमा लिए गौर वर्ण का होता है। वह स्वभाव से रजोगुणी, पित्त प्रकृति वाला, उग्र, अहंकारी, चंचल, अत्यन्त चतुर, बुद्धिमान, धर्मात्मा, उदार, कुल-दीपक तथा अल्प-संततिवान् होता है। स्त्रियों के प्रति उसका स्वार्थपूर्ण अल्प लगाव अथवा द्वेष होता है।

इस लग्न वाले जातक को अपनी आयु के ६, ८, १५, २१, ३६, ४४, ५६ तथा ६३वें वर्ष में धन-हानि एवं शारीरिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। आयु के १६, २०, २८, ३४, ४१, ४८ तथा ५१वें वर्ष में उसे धन, वाहन, सौभाग्य आदि का सुख प्राप्त होता है।

'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी-फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६ से २२३ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में दर्ज, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'मेष' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में 'सूर्य' का स्थायी-फलादेश उदाहरण कुण्डली-संख्या ११६ से १२७ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ११६
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ११७
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ११८
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ११९
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १२०
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १२१
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १२२
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १२३
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १२४
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १२५
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १२६
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १२७

'मेष' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १२८ से १३९ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १२८
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १२९
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १३०
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १३१
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १३२

(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १३३
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १३४
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १३५
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १३६
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १३७
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १३८
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १३९

'मेष' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १४० से १५१ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १४०
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १४१
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १४२
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १४३
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १४४
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १४५
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १४६
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १४७
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १४८
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १४९
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १५०
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १५१

'मेष' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १५२ से १६२ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १५२
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १५३
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १५४
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १५५
(ङ) 'सिंह' राशि पर-हो तो संख्या १५६
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १५७
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १५८
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १५९
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १६०
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १६१
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १६२
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १६३

'मेष' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या १६४ से १७५ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १६४
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १६५
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १६६
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १६७
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १६८
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १६९
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १७०
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १७१
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १७२
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १७३
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १७४
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १७५

'मेष' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १७६ से १८७ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १७६

(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १७७

(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १७८

(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १७६

(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १८०

(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १८१

(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १८२

(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १८३

(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १८४

(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १८५

(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १८६

(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १८७

'मेष' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १८८ से १९९ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १८८

(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १८६

(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १९०

(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १९१

(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १९२
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १९३
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १९४
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १९५
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १९६
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १९७
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १९८
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १९९

'मेष' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २०० से २११ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को अपनी गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २००
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २०१
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २०२
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २०३
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २०४
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २०५
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २०६
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २०७
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २०८
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २०९
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २१०
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २११

'मेष' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१—'मेष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण कुण्डली संख्या २१२ से २२३ के बीच देखना चाहिए।

२—'मेष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली से विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २१२
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २१३
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २१४
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २१५
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २१६
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २१७
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २१८
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २१९
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २२०
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २२१
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २२२
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २२३

'मेष' लग्न में 'सूर्य'

'मेष' लग्न वाली कुण्डली से 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : प्रथमभाव : सूर्य

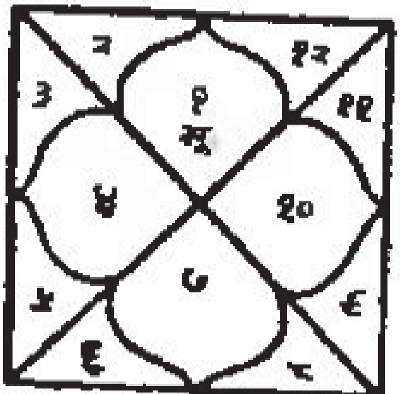

२२४

पहले भाव में अपने मित्र मंगल की राशि में उच्चस्थ सूर्य अपने मित्र मंगल की राशि पर है, अतः जातक तेजस्वी, विद्वान्, साहसी, स्वस्थ, स्वाभिमानी तथा पराक्रमी होगा। महत्वाकांक्षा, व्यवहार-कुशलता, धैर्य आदि सद्गुण प्राप्त होंगे तथा सन्तानें भी अधिक होंगी।

परन्तु सूर्य की सप्तमभाव पर नीच-दृष्टि पड़ने के कारण जातक से दाम्पत्य-सुख में कमी रहेगी। पत्नी (यदि स्त्री की जन्मकुण्डली हो तो पति) अधिक सुन्दर नहीं होगी। पति-पत्नी में मन-मुटाव भी रह सकता है। दैनिक जीविकोपार्जन के क्षेत्र में भी अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ आती रहेंगी।

'मेष' लग्न की कुण्डली से 'द्वितीयभाव' 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : द्वितीय भाव : सूर्य

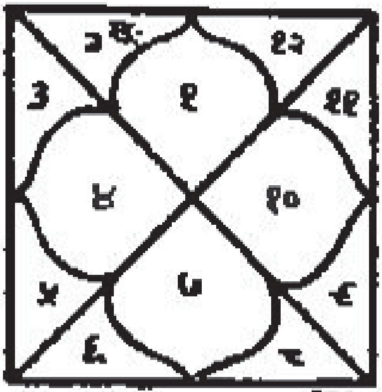

१२७

दूसरे भाव में अपने शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना होगा। इस कुण्डली में सूर्य पंचमभाव का स्वामी होकर शत्रु की राशि पर बैठा है, अत: जातक के विद्याध्ययन एवं संतान पक्ष में भी कठिनाइयां आती रहेंगी। कुटुम्ब, रत्न तथा बन्धन-विषयक विवाद भी उठते रहेंगे। यहाँ से सूर्य अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है, अत: जातक की आयु दीर्घ होगी तथा उसे गुदा अथवा आकस्मिक धन का लाभ भी होगा।

'मेष' लग्न कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित सूर्य का फलादेश

मेषलग्न : तृतीयभाव : सूर्य

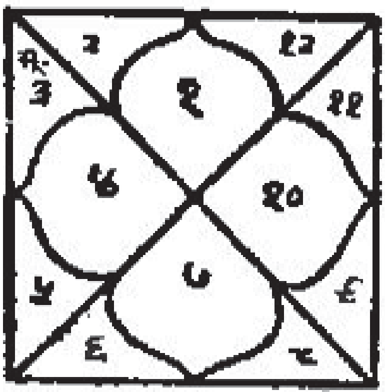

१२८

तीसरे भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के बुद्धिबल एवं पराक्रम में वृद्धि होगी। सूर्य की सातवीं दृष्टि भाग्य-भवन पर होने से जातक भाग्यवान्, धर्मात्मा, दानी तथा तीर्थसेवी होगा। नवें भाव में सूर्य के मित्र तथा शुभग्रह गुरु की राशि होने से कारण जातक शुभ कार्य करने वाला तथा भगवद् भक्त होगा।

तृतीय भाव से भाई तथा वाणी का भी विचार किया जाता है, अत: यह जातक भाइयों का सुख प्राप्त करेगा तथा ओजस्वी वाणी वाला होगा।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेषलग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

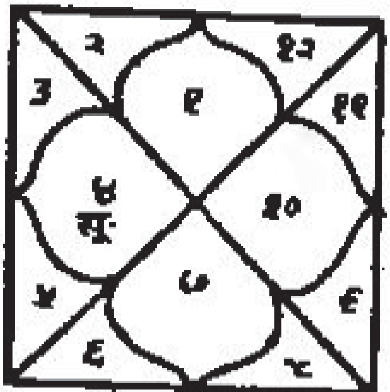

१२९

चौथे भाव में अपने मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक भूमि, गृह, वाहन आदि अनेक प्रकार के सुख प्राप्त करेगा। वह विद्वान् तथा विद्या द्वारा सुख प्राप्त करने वाला भी होगा। यहाँ से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपने शत्रु शनि की राशि वाले दशम भाव को देखता है अत: जातक की अपने पिता से अनबन रहेगी तथा राजकीय मामलों में विफलताएँ आयेंगी। परंतु सूर्य के प्रभाव से कुछ-न-कुछ सम्मान अवश्य बना रहेगा।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : पंचमभाव : सूर्य

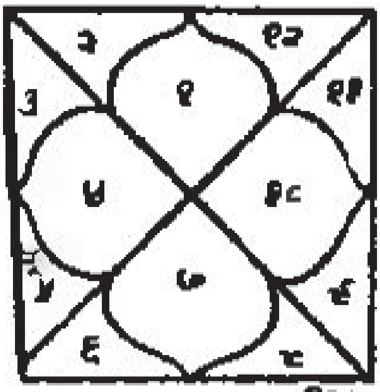

१२०

पाँचवें भाव में स्वक्षेत्री सूर्य के प्रभाव से जातक बड़ा विद्वान्, बुद्धिमान्, यशस्वी तथा सन्तान-सुख से परिपूर्ण रहेगा। यहाँ से सूर्य की सप्तम दृष्टि अपने शत्रु शनि की राशि वाले ग्यारहवें भाव पर पड़ती है, अतः आय के साधनों में रुकावटें आती रहेंगी तथा आर्थिक लाभ के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ेगा।

इस ग्रह स्थिति का जातक कटुभाषी तथा अहंकारी होता है, जिसके कारण लोग परोक्ष में उसकी निन्दा भी करते हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

छठे भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर निरन्तर विजय प्राप्त करता रहेगा। पंचमभाव का स्वामी षष्ठभाव में होने के कारण विद्याध्ययन में कुछ कठिनाइयाँ तो आयेंगी, परन्तु जातक परम विद्वान् तथा बुद्धिमान भी होगा। सूर्य की सप्तदृष्टि व्ययस्थान में पड़ने के कारण जातक बाहरी संबंधों से लाभ एवं सफलता पाने वाला, विदेशों में सम्मानित तथा अधिक खर्च करने वाला भी होगा। इसे सन्तानपक्ष से कुछ चिन्ताएँ अवश्य बनी रहेंगी। शत्रुपक्ष कठिनाइयाँ खड़ी करता रहेगा, परन्तु वह हारेगा तो।

मेष लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

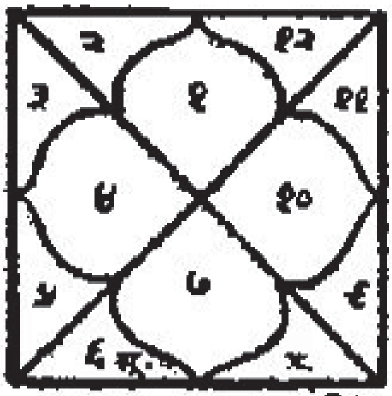

१२१

'मेष' लग्न कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

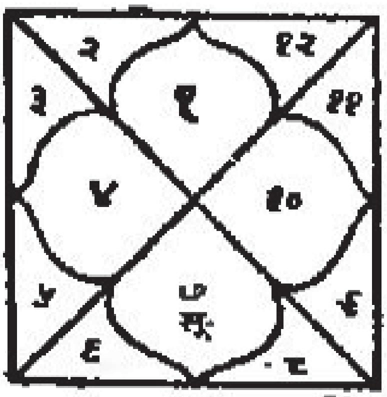

१२२

सातवें भाव में अपने शत्रु शुक्र की राशि में स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने स्वास्थ्य एवं स्त्री के विषय में निरन्तर कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। सप्तम उच्चदृष्टि से मित्र मंगल की राशि वाले लग्नभाव को देखने के कारण जातक लंबे कद का तेजस्वी तथा स्वाभिमानी होगा। वह युक्ति एवं बुद्धिबल से अपना काम निकालने में प्रवीण होगा। सूर्य के पंचमेश होने के कारण जातक का विद्या तथा सन्तान का पक्ष भी कमजोर रहेगा तथा जीवन-यापन के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती रहेंगी।

'मेष' लग्न कुण्डली से 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

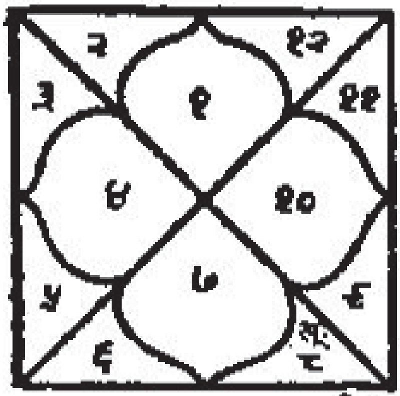

१२३

आठवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्व एवं गुप्त धन सम्बन्धी लाभ तो होगा परन्तु आठवाँ घर मृत्यु-भवन होने से विद्या एवं संतान पक्ष में कमजोरी रहेगी। दैनिक जीवन में भी कठिनाइयाँ आती रहेंगी। सातवीं दृष्टि से शत्रु के द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक को धन एवं कुटुम्ब विषयक असन्तोष भी निरन्तर बना रहेगा। कुल मिलकर जीवन संघर्षपूर्ण रहेगा।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : नवमभाव : सूर्य

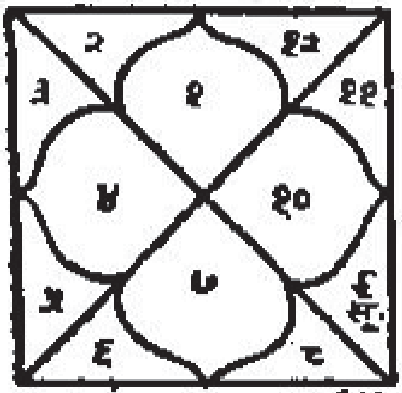

१२४

नवें भाव में अपने मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक श्रेष्ठ विद्या, बुद्धि एवं ज्ञान का स्वामी होगा। यह धर्म, मर्मज्ञ शास्त्रों का ज्ञाता, ईश्वर भक्त, यशस्वी, भाग्यवान, दयालु, दानी तथा तीर्थसेवी भी होगा। भाग्योन्नति के क्षेत्र में निरन्तर, सफलताएँ मिलती रहेंगी।

सातवीं दृष्टि से अपने मित्र बुध की राशि वाले तृतीय भाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम, भाई-बहन, साहस तथा योग्यताओं में वृद्धि होगी। सूर्य की यह स्थिति बहुत श्रेष्ठ है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : दशमभाव : सूर्य

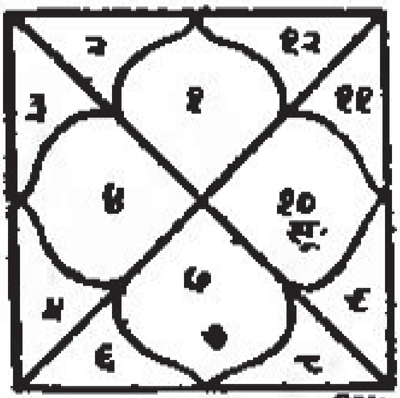

१२५

दसवें भाव में अपने शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने पिता, व्यवसाय, राज्य नौकरी तथा प्रतिष्ठा के क्षेत्र में कुछ कमियों शिकार होना पड़ता है, परन्तु यह विदेशी भाषा एवं का राजभाषा का श्रेष्ठ जानकार होता है।

सातवीं दृष्टि से अपने मित्र चन्द्रमा की राशि से चौथे भाव को देखने से माता, भूमि, भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। ऐसा जातक अपने बुद्धिबल से राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्रों में सफलताएँ प्राप्त करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : एकादशभाव : सूर्य

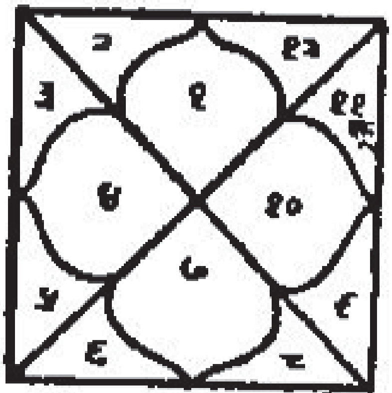

१२६

ग्यारहवें भाव में अपने शत्रु शनि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अर्थ-लाभ के लिए विशेष परिश्रम तो करना पड़ता है, परन्तु लाभ भी अत्यधिक होता है। ग्यारहवें भाव में पापग्रह शक्तिशाली माना जाता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले पंचभाव से देखने के कारण जातक को विद्या, बुद्धि तथा संतान का भी विशेष लाभ होता है। ऐसा जातक अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए कटुभाषी भी होता है तथा उसी से लाभ भी उठाता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मेष लग्न : द्वादशभाव : सूर्य

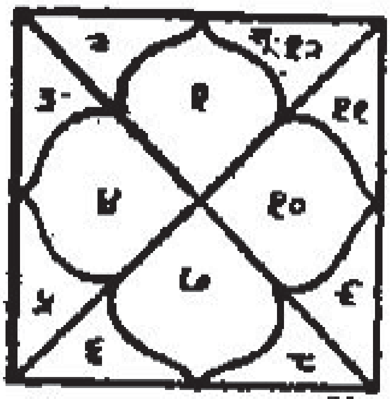

१२७

बारहवें भाव में अपने मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का बाहरी स्थानों से श्रेष्ठ सम्बन्ध होता है, परन्तु व्यय की अधिकता भी बनी रहती है। उसे अपना खर्च चलाने के लिए बुद्धिबल का अधिक प्रयोग करना पड़ता है। सन्तान एवं विद्या पक्ष की हानि तथा चिन्ता के योग भी उपस्थित होते हैं।

सातवीं दृष्टि से अपने मित्र बुध की राशि वाले षष्ठभाव को देखने के कारण जातक को शत्रुपक्ष पर विजय प्राप्त होती है, परन्तु वह मानसिक चिंताओं का शिकार भी बना रहता है।

'मेष' लग्न में 'चन्द्रमा'

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मेष लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

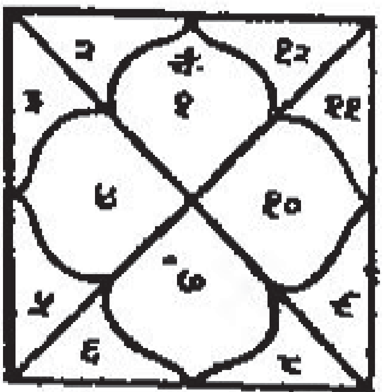

१२८

पहले भाव में अपने मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक मानसिक तथा पारिवारिक सुख-शांति प्राप्त करता है।

सातवीं दृष्टि से शुक्र की राशि वाले सप्तम भाव को देखने के कारण स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है। ऐसे जातक का दाम्पत्य-जीवन सुखी तथा शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मेष लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

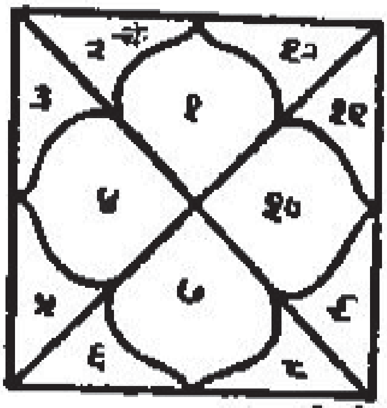

१२९

दूसरे भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक बड़ा धनी तथा ऐश्वर्यशाली होता है। उसे कौटुम्बिक सुख भी यथेष्ट मिलता है, परन्तु माता के पक्ष में स्थित त्रुटि का अनुभव भी होता है।

सातवीं नीच दृष्टि से मित्र मंगल की राशि वाले आठवें भाव को देखने के कारण जातक को आयु, स्वास्थ्य तथा पुरातत्त्व विषयक त्रुटियों का सामना करना पड़ता है। उसका दैनिक जीवन भी कुछ अशांतिपूर्ण बना रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मेष लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

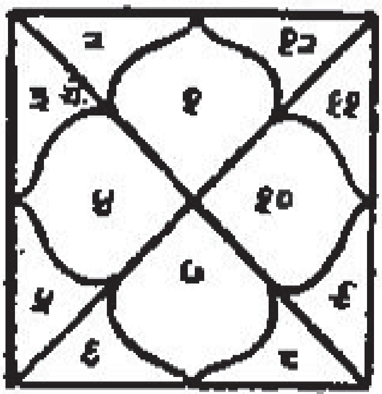

१३०

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा उसे भाई-बहिनों का सुख मिलता है। चौथे घर का स्वामी होने के कारण चन्द्रमा जातक को भूमि, भवन, वाहन आदि का सुख भी देता है।

सातवीं दृष्टि से मित्र गुरु की राशि से नवें भाव को देखने के कारण जातक धर्मात्मा, उदार, दानी, विद्वान्, भाग्यवान तथा यशस्वी भी होता है। कुल मिला कर इस ग्रह स्थिति वाला जातक जीवन में अनेक प्रकार की सफलताएँ प्राप्त करता रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मेष लग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र

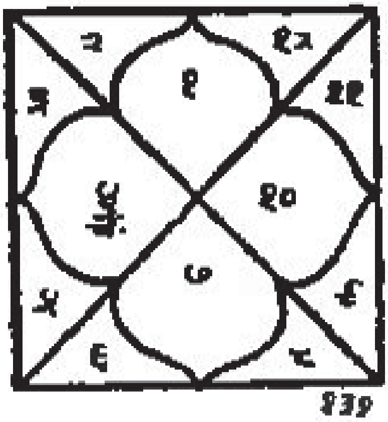

१३१

चौथे भाव में स्वराशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन, सम्पत्ति आदि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है तथा मनोरंजन के साधन निरंतर उपलब्ध होते रहते हैं।

सातवीं दृष्टि से शत्रु शनि की राशि वाले दशम भाव को देखने के कारण जातक का अपने पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं सम्मान के क्षेत्र में कमी बनी रहती है। कुल मिला कर—ऐसा जातक सब प्रकार से सम्पन्न होते हुए भी यशस्वी सम्मानित नहीं हो पाता।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

पाँचवें भाव में अपने मित्र सूर्य की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक बड़ा विद्वान्, बुद्धिमान एवं सन्ततिवान होता है।

मेष लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

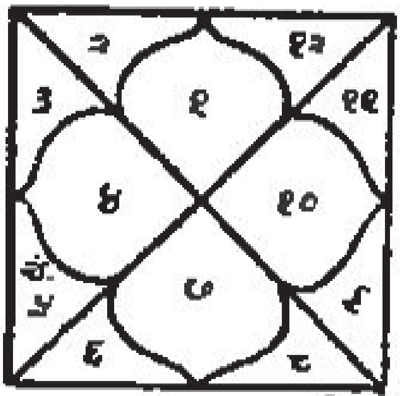

९३२

सातवीं दृष्टि से अपने शत्रु शनि की राशि वाले ग्यारहवें भाव को देखने के कारण उसे आय के साधनों में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु उन्हें वह अपने धैर्य एवं शांत स्वभाव से सहन कर लेता है। कुल मिला कर ऐसी ग्रह स्थिति का व्यक्ति धीर, गंभीर, शांत, योग्य, विद्वान्, सन्तोषी, माता से सुखी, भू-सम्पत्ति का स्वामी, परन्तु व्यवसाय एवं लाभ के क्षेत्र में कठिनाइयाँ उठाने वाला होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

छठे भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष में शांति का अनुभव करता है तथा विपत्तियों पर अपने धैर्य एवं विनम्रता के बल पर विजय प्राप्त करता है। उसके घरेलू वातावरण में भी अशांति एवं कमियाँ बनी रहती हैं।

मेष लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

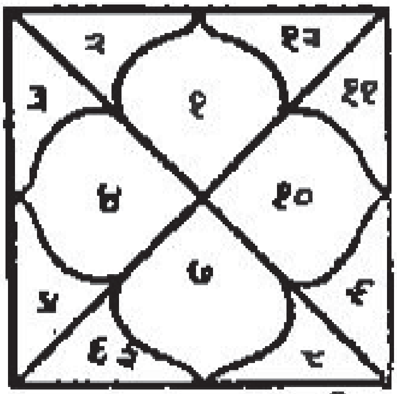

९३३

सातवीं दृष्टि से अपने मित्र गुरु की राशि वाले बारहवें भाव को देखने के कारण जातक शुभ कार्यों में व्यय करता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ एवं सुख भी प्राप्त करता है। कुल मिला कर ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक विनम्र, धैर्यवान, शुभकर्म करने वाला तथा घरेलू जीवन में त्रुटियों का शिकार बना रहने वाला होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सातवें भाव में अपने सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक स्त्री-सुख एवं भोग-विलास को प्राप्त करने वाला, सुन्दर, एवं भूमि तथा सम्पत्ति का सुख पाने वाला होता है।

मेष लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

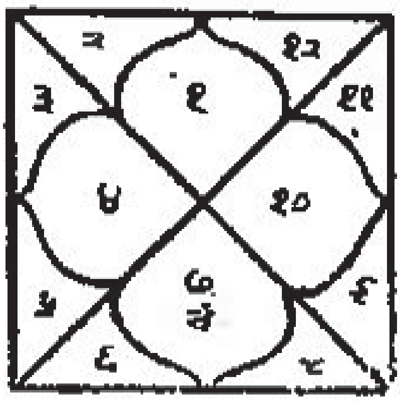

सातवीं दृष्टि से अपने मित्र मंगल की राशि वाले पहले भाव को देखने के कारण जातक शारीरिक, सौन्दर्य, सम्मान, मनोरंजन, सुख आदि को प्राप्त करता है। कुल मिला कर ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक सुन्दर, विलासी, यशस्वी तथा व्यावसायिक एवं सुख के क्षेत्र में सफलता पाने वाला होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मेष लग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

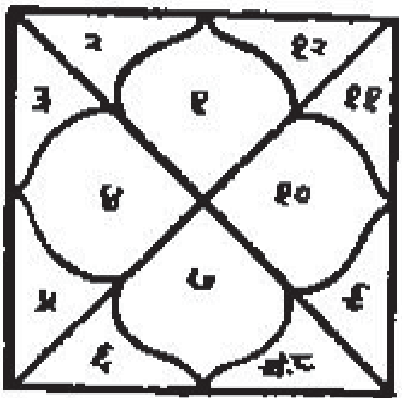

१३४

आठवें भाव में अपने मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा अचल सम्पत्ति के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है। उसे पुरातत्त्व तथा आयु संबंधी संकट भी उठाने पड़ते हैं तथा घरेलू-सुखशान्ति में भी कमी रहती है।

सातवीं उच्चदृष्टि से शुक्र की राशि वाले द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक को धन प्राप्ति के योग निरन्तर मिलते रहते हैं तथा वह धन एवं सुख को अर्जित करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील भी बना रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मेष लग्न : नवमभाव : चन्द्र

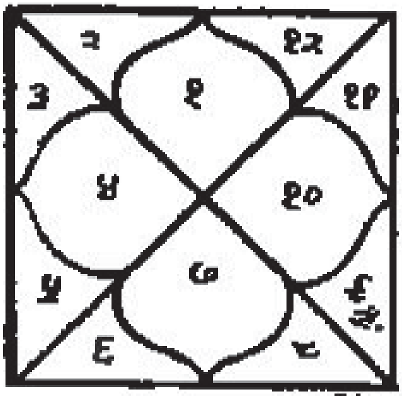

१३६

नवेंभाव में अपने मित्र गुरु की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक धर्म-कर्म, दान, पुण्य, तीर्थ-यात्रा आदि की ओर अधिक आकर्षित रहता है। उसे माता, भूमि तथा सम्पत्ति का सुख भी प्राप्त होता है।

सातवीं दृष्टि से चन्द्रमा अपने मित्र बुध की राशि वाले तृतीयभाव को देखता है। अतः जातक के भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होगा तथा पराक्रम में भी वृद्धि बनी रहेगी। कुल मिलाकर इस ग्रह-स्थिति का जातक सौभाग्यशाली, धन-सम्पत्तिवान, भाई-बहिनों से युक्त तथा धार्मिक आचार-विचारों वाला होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

'मेष' लग्न : दशमभाव : चन्द्र

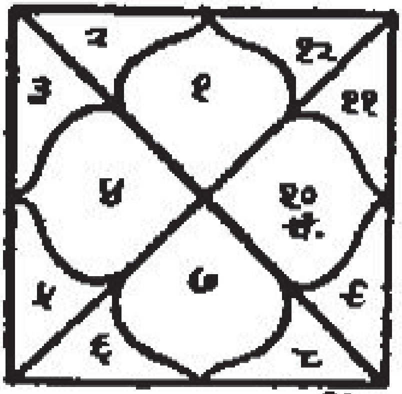

१३७

दसवें भाव में अपने शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का अपने पिता से वैमनस्य रहता है, परन्तु उसे राज्य में सम्मान की प्राप्ति होती है और वह अपने परिश्रम एवं अध्यवसाय द्वारा व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त करता है।

सातवीं दृष्टि से चन्द्रमा अपनी राशि वाले चतुर्थ भाव को देखता है, अतः उसे माता, भूमि, भवन, सम्पत्ति आदि का अच्छा सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति अपने परिश्रम द्वारा अपना मकान बनवाता तथा सुख प्राप्त करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मेष लग्न : एकादशभाव : चन्द्र

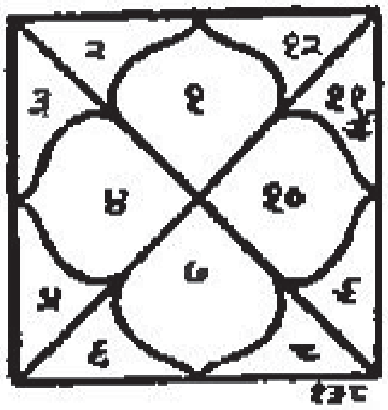

१३८

ग्यारहवें भाव में अपने शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने मनोबल के प्रभाव से अपनी आय के साधनों को बढ़ाता तथा सुखी जीवन बिताता है। सामान्यत: उसे आय के साधनों में कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से चन्द्रमा अपने मित्र की राशि वाले पंचम भाव को देखता है, अत: जातक विद्वान् बुद्धिमान् तथा सन्ततिवान् होता है। कुल मिलाकर ऐसी ग्रह स्थिति वाला व्यक्ति विद्या बुद्धि के द्वारा अपनी उन्नति करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा का फलादेश

मेषलग्न : द्वादशभाव : चन्द्र

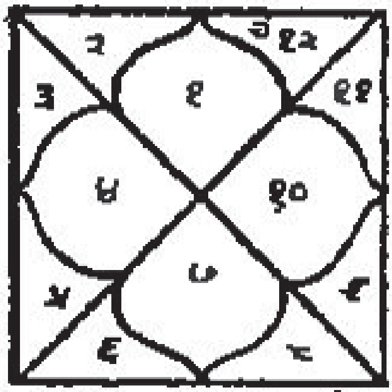

१३९

बारहवें भाव में अपने मित्र गुरु की राशि में स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शुभ कार्यों तथा शान-शौकत में खर्च करने वाला तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध रखने वाला होता है।

सातवीं दृष्टि से चन्द्रमा अपने मित्र बुध की राशि वाले षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक शत्रुपक्ष पर शान्ति से विजय पायेगा तथा अपनी बुद्धिमत्ता से हर प्रकार के झगड़ों को निपटाने में सफल हुआ करेगा। कुल मिला कर ऐसी ग्रहस्थिति का व्यक्ति सुखी तथा सन्तुष्ट जीवन बिताने वाला एवं शत्रुपक्ष पर अपनी शालीनता से विजय पाने वाला होता है।

'मेष' लग्न में 'मंगल'

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न: प्रथमभाव: मंगल

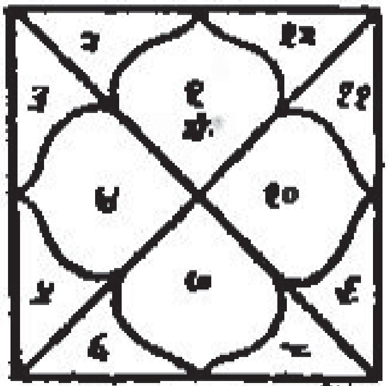

१४०

पहलेभाव में स्वराशि स्थित मंगल के प्रभाव से जातक पुष्ट शरीर वाला आत्म-बली तथा साहसी होता है। आठवें भाव का स्वामी होने तथा उसे पूर्ण दृष्टि के कारण मंगल जातक को कभी-कभी रोगों का शिकार भी बना देता है परन्तु आयु लम्बी देता है।

सातवीं दृष्टि से शुक्र की राशि वाले सप्तम भवन को भी देखता है। अत: जातक को अपनी पत्नी तथा व्यवसाय के मामले में कुछ हानि भी उठानी पड़ती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न: द्वितीयभाव: मंगल

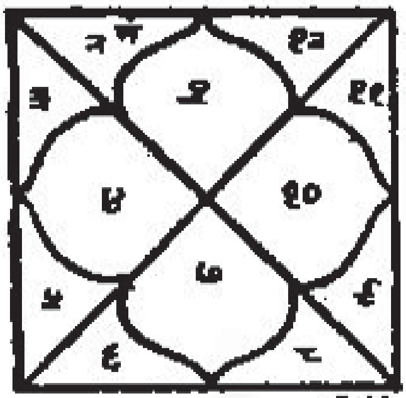

१४१

दूसरे भाव में अपने शत्रु शुक्र की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन-संचय में कमी तथा शरीर में कष्ट का सामना करना पड़ता है। चतुर्थ दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण जातक मिला तथा संतान के पक्ष में कुछ कठिनाइयों का सामना करता है। सातवीं दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण दीर्घायु एवं पुरातत्व का लाभ देता है। आठवीं दृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्योन्नति में भी रुकावटें डालता रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न: तृतीयभाव: मंगल

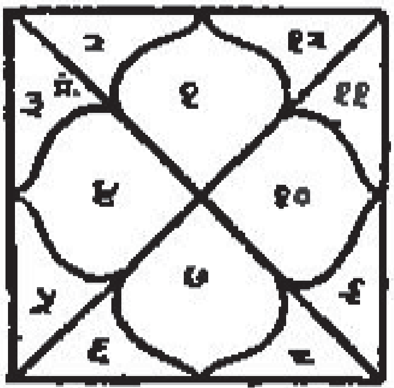

१४२

तीसरे भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक पराक्रमी तथा साहसी होता है, परन्तु मंगल के अष्टमेशी होने के कारण भाई-बहिन के सुख में कमी आ जाती है।

चौथी दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक शत्रुजयी होता है और हिम्मत से काम लेकर उन पर अपना प्रभाव डालता है। सातवीं दृष्टि के मित्र गुरु की राशि वाले नवमभाव को देखने के कारण भाग्योन्नति करता है तथा आठवीं दृष्टि से शत्रु शनि की राशि वाले दशमभाव को देखने के कारण राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ भी उपस्थित करता रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न: चतुर्थभाव: मंगल

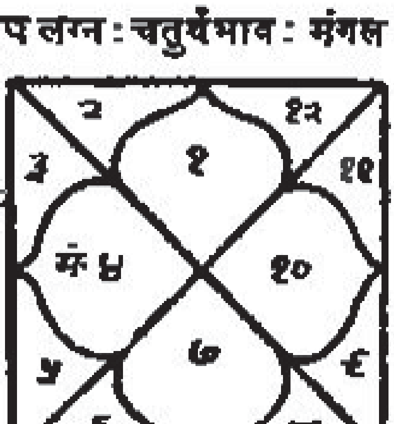

१४३

चौथे भाव में अपने मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को माता के सुख, भूमि, भवन तथा सुख के क्षेत्र में कमी रहती है। चौथी दृष्टि से शत्रु शुक्र की राशि वाले सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री के सुख में कमी रहती है। सातवीं उच्च दृष्टि से शत्रु शनि की राशि वाले दशमभाव को देखने के कारण पिता एवं राज्य द्वारा लाभ होता है। आठवीं दृष्टि के शत्रु शनि की राशि वाले ग्यारहवें भाव को देखने के कारण लाभ प्राप्ति के लिए जातक को अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

पाँचवें भाव मे मित्र सूर्य की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। चौथी दृष्टि से स्वराशि के अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु तथा पुरातत्त्व का साथ देता है। सातवीं दृष्टि से सम-शनि की राशि के ग्यारहवें भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ के योग उपस्थित करता है तथा आठवीं दृष्टि से मित्र गुरु के बारहवें भाव को देखने के कारण खर्च अधिक कराता है तथा बाहरी स्थानों से आजीविका के सम्बन्ध बनाता है।

मेष लग्न : पंचमभाव : मंगल

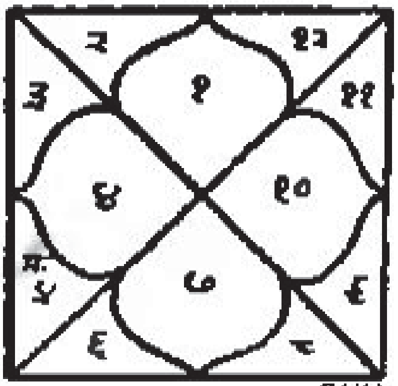

१४४

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

छठे भाव में मित्र बुध की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रुजयी, साहसी तथा निर्भय होता है। चौथी दृष्टि से शनि की राशि के दसवें भाव को देखने के कारण भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ देता है। सातवीं दृष्टि से मित्र गुरु की राशि के बारहवें भाव को देखने के कारण खर्च अधिक तथा बाहरी स्थानों से लाभ कराता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि वाले प्रथमभाव को देखने के कारण जातक को शरीर से स्वस्थ, स्वाभिमानी तथा प्रबल प्रभाव वाला बनाये रखता है।

मेष लग्न : षष्ठभाव : मंगल

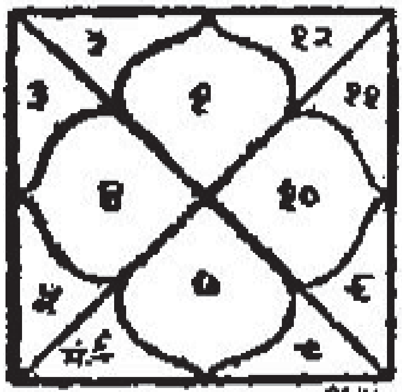

१४५

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सातवें भाव मे शुक्र की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। चौथी उच्च दृष्टि से शनि की राशि के दशमभाव को देखने के कारण पिता एवं राज्य द्वारा उन्नति के साधन तथा यश देता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले प्रथमभाव को देखने से जातक के शरीर को स्वस्थ तथा प्रभावशाली बनाता है। आठवीं दृष्टि से शुक्र की राशि वाले द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक को धन तथा कुटुम्ब वृद्धि के लिए अधिक परिश्रम करने पर भी न्यून सफलता देता है।

मेष लग्न : सप्तमभाव : मंगल

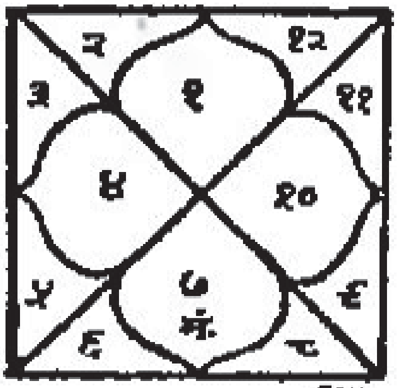

१४६

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न : अष्टमभाव : मंगल

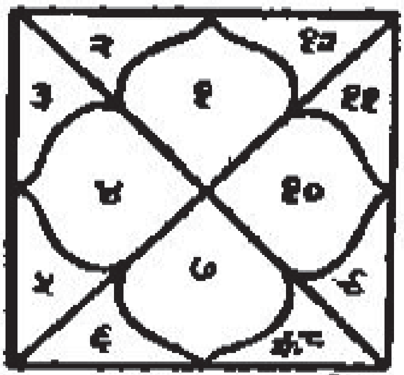

१५७

आठवें भाव में स्वराशि स्थित मंगल के प्रभाव से जातक दीर्घायु तथा पुरातत्त्व का लाभ प्राप्त करता है, परन्तु लग्न का स्वामी भी होने के कारण शारीरिक सौन्दर्य में कमी देता है। चतुर्थ दृष्टि से शनि की राशि वाले एकादश भाव को देखने के कारण आय के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता देता है। सातवीं दृष्टि से शत्रु शुक्र की राशि वाले द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के बारे में चिन्ता बनी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि के तृतीयभाव के देखने के कारण जातक के पराक्रम को बढ़ाता है, परन्तु अष्टमेश होने के कारण भाई-बहिन के सुख में कमी भी लाता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न: नवमभाव : मंगल

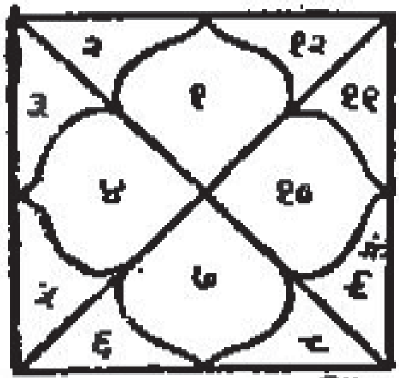

१५८

नवें भाव में मित्र राशिस्थ मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य की उन्नति होती है, परन्तु मंगल के अष्टमेश होने के कारण कुछ कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं। चौथी मित्र-दृष्टि से बारहवें भाव को देखने से खर्च की अधिकता तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध रहता है। सातवी मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु मंगल के अष्टमेश भी होने के कारण भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। आठवीं नीच दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण माता, भूमि, भवन आदि के सुख में कमी बनी रहती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' में स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न : दशमभाव : मंगल

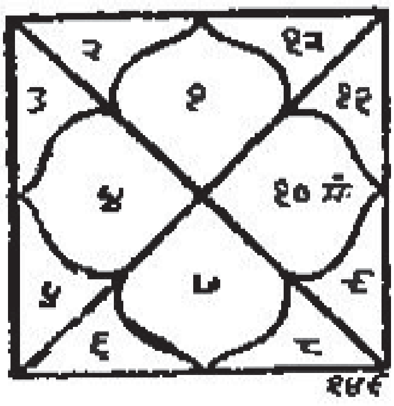

१५९

दसवें भाव में शनि की राशि पर स्थित उच्च मंगल के प्रभाव के जातक अपने पिता से शत्रुता रखता है, परन्तु व्यवसाय एवं राज्य के क्षेत्र में उन्नति करता है। चौथी दृष्टि से स्वक्षेत्री प्रथम-भाव को देखने के कारण शारीरिक प्रभाव में उन्नति देता है। सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है। आठवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में जातक को विशेष सफलता प्राप्त होती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

'मेष' लग्न : एकादशभाव : मंगल

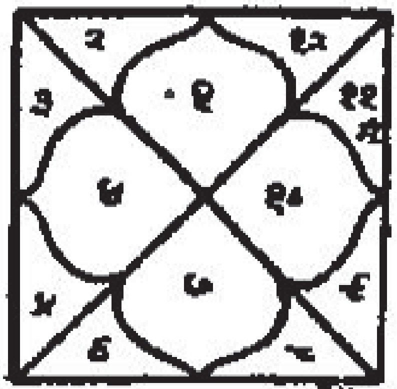

१४०

ग्यारहवें भाव में शनि की राशिस्थ मंगल के प्रभाव से जातक की आय में वृद्धि होती रहती है, परन्तु अष्टमेश दोष होने के कारण कुछ कठिनाइयां भी आती हैं। चौथी दृष्टि से शत्रु की राशि वाले द्वितीयभाव में देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब सम्बन्धी असन्तोष रहता है। सातवीं दृष्टि से मित्रराशि के पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कमी बनी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष पर प्रभाव बढ़ता है तथा जातक बड़ा साहसी होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मेष लग्न : द्वादशभाव : मंगल

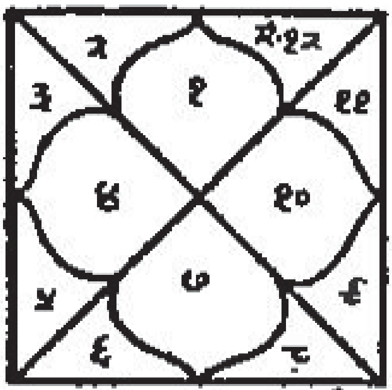

१४१

बारहवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक बाहरी स्थानों में भ्रमण करने वाला तथा अत्यधिक खर्च करने वाला होता है। उसके शारीरिक सौंदर्य में भी कमी रहती है।

चौथी मित्र दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण जातक पराक्रमी होता है, परन्तु मंगल के अष्टमेश होने के कारण भाई-बहिनों के सुख में कमी आ जाती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से छठे भाव को देखने के कारण जातक शत्रु पक्ष में प्रबल रहता है। आठवीं दृष्टि से शुक्र की राशि वाले सप्तम भाव को देखने से स्त्री-सुख में कमी आती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

'मेष' लग्न में 'बुध'

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेष लग्न : प्रथमभाव : बुध

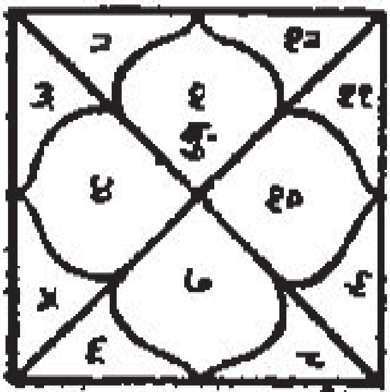

१४२

पहले भाव में मित्र राशिस्थ बुध के प्रभाव से जातक पुरुषार्थी होता है, परन्तु बुध के षष्ठेश दोष के कारण रोग-पीड़ित भी रहता है। इसी कारण भाई-बहिनों के सुख में भी कुछ कमी आ जाती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सातवें भाव को देखने के कारण व्यवसाय के क्षेत्र में तो परिश्रम द्वारा सफलता प्राप्त होती है, परन्तु स्त्री-सुख में कुछ कठिनाइयों के बाद ही सफलता मिल पाती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेष लग्न : द्वितीयभाव : बुध

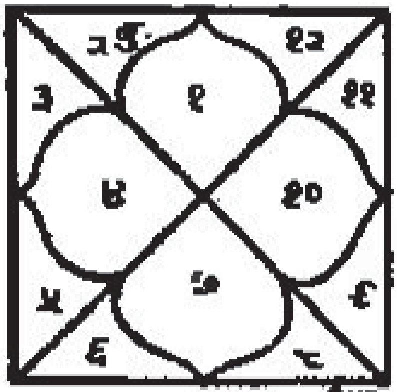

१४३

दूसरे भाव में मित्र राशिस्थ बुध के प्रभाव से जातक के धन एवं पुरुषार्थ में वृद्धि तो होती है, परन्तु बुध के अष्टमेश होने के कारण धनप्राप्ति के क्षेत्र में कठिनाइयों तथा हानि का सामना भी करना पड़ता है। बुध के तृतीयेश होने के कारण भाई-बहिन के सुख में भी कमी आ जाती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा उसे पुरातत्त्व सम्बन्धी लाभ भी होते हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेषलग्न : तृतीयभाव : बुध

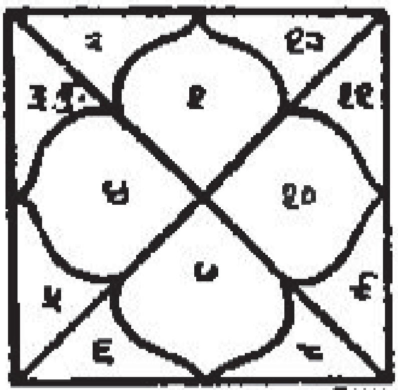

१४४

तीसरे भाव में स्वराशिस्थ बुध के प्रभाव से जातक अत्यन्त पराक्रमी तथा हिम्मती होता है, परन्तु षष्ठेश होने के कारण जहाँ शत्रुओं पर विजय दिलाता है, वहीं भाई-बहिन के सुख में कमी भी ले आता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक अपने ही पराक्रम से भाग्य की वृद्धि करता है तथा कुछ कमी के साथ धर्म-पालन की ओर भी प्रेरित करता रहेगा। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक विवेकी, परिश्रमी तथा पराक्रमी होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेषलग्न : चतुर्थभाव : बुध

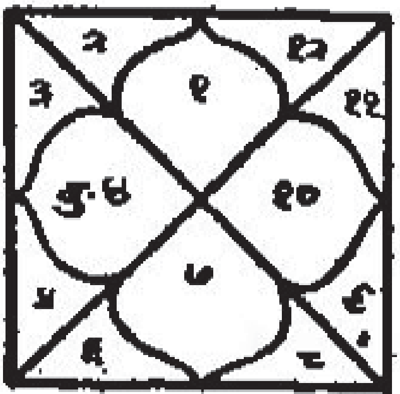

१४५

चौथेभाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा सुख के पक्ष में कुछ कमियाँ बनी रहती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण जातक को पिता एवं राज्य पक्ष द्वारा सम्मान तथा सफलतायें मिलती हैं। ऐसी ग्रह स्थिति का जातक यशस्वी होता है तथा प्रत्येक क्षेत्र में कुछ परेशानियों के बाद ही सफलता प्राप्त करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेषलग्न : पंचमभाव : बुध

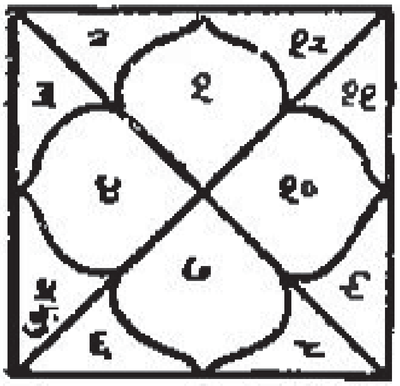

१५६

पाँचवें भाव में मित्रराशिस्थ बुध के प्रभाव से जातक अपने विशेष परिश्रम द्वारा विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है, क्योंकि बुध में स्थानाधिपति दोष है।

सातवीं मित्रदृष्टि से ग्यारहवें भाव को देखने के कारण जातक अपने बुद्धि-विवेक द्वारा भाग्य तथा आय की वृद्धि करता है। बुध के षष्ठेश होने के कारण जातक को शत्रुपक्ष में भी सफलता मिलती रहती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेष लग्न : षष्ठभाव : बुध

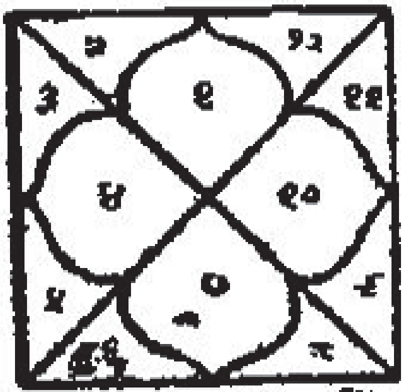

१५७

छठे भाव में स्वक्षेत्री तथा उच्च के बुध के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर अत्यधिक प्रभाव रखने वाला तथा अपने पुरुषार्थ द्वारा बड़े-बड़े काम कर दिखाने वाला होता है।

बुध के पराक्रमेश के साथ षष्ठेश भी होने के कारण भाई-बहिनों से कुछ विरोध रहता है तथा अपने पराक्रम के बारे में भी कुछ आन्तरिक कमी का अनुभव करता रहता है।

सातवीं नीच दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण जातक को खर्च तथा बाहरी सम्बन्धों में कुछ हानियाँ भी उठानी पड़ती हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेषलग्न : सप्तमभाव : बुध

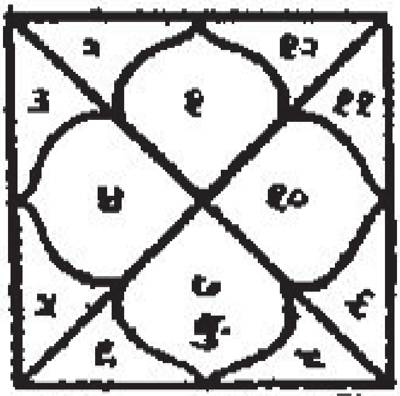

१५८

सातवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा व्यवसाय में सफलता पाता है, परन्तु षष्ठेश होने के कारण स्त्री-पक्ष में कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से मित्र मंगल की राशि वाले प्रथमभाव को देखने के कारण जातक को सामान्य शारीरिक कष्ट तथा रोगों का शिकार भी बनाता है। भाई-बहिन के द्वारा जातक को सहयोग मिलता रहता है तथा विवेक-बुद्धि भी प्रबल रहती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेषलग्न : अष्टमभाव : बुध

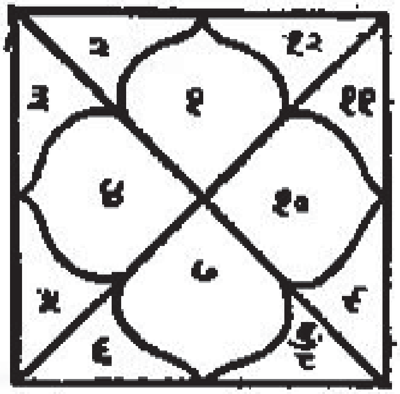

१५६

आठवें भाव में मित्र मंगल की राशि में स्थित तृतीयेश एवं षष्ठेश बुध के प्रभाव से जातक को पराक्रम, आयु तथा पुरातत्त्व के सम्बन्ध में कठिनाइयां आती हैं तथा शत्रुपक्ष से हानि पहुंचने की संभावना भी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से बुध द्वितीयभाव से देखता है, अतः जातक को धन उपार्जित करने के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ता है। कुल मिलाकर ऐसी ग्रह स्थिति के जातक का जीवन संघर्षपूर्ण रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेषलग्न : नवमभाव : बुध

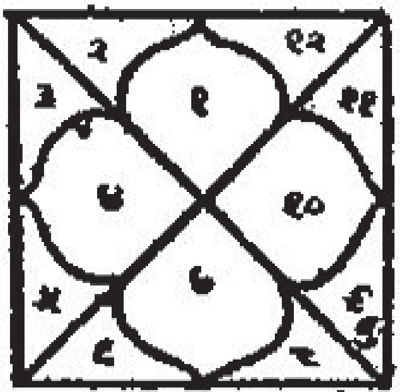

१६०

नवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित षष्ठेश बुध के कारण जातक को भाग्य-पक्ष में कठिनाइयों का अनुभव होता है, परन्तु शत्रुपक्ष के सम्बन्ध से भाग्यवृद्धि में सफलता भी मिलती है।

सातवीं दृष्टि से बुध स्वराशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक का पराक्रम बढ़ा रहता है और उसे स्व-विवेक तथा भाई-बहिनों द्वारा लाभ प्राप्त होता रहता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक कुछ परेशानियों के साथ ही उन्नति कर पाता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेषलग्न : दशमभाव : बुध

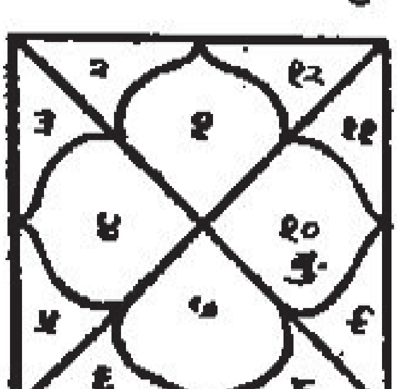

१६१

दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने पराक्रम तथा पुरुषार्थ द्वारा अत्यधिक उन्नति करता है, परन्तु बुध के षष्ठेश होने के कारण पिता से कुछ वैमनस्य भी रहता है। राज्यपक्ष में सम्मान तथा शत्रुपक्ष में सफलता प्राप्त होती है।

सातवीं शत्रु दृष्टि से बुध चन्द्रमा की राशि के चौथे भाव को देखता है, अतः माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी ला देता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेष लग्न : एकादशभाव : बुध

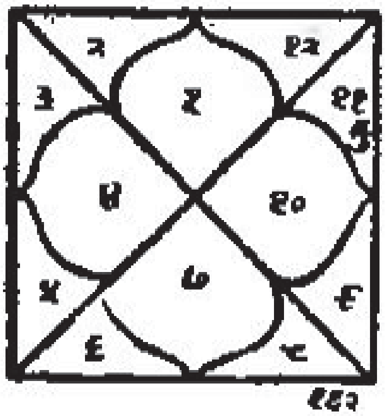

ग्यारहवें भाव में मित्र राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम एवं बुद्धि-विवेक द्वारा आय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त करता है। उसे भाई-बहिन का लाभ भी मिलता है, परन्तु षष्ठेश होने के कारण कुछ कठिनाइयां भी आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि में पंचमभाव को देखने के कारण विद्या के क्षेत्र में सफलता देता है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान पक्ष में भी सुख दिलाता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मेष लग्न : द्वादशभाव : गुरु

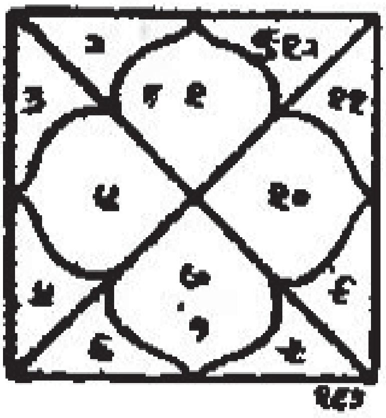

बारहवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित षष्ठेश बुध के प्रभाव से जातक को खर्च तथा बाहरी सम्बन्धों के विषय में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है एवं भाई-बहिन के सुख में भी न्यूनता आती है।

सातवीं उच्चदृष्टि से बुध अपनी राशि वाले षष्ठभाव को देखता है अतः जातक स्व-विवेक द्वारा शत्रुपक्ष पर सफलता पाने में समर्थ होता है तथा गुप्त युक्तियों एवं धैर्य से काम लेने वाला भी होता है।

'मेष' लग्न में 'गुरु'

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेष लग्न : प्रथमभाव : गुरु

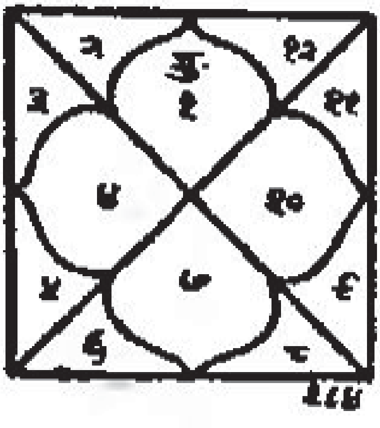

पहले भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक अत्यधिक यश, उन्नति एवं बाह्य-स्थानों से प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। पांचवीं मित्रदृष्टि से गुरु पंचमभाव को देखता है तथा जातक शत्रु विद्वान्, बुद्धिमान तथा सन्ततिवान होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयां आती हैं। नवीं दृष्टि से स्वराशि वाले नवमभाव को देखने के कारण जातक के भाग्य एवं धर्म में वृद्धि होती है।

'मेष' की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेष लग्न : द्वितीयभाव : गुरु

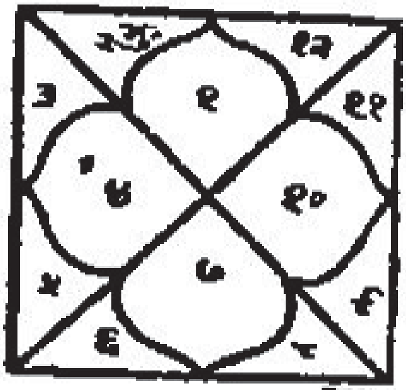

१६५

दूसरे भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक बाह्य-स्थानों के सम्पर्क से धन एवं भाग्य की वृद्धि करता है, परन्तु कभी-कभी हानि भी उठानी पड़ती है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि के षष्ठभाव को देखता है, अतः शत्रुपक्ष में बुद्धिमानी से सफलता प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक को पुरातत्त्व एवं आयु का लाभ होता है। नवीं दृष्टि से शनि की राशि वाले दशमभाव को देखने के कारण पिता एवं राज्य के पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेष लग्न : तृतीयभाव : गुरु

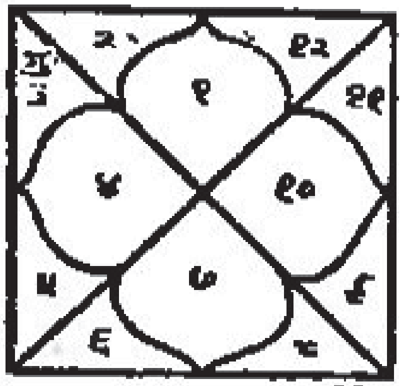

१६६

तीसरे भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पराक्रम तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। पाँचवीं शत्रु दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं दृष्टि से स्व-राशि वाले नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। नवीं दृष्टि से शत्रु शनि की राशि वाले ग्यारहवें भाव को देखने के कारण जातक की आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेष लग्न : चतुर्थभाव : गुरु

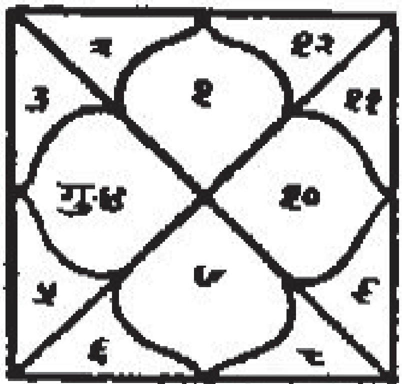

१६७

चौथे भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन आदि का पर्याप्त सुख मिलता है। पाँचवीं मित्र दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। सातवीं नीच दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य सुख में कमी रहती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वादशभाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों से अच्छा सम्बन्ध रहता है, परन्तु व्यय की अधिकता रहती है। ऐसा जातक धनी, सम्पत्तिवान, दीर्घायु तथा खर्चीला होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेष लग्न : पंचमभाव : गुरु

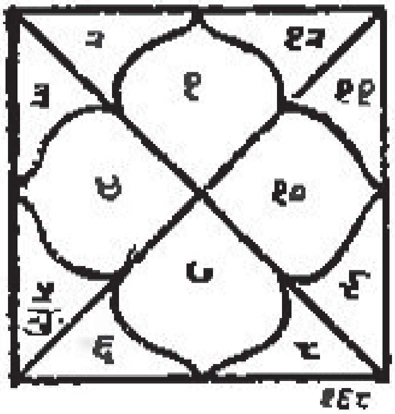

पाँचवें भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक विद्वान्, बुद्धिमान तथा मस्तिष्कवान होता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि वाले नवें भाव को देखता है अतः जातक के भाग्य की वृद्धि होती रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण जातक की आमदनी के क्षेत्र में कभी-कभी कठिनाइयाँ आती रहती हैं। नवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक का शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ बना रहता है। ऐसी ग्रह स्थिति का जातक विद्वान्, बुद्धिमान, धर्मात्मा तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेष लग्न : षष्ठभाव : गुरु

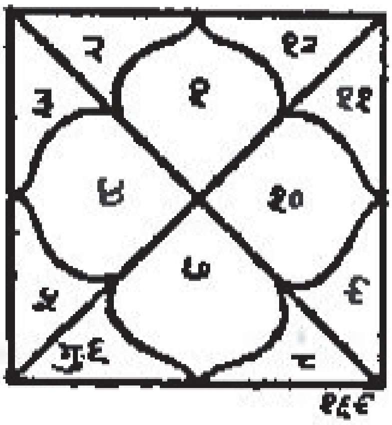

छठे भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शत्रुपक्ष में सफलता मिलती है तथा कुछ रुकावटों के साथ भाग्योन्नति भी होती है। पाँचवीं नीचदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य-सम्बन्ध में कमी आती है। सातवीं दृष्टि से द्वादश-भाव को स्वराशि में देखने के कारण व्यय की अधिकता रहती है तथा बाहरी सबंधों से सफलता मिलती है। नवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण कुटुम्ब से मतभेद रहता है तथा धन-प्राप्ति में कठिनाइयाँ आती हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेष लग्न : सप्तमभाव : गुरु

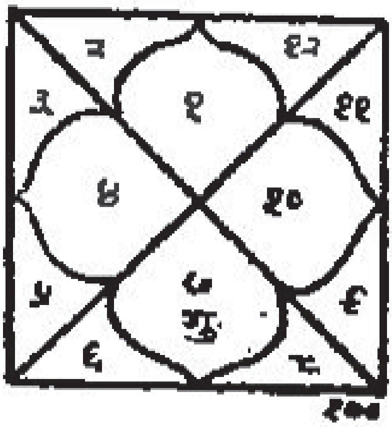

सातवें भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के मार्ग में रुकावटें आती हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से लग्न को देखने के कारण जातक का शरीर सुन्दर तथा व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। नवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन तथा पराक्रम का पक्ष अच्छा बना रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मेष लग्न : एकादशभाव : गुरु

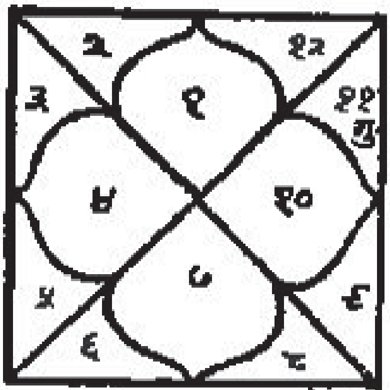

१०४

ग्यारहवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित भाग्येश गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य की उन्नति में कुछ कमी बनी रहती है। पांचवीं मित्रदृष्टि से गुरु तृतीयभाव को देखता है, परन्तु व्ययेश होने के कारण भाई तथा पराक्रम के क्षेत्र में भी त्रुटिपूर्ण सफलता देता है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि एवं संतान पक्ष का सहयोग मिलता है। नवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयों के साथ ही सफलता मिलती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलावेश

मेष लग्न : द्वादशभाव : गुरु

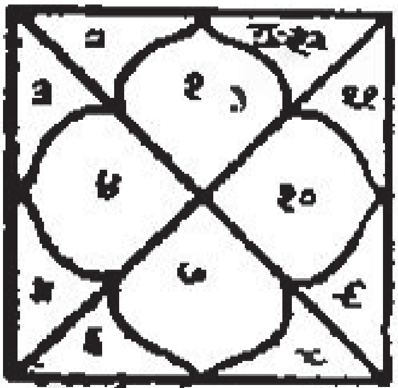

१०५

बारहवें भाव में स्वराशि स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी-स्थानों से लाभ भी होता है। पांचवीं मित्रदृष्टि से गुरु चतुर्थ-भाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः शत्रुपक्ष में जातक अपनी समझदारी से सफलता प्राप्त करता है। नवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक के आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। ऐसी स्थिति का जातक कुरुक्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ ही सफलता पाता है।

'मेष' लग्न में 'शुक्र'

'मेष'-लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न : प्रथमभाव : शुक्र

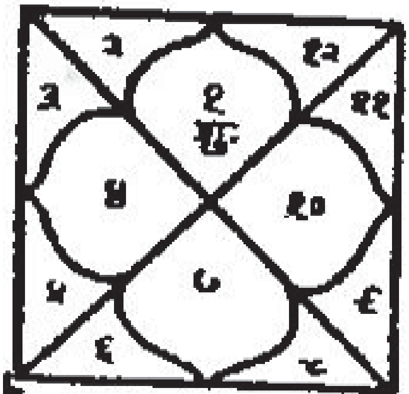

१०६

पहले भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक सुन्दर शरीर वाला, सम्मानित, बलिष्ठ तथा चतुर होता है।

सातवीं दृष्टि के शुक्र स्वराशि वाले सप्तम भाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में की सफलताएँ मिलती हैं परन्तु शुक्र के व्ययेश होने के कारण व्यवसाय तथा कुटुम्ब के पक्ष में कुछ कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

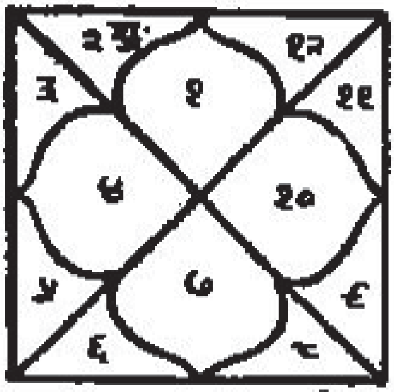

१६७

दूसरे भाव में स्वराशि स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक धनी, कुटुम्बवान तथा सौभाग्यशाली होता है, परन्तु शुक्र के बन्धनेश के साथ सप्तमेश भी होने के कारण स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ भी आती हैं।

सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को स्वयोग्यता के कारण ही आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न : तृतीयभाव : शुक्र

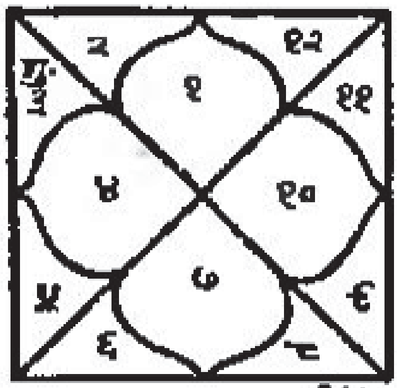

१६८

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम, चातुर्य, साहस एवं भाई-बहिनों की वृद्धि होती है, परन्तु सप्तमेश होने के कारण स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं।

सातवीं समदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक भाग्यवान तथा धर्मात्मा भी होता है। संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली, धार्मिक, पराक्रमी, धनी तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

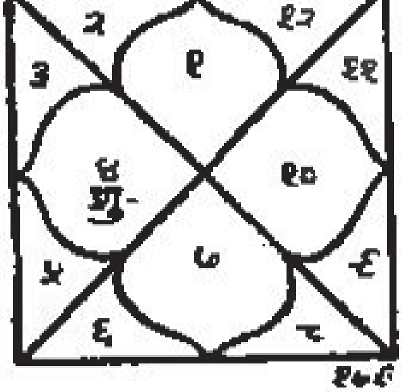

१६९

चौथेभाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है, परन्तु शुक्र के द्वितीयेश तथा केन्द्रस्थ होने के कारण धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता रहता है। इसी प्रकार स्त्री तथा व्यवसाय के सुख में भी कुछ न्यूनता बनी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण जातक को राज्य तथा पिता के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी उन्नति होती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न : पंचमभाव : शुक्र

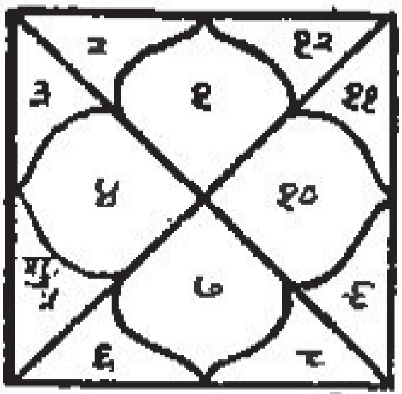

१८०

पाँचवें भाव में शत्रु सूर्य की राशि में त्रिकोणस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक को सन्तान एवं विद्या के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र दृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण जातक की आमदनी अच्छी बनी रहती है। संक्षेप में इस ग्रह स्थिति का जातक विद्वान्, सन्ततिवान, सुखी, धनवान तथा भाग्यशाली होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न : षष्ठभाव : शुक्र

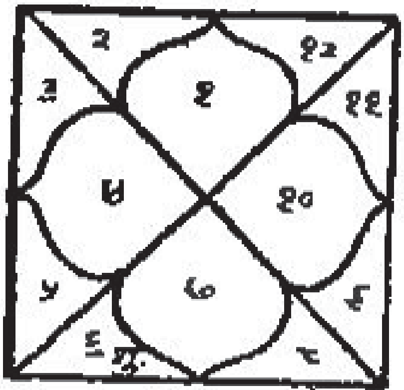

१८१

छठे भाव में मित्र बुध की राशि पर नीचस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक शत्रु क्षेत्र में गुप्त-चातुर्य से काम लेता है तथा कठिनाइयों का शिकार बनता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण जातक के खर्च में अधिकता बनी रहती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में सफलता मिलती है। ऐसी ग्रह स्थिति से जातक को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं तथा सफलता पाने के लिए बुद्धि-बल का अधिक प्रयोग करना पड़ता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न : सप्तमभाव : शुक्र

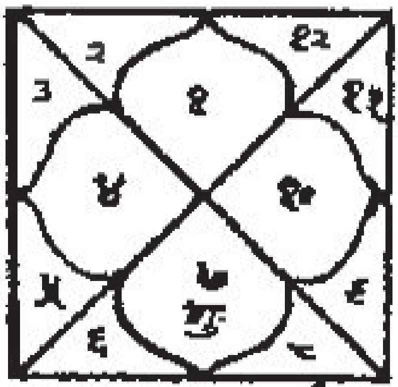

१८२

सातवें भाव में केन्द्रस्थ स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में विशेष सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं दृष्टि से लग्न को देखने के कारण जातक सुन्दर, कार्यकुशल, शारीरिक दृष्टि से पुष्ट तथा प्रतिष्ठित भी होता है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक सुखी, प्रतिष्ठित, होशियार तथा स्त्री, धन कुटुम्ब आदि के सुख से भरा-पूरा रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न : अष्टमभाव : शुक्र

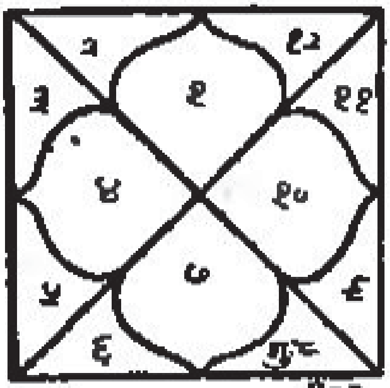

१८३

आठवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित द्वितीयेश तथा सप्तमेश शत्रु के प्रभाव से जातक को धन, कुटुम्ब, स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यन्त कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक कठिन परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि करता है तथा अपने चातुर्य द्वारा प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न : नवमभाव : शुक्र

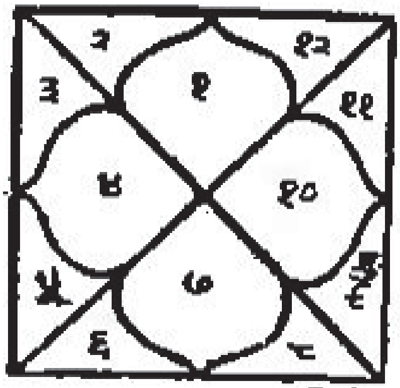

१८४

नवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर त्रिकोणस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक भाग्यवान तथा चतुर होता है, साथ ही उसे स्त्री तथा कुटुम्ब का अच्छा सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का अच्छा सुख भी मिलता है।

संक्षेप में, ऐसी ग्रह-स्थिति वाला जातक सुखी, धनी, भाग्यवान, धर्मात्मा, पराक्रमी तथा भाई-बहिनों के सुख से युक्त होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न : दशमभाव : शुक्र

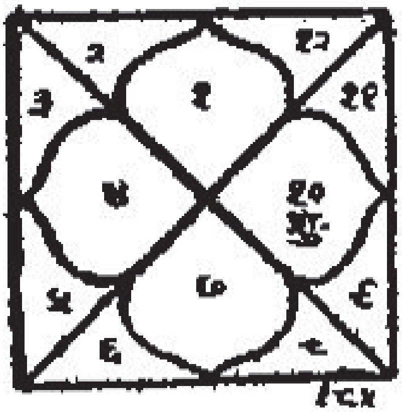

१८५

दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता एवं राज्य क्षेत्र से सुख प्राप्त होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से केन्द्रस्थ शुक्र द्वारा चतुर्थभाव को देखने से जातक को माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है।

संक्षेप में ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धनी, सुखी, राज्य द्वारा सम्मानित, माता, पिता तथा स्त्री के सुख को पाने वाला, यशस्वी तथा परम चतुर होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' में स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न: एकादशभाव: शुक्र

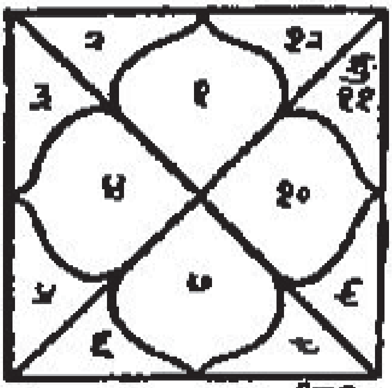

१८९

ग्यारहवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित षष्ठमेश तथा द्वितीयेश शुक्र के प्रभाव से जातक अपने चातुर्य द्वारा खूब लाभ कमाता है तथा धनी होता है। उसे स्त्री एवं व्यवसाय द्वारा भी सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

सातवीं शत्रु दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में बड़ी चतुराई के साथ सफलता मिलती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धनी, सुखी, चतुर तथा स्वार्थी होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' में स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मेष लग्न: द्वादशभाव: शुक्र

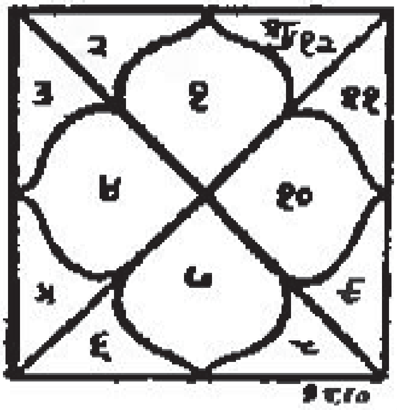

१९०

बारहवें भाव में अपने सामान्य शत्रु गुरु की राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक बाहरी सम्बन्धों द्वारा बड़ी चतुराई से धन तथा यश प्राप्त करता है तथा बहुत खर्चीला भी होता है।

सातवीं नीच दृष्टि से मित्र राशि के षष्ठ-भाव को देखने के कारण जातक शत्रु पक्ष में छल-छिद्र एवं भेद युक्ति से लाभ निकालता है तथा शत्रुओं द्वारा कुछ हानि भी उठाता है। संक्षेप में ऐसी ग्रह स्थिति का जातक संघर्ष-पूर्ण सामान्य जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

'मेष' लग्न में 'शनि'

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेष लग्न : प्रथमभाव : शनि

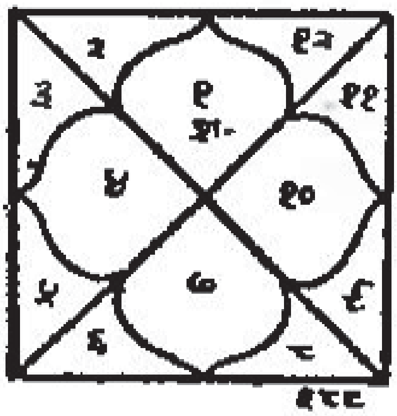

१८८

पहले भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा मान-प्रतिष्ठा में कमी रहती है तथा राज्य के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं। तीसरी मित्रदृष्टि तृतीयभाव पर पड़ने से पराक्रम तथा भाई-बहिनों की वृद्धि होती है, सातवीं मित्रदृष्टि सप्तमभाव पर पड़ने से स्त्री तथा व्यवसाय पक्ष में सफलता देता है तथा दसवीं दृष्टि से स्वराशि वाले दशमभाव को देखने के कारण राज्य तथा पिता के क्षेत्र में प्रतिष्ठा की वृद्धि भी करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेष लग्न : द्वितीयभाव : शनि

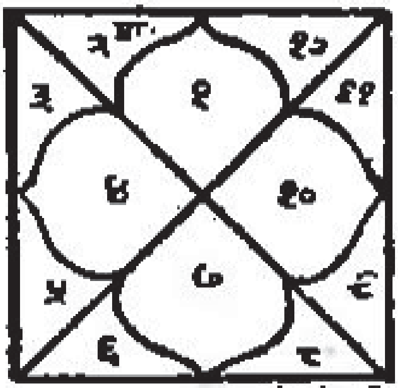

१८९

दूसरे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक धनी तथा कुटुम्बवान होता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं भवन से सुख में कुछ कमी आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होने पर भी जातक को अशान्तियों का सामना करना पड़ता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि वाले एकादशभाव को देखने से जातक की आयु में वृद्धि होती है। संक्षेप में ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक धनी तथा ऐश्वर्यवान होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेष लग्न : तृतीयभाव : शनि

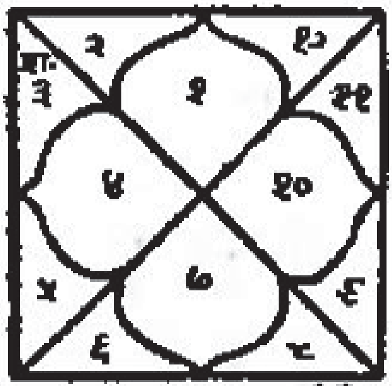

१९०

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित दशमेश तथा एकादशेश शनि के प्रभाव से जातक का पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। साथ ही पिता, राज्य द्वारा सहयोग मिलता है। तीसरी शत्रु दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या तथा सन्तान पक्ष में कमी रहती है। सातवीं शत्रु दृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से कारण खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थान के सम्बन्ध भी असन्तोषजनक रहते हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेष लग्न : चतुर्थभाव : शनि

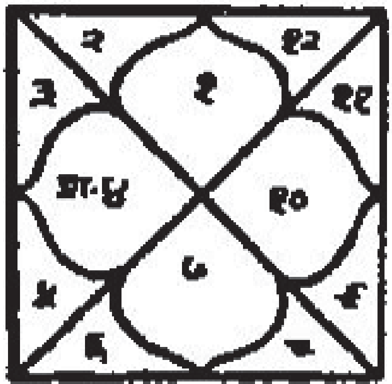

१९१

चौथेभाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता तथा भूमि-भवन के साधनों में कुछ कमी रहती है, परन्तु सुख में वृद्धि होती है। तीसरी मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रुपक्ष से लाभ होता है तथा शत्रुओं पर प्रभाव बना रहता है। सातवीं दृष्टि स्वराशि वाले दशमभाव में पड़ने से पिता राज्य व्यवसाय एवं सामान के क्षेत्र में वृद्धि होती रहती है। दसवीं नीचदृष्टि से लग्न को देखने के कारण जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा वह चिन्ताओं का भी कुछ शिकार बना रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेष लग्न: पंचमभाव: शनि

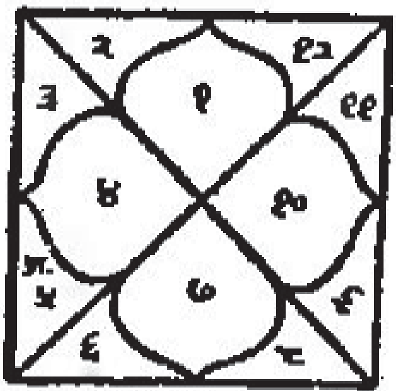

पाँचवें भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित त्रिकोणस्थ शनि के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र मे सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान पक्ष से मतभेद रहता है। तीसरी उच्चदृष्टि से मित्रराशि से सप्तभाव को देखने के कारण व्यवसाय एव स्त्री पक्ष में सफलता मिलती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है तथा राज्य एवं पिता से भी लाभ होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब का भी खूब लाभ होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेष लग्न : षष्ठभाव : शनि

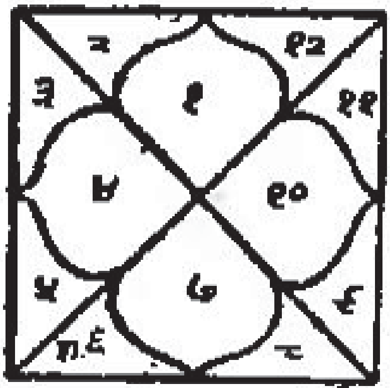

छठेभाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित दशमेश तथा एकादशेश शनि के प्रभाव से जातक को पिता के साथ वैमनस्य रहता है तथा राज्य पक्ष में कठिनाई से सफलता मिलती है। परन्तु आमदनी अच्छी रहती है तथा शत्रुओं पर विजय भी मिलती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कठिनाइयों से सफलता मिलती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक होता है तथा बाहरी संबंधों से असन्तोष रहता है। दसवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से कारण पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। ऐसा जातक बड़ा हिम्मती तथा प्रभावी होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेष लग्न : सप्तमभाव : शनि

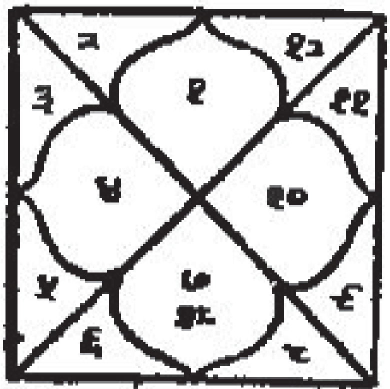

सातवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित दशमेश तथा एकादशेश शनि के प्रभाव से जातक को व्यवसाय एवं स्त्री-पक्ष में विशेष सफलता मिलती है। पिता तथा राज्य से बहुत लाभ होता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु मंगल की राशि वाले प्रथमभाव को देखने से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के क्षेत्र में कुछ असन्तोष रहता है तथा घरेलू सुखों में भी कमी आती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेषलग्न : अष्टमभाव : शनि

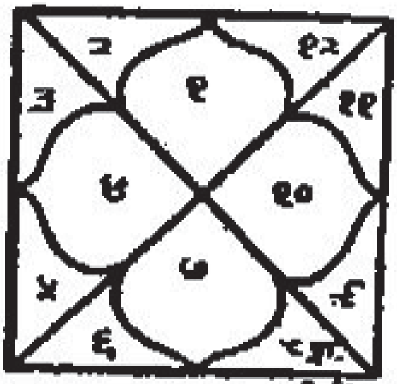

१४८

आठवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित एकादशेश शनि के प्रभाव से जातक को पुरातत्व एवं आयु का तो लाभ होता है, परन्तु आमदनी के क्षेत्र में कमी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि वाले दशम भाव को देखने के कारण राज्य तथा पिता-पक्ष से अल्प लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से कठिन परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुम्ब के क्षेत्र में सफलता मिलती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या तथा सन्तान पक्ष में त्रुटि रहती है। ऐसा जातक जबान का तेज तथा क्रोधी भी होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेषलग्न : नवमभाव : शनि

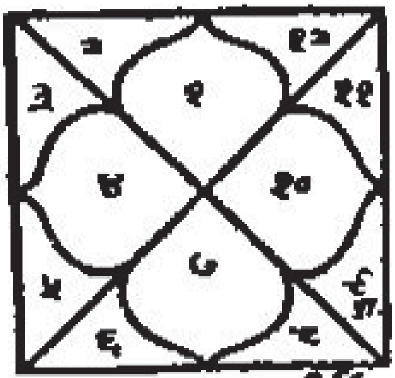

१४९

नवेंभाव में शत्रु बुध की राशि में स्थित शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य की आरम्भ में कम तथा बाद में विशेष उन्नति होती है। धर्म का पालन भी कम ही होता है। पिता तथा राज्य द्वारा लाभ मिलता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि वाले ग्यारहवें भाव को देखने के कारण आमदनी अच्छी रहती है तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति भी होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि के साथ भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है। संक्षेप, ऐसी ग्रह स्थिति का जातक शत्रुजयी, यशस्वी तथा धनी होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'दसमभाव' स्थित शनि का फलादेश

मेषलग्न : दसमभाव : शनि

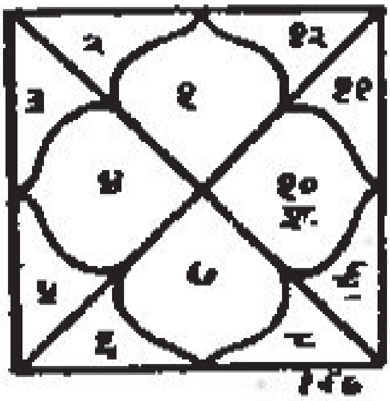

१५०

दसवेंभाव में स्वराशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक पिता तथा राज्य द्वारा विशेष शक्ति तथा लाभ प्राप्त करता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी-स्थानों के संबंध असंतोषजनक रहते हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि, भवन के सुख में कमी रहती है तथा दसवीं उच्चदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिलती है। संक्षेप में ऐसा जातक ऐश्वर्यवान्, विलासी तथा सुखी जीवन बिताने वाला होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेषलग्न : एकादशभाव : शनि

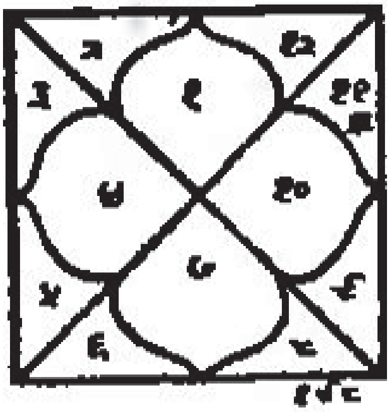

ग्यारहवें भाव में स्वराशि स्थित दशमेश शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब रहती है। उसे पिता तथा राज्य द्वारा भी यथेष्ट लाभ मिलता है। तीसरी नीचदृष्टि से शत्रु की राशि वाले प्रथमभाव को देखने से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या तथा संतान पक्ष में भी त्रुटि बनी रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि तो होती है, परन्तु पुरातत्व का सामान्य लाभ होता है एवं दैनिक जीवन में कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मेषलग्न : द्वादशभाव : शनि

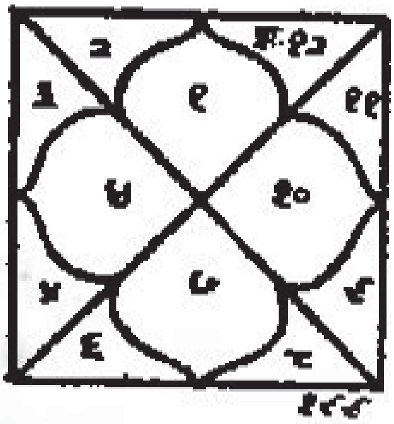

बारहवें भाव में शत्रु बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अत्यधिक होता है तथा बाहरी स्थानों, पिता एवं राज्य के पक्ष से भी हानि उठानी पड़ती है। तीसरी मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। सातवीं मित्रदृष्टि से छठेभाव को देखने से शत्रुपक्ष में प्रभाव स्थापित होता है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्योन्नति में भी बड़ी कठिनाइयाँ आती हैं तथा विशेष परिश्रम द्वारा थोड़ी ही सफलता मिल पाती है।

'मेष' लग्न में 'राहु'

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेष लग्न : प्रथमभाव : राहु

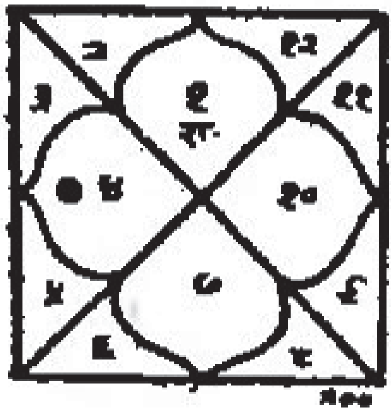

पहले भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता। हृदय में विभिन्न प्रकार की चिन्तायें भी बनी रहती हैं। ऐसा जातक झूठ, फरेब तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेने वाला तथा बड़ा हिम्मती होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : द्वितीयभाव : राहु

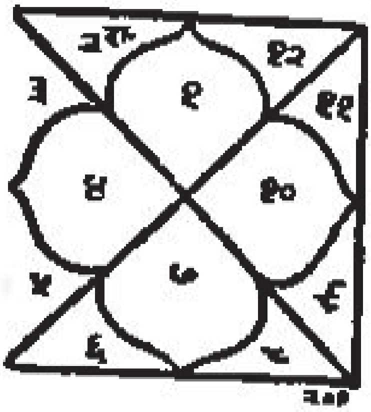

२०१

दूसरे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक धन सम्बन्धी चिन्ताओं तथा अनेक प्रकार से संकटों से ग्रस्त बना रहता है। कौटुम्बिक क्लेश भी भोगने पड़ते हैं। परन्तु बारम्बार हानि उठाकर भी जातक अन्त में अपने युक्तिबल से धनी क्षतिपूर्ति करने में समर्थ हो जाता है तथा समाज में धनी व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित भी होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : तृतीमभाव : राहु

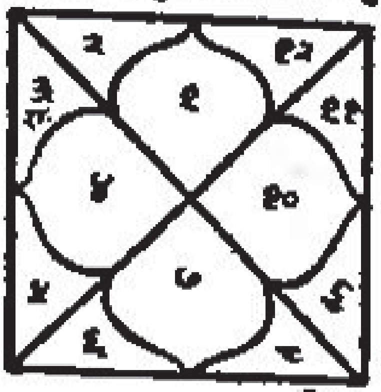

२०२

तीसरे भाव में उच्चस्थ राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा उसे भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक बड़ा हिम्मती, साहसी, युक्तिबल में प्रवीण तथा अपनी भीतरी कमजोरी को प्रकट न करने वाला होता है और अपने इन्हीं गुणों के कारण सफलता भी प्राप्त करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : चतुर्थभाव : राहु

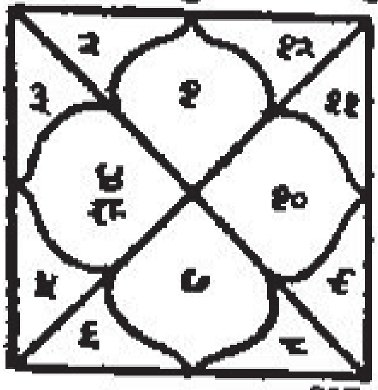

२०३

चौथेभाव में शत्रुराशिस्थ राहु से प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी का शिकार होना पड़ता है। घरेलू शान्ति भी नहीं रहती। वह मानसिक-अशान्तियों का शिकार बना रहता है तथा गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेकर भी अधिक सफल नहीं हो पाता।

'मेष' लग्न की कुण्डली से 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : पंचमभाव : राहु

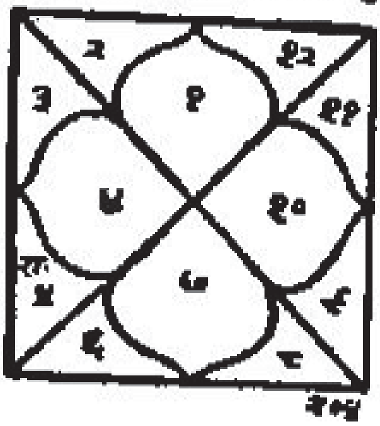

२०४

पाँचवेंभाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को विद्या के क्षेत्र में बड़ी कठिनाइयों के बाद भी थोड़ी ही सफलता मिल पाती है। उसे सन्तान पक्ष से भी कष्ट होता है। परन्तु अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर वह सामान्य सफलतायें प्राप्त करता रहता है। ऐसा जातक कम पढ़ा-लिखा तथा परेशानियों में फँसा रहने वाला होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : षष्ठभाव : राहु

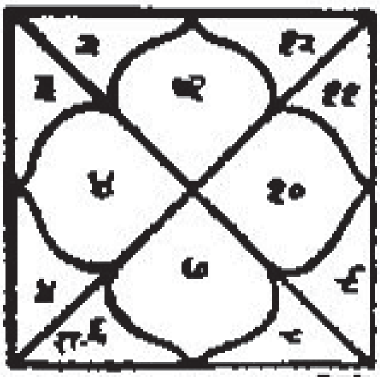

३०५

छठेभाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपने शत्रु-पक्ष में हिम्मत, बहादुरी तथा गुप्त युक्तियों से काम लेकर प्रभाव स्थापित करता है तथा कठिन परिस्थितियों में भी अपने धैर्य को नहीं छोड़ता। ऐसा व्यक्ति बारम्बार मुसीबतों का शिकार बनता रहता है, परन्तु अपने साहस एवं धैर्य के बल पर उन सब पर विजय भी पाता रहता है।

'मेष' लग्न की कुंडली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : सप्तमभाव : राहु

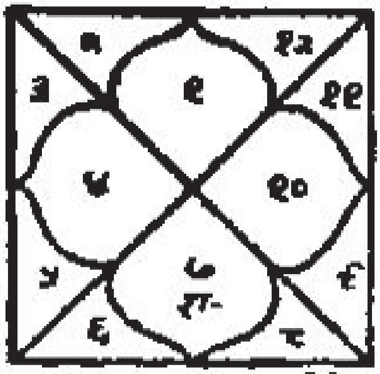

३०६

सातवेंभाव में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में चिन्ता एवं कष्टों का शिकार होता है, परन्तु अपनी गुप्त-युक्तियों के बल पर उन कठिनाइयों का निराकरण करता है। व्यक्ति के पारिवारिक-जीवन में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं तथा जैसे-तैसे ही निर्वाह हो पाता है।

'मेष' लग्न की कुंडली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : अष्टमभाव : राहु

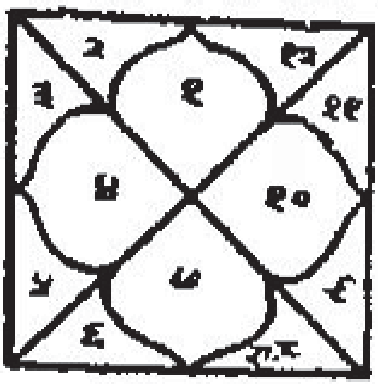

३०७

आठवेंभाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को जीवन में अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का शिकार होना पड़ता है। एक के बाद दूसरी मुसीबतें घेरे रहती हैं तथा पुरातत्त्व विषयक हानि भी उठानी पड़ती है। वह गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेता है, फिर भी उसकी चिन्ताओं एवं परेशानियों का अन्त नहीं हो पाता।

'मेष' लग्न की कुंडली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : नवमभाव : राहु

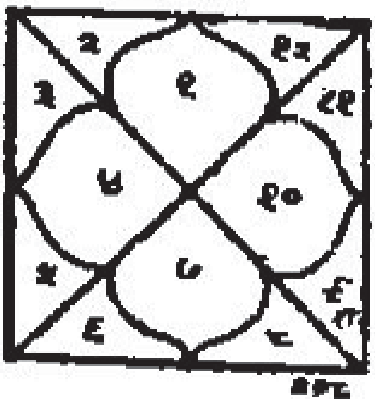

३०८

नवेंभाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति में अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित होती रहती हैं। धर्म पालन में भी श्रद्धा नहीं रहती। उसे बारम्बार अपयश, कष्ट, निराशा एवं अपमान का सामना करना पड़ता है तथा अत्यधिक दुःख उठाते रहने के बावजूद भी बहुत कम सफलतायें मिल पाती हैं।

'मेष' लग्न की कुंडली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : दशमभाव : राहु

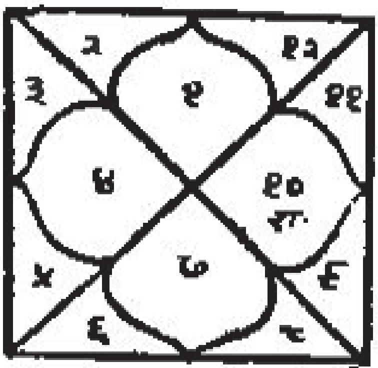

२०९

दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पिता तथा राज्य के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा नौकरी, व्यवसाय एवं प्रतिष्ठा के क्षेत्र में भी बहुत संकट आते हैं। ऐसे जातक को भाग्योन्नति में बहुत कम सफलता मिलती है तथा अनेक प्रकार के दुःख भोगने पड़ते हैं।

'मेष' लग्न की कुंडली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : एकादशभाव : राहु

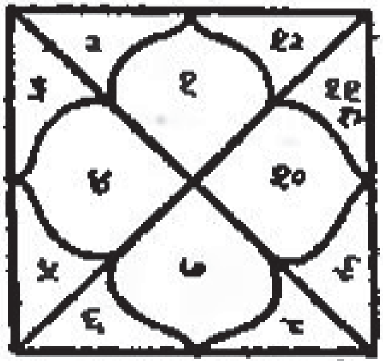

२१०

ग्यारहवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी बहुत अच्छी रहती है, परन्तु उसके लिए उसे कठोर परिश्रम भी करना पड़ता है। कभी-कभी लाभ के स्थान पर हानि के योग भी उपस्थित होते हैं। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक मितव्ययी, परिश्रमी, धनी तथा स्वार्थी होता है।

'मेष' लग्न की कुंडली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मेषलग्न : द्वादशभाव : राहु

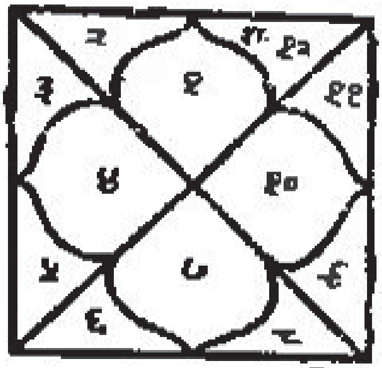

२११

बारहवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को खर्च की अधिकता के कारण बहुत कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं तथा बाहरी स्थानों के संबंध से भी कष्ट मिलता है। बीच-बीच में कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करना तथा ठाठ-बाट से रहना—ये दोनों बातें भी साथ-साथ चलती हैं, परन्तु ऋण एवं व्यय के बोझ से मुक्ति नहीं मिल पाती।

'मेष' लग्न में 'केतु'

'मेष' लग्न की कुंडली के 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फल

मेषलग्न : प्रथमभाव : केतु

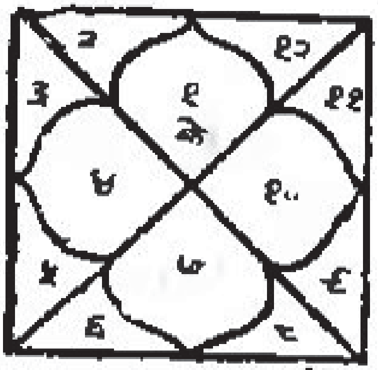

२१२

पहलेभाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शारीरिक-कष्ट, मानसिक-चिन्तायें तथा अन्य प्रकार की परेशानियों का शिकार बना रहता है। उसके शरीर में कहीं चोट भी लगती है तथा सौन्दर्य में भी कमी आ जाती है। ऐसा व्यक्ति हिम्मती, परिश्रमी तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेने वाला होता है, परन्तु फिर भी अनेक त्रुटियों का शिकार बना रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : द्वितीयभाव : केतु

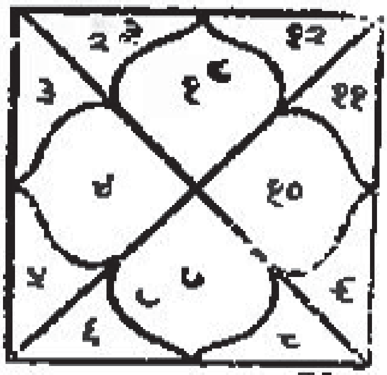

२१३

दूसरे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शारीरिक-कष्ट, चिन्ता, धन, की कमी, कौटुम्बिक परेशानी एवं झगड़ों का शिकार बना रहता है, परन्तु अपने युक्ति-बल के आर्थिक स्थिति में थोड़ा-बहुत सुधार कर लेता है। भीतर से चिन्तित, निर्धन तथा दुःखी रहने पर भी वह अपनी असलियत को प्रकट नहीं होने देता, फलतः लोग उसे धनवान ही समझते रहते हैं।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : तृतीयभाव : केतु

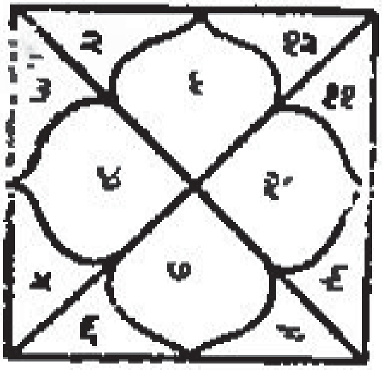

२१४

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के पक्ष में कमजोरी आती है तथा वह भीरु स्वभाव का होता है। गुप्त-युक्तियों के आश्रय से स्वार्थ साधन करना ही उसका उद्देश्य होता है, परन्तु अत्यधिक परिश्रम करने पर भी उसे सफलता बहुत कम ही मिल पाती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : चतुर्थभाव : केतु

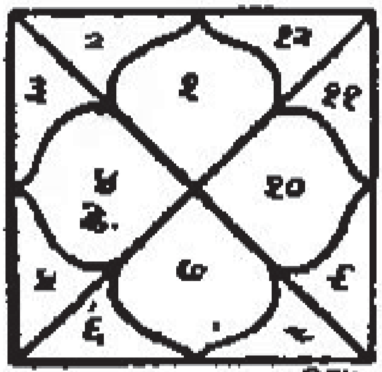

२१५

चौथे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के सुख में बहुत कमी रहती है तथा कुटुम्ब के विषय में भी अशान्तिजनी रहती है। चन्द्रमा की राशि पर केतु के होने कारण जातक का मनोबल बना रहता है, अतः उसी के बल पर वह अपने संकट का समय निकालता है। ऐसा जातक अपना देश छोड़ कर विदेश में भी जा सकता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : पंचमभाव : केतु

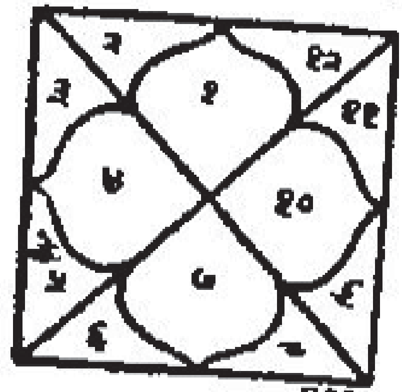

२१६

पाँचवें भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को विद्याध्ययन में कठिनाइयां आती हैं। स्मरणशक्ति निर्बल होने के कारण वह अधिक विद्या प्राप्त नहीं कर पाता तथा सन्तानपक्ष से भी दुःखी रहता है। इस ग्रह स्थिति का जातक स्वभाव से उग्र तथा कठोर वचन बोलने वाला होता है। अत्यन्त परिश्रम करने पर भी उसे कम सफलता ही मिलती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : षष्ठभाव : केतु

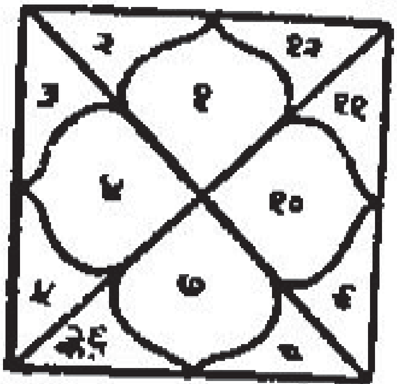

२२७

छठे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष पर विजयी बना रहता है। वह बड़ा हिम्मती, बहादुर तथा विवेकी होता है, परन्तु मन के भीतर कुछ कमजोरी भी छिपी रहती है। उसे ननसाल के पक्ष से कुछ हानि उठानी पड़ती है। संक्षेप में ऐसा व्यक्ति विवेकी, हिम्मती तथा शत्रुजयी होता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : सप्तमभाव : केतु

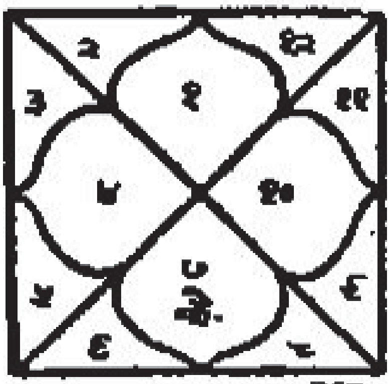

२२८

सातवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा पारिवारिक-गुत्थियों को सुलझाने में अनेक युक्तियों से काम लेना पड़ता है। अपनी गुप्त-युक्तियों द्वारा उसे व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष में कुछ कमियों के साथ सफलता मिलती रहती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : अष्टमभाव : केतु

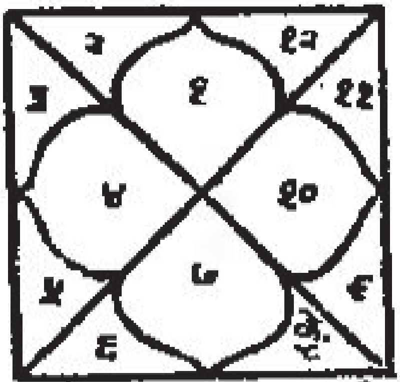

२२९

आठवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपने जीवन में कई बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि भी उठानी पड़ती है। गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेकर जातक अपनी कठिनाइयों पर कुछ विजय भी पाता है, परन्तु कष्टों का अन्त नहीं होता। उसके शरीर में भी कोई-न-कोई रोग बना ही रहता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : नवम भाव : केतु

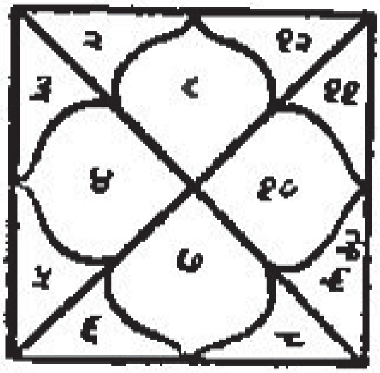

२२०

नवें भाव में शुभ ग्रह गुरु की राशि में स्थित उच्च के प्रभाव से जातक भाग्यवान, धर्मात्मा तथा धनी होता है, परन्तु उसके जीवन में अनेक प्रकार के परिवर्तन भी आते रहते हैं तथा उसे अनेक प्रकार के संकटों एवं कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। कुल मिला कर ऐसा जातक संघर्षपूर्ण सुखी एवं धार्मिक जीवन व्यतीत करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : दशमभाव : केतु

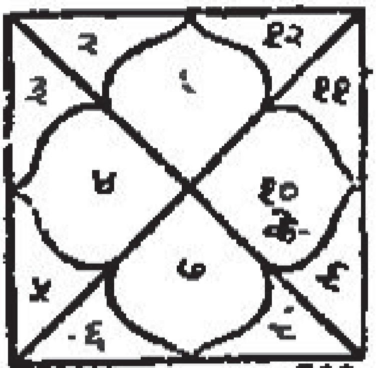

२२१

दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अनेक कठिनाइयों से संघर्ष करना पड़ता है। उसे अपने व्यवसाय में अनेक बार परिवर्तन करने की आवश्यकता भी पड़ती है, परन्तु अपनी गुप्त-युक्तियों एवं कठिन परिश्रम के बल पर वह मान-प्रतिष्ठा तथा सफलताएँ प्राप्त करता है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : एकादशभाव : केतु

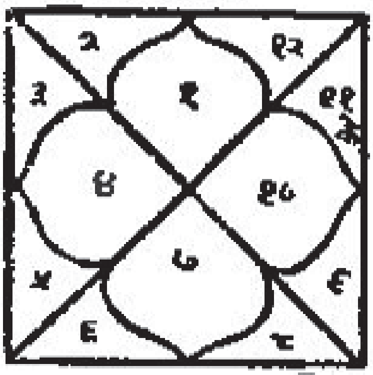

२२२

ग्यारहवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की आमदनी बहुत अच्छी रहती है। वह अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर अधिक मुनाफा कमाता है। परन्तु उसे अपनी आय के साधनों में अनेक बार परिवर्तन करने के साथ ही कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता भी पड़ती है।

'मेष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मेष लग्न : द्वादशभाव : केतु

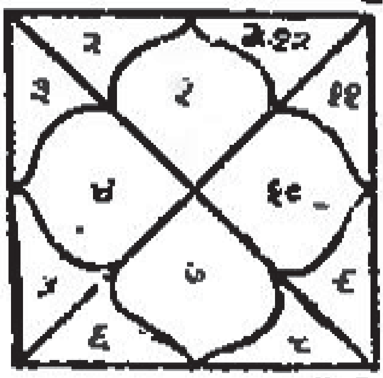

२२३

बारहवें भाव में अपने शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थान के सम्बन्धों में कष्ट प्राप्त होता है तथा खर्च सम्बन्धी परेशानियाँ भी अधिक उठानी पड़ती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के परिवर्तन भी आते रहते हैं। गुरु के शुभ ग्रह होने के कारण कभी-कभी अल्प लाभ भी होता है तथा अच्छे कामों में ही व्यय होता है।

'वृष' लग्न

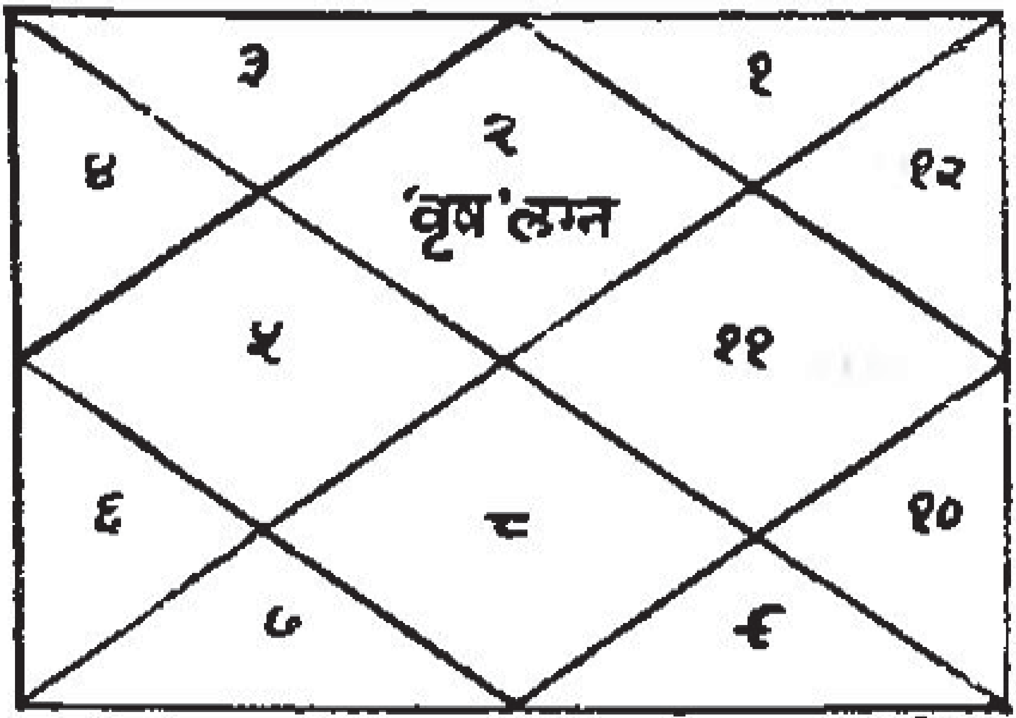

२२५

['वृष' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'वृष' लग्न का फलादेश

'वृष' लग्न में जन्म लेने वाले जातक के शरीर का रंग गोरा अथवा गेहुँआ होता है। वह पुष्ट शरीर, लम्बे दाँत वाला, रजोगुणी, गुणवान, यशस्वी, बुद्धिमान, परम धैर्यवान, शूरवीर, साहसी, मधुरभाषी, यशस्वी, ईश्वरभक्त, ऐश्वर्यशाली, उदार, श्रेष्ठ संगति में बैठने वाला, कुंचित केशों वाला, दीर्घजीवी, शौकीन-मिजाज तथा स्त्रियों जैसे नाजुक-मिजाज वाला भी होता है। वह प्रकृति से अत्यन्त शान्त होता है, परन्तु अवसर पड़ने पर युद्ध अथवा संघर्ष में अपना प्रबल पराक्रम भी प्रकट कर दिखाता है।

'वृष' लग्न वाला जातक अपने परिवारीजनों से अनाहूत, शस्त्राघात पाने वाला, धन-क्षय युक्त, मित्र-वियोगी, कलह-युक्त, चिन्ताओं से पीड़ित, मानसिक-रोगी, तथा मन-ही-मन दुःखी रहने वाला भी होता है।

कुछ विद्वानों के मतानुसार 'वृष' लग्न वाला जातक अपनी आयु के ३६वें वर्ष के बाद अनेक प्रकार के कष्टों को भी भोगता है।

'वृष' लग्नवालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी-फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डलियों में संख्या २२५ से ३३२ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें। इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'वृष' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २२५ से २३६ के बीच देखना चाहिए।

२—'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २२५
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २२६
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २२७
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २२८
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २२९
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २३०
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २३१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २३२
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २३३
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २३४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २३५
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २३६

'वृष' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१—'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २३७ से २४८ के बीच देखना चाहिए।

२—'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २३७
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २३८
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २३९
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २४०
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २४१
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २४२

(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २४३
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २४४
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २४५
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २४६
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २४७
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २४८

'वृष लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१—'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी-फलादेश का उदाहरण-कुण्डली २४९ से २६० के बीच देखना चाहिए।

२—'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २४९
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २५०
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २५१
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २५२
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २५३
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २५४
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २५५
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २५६
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २५७
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २५८
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २५९
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २६०,

'वृष' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २६१ के २७२ के बीच देखना चाहिए।

२—'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २६१

(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २६२
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २६३
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २६४
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २६५
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २६६
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २६७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २६८
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २६९
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २७०
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २७१
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २७२

'वृष' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २७३ से २८४ के बीच देखना चाहिए।

२—'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २७३
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २७४
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २७५
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २७६
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २७७
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २७८
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २७९
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २८०
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २८१
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २८२
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २८३
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २८४

'वृष' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २८५ से २९६ के बीच देखना चाहिए।

२—'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २८५
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २८६
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २८७
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २८८
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २८९
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २९०
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २९१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २९२
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २९३
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २९४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २९५
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २९६

'वृष' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१. 'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २९७ से ३०८ के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए।

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २९७
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २९८
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २९९
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३००
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३०१
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३०२
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३०३
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३०४

(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ३०५
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३०६
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३०७
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३०८

'वृष' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१. 'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३०९ से ३२० के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भागों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ३०९
(ख) वृष' राशि पर हो तो संख्या ३१०
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३११
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३१२
(ङ) 'सिंह' राशिपर हो तो संख्या ३१३
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३१४
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३१५
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३१६
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ३१७
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३१८
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३१९
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३२०

'वृष' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१. 'वृष' लग्न वालों तो अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३२१ से ३३२ के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ३२१

(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३२२
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३२३
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३२४
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३२५
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३२६
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३२७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३२८
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ३२९
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३३०
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३३१
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३३२

'वृष' लग्न में 'सूर्य'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : प्रथमभाव : सूर्य

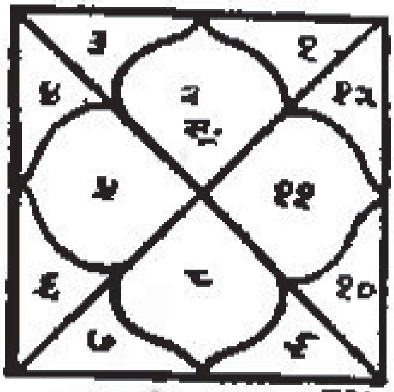

२२५

पहले भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित चतुर्थेश सूर्य के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सामान्य सुख प्राप्त होता है तथा शारीरिक सौन्दर्य में भी कुछ कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य सप्तमभाव को देखता है अतः जातक को स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में सफलता एवं मनोनुकूलता प्राप्त होती है। ऐसी ग्रह स्थिति का जातक प्रभावशाली तथा तेज मिजाज वाला भी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

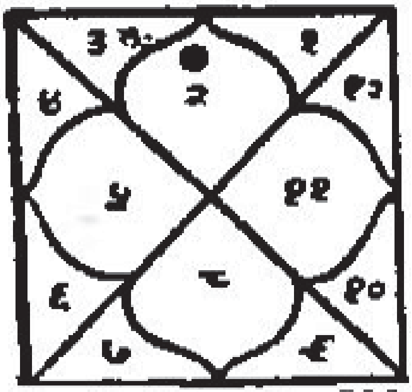

२२६

दूसरे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित चतुर्थेश सूर्य के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है, परन्तु माता के सुख में कुछ कमी बनी रहती है। साथ ही भूमि, भवन का सुख रहते हुए भी उसका पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा उसे पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। यों, जातक का दैनिक जीवन सुखी रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : तृतीयभाव : सूर्य

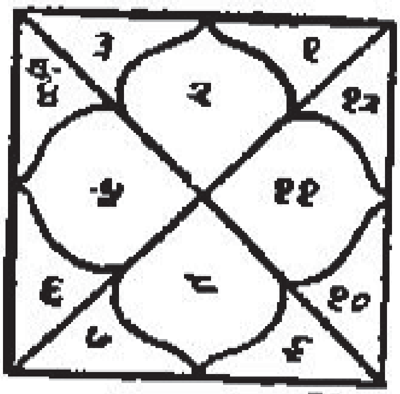

२२७

तीसरे भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित चतुर्थेश सूर्य के प्रभाव से जातक को भूमि, भवन एवं माता का सुख प्राप्त होता है। पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक को भाग्योन्नति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा धर्म-पालन में भी लापरवाही बनी रहती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

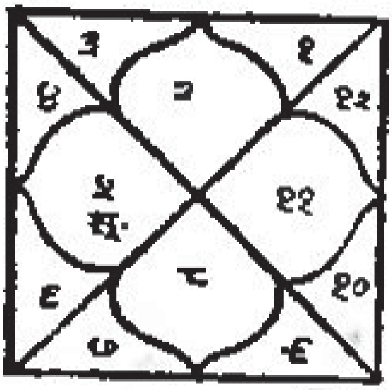

२२८

चौथे भाव में स्वराशिस्थ सूर्य के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा परिवार का सुख यथेष्ट मात्रा में प्राप्त होता है। जातक बड़े ठाठ-बाट से रहता है तथा दिखावा खूब करने पर भी उसके मन में कुछ अशान्ति बनी रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में असन्तोष रहता है तथा प्रतिष्ठा एवं सफलता पाने के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : पंचमभाव : सूर्य

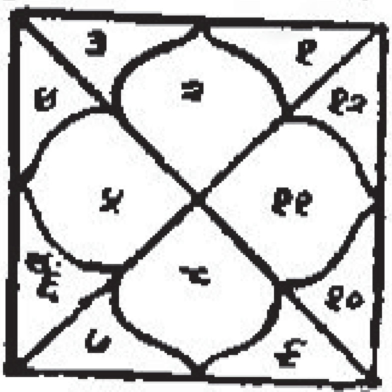

२२९

पाँचवें भाव में मित्र बुध की राशि में स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख प्राप्त होता है तथा विद्या एवं सन्तान का पक्ष भी श्रेष्ठ रहता है। ऐसा जातक दूरदर्शी, गंभीर तथा बुद्धिमान होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण जातक को आय के साधन भी अच्छे रहते हैं और उसे समय-समय पर विशेष लाभ के अवसर भी मिलते हैं।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

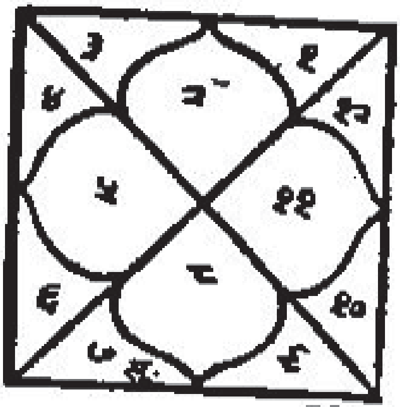

२३०

छठे भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने शत्रुओं द्वारा कठिनाइयों का सामना तो करना पड़ता है, परन्तु वह उन पर अपना प्रभाव स्थापित कर लेता है, परन्तु फिर भी माता, भूमि व भवन के सुख में कमी रहती है।

सातवीं उच्च दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण जातक के बाहरी स्थानों से अच्छे सम्बन्ध रहते हैं। यद्यपि खर्च अधिक रहता है, परन्तु सुख भी प्राप्त होता है। ऐसे जातक को अपने लग्न स्थान से दूर जाकर भी रहना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृषलग्न : सप्तमभाव : सूर्य

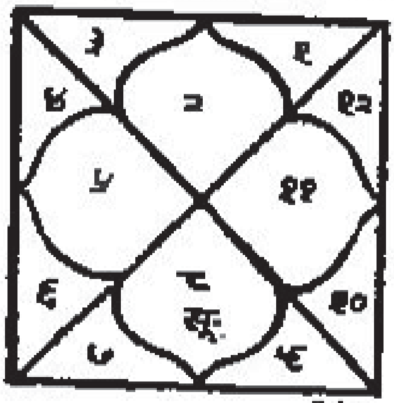

२३१

सातवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को व्यवसाय तथा स्त्री पक्ष में सफलताएँ मिलती हैं तथा भूमि, भवन एवं माता के सुख का भी लाभ होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा पारिवारिक सुख में कुछ कमी आती है तथा हृदय में भी थोड़ी अशान्ति बनी रहती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृषलग्न : अष्टमभाव : सूर्य

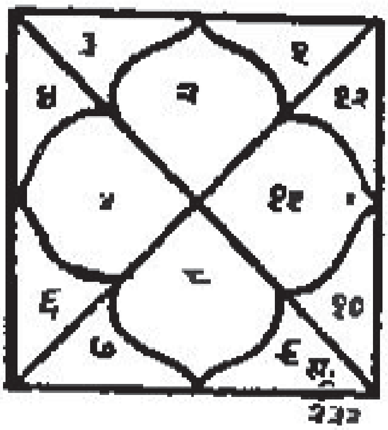

२३२

आठवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने जन्म स्थान से दूर रहना पड़ता है तथा माता, भूमि, भवन एवं पारिवारिक सुख में भी विघ्न उपस्थित होते रहते हैं, परन्तु पुरातत्त्व एवं आयु का विशेष लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक को कुटुम्ब एवं धन का लाभ मिलता रहता है तथा वह धनी भी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : नवमभाव : सूर्य

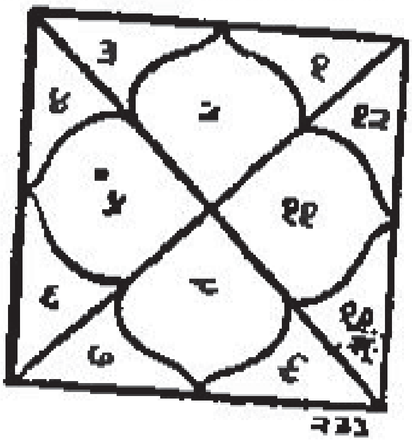

नवें त्रिकोण भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के धर्म, यश तथा सौभाग्य की वृद्धि होती है, परन्तु माता, भूमि एवं भवन के सम्बन्ध में कुछ असन्तोष रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है। ऐसा जातक अपने पराक्रम एवं बुद्धि बल के उपयोग द्वारा ही कुछ कमियों के साथ सफलता प्राप्त करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : दशमभाव : सूर्य

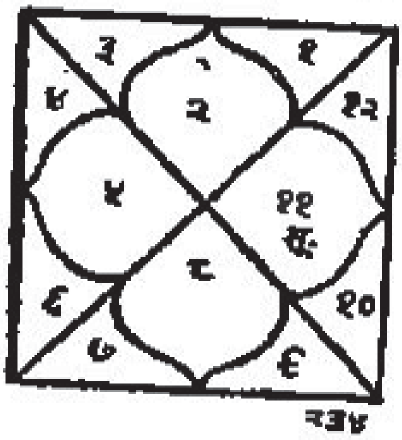

दसवें केन्द्र भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ अपूर्ण सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से स्वराशि वाले चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन आदि के सुख का लाभ होता है तथा पारिवारिक सुख भी बढ़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : एकादशभाव : सूर्य

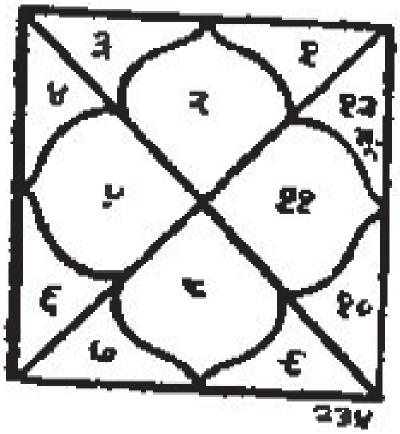

ग्यारहवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित उष्णग्रह सूर्य के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती रहती है तथा माता, कुटुम्ब, भूमि एवं भवन का सुख भी पर्याप्त मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण जातक के विद्या एवं सन्तान पक्ष में भी वृद्धि होती है तथा उसका जीवन आनन्दपूर्ण व्यतीत होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : द्वादशभाव : सूर्य

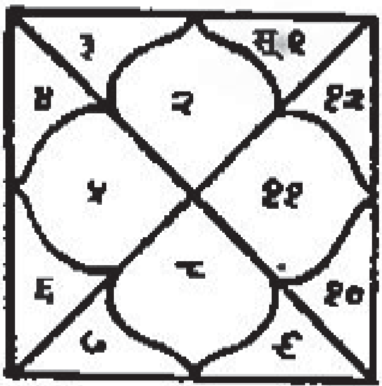

२२६

बारहवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर उच्चस्थ सूर्य के प्रभाव से जातक का बाहरी स्थानों से श्रेष्ठ सम्बन्ध रहता है, परन्तु खर्च अधिक होता है तथा माता, परिवार एवं भूमि-भवन के सुख में भी कुछ कमी रहती है।

सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु राशि के षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर बड़ी कठिनाइयों के बाद प्रभाव स्थापित हो पाता है। ऐसा जातक यदि परदेश में जाकर रहे तो उसे अधिक लाभ होता है।

'वृष' लग्न में 'चन्द्रमा'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

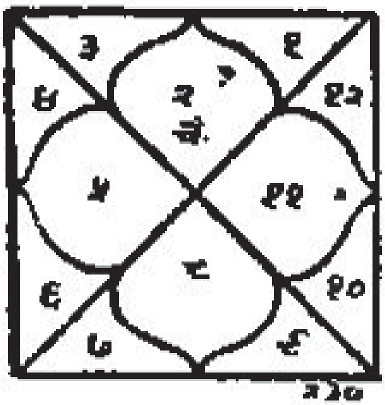

२२७

पहले भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित चतुर्थेश उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव जातक का मनोबल बहुत बढ़ा रहता है। उसे अपने भाई-बहिनों का सुख यथेष्ट मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होकर सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में असन्तोष बना रहता है तथा परिवार को चलाने में भी कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

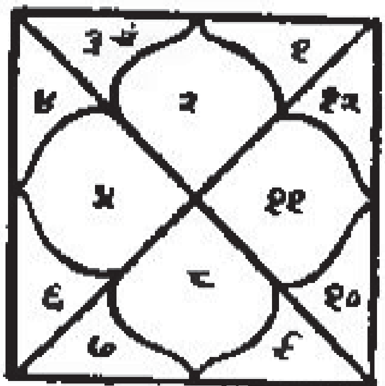

२२८

दूसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चतुर्थेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने पराक्रम द्वारा धनोपार्जन करता है तथा कुटुम्ब का सुख भी पाता है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख एवं पराक्रम में कुछ कमी बनी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसी ग्रहस्थिति वाला जातक ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

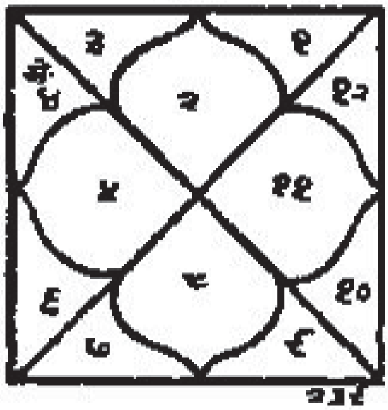

२३९

तीसरे भाव में स्वराशिस्थ चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। वह अत्यन्त हिम्मती, उद्योगी तथा प्रसन्नचित्त वाला होता है, अतः सर्वत्र यश तथा प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण धर्म-पालन में विशेष रुचि नहीं होती तथा भाग्य वृद्धि के लिए अधिक परिश्रम भी करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र

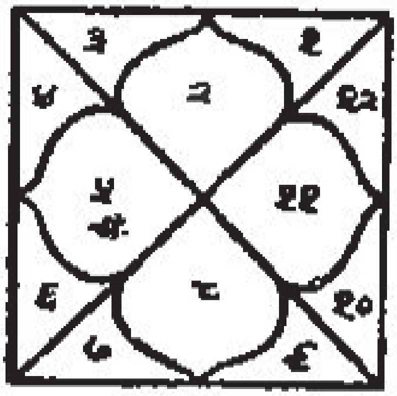

२४०

चौथे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित चतुर्थेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख में वृद्धि होती है। साथ ही भाई-बहिन का सुख भी मिलता है तथा पराक्रम बढ़ता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण जातक को पिता तथा राज्य के क्षेत्र में विशेष परिश्रम के बाद ही सफलता मिल पाती है। संक्षेप में, ऐसा जातक सुखी जीवन बिताता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

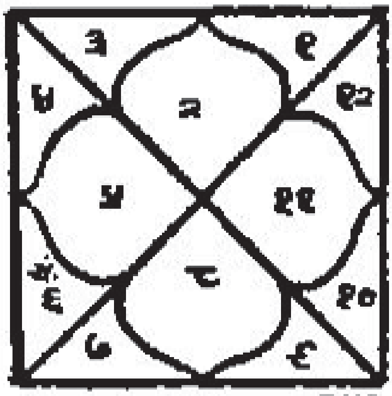

२४१

पाँचवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा संतान के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। छोटे भाई-बहिनों से प्रेमपूर्ण सम्बन्ध बना रहता है।

सातवीं सामान्य-मित्र दृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण जातक अपने बुद्धि-बल से आमदनी के साधनों को बढ़ाता है तथा ऐश्वर्यशाली एवं धनी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

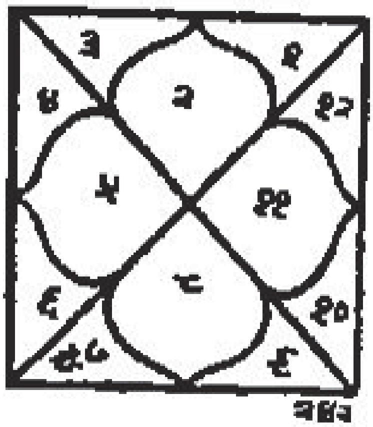

छठे भाव में अपने सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष पर अपना प्रभाव बनाये रखता है तथा झगड़े मुकद्दमों में सफलता प्राप्त करता है। अत्यन्त हिम्मती होते हुए भी जातक को कुछ भीतरी चिंताएँ घेरे रहती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु व्यय (खर्च) अधिक बना रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

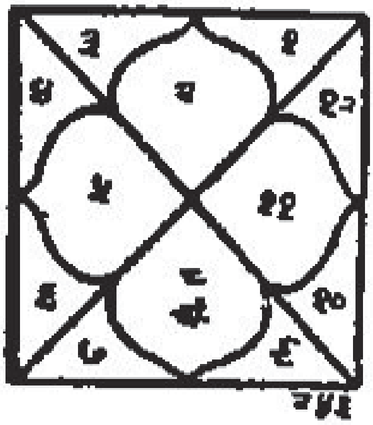

सातवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को व्यवसाय तथा स्त्री के पक्ष में हानि, चिन्ता एवं कठिनाइयों का शिकार बनना पड़ता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से प्रथम भाव के देखने के कारण जातक सुन्दर शरीर वाला, प्रतिष्ठित तथा यशस्वी होता है, साथ ही उसका हृदय भी बलवान बना रहता है। कुल मिला कर ऐसे जातक का जीवन संघर्ष पूर्ण होता है।

'वृष' लग्न की कुंडली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

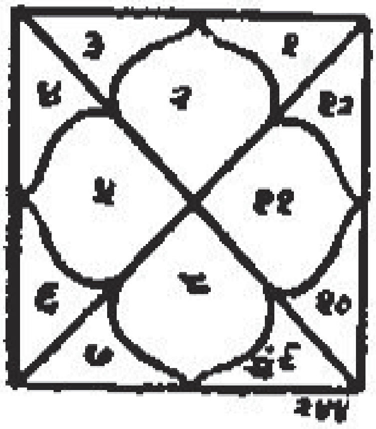

आठवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित चतुर्थेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख में कमी आ जाती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है; परन्तु इस लाभ के लिए उसे अत्यधिक परिश्रम भी करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुंडली के 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : नवमभाव : चन्द्र

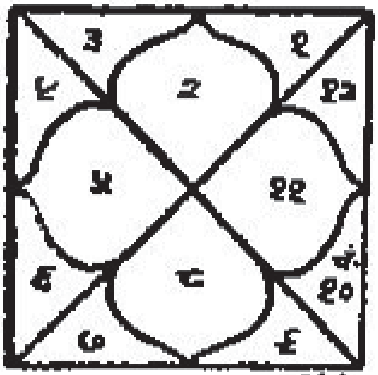

२४५

नवेंभाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक धर्मात्मा तथा भाग्यशाली होता है, साथ ही उसे भाई-बहिनों का सहयोग भी मिलता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले चतुर्थभाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक हिम्मती, फुर्तीला तथा प्रसन्न स्वभाव वाला होता है।

'वृष' लग्न की कुंडली के 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृषलग्न : दशमभाव : चन्द्र

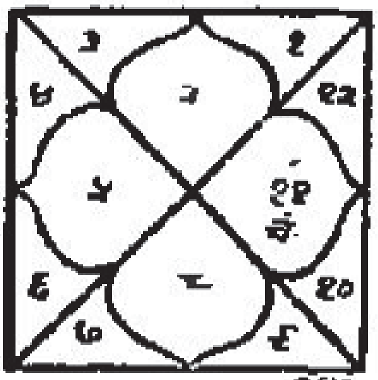

२४६

दसवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का अपने पिता के साथ थोड़ा मतभेद रहता है तथा राज्य के क्षेत्र में भी अत्यधिक परिश्रम द्वारा कठिनाइयों पर विजय प्राप्त होती है। भाई-बहिन का सुख अच्छा मिलता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण जातक को माता, भूमि, भवन तथा पारिवारिक-सुख भी यथेष्ट मात्रा में उपलब्ध होता है।

'वृष' लग्न की कुंडली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृषलग्न : एकादशभाव : चन्द्र

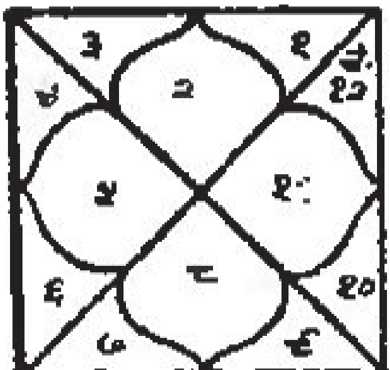

२४७

ग्यारहवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित चतुर्थेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है तथा भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का भी अच्छा लाभ होता है। संक्षेप में ऐसा जातक बुद्धिमान, विद्वान, सन्ततिवान, धनी, मधुरभाषी तथा ऐश्वर्यभागी होता है।

'वृष' लग्न की कुंडली के 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृषलग्न : द्वादशभाव : चन्द्र

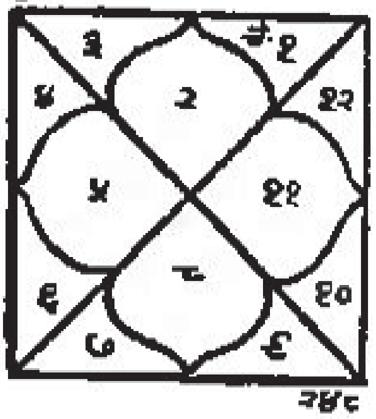

बारहवेंभाव में अपने मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्च भी अधिक रहता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी कमी आ जाती है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक झगड़े-टंटे तथा शत्रुओं के क्षेत्र में बड़ी युक्तियों से काम लेकर सफलता प्राप्त करता है।

'वृष' लग्न में 'मंगल'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृषलग्न : प्रथमभाव : मंगल

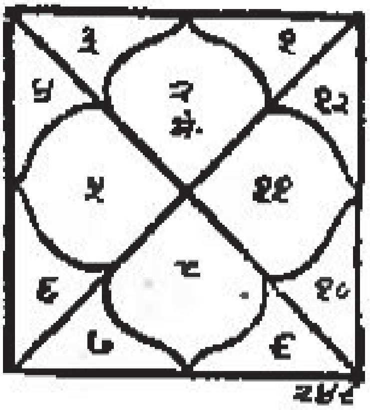

पहलेभाव में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित सप्तमेश एवं व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को रक्त-विकार, धातुक्षीणता, दुर्बलता आदि की शिकायत रहती है, परन्तु शारीरिक-शक्ति का भी लाभ होता है। बाहरी स्थानों से अच्छे संबंध रहते हैं। चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से स्वक्षेत्रीय सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख प्राप्त होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व संबंधी परेशानियाँ उपस्थित होती रहती हैं।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृषलग्न : द्वितीयभाव : मंगल

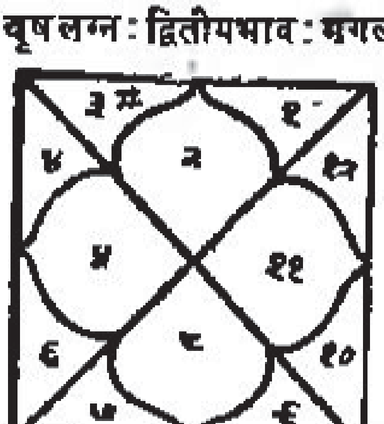

दूसरेभाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के विषय में चिन्तायें बनी रहती हैं, परन्तु बाहरी संबंधों से लाभ होता है। चौथी मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि एवं संतान का पक्ष भी कमज़ोर रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में भी हानि तथा चिन्तायें उपस्थित होती रहती हैं। आठवीं उच्चदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक के धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती रहती है एवं जातक भाग्यशाली माना जाता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : तृतीयभाव : मंगल

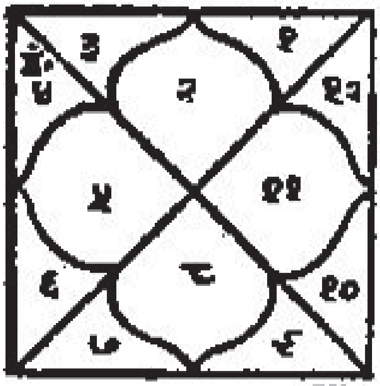

२४१

तीसरेभाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन तथा पराक्रम के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है। स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी ऐसा ही होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक के शत्रु नष्ट होते हैं। सातवीं उच्चदृष्टि से नवमभाव के देखने के कारण धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण जातक को पिता एवं राज्य-पक्ष में हानि एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा प्रतिष्ठा के क्षेत्र में भी रुकावटें आती हैं।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : चतुर्थभाव : मंगल

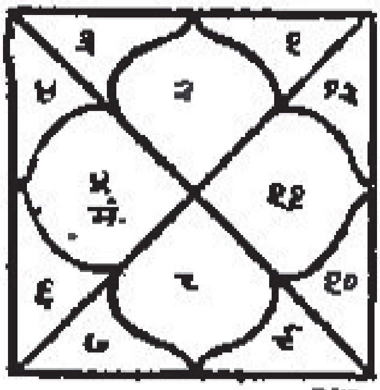

२४२

चौथे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को भूमि, भवन एवं माता के सुख की हानि होती है तथा घरेलू सुख भी कम मिलता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि के सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है। बाहरी स्थानों से सफलता मिलती है तथा खर्च अधिक रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता एवं राज्य पक्ष में हानि उठानी पड़ती है। आठवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आय के साधनों में वृद्धि होती है तथा बाहरी संबंधों द्वारा विलम्ब से लाभ होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : पंचमभाव : मंगल

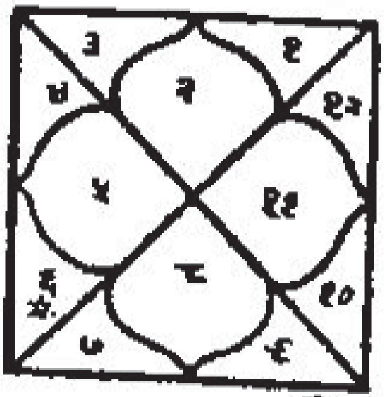

२४३

पाँचवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में चिन्ता एवं हानि उठानी पड़ती है तथा स्त्री एवं व्यवसाय पक्ष में भी चिंताएँ रहती हैं। चौथी मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की हानि के योग भी उपस्थित होते हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव देखने के कारण बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। आठवीं दृष्टि के स्वराशि वाले द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक होता है तथा व्यवसाय की उन्नति के लिए अधिक परिश्रम तथा खर्च करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : षष्ठभाव : मंगल

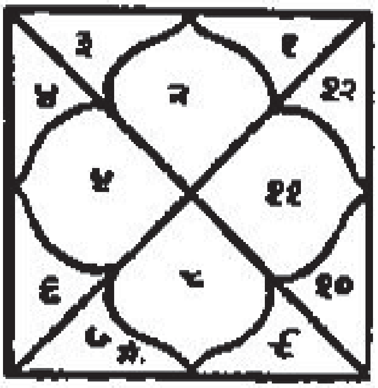

२४८

छठे भाव में शत्रु शुक्र की राशि में स्थित व्ययेश तथा सप्तमेश मंगल के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर प्रबल बना रहता है परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में हानियाँ उठाता है। चौथी उच्चदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण धर्म एवं भाग्य की वृद्धि करता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिकतर रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक का शरीर कमजोर रहता है तथा रक्त-वीर्य आदि के विकारों का भी शिकार बनना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : सप्तमभाव : मंगल

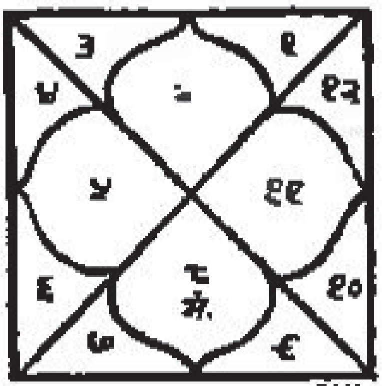

२४९

सातवें भाव में स्वराशि स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में शक्ति प्राप्त होने पर भी कठिनाइयाँ आती हैं तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक का शरीर दुर्बल रहता है। आठवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब के बारे में चिन्ताएँ तथा कठिनाइयाँ उपस्थित रहती हैं।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : अष्टमभाव : मंगल

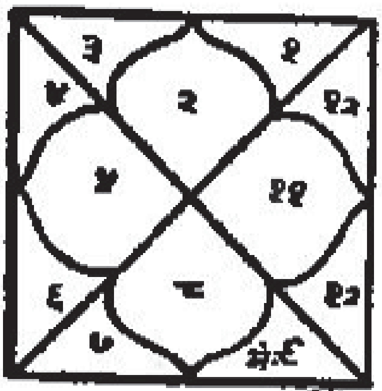

२५०

आठवें लाभ में मित्र गुरु की राशि पर स्थित सप्तमेश तथा मित्र के प्रभाव से जातक की स्त्री, व्यवसाय, आयु तथा पुरातत्त्व विषयक हानियाँ उठानी पड़ती हैं तथा परदेश में बसना पड़ता है। चौथी मित्रदृष्टि से एक दशभाव को देखने के कारण विदेश द्वारा धन का लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब विषयक परेशानियाँ रहती हैं। आठवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी कमी आ जाती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : नवमभाव : मंगल

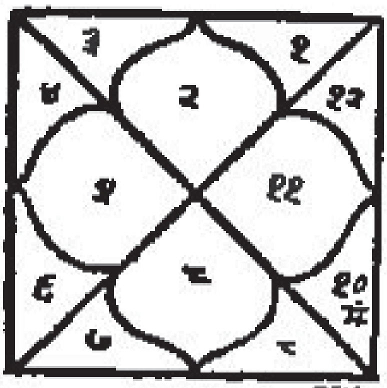

२४७

नवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से लाभ होता है तथा भाग्यबल से व्यावसायिक उन्नति भी होती है। धर्म में आस्था रहती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि वाले द्वादशभाव को देखने से खर्च की अधिकता रहती है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। सातवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में कमी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि-भवन तथा घरेलू सुख में भी कमी आ जाती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : दशमभाव : मंगल

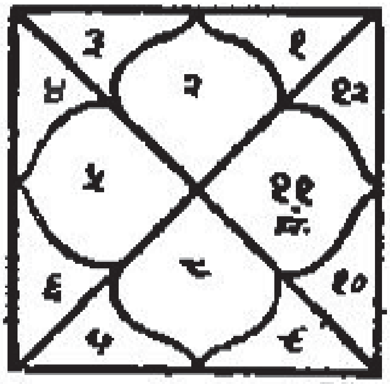

२४८

दसवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता तथा राज्य पक्ष में परेशानियाँ आती हैं। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से व्यवसाय में लाभ होता है। स्त्री पर प्रभाव होने पर भी मनोमालिन्य बना रहता है। चौथी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक कमजोरी तथा रक्त-विकार आदि रहते हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख में भी कमी रहती है आठवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान से अनबन रहती है। विद्या का लाभ भी कम होता है, परन्तु सम्मान की वृद्धि होती रहती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : एकादशभाव : मंगल

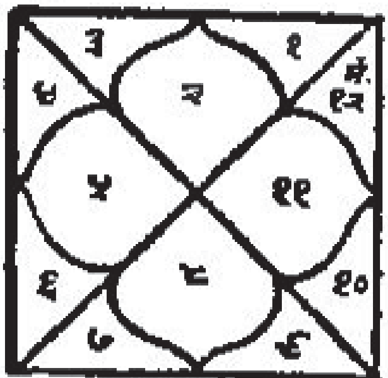

२४९

ग्यारहवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है। तथा स्त्री-पक्ष एवं बाहरी सम्बन्धों से भी लाभ होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं शत्रु दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या तथा संतान का पक्ष भी दुर्बल रहता है। आठवीं समदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रुपक्ष में प्रभाव बना रहता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक बड़ा चतुर तथा स्वार्थी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : द्वादशभाव : मंगल

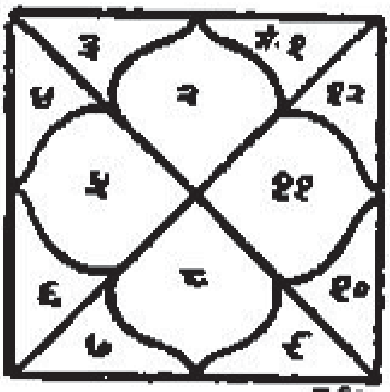

७४०

बारहवें भाव में स्वराशि स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है, मंगल के सप्तमेश होने के कारण स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है। चौथी नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में कमी रहती है। सातवीं दृष्टि में षष्ठभाव को देखने से शत्रुओं पर विजय मिलती है तथा आठवीं दृष्टि से स्वराशि वाले सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में हानि-लाभ के योग बनते बिगड़ते रहते हैं।

'वृष' लग्न में 'बुध'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : प्रथमभाव : बुध

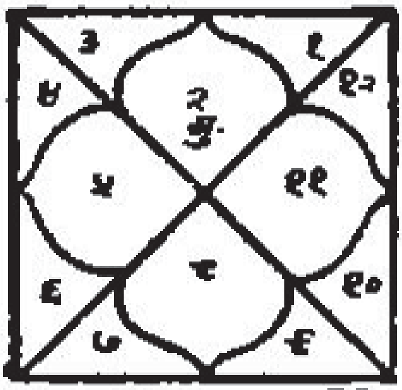

७४१

पहले भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित द्वितीयेश तथा पंचमेश बुध के प्रभाव से जातक सुन्दर, प्रतिष्ठित यशस्वी तथा कुटुम्ब एवं धन की शक्ति पाने वाला होता है। विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का पक्ष भी अच्छा रहता है।

सातवीं समदृष्टि के सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता एवं सहयोग की प्राप्ति होती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : द्वितीयभाव : बुध

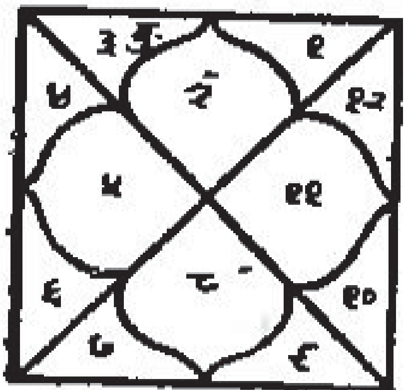

७४२

दूसरे भाव में स्वराशि स्थित बुध के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब की उत्तम वृद्धि होती है, परन्तु सन्तान पक्ष में परेशानियाँ रहती हैं। विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसी ग्रहस्थिति वाला जातक ऐश्वर्यशाली जीवन बिताता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : तृतीयभाव : बुध

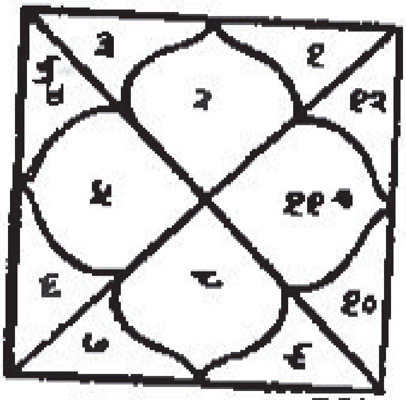

२६३

तीसरे भाव में चन्द्रमा की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। वह अपने पराक्रम द्वारा धन उपार्जित करता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक की धर्म में रुचि बनी रहती है तथा भाग्य में भी वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति पराक्रमी, बुद्धिमान, विद्वान्, साहसी, धनी, धर्मात्मा एवं सज्जन स्वभाव का होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध का फलादेश

वृष लग्न : चतुर्थभाव : बुध

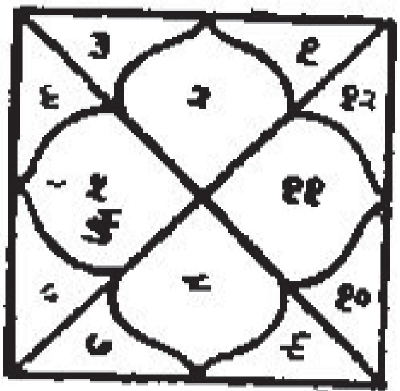

२६४

चौथे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक माता, भूमि, भवन तथा परिवार का यथेष्ट सुख प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति गंभीर, विवेकी, विद्वान तथा बुद्धिमान भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण जातक को पिता तथा राज्य से भी यथेष्ट लाभ होता है तथा व्यावसायिक क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : पंचमभाव : बुध

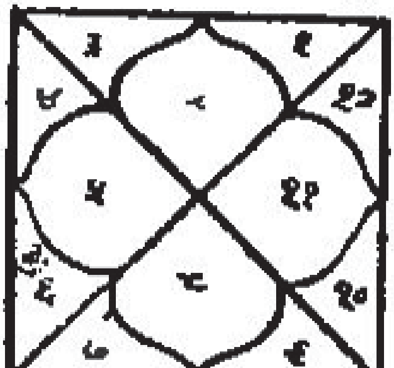

२६५

पाँचवें भाव में स्वराशि स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक बहु सन्ततिवाला, बुद्धिमान तथा विद्वान् होता है तथा बुद्धिबल से धनोपार्जन भी खूब करता है। कौटुम्बिक सुख उसे भरपूर मिलता है।

सातवीं नीचदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में कुछ कमी का अनुभव होता है, परन्तु जातक अपनी मित्रता एवं सन्तान पक्ष की सहायता से धन की वृद्धि करता है तथा सम्मान भी पाता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : षष्ठभाव : बुध

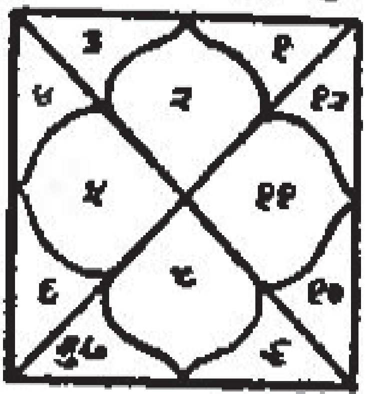

२६६

छठे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष द्वारा अशान्ति का अनुभव करता है, परन्तु अपने बुद्धि-बल से उस पर कुछ सफलता भी पा लेता है। सन्तान तथा कुटुम्ब से मतभेद एवं परेशानी के योग भी उपस्थित होते हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च की अधिकता रहती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सम्मान तथा धन मिलता रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : सप्तमभाव : बुध

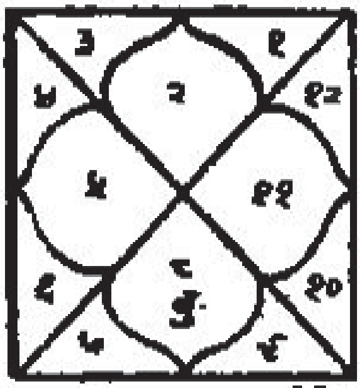

२६७

सातवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को बुद्धिमान स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। विद्या, कुटुम्ब तथा सन्तान पक्ष से सुख एवं धन प्राप्ति के योग भी उपस्थित होते रहते हैं।

सातवीं दृष्टि मित्र से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक को शारीरिक सौन्दर्य, यश, प्रतिष्ठा, बुद्धि, विवेक, धन एवं सफलताओं की प्राप्ति भी होती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : अष्टमभाव : बुध

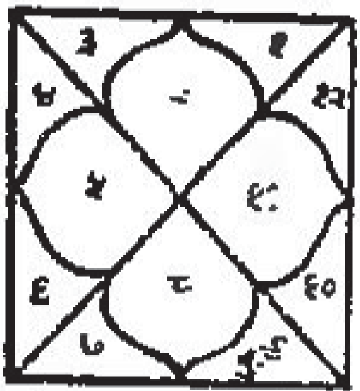

२६८

आठवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा धन-संचय की शक्ति में वृद्धि होती है, परन्तु कुटुम्ब, विद्या एवं सन्तान पक्ष से परेशानियों का अनुभव होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक कठिन परिश्रम द्वारा धनोपार्जन करता है। ऐसे व्यक्ति का रहन-सहन ऐश्वर्यपूर्ण होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : नवमभाव : बुध

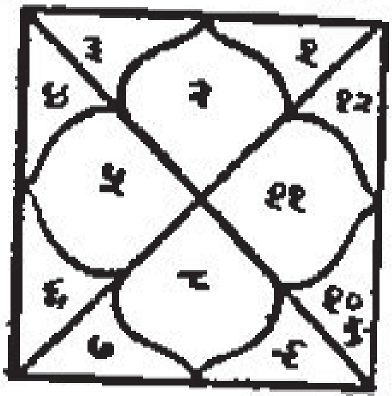

२६९

नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक बुद्धि-योग द्वारा अपने भाग्य एवं धन की वृद्धि करता है तथा धर्म, विद्या, सन्तान एवं कुटुम्ब विषयक सुखों को भी प्राप्त करता है।

सातवीं दृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी विशेष वृद्धि होती है। ऐसा जातक सुखी, धनी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : दशमभाव : बुध

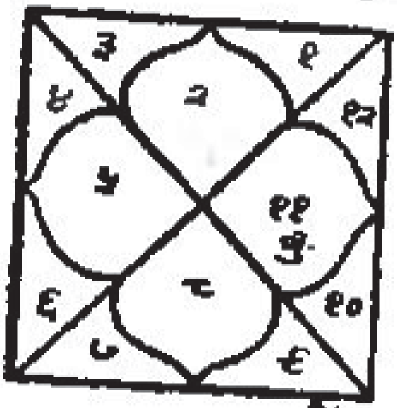

२७०

दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक पिता एवं राज्य पक्ष से विशेष लाभ तथा सम्मान प्राप्त करता है। अपने बुद्धि-बल द्वारा व्यवसाय से पर्याप्त आर्थिक लाभ भी कमाता है। सन्तान पक्ष से भी सुखी रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण जातक को माता, भूमि, भवन तथा परिवार का यथेष्ठ सुख को प्राप्त होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : एकादशभाव : बुध

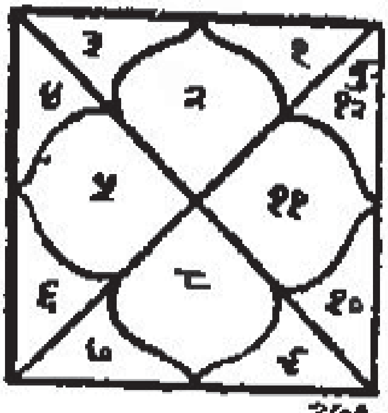

२७१

ग्यारहवें भाव में मित्र गुरु की राशि में स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आय के क्षेत्र में कठिनाइयां आती हैं तथा धन-संचय में बाधा पड़ती है। कुटुम्ब, सन्तान एवं मित्र पक्ष से भी अल्प लाभ मिलता है तथा चिन्ताओं के कारण मस्तिष्क परेशान बना रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले पंचमभाव को देखने के कारण जातक विद्वान् तथा बुद्धिमान होता है तथा उसका सन्तान पक्ष को प्रबल बना रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : द्वादशभाव : बुध

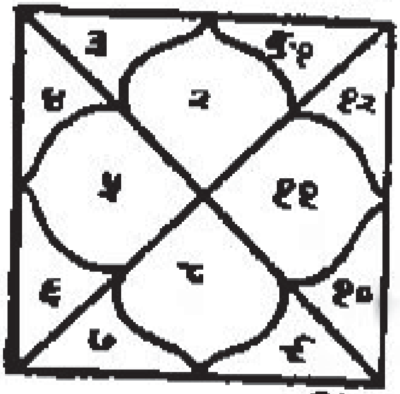

२०२

बारहवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक बना रहता है। साथ ही विद्या, सन्तान, कुटुम्ब एवं धन के पक्ष से भी असन्तोष रहता है। सन्तान-पक्ष में हानि भी उठानी पड़ती है।

सातवीं मित्र दृष्टि में षष्ठभाव को देखने के कारण जातक अपने बुद्धि-बल द्वारा शत्रु-पक्ष पर सफलता प्राप्त करता रहता है।

'वृष' लग्न में 'गुरु'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृष लग्न : प्रथमभाव : गुरु

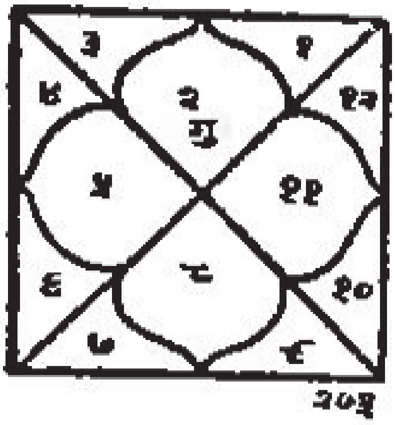

२०३

पहले भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को शारीरिक परिश्रम द्वारा लाभ होता है तथा आयु एवं पुरातत्त्व की उन्नति होती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या-बुद्धि का लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष सामान्य रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से त्रुटिपूर्ण सफलताएँ मिलती हैं। नवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक के भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। ऐसा जातक परिश्रम द्वारा उन्नति करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृष लग्न : द्वितीयभाव : गुरु

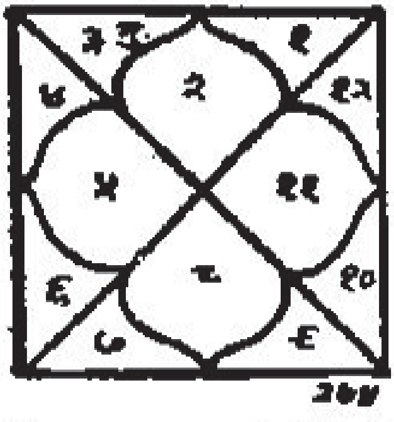

२०४

दूसरे भाव में अपने मित्र (शत्रु) बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को धन तथा कौटुम्बिक सुख प्राप्त करने में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं दृष्टि से स्वराशि के अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठ-भाव को देखने से शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त होती है तथा नवीं समदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण राज्य पक्ष में सामान्य सफलता मिलती है, पिता से वैमनस्य रहता है तथा व्यवसाय की उन्नति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृष लग्न : तृतीयभाव : गुरु

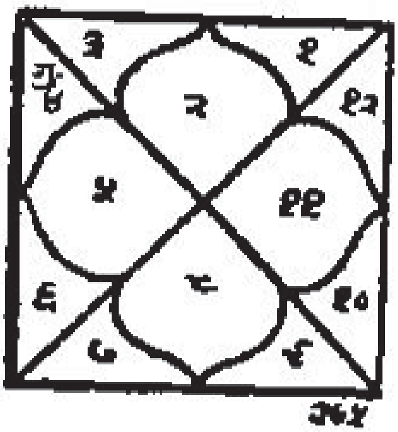

२६५

तीसरे भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण कुछ कठिनाइयों के साथ व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष में सफलता एवं उन्नति प्राप्त होती है। सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु राशिस्थ नवमभाव को देखने के कारण धार्मिक विचारों तथा भाग्य में कुछ त्रुटि बनी रहती है तथा नवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादश भवन को देखने के कारण आमदनी अच्छी होती रहती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृष लग्न : चतुर्थभाव : बुध

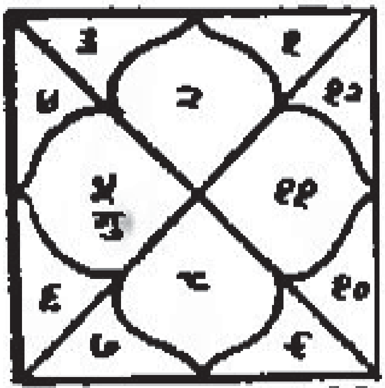

२६६

पहले भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित अष्टमेश गुरु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी रहती है, परन्तु भूमि, भवन एवं सम्पत्ति लाभ होता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि के अष्टम भाव को देखने से आयु में वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं प्रतिष्ठा पक्ष में कुछ कमी आती है तथा नवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु आमदनी से खर्च अधिक बना रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृष लग्न : पंचमभाव : गुरु

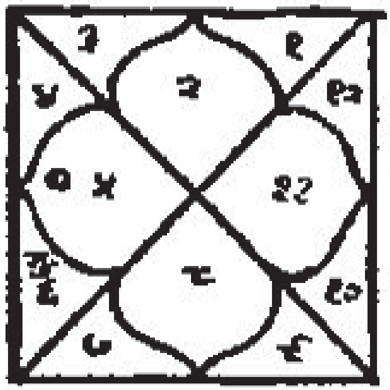

२६७

पाँचवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का विशेष लाभ होता है, साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। पंचम नीचदृष्टि से शत्रुराशि के नवमभाव को देखने के कारण धर्म एवं भाग्यपक्ष में कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादशभाव को देखने से बुद्धि योग द्वारा अच्छी आमदनी होती है। नवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक को जीविकोपार्जन के लिए शारीरिक श्रम अधिक करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृष लग्न : षष्ठभाव : बुध

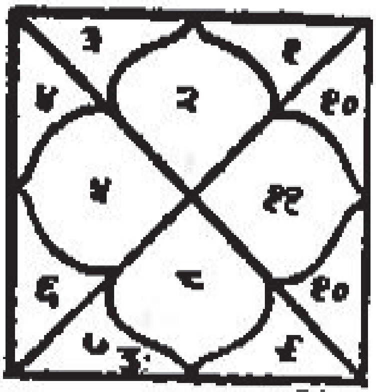

२६८

छठे भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित अष्टमेश बुध के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष में अपनी बुद्धिमत्ता से विजय प्राप्त करता है परन्तु आयु तथा पुरातत्त्व के लाभ में कमी रहती है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण बाहरी सम्बन्धों के अच्छा लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक रहता है। नवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण विशेष परिश्रम करके धन-संचय में सफलता मिलती है, परन्तु कौटुम्बिक सुख में कमी रहती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : सप्तमभाव : गुरु

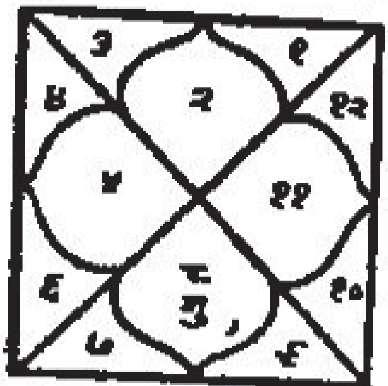

२६९

सातवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित अष्टमेश तथा व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि वाले एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में दुर्बलता रहती है। नवीं उच्चदृष्टि से तृतीय भावको देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा जातक स्वार्थी, धनी तथा ऊपरी दृष्टि से सज्जन प्रतीत होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृष लग्न अष्टमभाव : गुरु

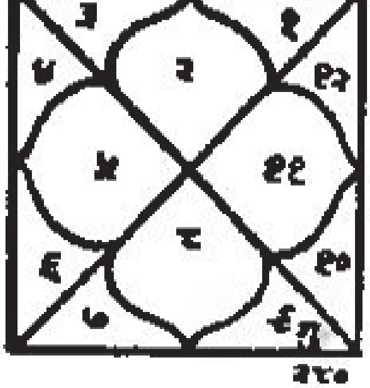

२७०

आठवें भाव में स्वराशि पर स्थित अष्टमेश गुरु के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु आय के साधनों में कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च की अधिकता रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव की देखने के परिश्रम द्वारा कुटुम्ब तथा धन की वृद्धि होती है। नवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन एव सुख के पक्ष में कुछ असन्तोष रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : नवमभाव : गुरु

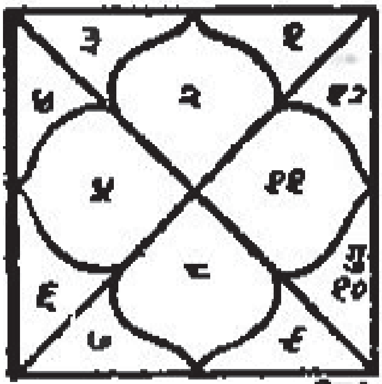

२८१

नवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित अष्टमेश एवं व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म-पालन में कमजोरी रहती है। पाँचवी शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक सौंदर्य में कमी रहती है तथा प्रभाव-वृद्धि के लिए विशेष यत्न करना पड़ता है। सातवीं उच्चदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण सन्तान तथा विद्या के पक्ष में कमजोरी रहती है।

कुल मिलाकर इस ग्रह-स्थिति के कारण जातक की उन्नति, प्रतिष्ठा, प्रभाव तथा ऐश्वर्य में कमियाँ बनी रहती हैं।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृषलग्न : दशमभाव : गुरु

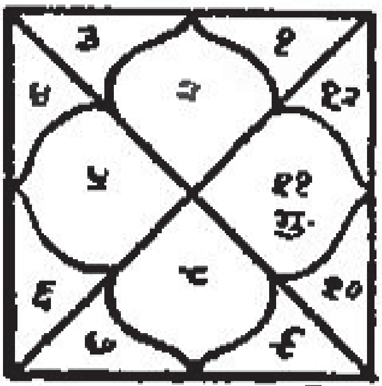

२८२

दसवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित अष्टमेश गुरु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है, लाभ-प्राप्ति के मार्ग में भी सफलता कम मिलती है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव के देखने के कारण धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब का सहयोग मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं भवन आदि का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष से परेशानी रहती है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृषलग्न : एकादशभाव : गुरु

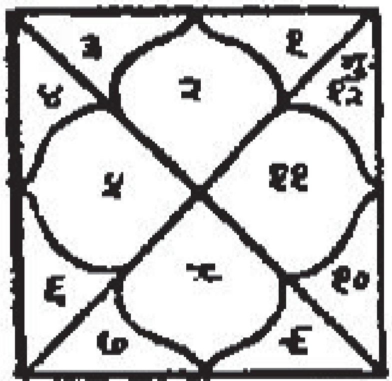

२८३

ग्यारहवें भाव में स्वराशिस्थ अष्टमेश गुरु के प्रभाव से जातक को आमदनी अच्छी रहती है, परन्तु परिश्रम अधिक करना पड़ता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। पंचम उच्च दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख का लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष में कम लाभ होता है। नवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से व्यवसाय द्वारा पर्याप्त लाभ होता है परन्तु स्त्री-पक्ष से कुछ कठिनाइयों के साथ सुख मिलता है। ऐसा जातक ऐश्वर्यशाली होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृषलग्न : द्वादशभाव : गुरु

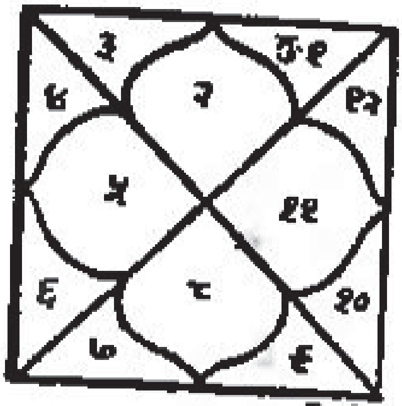

बारहवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थान के सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च की अधिकता रहती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण कुछ कठिनाइयों के साथ सुख के साधन प्राप्त होते हैं, परन्तु माता के सुख में कमी रहती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से छठे भाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर बुद्धिमानी द्वारा प्रभाव स्थापित होता है। नवीं दृष्टि से स्वराशि के अष्टमभाव को देखने से आयुपक्ष में कुछ कमी रहती है, पुरातत्त्व की हानि होती है तथा आमदनी से खर्च अधिक बना रहता है।

'वृष' लग्न में 'शुक्र'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : प्रथमभाव : शुक्र

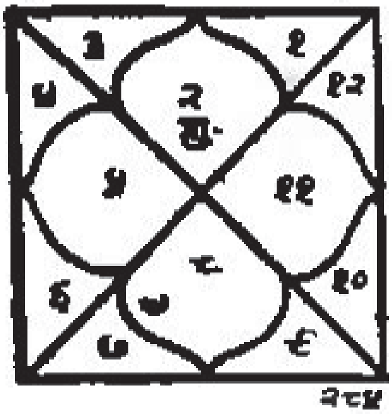

पहले भाव में स्वराशि में स्थित शुक्र के भाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं आत्मिक बल में वृद्धि होती है तथा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती रहती है। परन्तु कभी-कभी रोगों का शिकार भी बनना पड़ता है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में बुद्धिमानी द्वारा सफलता मिलती है। कुल मिलाकर ऐसी ग्रह स्थिति का जातक सुखी जीवन व्यतीत करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

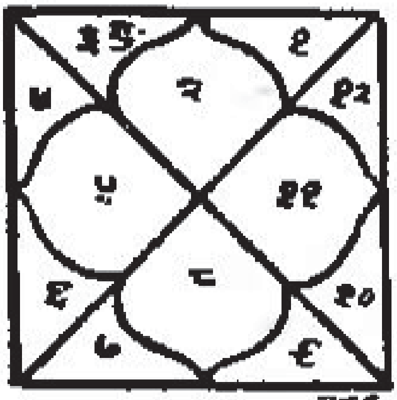

दूसरे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि करता है, परन्तु शारीरिक सुख में कुछ कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक को आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कमी बनी रहती है, परन्तु शत्रु-पक्ष से चातुर्य द्वारा लाभ मिलता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : तृतीयभाव : शुक्र

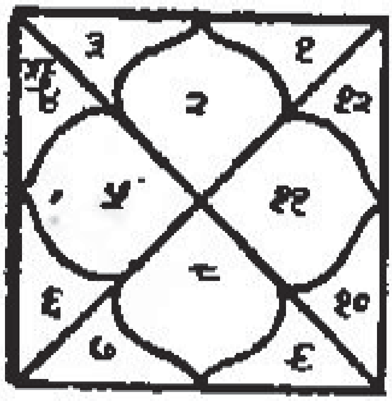

तीसरे भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम में तो वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन का सुख कुछ वैमनस्य के साथ प्राप्त होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक धर्मात्मा तथा भाग्यवान् होता है।

ऐसी ग्रह स्थिति का जातक पराक्रमी, चतुर तथा परिश्रमी होता है और इन्हीं गुणों के बल पर धन, यश, मान, प्रतिष्ठा आदि प्राप्त करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

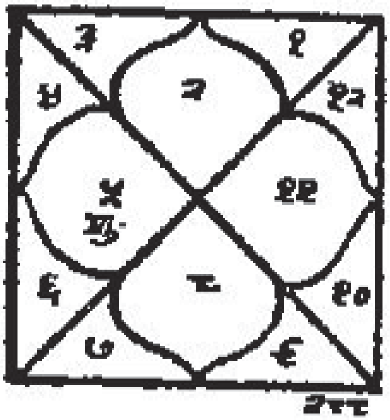

चौथे भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी आती है तथा भूमि, भवन के सुख के बारे में भी कुछ असन्तोष रहता है, परन्तु इन सब कमियों के बावजूद सुख के साधन प्राप्त होते रहते हैं। शत्रु-पक्ष पर शान्ति तथा चातुर्य द्वारा सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र दृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा यश, मान, प्रतिष्ठा एवं सम्मति का लाभ होता रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : पंचमभाव : शुक्र

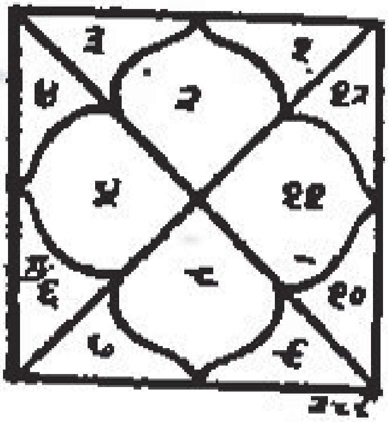

पाँचवें भाव में नीचराशिस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक का विद्या तथा सन्तान-पक्ष कमजोर रहता है, परन्तु वह अपने बुद्धि-चातुर्य-द्वारा शत्रु-क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण कठिन परिश्रम एवं दिमाग की सूझ-बूझ से आमदनी के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। ऐसी ग्रहस्थिति वाला जातक, चिन्ता, असन्तोष, मस्तिष्क में परेशानी एवं शारीरिक सौन्दर्य में कमी प्राप्त करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : षष्ठभाव : शुक्र

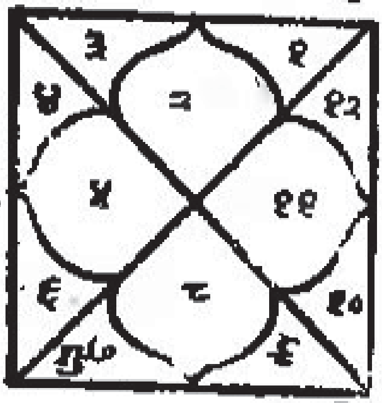

नं० ६०

छठे भाव में स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक शारीरिक शक्ति एवं चातुर्य के द्वारा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है, परन्तु शुक्र के लग्नेश होकर षष्ठभाव में बैठने के कारण शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी भी रहती है। माता द्वारा लाभ एवं परतन्त्रता का योग भी बनता है।

सातवीं समदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्च की अधिकता रहती है। ऐसी ग्रहस्थिति वाला जातक किसी-न-किसी झगड़े में फंसा ही रहता है, परन्तु बड़ा प्रतापी भी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : सप्तमभाव : शुक्र

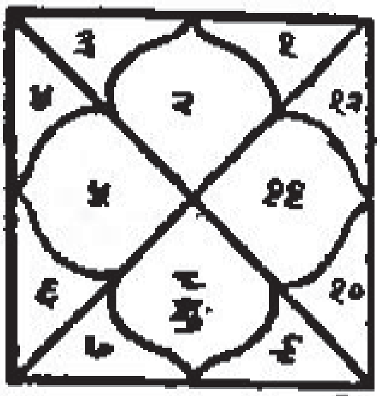

नं० ६१

सातवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से वैमनस्य तथा परेशानी के योग बनते हैं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठोर शारीरिक परिश्रम द्वारा सफलता मिलती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले प्रथमभाव को देखने के कारण जातक सांसारिक कामों में परम दक्ष होता है, परन्तु शरीर रोगी भी बना रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : अष्टमभाव : शुक्र

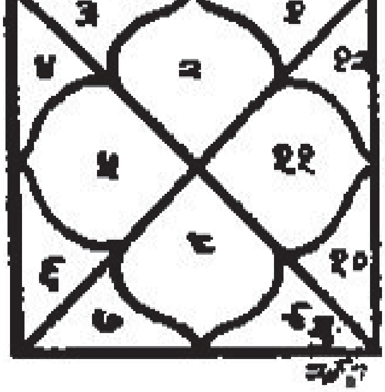

नं० ६२

आठवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा रोगादि का कष्ट बना रहता है। आयु की शक्ति प्राप्त होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ गुप्त चातुर्य के बल पर होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक कठिन परिश्रम से धन की वृद्धि करता है। मामा के पक्ष में कमजोरी, शत्रु-पक्ष से कष्ट एवं उदर-विकारादि के योग भी बनते हैं।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

वृषलग्न : नवमभाव : शुक्र

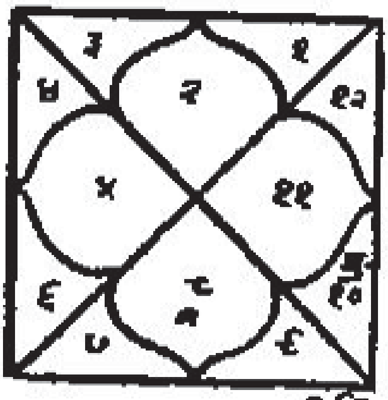

२६३

नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक शारीरिक श्रम द्वारा भाग्योन्नति करता है तथा शत्रुपक्ष में सफलता पाता है। शरीर सुन्दर होता है, परन्तु रोगादि के योग उपस्थित होते रहते हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण कुछ कठिनाइयों के साथ भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। शत्रु एवं झगड़े के क्षेत्र में विजय मिलती है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

वृषलग्न : दशमभाव : शुक्र

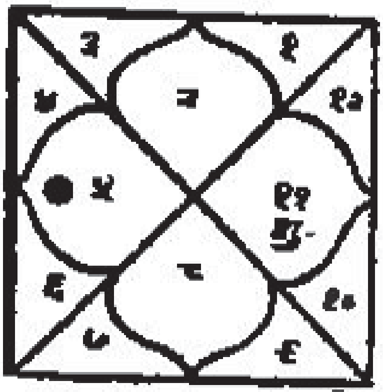

२६४

दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का पिता के साथ सामान्य वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों तथा परिश्रम के साथ सफलता मिलती है। शत्रुपक्ष पर प्रभाव बना रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति अहंकारी, सुखी तथा उन्नतिशील होता है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘शुक्र’ का फलादेश

वृषलग्न : एकादशभाव : शुक्र

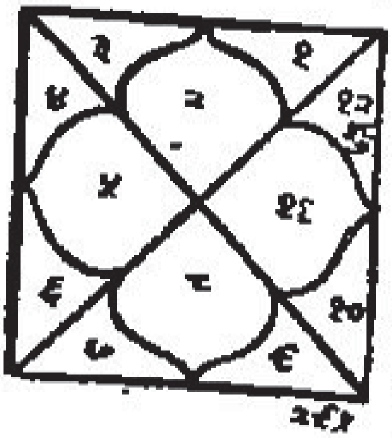

२६५

ग्यारहवें भाव में उच्च राशिस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा आमदनी को बढ़ाता है। वह सुन्दर होने के साथ ही रोगी भी रहता है तथा शत्रुपक्ष से लाभ मिलता है।

सातवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण सन्तान पक्ष में कमी तथा विद्याध्ययन में लापरवाही रहती है। ऐसा व्यक्ति अनेक प्रयत्नों द्वारा अच्छा लाभ उठाता तथा उन्नति करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृष लग्न : द्वादशभाव : शुक्र

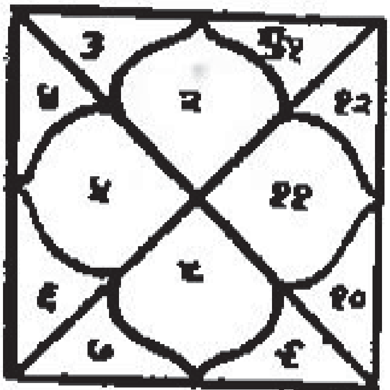

२९६

बारहवें भाव में सामान्य मित्र मंगल की राशि में स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है। यह शरीर से दुर्बल होने पर भी परिश्रमी होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रुपक्ष से कुछ हानि भी उठाता है। ऐसा व्यक्ति चतुर, रोगी तथा धन कमाने में कुशल परन्तु शत्रुओं द्वारा पीड़ित होता है।

'वृष' लग्न में 'शनि'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : प्रथमभाव : शनि

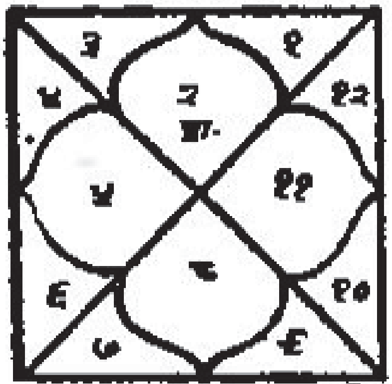

२९७

पहले भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक सुन्दर तथा भाग्यवान होता है।

तीसरी शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिनों के सुख में कमी आती है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ वृद्धि होती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि वाले दशम भाव को देखने से पिता एवं राज्य द्वारा लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : द्वितीयभाव : शनि

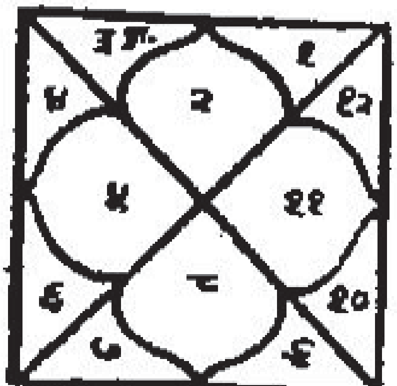

२९८

दूसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के धन-कुटुम्ब की वृद्धि होती है, परन्तु सुख में कुछ कमी आती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता के सुख में कमी होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु बढ़ती है। दसवीं शत्रु दृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के अच्छे अवसर प्राप्त होते हैं। राज्य के क्षेत्र में भी प्रभाव एवं सम्मान की वृद्धि होती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : तृतीयभाव : शनि

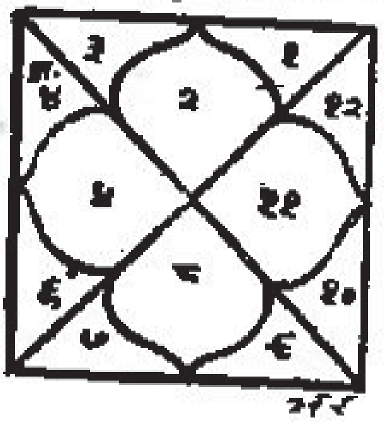

तीसरे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का भाई-बहिनों के साथ वैमनस्य रहता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। तीसरी मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या तथा सन्तान के पक्ष में सफलता मिलती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि के नवमभाव को देखने से भाग्य की अच्छी वृद्धि होती है। दसवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च में कमी रहती है तथा बाहरी सम्बन्धों में भी लापरवाही बनी रहती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : चतुर्थभाव : शनि

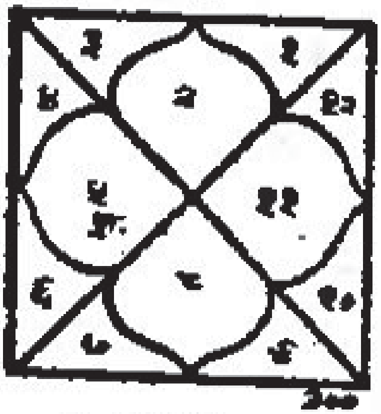

चौथे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित केन्द्रस्थ शनि के प्रभाव से जातक का माता के साथ वैमनस्य रहता है तथा भूमि-भवन के सुख में भी कमी रहती है। तीसरी उच्चदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा मामा से शक्ति मिलती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक प्रभाव एवं सम्मान में वृद्धि होती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : पंचमभाव : शनि

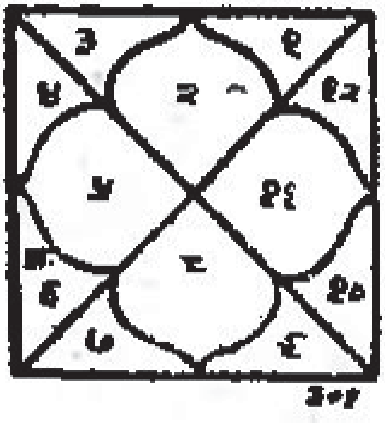

पाँचवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में असंतोष रहता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आय के साधनों से असन्तोष रहता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा जातक धनी, प्रतिष्ठित तथा भाग्यवान होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : षष्ठभाव : शनि

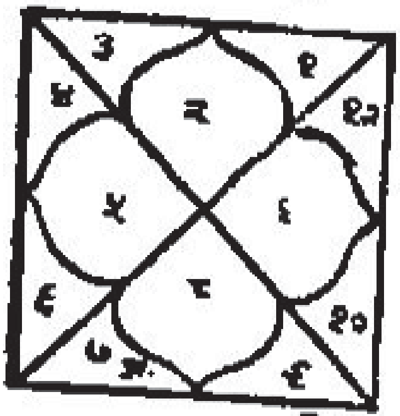

३०२

छठे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर उच्चस्थ शनि के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में विशेष प्रभावी रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ पाता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में चिन्ता-युक्त लाभ होता है। सातवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों से असन्तोषजनक सम्बन्ध रहता है तथा खर्च की भी परेशानी रहती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम की वृद्धि होती है, पर भाई-बहिनों से मेल-मिलाप नहीं रहता।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : सप्तमभाव : शनि

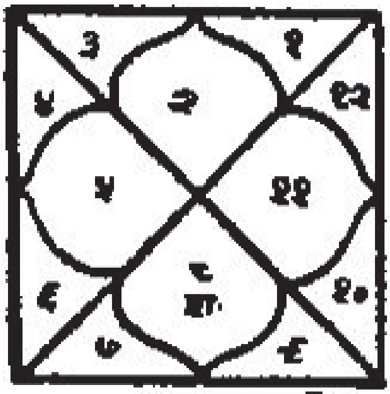

३०३

सातवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता एवं उन्नति प्राप्त होती है, परन्तु कुटुम्ब के संचालन में कुछ कठिनाइयाँ बनी रहती हैं। पिता तथा राज्य से भी शक्ति प्राप्त होती है। तीसरी दृष्टि से नवमभाव को स्वराशि में देखने से भाग्यशक्ति बलवान होती है तथा धर्म में भी रुचि रहती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि व भवन के सुख में कुछ कमी का अनुभव होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : अष्टमभाव : शनि

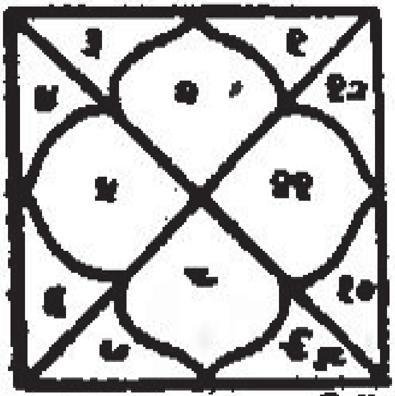

३०४

आठवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ दीर्घायु प्राप्त होती है। तीसरी दृष्टि से भाग्य, दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं सम्मान के पक्ष में कुछ कमी रहती है। भाग्योन्नति के लिए बहुत कष्ट उठाना पड़ता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण प्रयत्नपूर्वक धन का संचय होता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। ऐसे जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : नवमभाव : शनि

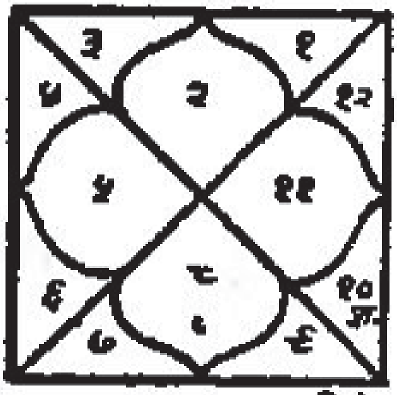

३०५

नवें भाव में स्वराशि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक धर्मात्मा तथा भाग्यवान होता है, साथ ही उसे पिता तथा राज्य से भी श्रेष्ठ लाभ होता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से कुछ गलत रास्तों से आमदनी में वृद्धि होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से मनमुटाव रहता है। दसवीं उच्च दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर अत्यन्त प्रभाव स्थापित होता है तथा माता से भी लाभ होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : दशमभाव : शनि

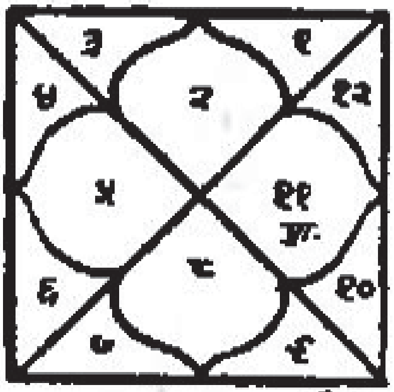

३०६

दसवें भाव में स्वराशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक को पिता, व्यवसाय एवं राज्य द्वारा पर्याप्त लाभ होता है तथा प्रतिष्ठा मिलती है। तीसरी नीच दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च की परेशानी रहती है तथा बाहरी सम्बन्धों में कुछ त्रुटि रहती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख में कमी आती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष भाग्यशाली होता है, परन्तु दैनिक जीवन में चिन्ताएँ रहती हैं। ऐसा जातक बड़ा भाग्यवान् तथा सफल व्यवसायी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : एकादशभाव : शनि

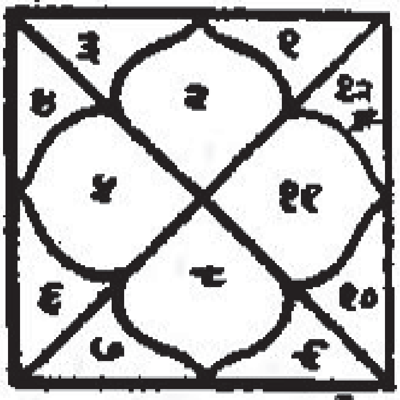

३०७

ग्यारहवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की अपनी आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलताएँ मिलती हैं तथा पिता एवं राज्य-पक्ष से भी असन्तोषपूर्ण लाभ होता है। यों, भाग्य की शक्ति प्रबल रहती है। तीसरी मित्र दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक प्रभाव तथा आयु की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के विषय में कुछ कठिनाइयों का अनुभव होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : द्वादशभाव : शनि

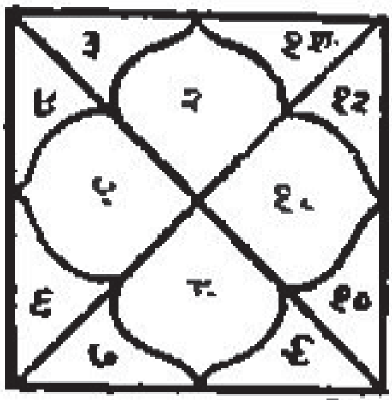

३०८

बारहवें भाव में नीच राशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक को खर्च एवं बाहरी सम्बन्धों में परेशानियों का अनुभव होता है। राज्य, पिता, व्यवसाय, भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में भी कमियाँ रहती हैं। तीसरी मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब का सामान्य लाभ होता है। सातवीं उच्च दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़े-मुकदमे आदि में लाभ होता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि के नवमभाव को देखने से भाग्य की थोड़ी-बहुत वृद्धि होती है, परन्तु सम्मान के क्षेत्र में कमी बनी रहती है।

'वृष' लग्न में 'राहु'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृष लग्न : प्रथमभाव : राहु

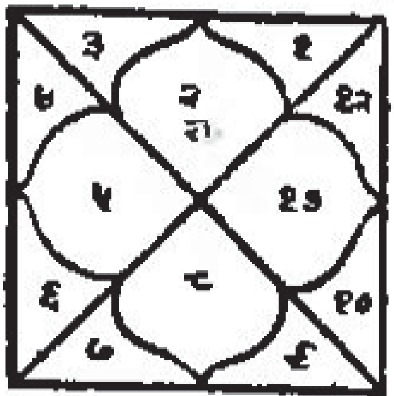

३०९

पहले भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ हानि होती है, परन्तु उसे गुप्त चतुराई एवं मनोबल द्वारा स्वार्थ-साधन में सफलता मिलती है। ऐसा जातक बड़ा साहसी तथा हिम्मती होता है। वह अनेक युक्तियों से अपने प्रभाव तथा व्यक्तित्व को बढ़ाने में सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे मूर्च्छा अथवा चोट का शिकार भी बनना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृष लग्न : द्वितीयभाव : राहु

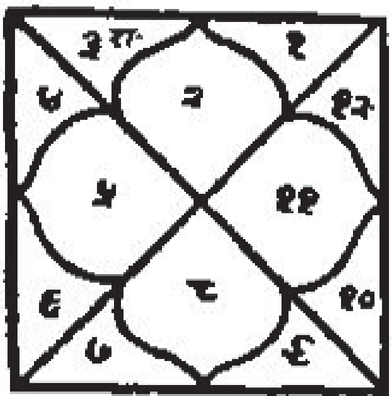

३१०

दूसरे भाव में स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक अनेक युक्तियों तथा चातुर्य के बल पर अपने धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि करता है, परन्तु बीच-बीच में उसे कठिनाइयों तथा संघर्षों का सामना भी करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृष लग्न : तृतीयभाव : राहु

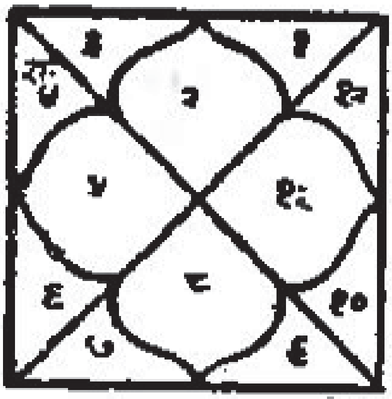

३११

तीसरे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि में स्थित राहु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन तथा पराक्रम के क्षेत्र में कुछ कष्ट का अनुभव होता है, परन्तु वह अपनी भीतरी कमजोरियों तथा चिन्ताओं को बड़ी चतुराई से छिपाकर हौसला बनाये रखता है और प्रकट रूप में बड़ा हिम्मती होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृष लग्न : चतुर्थभाव : राहु

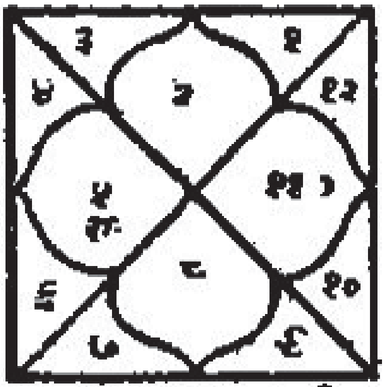

३१२

चौथे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा सुख के क्षेत्र में कष्टों तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। परदेश में जाकर रहना पड़ता है तथा अनेक दुःख उठाने पड़ते हैं, अन्त में कठिन परिश्रम तथा गुप्त उपायों द्वारा सामान्य धन एवं सुख प्राप्त करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृष लग्न : पंचमभाव : राहु

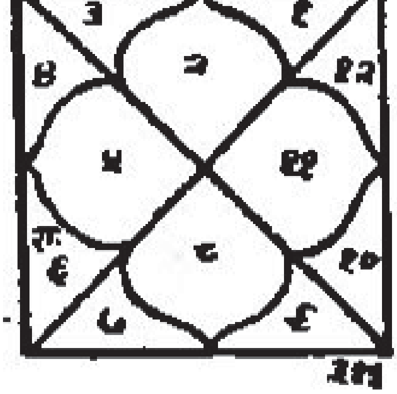

३१३

पाँचवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान का सुख मिलता है तथा मस्तिष्क-सम्बन्धी कुछ कमियों के साथ विद्या एवं बुद्धि की उन्नति होती है। ऐसा जातक अधिक बोलने वाला, गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला तथा नशेबाज होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृष लग्न : षष्ठभाव : राहु

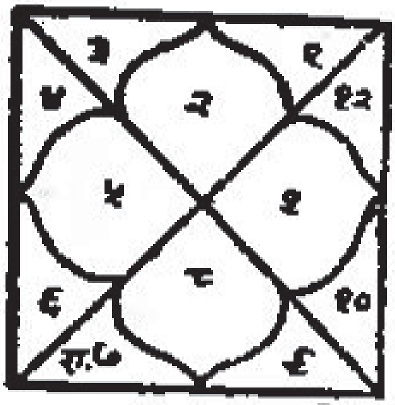

३२४

छठे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष का हिम्मत के साथ मुकाबला करता और कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है। परन्तु मामा के सुख में कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों तथा गुप्त विद्याओं में कुशल होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृष लग्न : सप्तमभाव : राहु

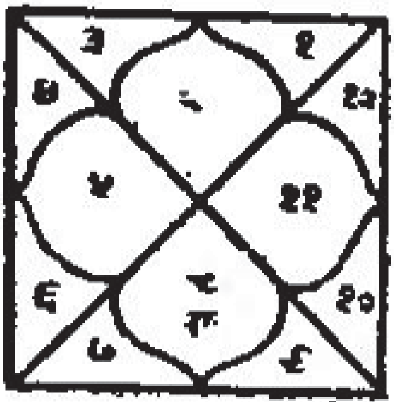

३२५

सातवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष द्वारा कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर वह थोड़ी-बहुत सफलता भी प्राप्त कर लेता है। उसे इन्द्रिय-विकारों का भी सामना करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृष लग्न : अष्टमभाव : राहु

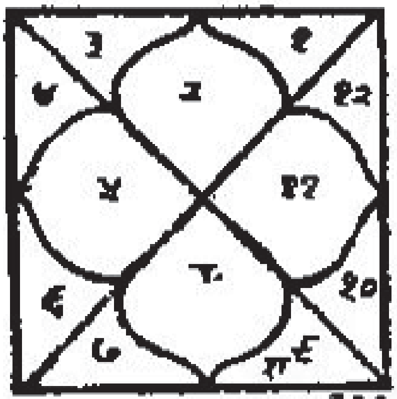

३२६

आठवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्व के क्षेत्र में अनेक कठिनाइयों तथा हानियों का सामना करना पड़ता है। परन्तु वह सौम्य तथा सज्जन बना रहता है। ऐसा जातक गुप्त चिन्ताओं से ग्रस्त हो, गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है तथा बाहरी सम्बन्धों से जीवन-निर्वाह करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृषलग्न : नवमभाव : राहु

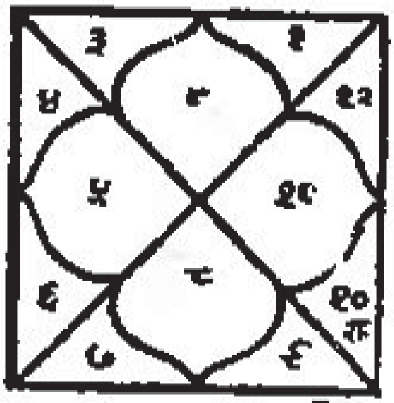

३१७

नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा धैर्य, गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम का आश्रय लेकर ही वह कुछ सफलताएँ प्राप्त करता है। उसके जीवन में सुख-दुःख तथा गरीबी-अमीरी का क्रम निरन्तर आता-जाता बना रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृषलग्न : दशमभाव : राहु

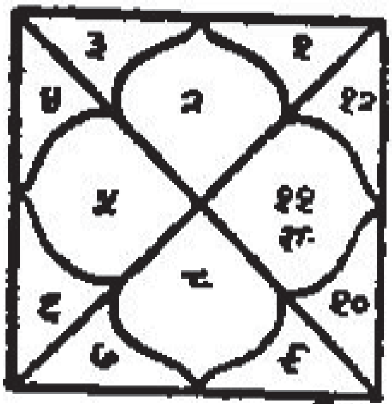

३१८

दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा सफलता पाने के लिए गुप्त युक्तियों, परिश्रम एवं धैर्य का आश्रय लेना पड़ता है। परन्तु ऊपरी दृष्टि से वह एक अमीर तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति जान पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृषलग्न : एकादशभाव : राहु

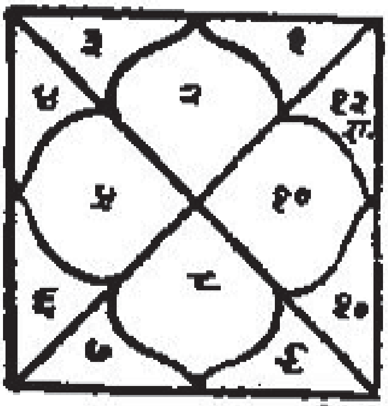

३१९

ग्यारहवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से कुछ रुकावटों के साथ जातक की आमदनी के क्षेत्र में सफलताएँ प्राप्त होती रहती हैं। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के द्वारा लाभ कमाता है। संकटों में भी वह अपना धैर्य नहीं खोता, अतः अन्त में उसे सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी भी बहुत होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृषलग्न : द्वादशभाव : राहु

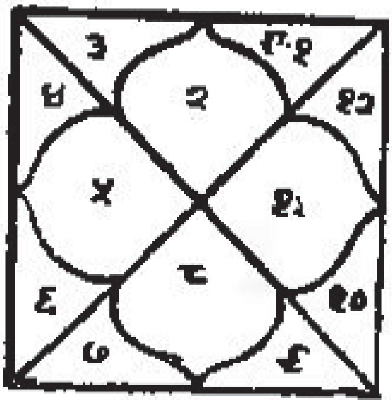

३२०

बारहवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को खर्च चलाने में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और चातुर्य तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है।

ऊपरी दिखावे में ऐसा व्यक्ति सम्पन्न तथा प्रभावशाली प्रतीत होता है। कठिन परिश्रम के द्वारा उसे सफलताएँ भी मिलती हैं।

'वृष' लग्न में 'केतु'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : प्रथमभाव : केतु

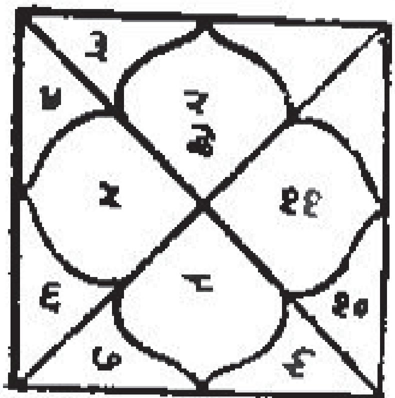

३२१

पहले भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा मन में कुछ चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं। ऐसा व्यक्ति अपने शारीरिक श्रम एवं योग्यता के बलबूते पर अन्य लोगों को प्रभावित भी करता है। उसके शरीर पर किसी घाव अथवा चोट का चिह्न भी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : द्वितीयभाव : केतु

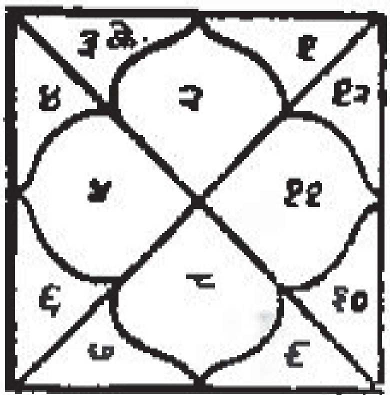

३२२

दूसरे भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित बीच के केतु के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब के मामले में अनेक चिन्ताओं तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए कठिन परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों का सहारा लेकर धन तथा कुटुम्ब के क्षेत्र में यत्किंचित् सफलता ही प्राप्त कर पाता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : तृतीयभाव : केतु

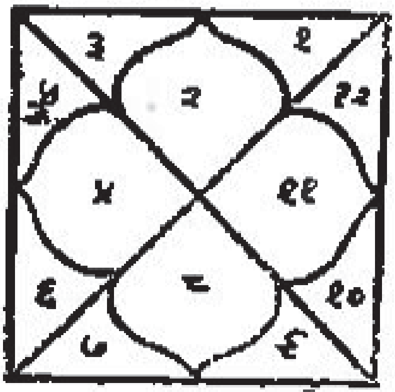

३२३

तीसरे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कमी आती है तथा भाई-बहिनों के सम्बन्ध से भी कष्ट एवं हानि का सामना करना पड़ता है। परन्तु ऐसा जातक अपनी आन्तरिक दुर्बलता को छिपाये रखकर गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम के सहारे अभावों को दूर करने में थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : चतुर्थभाव : केतु

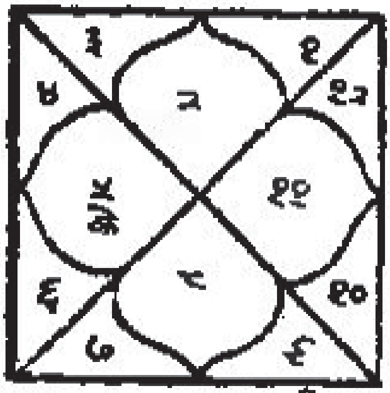

३२४

चौथे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की माता, भूमि, भवन तथा पारिवारिक सुख के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वह गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के सहारे जीवित रहता है। ऐसे व्यक्ति को स्वदेश त्याग कर परदेश में भी रहना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : पंचमभाव : केतु

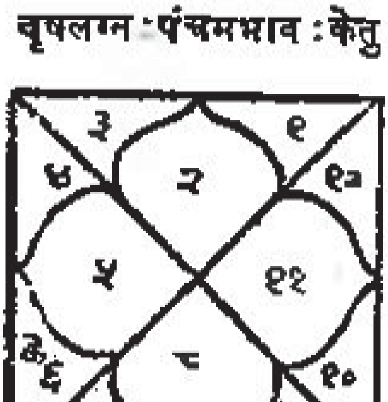

३२५

पाँचवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु अपने साहस एवं गुप्त युक्तियों के बल पर सामान्य सफलता भी प्राप्त कर लेता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, धैर्यवान् तथा अपने मन्तव्य को प्रकट न करने वाला होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : षष्ठभाव : केतु

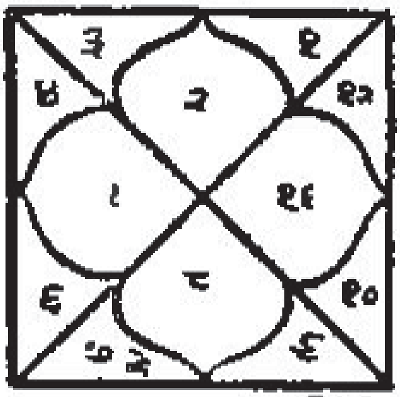

३२६

छठे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष पर अपना विशेष प्रभाव स्थापित करने में समर्थ होता है तथा धैर्य, परिश्रम, गुप्त युक्ति, साहस आदि से बल पर समस्त विघ्न-बाधाओं पर विजय प्राप्त करता है। वह बड़ा परिश्रमी, चतुर तथा धैर्यवान् होता है। मामा के पक्ष से कुछ हानि भी होती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : सप्तमभाव : केतु

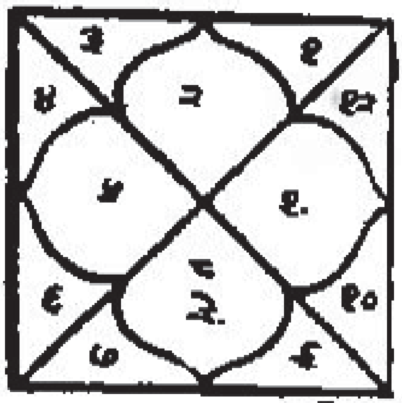

३२७

सातवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री के पक्ष में बहुत कष्ट तथा हानि का शिकार होना पड़ता है। वह मूत्राशय के रोगों से पीड़ित होता है। व्यवसाय तथा घरेलू जीवन के क्षेत्र में भी उसे कभी-कभी बड़ी असफलताएँ मिलती हैं, परन्तु वह अपने श्रम द्वारा कुछ शक्ति भी प्राप्त करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : अष्टमभाव : केतु

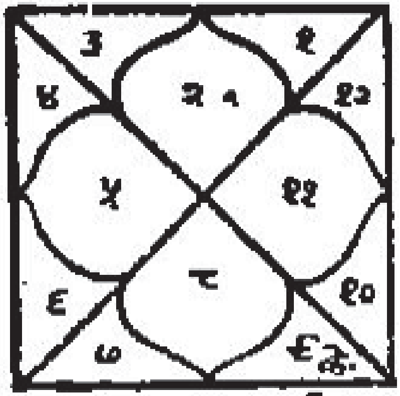

३२८

आठवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व सम्बन्धी कोई विशेष लाभ होता है। वह जीवन-निर्वाह के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा बड़ा साहसी, धैर्यवान् तथा गुप्त युक्तियों से सम्पन्न होता है। वह अपने जीवन को ऐश्वर्यशाली ढंग से व्यतीत करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : नवमभाव : केतु

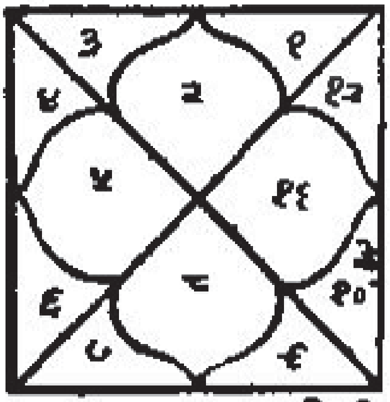

३२९

नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा अपने भाग्य की उन्नति करता है। धर्म में आस्था रखते हुए भी विशेष श्रद्धा नहीं दिखाता।

संक्षेप में, ऐसा जातक धर्म का दिखावा न करने वाला, साहसी, परिश्रमी तथा गुप्त शक्तियों द्वारा काम लेने वाला होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : दशमभाव : केतु

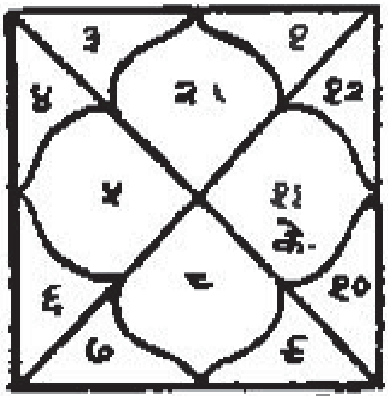

३३०

दसवें भाव में अपने मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता तथा राज्य के क्षेत्र में कुछ हानि उठानी पड़ती है। वह बड़े परिश्रम के साथ सामान्य सफलता प्राप्त करता है। वह ऊपरी दिखावे में अमीर, सुखी तथा सम्मानित प्रतीत होता है, परन्तु भीतर से कमजोरी बनी रहती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : एकादशभाव : केतु

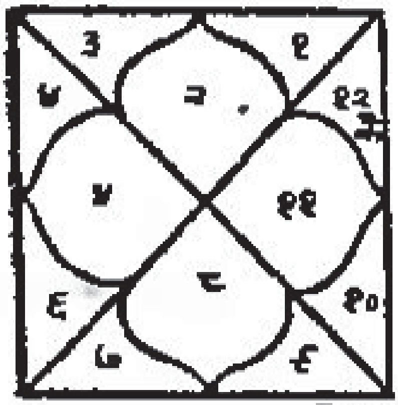

३३१

ग्यारहवें भाव में अपने शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आमदनी के क्षेत्र में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उसके जीवन में कभी अच्छा लाभ होता है तो कभी विशेष संकट भी सामने आते हैं। ऐसा व्यक्ति साहसी तथा परिश्रमी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : द्वादश भाव : केतु

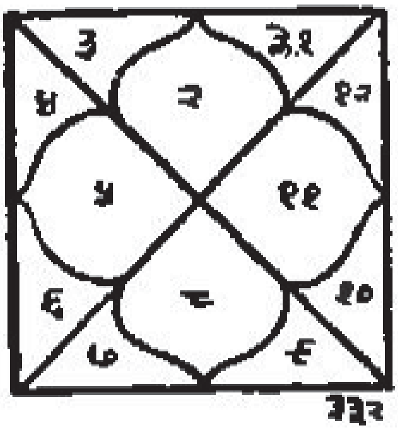

बारहवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी सम्बन्धों से भी परेशानियाँ आती रहती हैं।

ऐसा जातक बड़ा परिश्रमी, उद्योगी, धैर्यवान् तथा साहसी होता है।

मिथुन लग्न

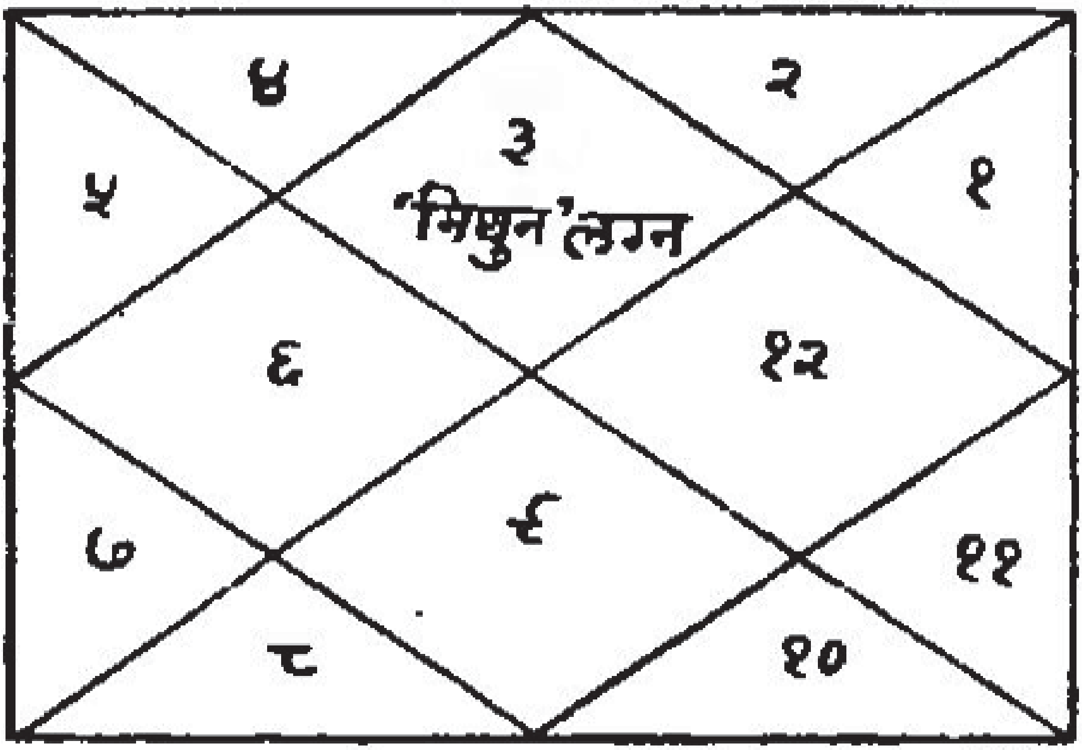

३३३

['मिथुन' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'मिथुन' लग्न का फलादेश

'मिथुन' लग्न में जन्म लेने वाले जातक का चेहरा गोल तथा शरीर का रंग गेहुआं होता है। वह नृत्य-वाद्य आदि संगीत की कलाओं का प्रेमी, कवि, हास्य-प्रवीण शिल्पज्ञ, विनम्र, परोपकारी, तीर्थप्रेमी, गणितज्ञ, दूत-कर्म करने में कुशल, ऐश्वर्य-शाली, धनी, सुखी, चतुर, मधुरभाषी, दानी, सुशील, विषयी, स्त्रियों में आसक्त, बहुमित्रवान्, बहु सन्ततिवान्, अनेक प्रकार के भोगों का उपभोग करने वाला, सुन्दर केशों वाला, राजा के समीप रहने वाला तथा राजा द्वारा ही पीड़ा प्राप्त करने वाला होता है।

'मिथुन' लग्न वाला जातक अपनी प्रारंभिक अवस्था में सुखी, मध्यमावस्था में दुःखी तथा अन्तिमावस्था में पुनः सुखोपभोग करने वाला होता है। उसका भाग्यो-दय ३२ से ३५ वर्ष की आयु के बीच होता है। इस लग्न वाला जातक मध्यम आयु प्राप्त करता है।

'मिथुन' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डलियों में संख्या ३३४ से ४४१ के बीच देखना चाहिए।

गोचर कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'मिथुन' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३३४ से ३४५ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मिथुन' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश, निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ३३४
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३३५
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३३६
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३३७
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३३८
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३३९
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३४०
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३४१
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ३४२
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३४३
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३४४
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३४५

'मिथुन' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३४६ के ३५७ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मिथुन' लग्न वालों की गोचरकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ३४६
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३४७
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३४८
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३४९
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३५०
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३५१
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३५२
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३५३
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ३५४
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३५५
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३५६
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३५७

'मिथुन' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित मंगल का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३५८ से ३६९ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मिथुन' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित मंगल का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ३५८
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३५९
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३६०
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३६१
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३६२
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३६३
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३६४
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३६५
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ३६६
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३६७
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३६८
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३६९

'मिथुन' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३७० से ३८१ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मिथुन' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ३७०
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३७१
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३७२
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३७३
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३७४
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३७५
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३७६
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३७७
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ३७८
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३७९
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३८०
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३८१

'मिथुन' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वाले को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३८२ से ३९३ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मिथुन' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ३८२
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३८३
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३८४
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३८५
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३८६
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३८७

(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३८८
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३८९
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ३९०
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३९१
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३९२
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३९३

'मिथुन' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३९४ से ४०५ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मिथुन' लग्न वालों को गोचर कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ३९४
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३९५
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३९६
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३९७
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३९८
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३९९
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ४००
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ४०१
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ४०२
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ४०३
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ४०४
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ४०५

'मिथुन' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४०६ से ४१७ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मिथुन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ४०६
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ४०७
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ४०८
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ४०९
(ङ) सिंह' राशि पर हो तो संख्या ४१०
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ४११
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ४१२
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ४१३
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ४१४
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ४१५
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ४१६
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ४१७

'मिथुन' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४१८ से ४२९ के बीच देखना चाहिए।

२. मिथुन' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ४१८
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ४१९
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ४२०
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ४२१
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ४२२
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ४२३
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ४२४
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ४२५
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ४२६
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ४२७
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ४२८
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ४२९

'मिथुन' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१. 'मिथुन' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४३० से ४४१ के बीच देखना चाहिए।

२. 'मिथुन' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ४३०
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ४३१
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ४३२
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ४३३
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ४३४
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ४३५
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ४३६
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ४३७
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ४३८
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ४३९
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ४४०
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ४४१

'मिथुन' लग्न में 'सूर्य'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : प्रथमभाव : सूर्य

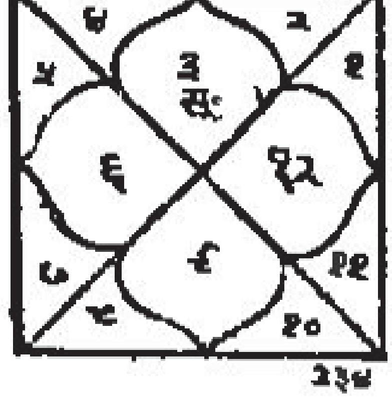

२३४

पहले भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक परम तेजस्वी, साहसी, परिश्रमी तथा उद्योगी होता है। वह बड़े-बड़े काम करता है। शरीर पुष्ट होता है। उसे भाई-बहिनों का पर्याप्त सुख भी मिलता है।

यहाँ से सूर्य द्वारा सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण जातक को व्यवसाय एवं स्त्री-पक्ष में भी सफलता मिलती है तथा उसका गृहस्थ जीवन सुखी एवं स्नेहपूर्ण होता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक बड़ा हिम्मती, फुर्तीला, क्रोधी तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीय भाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

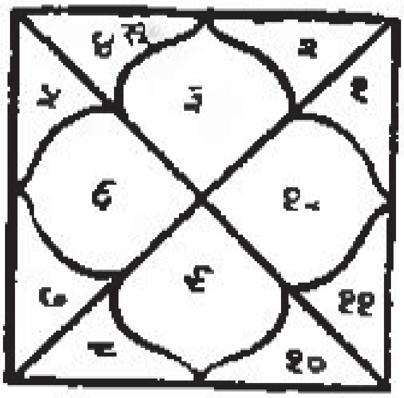

३३५

दूसरे भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर सूर्य के प्रभाव से जातक अपने पराक्रम द्वारा धन तथा कुटुम्ब के सुख को बढ़ाता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ न्यूनता रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव के देखने से जातक को पुरातत्त्व के लाभ में कमी रहती है तथा दैनिक जीवन में भी कुछ अशांति बनी रहती है। ऐसी ग्रहस्थिति का जातक धनी तथा हिम्मती होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : तृतीय भाव : सूर्य

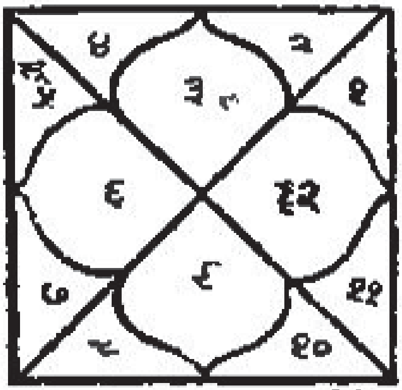

३३६

तीसरे भाव में स्वराशि में स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों की पूर्ण शक्ति मिलती है तथा वह अत्यन्त पराक्रमी भी होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक के भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी आ जाती है। सामान्यतः ऐसी ग्रह-स्थिति वाला जातक बड़ा पराक्रमी, प्रभावशाली तथा सुखी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : चतुर्थ भाव : सूर्य

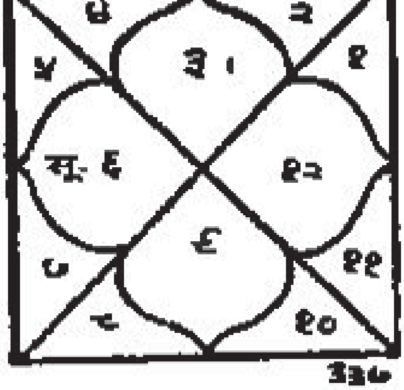

३३७

चौथे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। साथ ही माता, भूमि, भवन, संपत्ति एवं सुख का भी लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा प्रभावशाली होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का-फलादेश

मिथुन लग्न : पंचमभाव : सूर्य

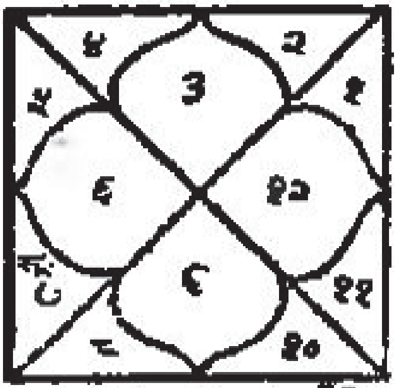

३३८

पाँचवें भाव में स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक की विद्या-बुद्धि में कमी रहती है तथा सन्तान से कष्ट मिलता है। पराक्रम में भी कमजोरी रहती है।

सातवीं उच्चदृष्टि से मित्रराशिस्थ एकादश भाव को देखने के कारण जातक गुप्त युक्तियों तथा असत्य-भाषण आदि का आश्रय लेकर धन कमाता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

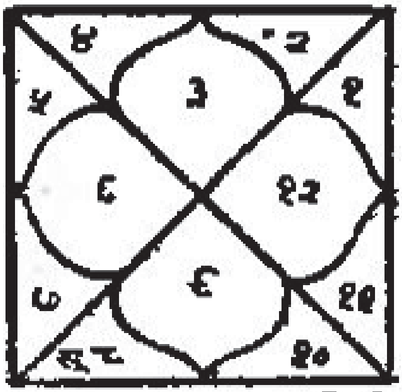

३३९

छठे भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर विजय पाता है। भाई-बहिनों के साथ कुछ वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च की अधिकता रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी कोई अधिक सुख नहीं मिलता। ऐसा व्यक्ति साहसी तथा कठिन परिश्रमी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

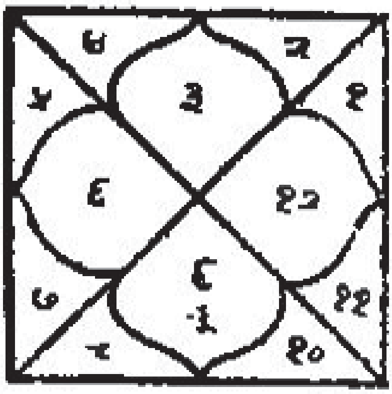

३४०

सातवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री से सुख, शक्ति एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है तथा परिश्रम द्वारा व्यवसाय में भी अच्छा लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण जातक को शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव का लाभ भी होता है। ऐसे व्यक्ति का गार्हस्थ्य-जीवन सुखमय होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

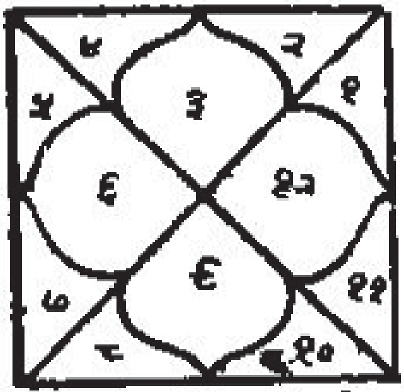

३७२

आठवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पुरातत्त्व एवं आयु के क्षेत्र में कमी आती है तथा भाई-बहिन का सुख एवं पराक्रम भी न्यून रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण आर्थिक क्षेत्र में परिश्रम से लाभ होता है तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : नवमभाव : सूर्य

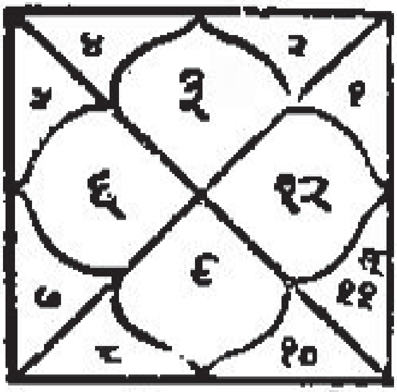

३७३

नवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा भाग्य की उन्नति करता है तथा धर्म-पालन में उदासीन-सा रहता है। भाई-बहिनों से सम्बन्ध भी सन्तोष-जनक नहीं रहता।

सातवीं मित्रदृष्टि से स्वराशि वाले तृतीय भाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई के द्वारा थोड़ा सहयोग भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रमी, उद्योगी तथा तेजस्वी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : दशमभाव : सूर्य

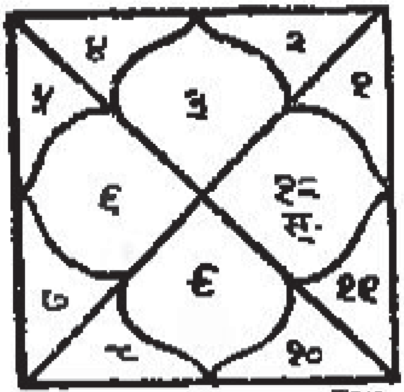

३७४

दसवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता की अच्छी शक्ति मिलती है तथा राज्य एवं व्यवसाय से भी लाभ तथा सम्मान प्राप्त होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भूमि, भवन, सुख एवं मातृ-पक्ष में सफलता मिलती है। ऐसा जातक सुखी एवं सन्तुष्ट रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : एकादशभाव : सूर्य

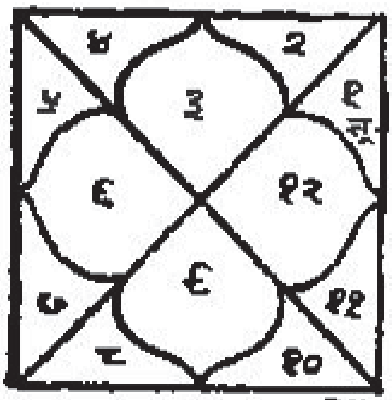

३४७

ग्यारहवें भाव में उच्च राशिस्थ सूर्य के प्रभाव से जातक का पराक्रम बढ़ा रहता है और वह यथेष्ट लाभ प्राप्त करता है। भाई-बहिन के सुख में भी वृद्धि होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण सन्तान-पक्ष में कुछ कमी आती है तथा विद्या-लाभ में भी रुकावटें पड़ती हैं। ऐसा व्यक्ति रूखे स्वभाव का तथा अत्यन्त परिश्रमी और साहसी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : सूर्य

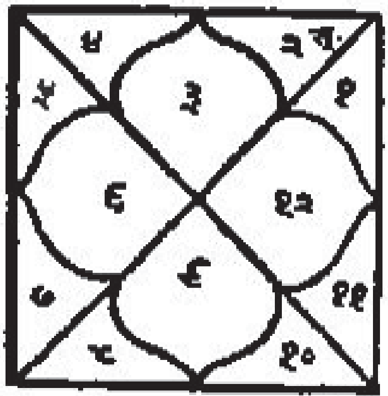

३४८

बारहवें भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रुपक्ष में प्रभाव स्थापित होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी भीतरी कमजोरी को दबाकर, ऊपर से बड़ी हिम्मत दिखाता है तथा परिश्रमी होता है।

'मिथुन' लग्न में 'चन्द्रमा'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुन लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

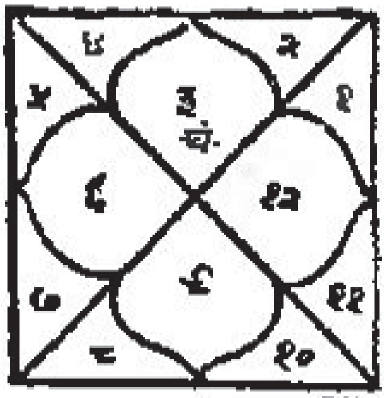

३४९

पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपनी शारीरिक शक्ति तथा मनोबल से धनोपार्जन करता है तथा पर्याप्त कौटुम्बिक सुख को भोगता है। ऐसा व्यक्ति सुन्दर, सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी पर्याप्त सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

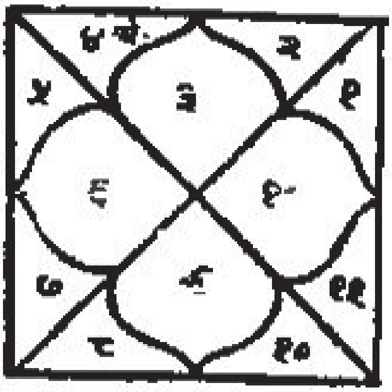

३८७

दूसरे भाव में स्वराशि में स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक को दैनिक जीवन में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की भी हानि होती है। मानसिक रूप से चिन्तित रहते हुए भी ऐसा जातक सुखी तथा यशस्वी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

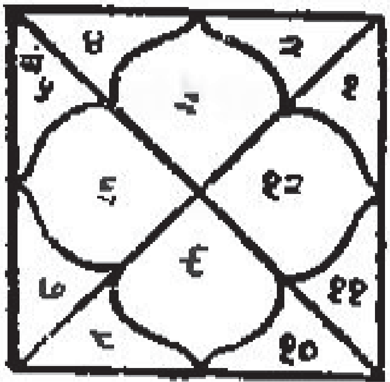

३८८

तीसरे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्योन्नति में रुकावटें आती हैं तथा धर्म का पक्ष भी कमजोर रहता है। ऐसा जातक धनी, प्रतिष्ठित तथा यशस्वी होता है। वह धर्म को विशेष महत्त्व नहीं देता।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र

चौथे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी आती है परन्तु भूमि, भवन, सम्पत्ति एवं कुटुम्ब का सुख खूब मिलता है।

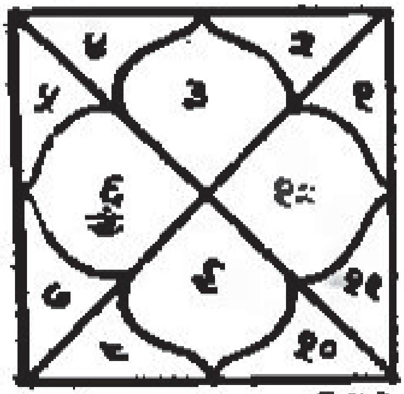

३८९

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता एवं राज्य के द्वारा भी सुख तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक धनी, सुखी, प्रभावशाली तथा व्यवसाय में सफलता पाने वाला होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुन लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

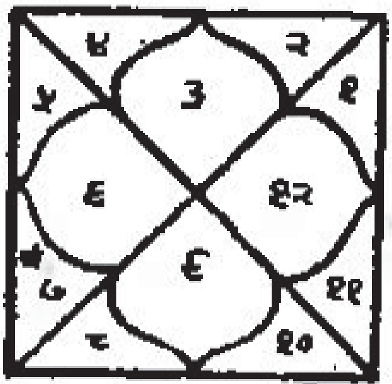

३५०

पाँचवें भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष में कुछ रुकावटें आती हैं, परन्तु विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी अच्छी रहती है। ऐसा जातक सुखी, धनी, चतुर तथा प्रतिष्ठित होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

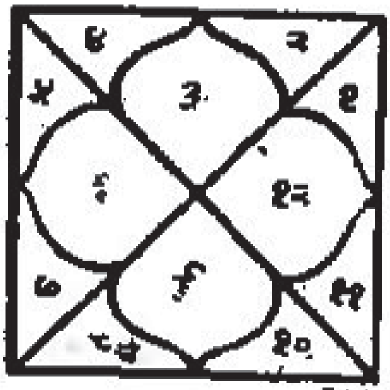

३५१

छठे भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा धनोपार्जन करता है तथा शत्रु-पक्ष द्वारा भी चोट खा सकता है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्पर्क से लाभ होता है।

ऐसा व्यक्ति धन कमाने के विषय में अपयशी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

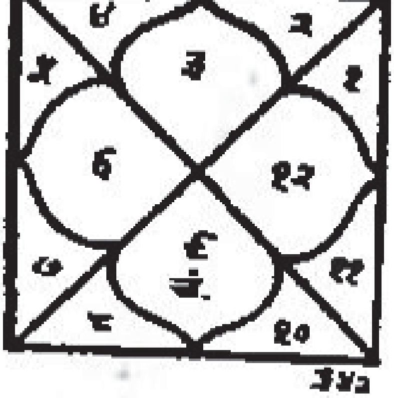

३५२

सातवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष में कुछ रुकावटों के साथ सफलता मिलती है तथा विवाह के बाद भाग्योन्नति होती है। व्यवसाय एवं भोगादि का पर्याप्त सुख भी तभी मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक का शरीर सुन्दर होता है और प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

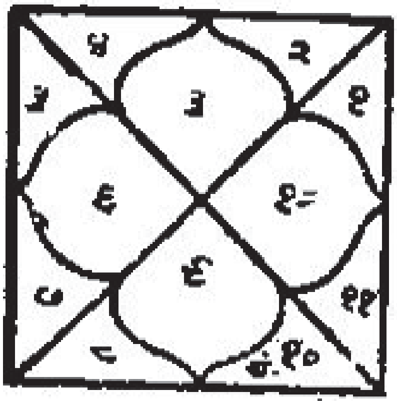

३४३

आठवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में परेशानी रहती है तथा धन एवं कुटुम्ब के सुख में भी बाधा आती है। दैनिक जीवन में भी परेशानियां रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब की उन्नति के साधन प्राप्त होते रहते हैं तथा उनकी प्राप्ति के लिए विशेष परिश्रम भी करना पड़ता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : नवमभाव : चन्द्र

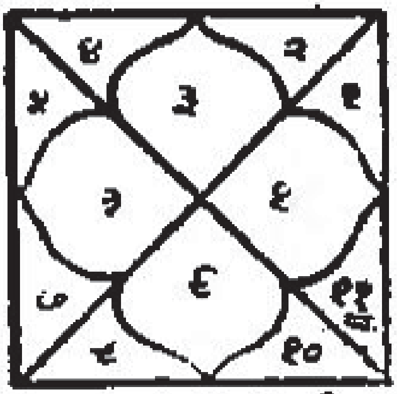

३४४

नवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक धन की वृद्धि के लिए धर्म का पालन करता है तथा भाग्य-पक्ष में कुछ असन्तोष के साथ लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण जातक को भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होता है तथा उसके पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : दशमभाव : चन्द्र

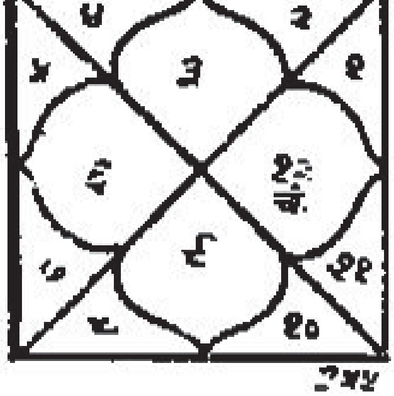

३४५

दसवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता तथा राज्य द्वारा सहयोग, सुख, धन एवं प्रतिष्ठा आदि का लाभ होता है तथा व्यवसाय की उन्नति होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण जातक को माता, भूमि, भवन एवं घरेलू-सुखों का भी लाभ होता है, परन्तु धन की उन्नति में कुछ अटकाव सा अनुभव होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : एकादशभाव : चन्द्र

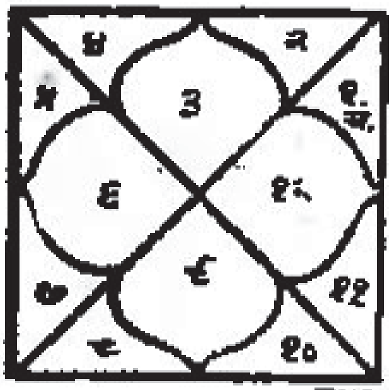

३४९

ग्यारहवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा से जातक को धन का पर्याप्त लाभ होता है तथा कौटुम्बिक सुख भी मिलता है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में भी पर्याप्त सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति विद्वान्, बुद्धिमान्, सन्ततिवान् धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मिथुनलग्न : द्वादशभाव : चन्द्र

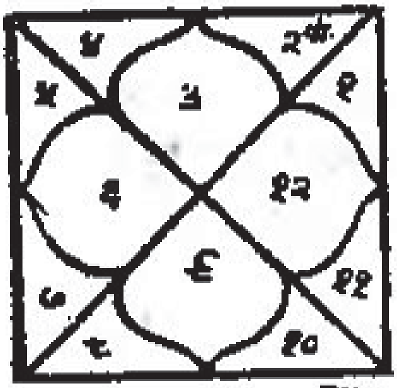

३५०

बारहवें भाव में उच्चस्थ चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता रहता है। कुटुम्ब की शक्ति में कुछ कमी आती है।

सातवीं नीचदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक को शत्रुपक्ष में स्वयं झुक कर अपना काम निकालना पड़ता है तथा रोग, झगड़े आदि के कारण मन में थोड़ी-बहुत अशान्ति भी बनी रहती है।

'मिथुन' लग्न में 'मंगल'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मिथुनलग्न : प्रथमभाव : मंगल

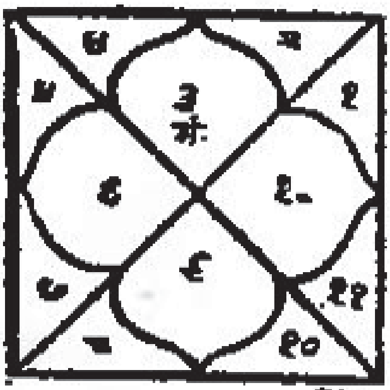

३५०

पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक श्रम द्वारा यथेष्ट धन कमाता है तथा शत्रुपक्ष में भी विजयी होता है चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता तथा घरेलू सुख का असन्तोषपूर्ण लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री को रोग तथा परेशानियां रहती हैं, परिश्रम द्वारा व्यवसाय से लाभ होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति क्रोधी तथा झगड़ालू होता है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘द्वितीयभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

मिथुनलग्न : द्वितीयभाव : मंगल

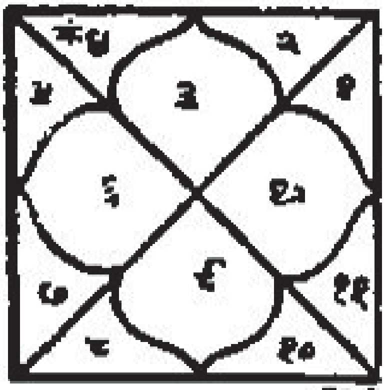

२४९

दूसरे भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब की हानि उठानी पड़ती है। शत्रुपक्ष भी नुकसान पहुँचाता है। जुए-सट्टे में भी हानि होती है। चौथी दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान पक्ष में कमी रहती है तथा विद्या-बुद्धि का लाभ भी गुप्त युक्तियों से होता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म में रुचि नहीं होती तथा भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली से ‘तृतीयभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

मिथुनलग्न : तृतीयभाव : मंगल

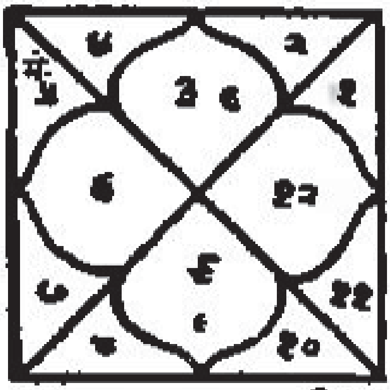

२५०

तीसरे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुख कुछ परेशानी के साथ मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि वाले षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष पर विजय मिलती है तथा शत्रुओं से लाभ होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म का सामान्य लाभ होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण राज्य तथा पिता के पक्ष से यश, धन आदि का लाभ होता है तथा प्रभाव में वृद्धि होती है।

‘मिथुन’ लग्न की कुण्डली के ‘चतुर्थभाव’ स्थित ‘मंगल’ का फलादेश

मिथुनलग्न : चतुर्थभाव : मंगल

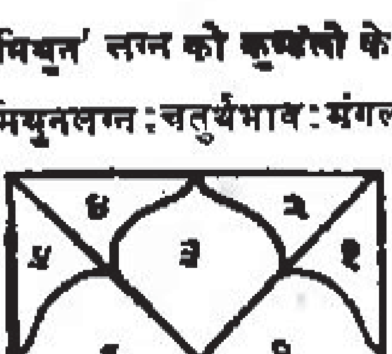

२५१

चौथे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता से सामान्य वैमनस्ययुक्त लाभ होता है तथा भूमि, भवन एवं घरेलू सुख भी कुछ कठिनाइयों के साथ ही मिलता है। चौथी मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सामान्य परेशानियाँ रहती हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य द्वारा यश एवं लाभ मिलता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादशभाव को देखने से जातक की आमदनी अच्छी रहती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मिथुनलग्न : पंचमभाव : मंगल

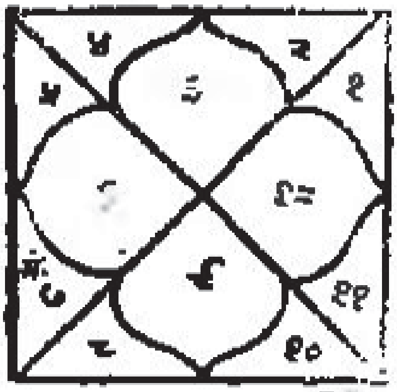

३२२

पाँचवें भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष द्वारा कुछ वैमनस्य के साथ लाभ होता है तथा परिश्रम द्वारा विद्या-बुद्धि प्राप्त होती है। चौथी उच्चदृष्टि से आयु-वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले एकादशभाव को देखने से गुप्त युक्तियों एवं परिश्रम द्वारा पर्याप्त लाभ होता है। आठवीं दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मिथुनलग्न : षष्ठभाव : मंगल

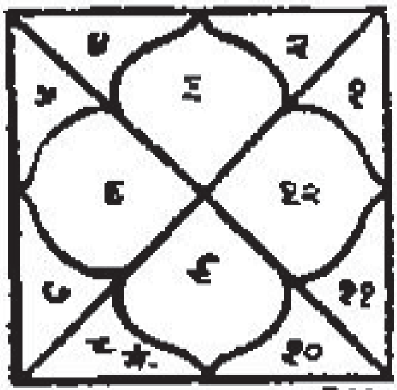

३२३

छठे भाव में स्वराशि-स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शत्रुपक्ष पर विशेष सफलता मिलती है और शत्रु, झगड़े-टंटे तथा मामा के द्वारा लाभ होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक शारीरिक परिश्रम खूब करता है तथा उसी से धन भी कमाता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तम भाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मिथुनलग्न : सप्तमभाव : मंगल

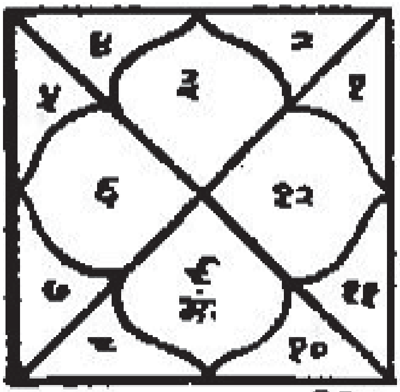

३२४

सातवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को व्यावसायिक तथा स्त्री-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। चौथी मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ पिता तथा राज्यपक्ष से लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है, परन्तु रक्त-विकार आदि रोग भी हो सकते हैं। आठवीं नीचदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन-संचय में कमी रहती है तथा कुटुम्ब के कारण क्लेश भी मिलता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मिथुनलग्न : अष्टमभाव : मंगल

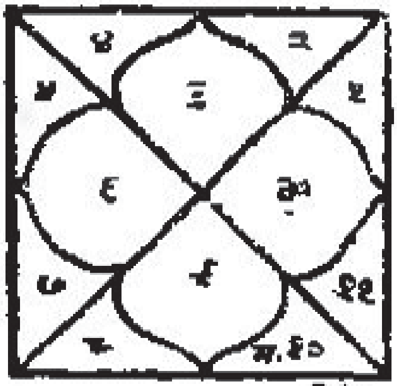

३६५

आठवें भाव में शत्रु शनि की राशि में उच्चस्थ मंगल के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा शत्रुपक्ष पर कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि वाले एकादश भाव को देखने से परिश्रम द्वारा लाभ होता है। सातवीं नीचवृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ कमी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मिथुनलग्न : नवमभाव : मंगल

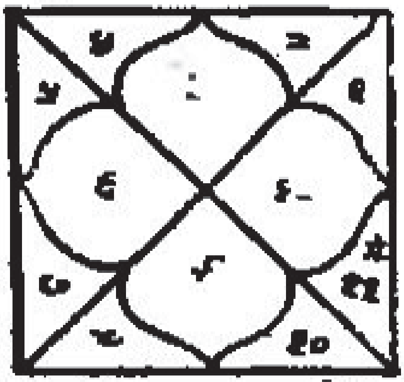

३६६

नवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव के जातक की भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म-पालन में भी विशेष रुचि नहीं होती। शत्रुपक्ष में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। चौथी दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च की अधिकता तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है। सातवी मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख भी कुछ कठिनाइयों के बाद पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मिथुनलग्न : दशमभाव : मंगल

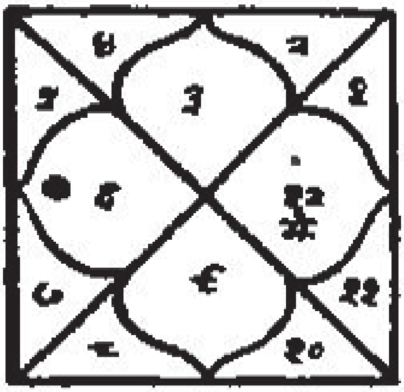

३६७

दसवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम द्वारा राज्य तथा पिता के क्षेत्र में यश और लाभ कमाता है तथा शत्रुपक्ष पर अपना विशेष प्रभाव बनाये रखता है। चौथी मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि द्वारा चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा घरेलू सुख में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से सन्तान-पक्ष द्वारा वैमनस्ययुक्त लाभ होता है तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलती है। इसकी आमदनी बहुत अच्छी रहती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल'-का फलादेश

मिथुनलग्न : एकादशभाव : मंगल

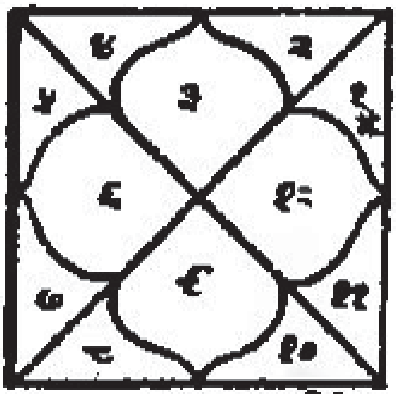

३५८

ग्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन का स्थायी लाभ होता है। चौथी नीचदृष्टि द्वारा द्वितीयभाव को देखने से धन का संचय नहीं होता तथा कौटुम्बिक मामलों में भी कष्ट होता है।

सातवीं दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष द्वारा त्रुटिपूर्ण लाभ होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। आठवीं दृष्टि से स्वराशि वाले षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर जातक का प्रभाव बना रहता है तथा उनसे लाभ भी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मिथुनलग्न : द्वादशभाव : मंगल

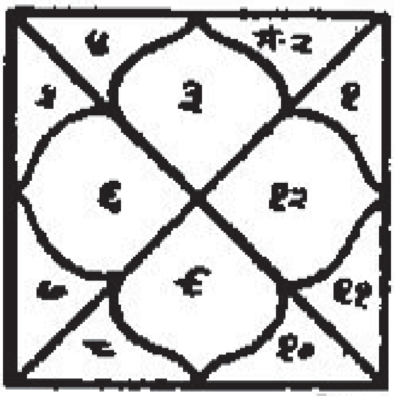

३५९

बारहवें भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। चौथी मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों से द्वारा भी कुछ परेशानियों के बाद लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले षष्ठ-भाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष से कभी हानि होती है और कभी लाभ होता है तथा माता का पक्ष कमजोर रहता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री से कुछ परेशानी रहती है तथा जननेन्द्रिय सम्बन्धी कोई रोग भी हो सकता है।

'मिथुन' लग्न में 'बुध'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुनलग्न : प्रथमभाव : बुध

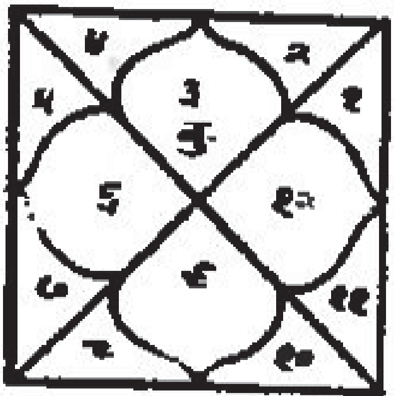

३६०

पहले भाव में स्वराशि में स्थित बुध के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख भी पर्याप्त परिमाण में उपलब्ध रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से विशेष सुख मिलता है तथा व्यावसायिक क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, शान्त, बुद्धिमान् तथा प्रत्येक क्षेत्र में सफलता पाने वाला होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : बुध

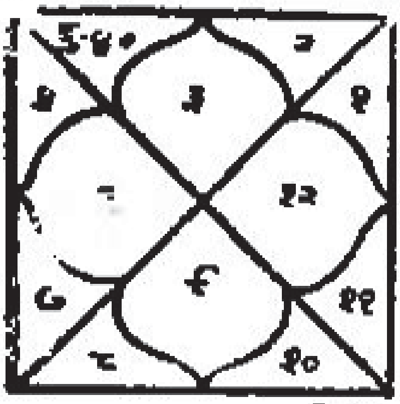

301

दूसरे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि में स्थित बुध के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख तो प्राप्त होता है, परन्तु शारीरिक एवं माता के सुख में कमी रहती है। भूमि, भवन तथा सम्पत्ति का सुख अच्छा मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : तृतीयभाव : बुध

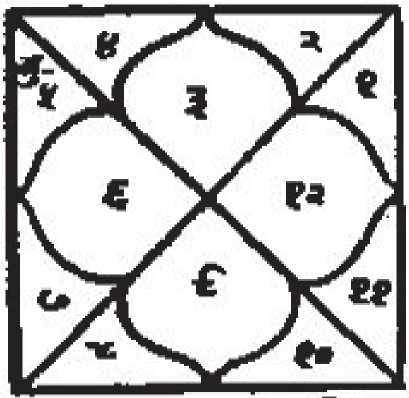

302

तीसरे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। माता, भूमि एवं भवन का भी अच्छा सुख रहता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा भाग्य एवं धर्म की उन्नति करता है। ऐसा जातक स्वभावतः सज्जन, धैर्यवान् तथा यशस्वी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : चतुर्थभाव : बुध

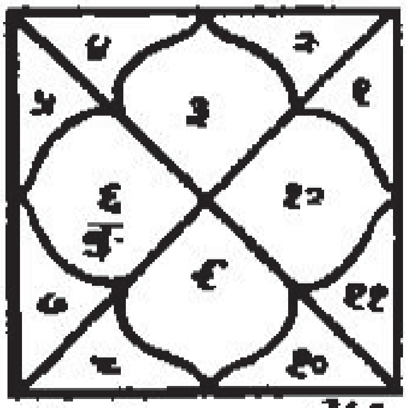

303

चौथे भाव में स्वराशि में स्थित बुध के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा सम्पत्ति का पर्याप्त सुख मिलता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं मनोविनोद के साधन भी अच्छे मिलते हैं।

सातवीं नीचदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमियाँ बनी रहती हैं तथा घरेलू सुखों में भी लापरवाही-सी रहती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : पञ्चमभाव : बुध

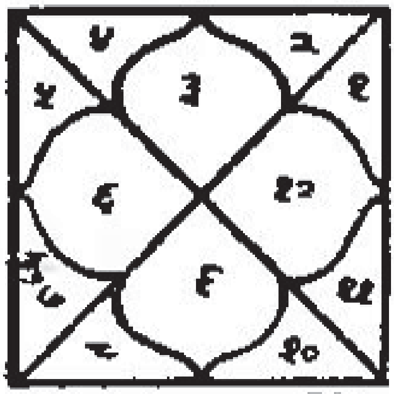

३६५

पाँचवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का श्रेष्ठ लाभ होता है और वह बड़ा गंभीर, चतुर तथा आत्मविश्वासी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण बुद्धि-बल से पर्याप्त लाभ होता रहता है। साथ ही माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति शान्ति-प्रिय स्वभाव का होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : बुध

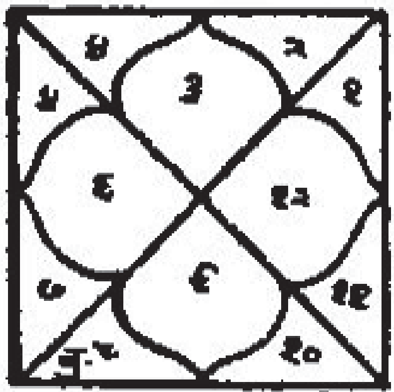

३६६

छठे भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपनी विवेक-शक्ति द्वारा शत्रु-पक्ष में सफलता प्राप्त करता है तथा परिश्रमी होता है। माता, भूमि, घरेलू सुख तथा शारीरिक सौन्दर्य में कमी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सुख मिलता है। परन्तु झगड़े-झंझटों के कारण कुछ कष्ट भी उठाना पड़ता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : बुध

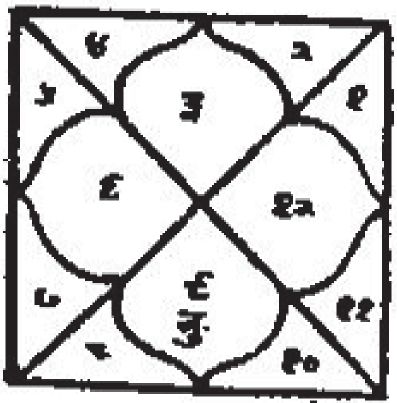

३६७

सातवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष, दैनिक जीवन एवं व्यवसाय में सफलता मिलती है। माता के पक्ष में कुछ कमी रहती है तथा भूमि, भवन का सुख अच्छा प्राप्त होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, चातुर्य, सुख एवं यश की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति अत्यन्त स्वाभिमानी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : बुध

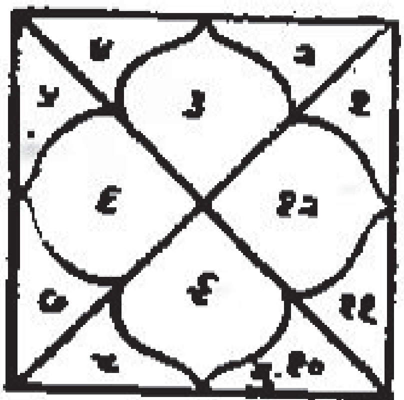

३०७

आठवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, पर माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य की भी हानि होती है। ऐसे व्यक्ति को अपने जन्म-स्थान से हट कर परदेश में जाकर रहना पड़ता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण प्रयत्नपूर्वक धन एवं कुटुम्ब के सुख का लाभ होता है, परन्तु शारीरिक सुख में कमी रहती है तथा परेशानियां भी उठानी पड़ती हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : नवमभाव : बुध

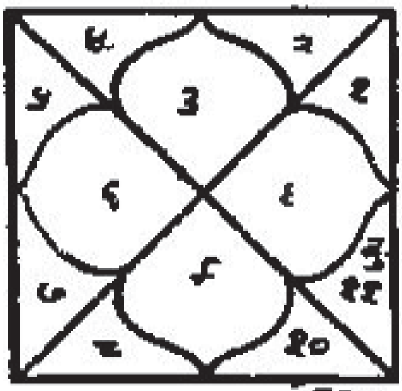

३०८

नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक परिश्रम तथा विवेक द्वारा धर्म एवं भाग्य की उन्नति करता है। उसे माता, भूमि तथा भवन का सुख भी प्राप्त होता है।

सातवीं मित्र दृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का अच्छा सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, यशस्वी, सन्तुष्ट तथा विवेकी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : दशमभाव : बुध

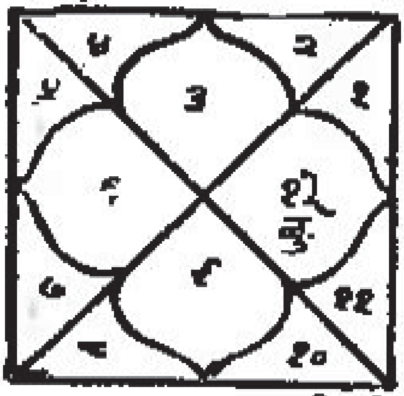

३०९

दसवें भाव में स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक को अपनी उन्नति के लिए कठोर शारीरिक श्रम करना पड़ता है। पिता का अल्प-सुख मिलता है तथा राज्य के क्षेत्र में भी अधिक सफलता नहीं मिलती।

सातवीं उच्चदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक स्वास्थ्य और सुख के सातवीं में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति कभी अपमानित और कभी सम्मानित होता रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मिथुन लग्न : एकादशभाव : बुध

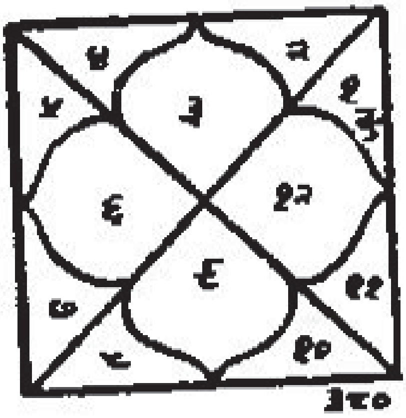

३८०

ग्यारहवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध से प्रभाव से जातक स्व-विवेक एवं शारीरिक परिश्रम द्वारा पर्याप्त लाभ उठाता है। उसे माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा सन्तान-पक्ष से लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति सुखी, सुन्दर, मधुर-भाषी, धनी तथा विवेकी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

बारहवें भाव में मित्र शुक्र का राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। माता, भूमि तथा मकान के सुख में भी कमी रहती है। जातक को अपनी जन्म-भूमि से दूर रहने पर लाभ एवं सुख मिलता है।

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : बुध

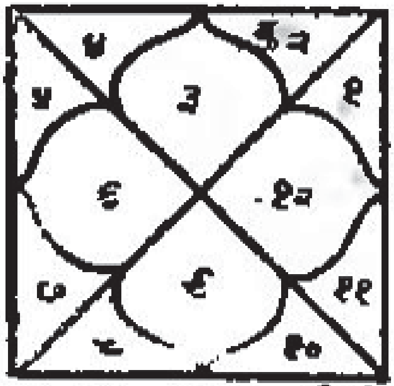

३८१

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष में विवेक एवं शांति द्वारा सफलता मिलती है। खर्च के कारण भीतरी चिंताएँ रहते हुए भी वह अपने ऊपरी प्रभाव को बनाये रखता है।

'मिथुन' लग्न में 'गुरु'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को सुख, शारीरिक सौन्दर्य, स्वाभिमान तथा मनोबल की प्राप्ति होती है। पिता तथा राज्य से भी लाभ होता है।

मिथुन लग्न : प्रथमभाव : गुरु

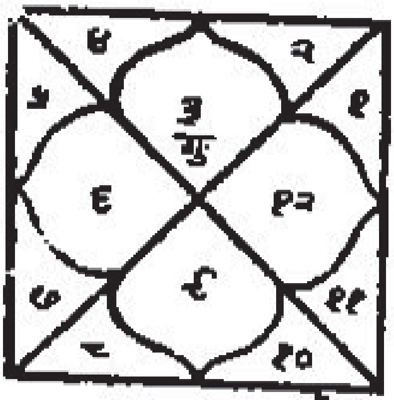

३८२

पाँचवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री का सुख अच्छा रहता है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

दूसरे भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक के धन-कुटुम्ब की वृद्धि होती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव एवं विजय की प्राप्ति होती है।

मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : गुरु

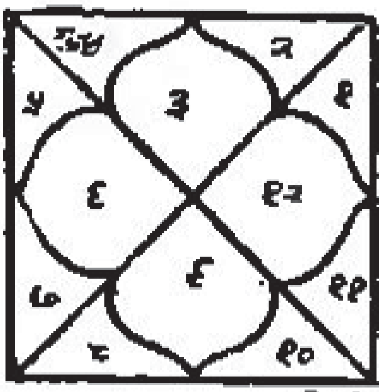

३८४

सातवीं नीचदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के लाभ में कमी रहती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि वाले दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य के द्वारा सहयोग तथा सफलताएँ मिलती हैं तथा व्यवसाय द्वारा धन की पर्याप्त वृद्धि होती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

तीसरे भाव में सूर्य की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के पराक्रम एवं भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि के सप्तमभाव को देखने से श्रेष्ठ पत्नी द्वारा सुख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

मिथुन लग्न : तृतीयभाव : गुरु

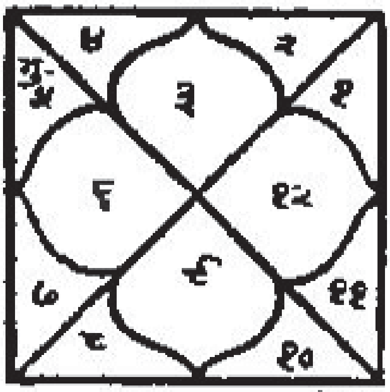

३८५

सातवीं दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ असन्तोष रहता है तथा धन-प्राप्ति के लिए परिश्रम अधिक करना पड़ता है, परन्तु नवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी अच्छी रहती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

चौथे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन आदि का सुख पर्याप्त मिलता है। पाँचवीं नीचदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में अशांति तथा कुछ कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले दशमभाव को देखने से पिता तथा राज्य-पक्ष से सहयोग, यश एवं लाभ प्राप्त होता है नवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ लाभ भी होता है।

मिथुन लग्न : चतुर्थभाव : गुरु

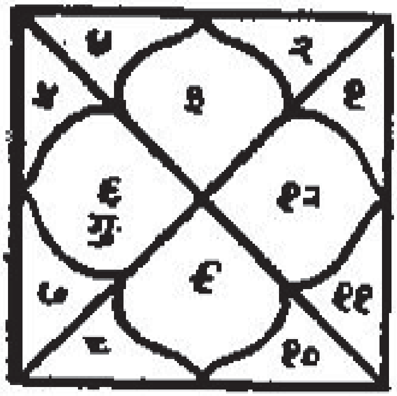

३८६

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

पाँचवें भाव में शत्रु शुक्र की राशिपर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है परन्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कमजोरी रहती है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण भाग्योन्नति कुछ कठिनाइयों के साथ होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण जातक को श्रेष्ठ शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव एवं स्वाभिमान की प्राप्ति होती है।

मिथुन लग्न : पंचमभाव : गुरु

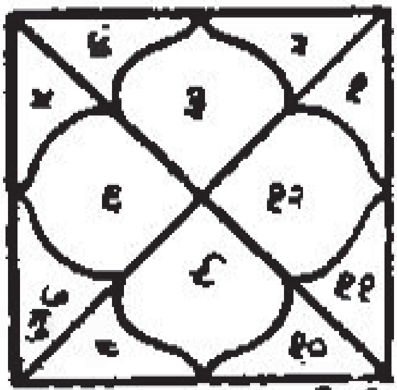

३८६

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

छठे भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में विजय प्राप्त होती है परन्तु स्त्री-पक्ष से कुछ मतभेद रहता है।

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : गुरु

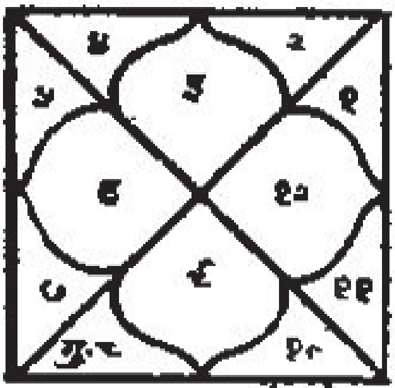

३८७

पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि वाले दशमभाव को देखने से राज्य द्वारा सम्मान तथा उन्नति के अवसर मिलते हैं, परन्तु पिता से कुछ मतभेद रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। नवीं उच्च दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब से भी सहयोग मिलता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सातवें भाव में स्वराशि-स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है। पिता तथा राज्य के क्षेत्र से भी सहयोग तथा सम्मान मिलता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है। नवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा संपन्न होता है।

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : गुरु

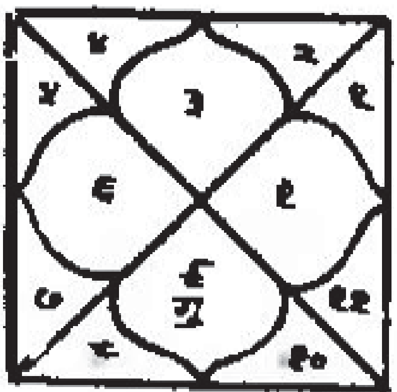

३८८

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

आठवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। पिता, राज्य, व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष से भी कष्ट होता है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से कपटपूर्ण सम्बन्ध द्वारा काम चलता है। सातवीं उच्चदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से परिश्रम के द्वारा धन की कुछ वृद्धि होती है। नवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन आदि का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : गुरु

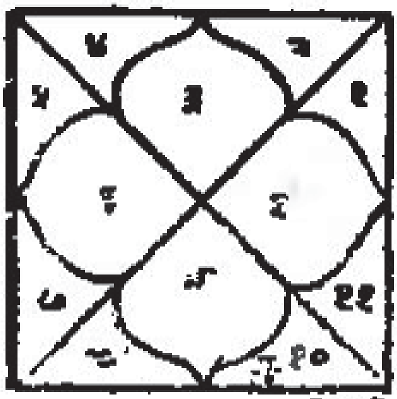

३८९

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

नवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य तथा धर्म की उन्नति करता है। पिता, राज्य तथा स्त्री-पक्ष से असंतोष रहता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिनों का सुख बढ़ता है। नवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान-पक्ष से असन्तोष रहता है।

मिथुन लग्न : नवमभाव : गुरु

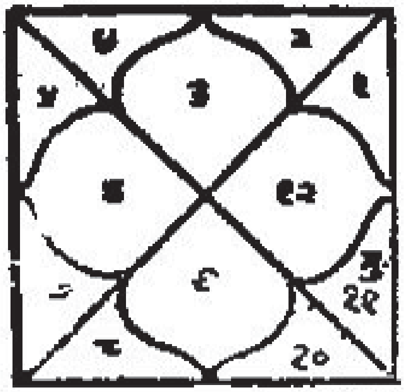

३९०

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

दसवें भाव में स्वराशि स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को राज्य एवं पिता से पूर्ण सहयोग, सुख तथा सम्मान मिलता है। व्यवसाय में भी सफलता मिलती है। पाँचवीं उच्चदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन का संचय को अच्छा होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन तथा सम्पत्ति का सुख भी खूब मिलता है। नवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। ऐसा व्यक्ति हर प्रकार से सुखी रहता है।

मिथुन लग्न : दशमभाव : गुरु

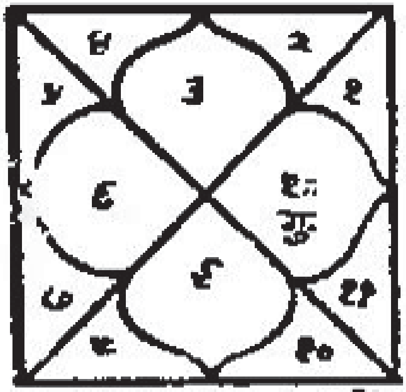

३९१

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

ग्यारहवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ लाभ होता है तथा पिता, व्यवसाय एवं राज्य से भी सहयोग मिलता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि में तो वृद्धि होती है परन्तु सन्तान-पक्ष कमजोर रहता है। नवीं दृष्टि से स्वराशि के सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष से पर्याप्त लाभ एवं सुख मिलता है।

मिथुन लग्न : एकादशभाव : गुरु

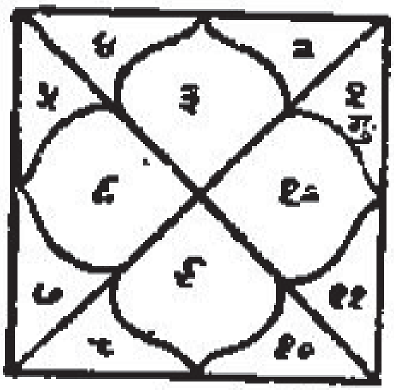

३८३

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

बारहवें भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से यश तथा लाभ मिलता है। स्त्री तथा पिता के सुख में कुछ कमी रहती है तथा व्यवसाय में भी हानि होती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से शत्रुपक्ष में सफलता मिलती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के विषय में संकटों का सामना करना पड़ता है।

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : गुरु

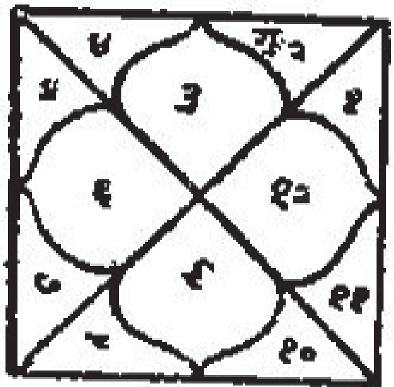

३८४

'मिथुन' लग्न में 'शुक्र'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक शरीर से दुर्बल परन्तु विद्या, बुद्धि एवं चातुर्य में प्रवीण होता है। वह खर्चीला तथा बाहरी स्थानों से लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

मिथुन लग्न : प्रथमभाव : शुक्र

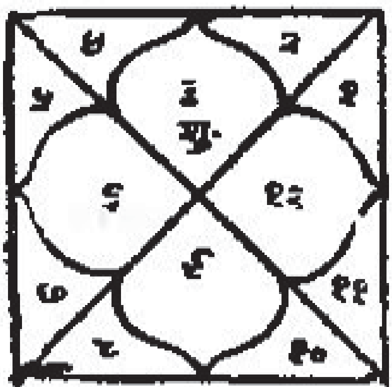

३८५

सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री के साथ मतभेदपूर्ण आसक्ति बनी रहती है। दैनिक कार्यों तथा व्यवसाय में बड़ी युक्ति के साथ सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति बहुत विलासी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

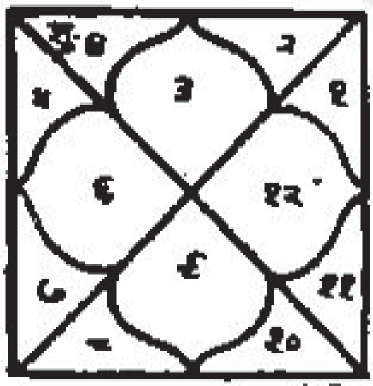

३९५

दूसरे भाव में सत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक बुद्धि एवं चातुर्य द्वारा धन तथा प्रतिष्ठा तो कमाता है, परन्तु धन का संचय नहीं हो पाता। बाहरी स्थानों से संबंध अच्छा रहता है, परन्तु सन्तान-सुख में कुछ कमी रहती है। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसी ग्रहस्थिति का व्यक्ति शानदार-जीवन बिताने का आदी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुनलग्न : तृतीयभाव : शुक्र

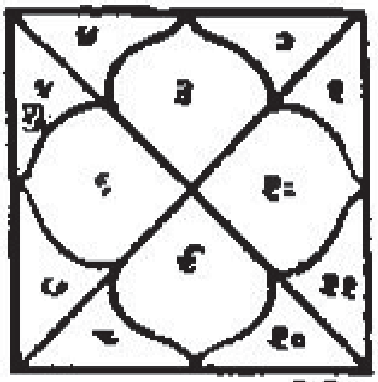

३९६

तीसरे भाव में सत्रु सूर्य की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है। विद्या तथा सन्तान-पक्ष में भी न्यूनता रहती है परन्तु बुद्धि-चातुर्य प्रबल होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक धर्म तथा भाग्य की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करता है। वह पुरुषार्थ द्वारा अपना खर्च चलाने तथा चातुर्य द्वारा काम निकालने में कुशल होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुनलग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

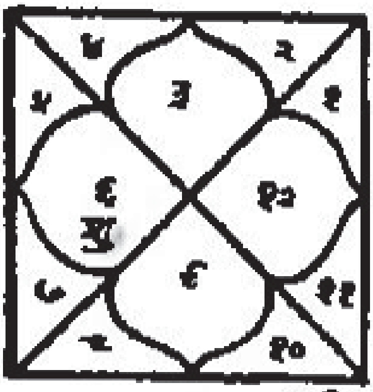

३९७

चौथे भाव में स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। सन्तान का सुख भी कम मिलता है। अन्य सुखों में भी व्यवधान आता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता तथा राज्य के द्वारा सुख-सम्मान तथा सहयोग मिलता है और गुप्त चतुराई के बल पर मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : पंचमभाव : शुक्र

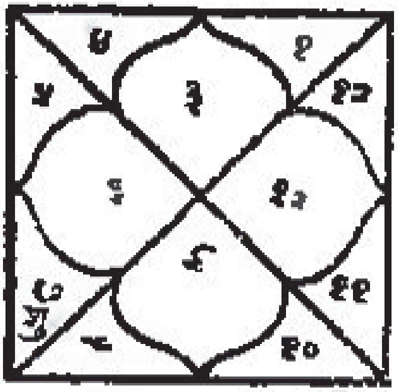

३६८

पाँचवें भाव में स्वराशि-स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति चतुर होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से बुद्धि द्वारा लाभ अधिक होता है, परन्तु शुक्र के व्ययेश होने के कारण आमदनी से खर्च अधिक रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : शुक्र

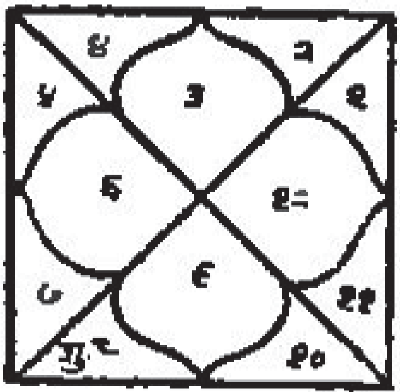

३६९

छठे भाव में सामान्य मित्र मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में अपनी गुप्त चतुराई एवं खर्च करने की शक्ति से सफलता प्राप्त करता है। सन्तान-पक्ष तथा विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वादश भाव को देखने से खर्च आमदनी से अधिक बना रहता है। ऐसा व्यक्ति झगड़े-टंटे एवं मुकद्मेबाजी में अधिक फँसा रहता है और उसी में उसकी शक्तियाँ व्यय होती रहती हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : शुक्र

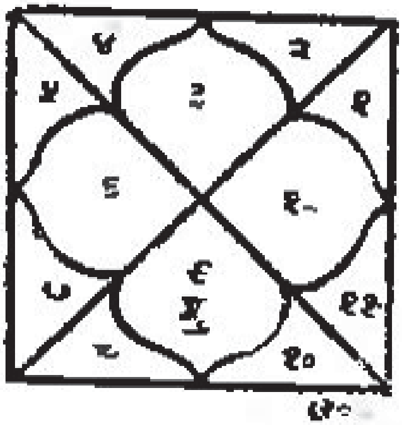

३७०

सातवें भाव में सामान्य मित्र गुरु की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की पत्नी बुद्धिमान् तथा चतुर होती है। परन्तु उसे स्त्री-पक्ष से कष्ट तथा चिन्ताएँ भी प्राप्त होती रहती हैं। दैनिक खर्च चलाने के लिए उसे बुद्धिमानी तथा बड़ी चतुराई से काम लेना पड़ता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर दुर्बल होता है, परन्तु सम्मान की वृद्धि होती है। ऐसे व्यक्ति की विद्या, बुद्धि, सन्तान तथा बाहरी सम्बन्धों के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : शुक्र

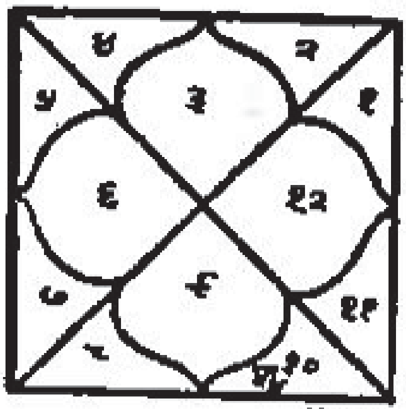

४०१

आठवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। वह कूट-नीतिज्ञ तथा परिश्रमी होता है। उसे सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक की धन-वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करने पड़ते हैं, तथा शुक्र के व्ययेश होने के कारण खर्च अधिक बना रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : नवमभाव : शुक्र

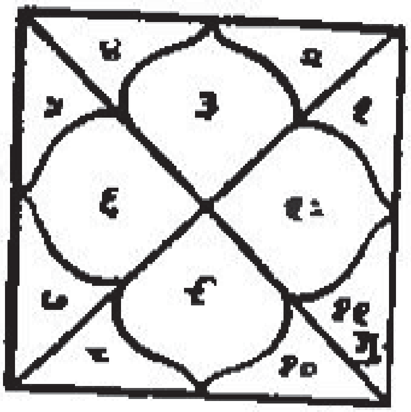

४०२

नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की कुछ कठिनाइयों के साथ उन्नति होती है। विद्या तथा सन्तान का सुख भी प्राप्त होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के साथ वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम में भी कुछ कमी आती है। ऐसा व्यक्ति भाग्य को पुरुषार्थ से बड़ा मानने वाला होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : दशमभाव : शुक्र

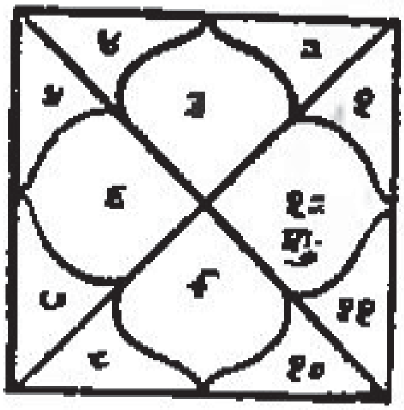

४०३

दसवें भाव में सामान्य मित्र गुरु की राशि पर स्थित व्ययेश उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बड़ी हानि उठानी पड़ती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। पिता, राज्य, विद्या तथा सन्तान की शक्ति भी प्राप्त होती है।

चौथी नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी आती है। ऐसा व्यक्ति अपने अहंकारी स्वभाव के कारण बार-बार हानि उठाता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : एकादशभाव : शुक्र

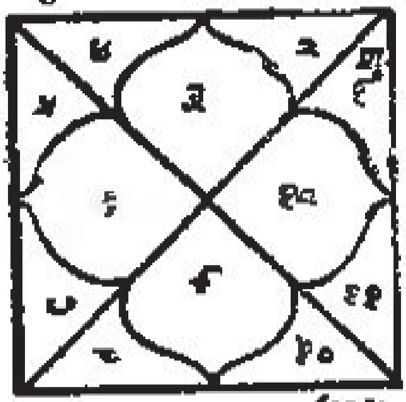

६०४

ग्यारहवें भाव में सामान्य मित्र मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है परन्तु खर्च भी खूब होता रहता है। मस्तिष्क में चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के पंचमभाव को देखने के कारण कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि में प्रवीणता प्राप्त होती है तथा सन्तान-पक्ष में भी कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसे व्यक्ति के मस्तिष्क में चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : शुक्र

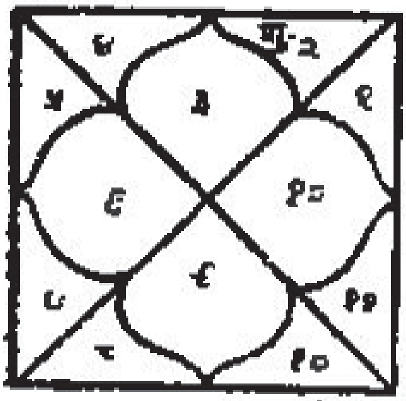

६०५

बारहवें भाव में स्वराशि-स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है। विद्या तथा सन्तान के पक्ष में कुछ परेशानियाँ रहती हैं।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक शत्रु-पक्ष में चतुराई से प्रभाव स्थापित करके अपना काम निकालता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा चतुर होता है। साथ ही, उसके मस्तिष्क में चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं।

'मिथुन' लग्न में 'शनि'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : प्रथमभाव : शनि

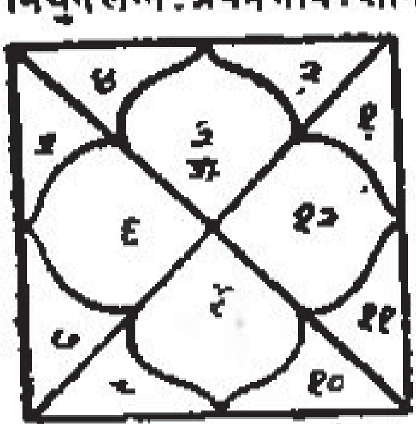

६०६

पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है, परन्तु आयु तथा पुरातत्व की वृद्धि होती है।

तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन से वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम में कमी आती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में असन्तोष रहता है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : शनि

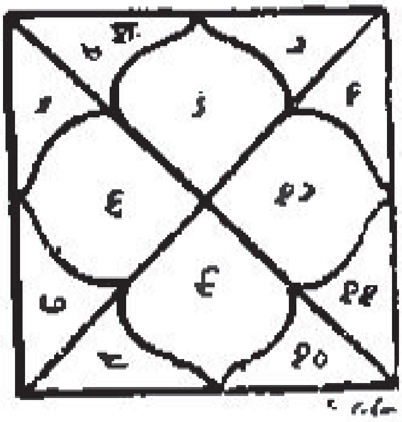

दूसरे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन-संचय की शक्ति एवं कौटुम्बिक सुख में हानि होती है। तीसरी मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कष्टों के साथ प्राप्त होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि के अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दसवीं नीचदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आय के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसा व्यक्ति समाज में भाग्यवान् समझा जाता है और वह सज्जन होने के साथ ही स्वार्थी भी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : तृतीय भाव : शनि

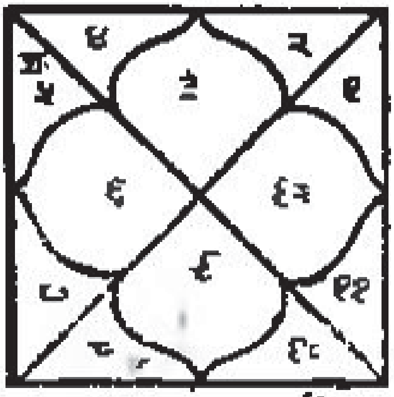

तीसरे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कुछ कमी आती है तथा भाई-बहिन से वैमनस्य रहता है। साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति बढ़ती है। तीसरी उच्चदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति होती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले नवमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। दसवीं दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक बना रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : चतुर्थभाव : शनि

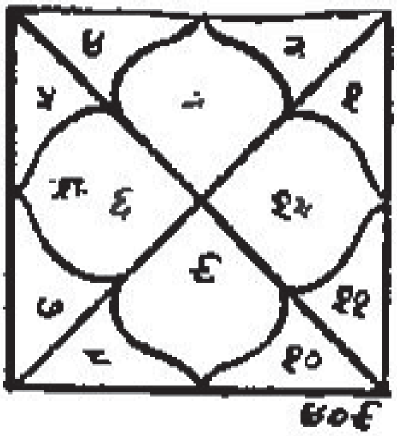

चौथे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को कुछ कमी के साथ माता का सुख प्राप्त होता है तथा भूमि-भवन के सुख में भी कुछ कमी रहती है। आयु एवं पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है तथा धर्म का पालन भी होता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर कड़ाई के साथ प्रभाव स्थापित होता है तथा शत्रुओं एवं झगड़ों से लाभ मिलता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य-क्षेत्र से असन्तोष तथा वैमनस्य रहता है। दसवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है तथा लोग उसे भाग्यवान् भी समझते हैं।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित शनि का फलादेश

मिथुन लग्न : पंचमभाव : शनि

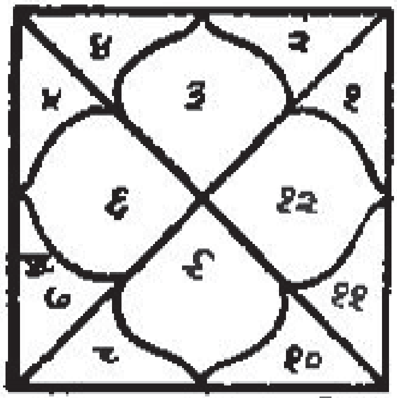

६७०

पाँचवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। भाग्य-वृद्धि भी होती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सातवी नीचदृष्टि से एकादश-भाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कमी आती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से कठिनाइयों के साथ धन-सम्बन्धी आवश्यकताएँ पूरी होती हैं तथा कुटुम्ब से भी कम सुख प्राप्त होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : शनि

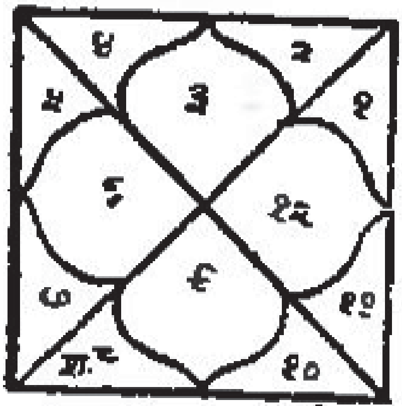

६७१

छठे भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को शत्रु तथा झगड़ों के क्षेत्र में सफलता एवं विजय मिलती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि वाले अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा ठाठ-बाट में बहुत खर्च होता है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में कमी आती है तथा भाई-बहिन के सुख में बाधा पड़ती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी भी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : शनि

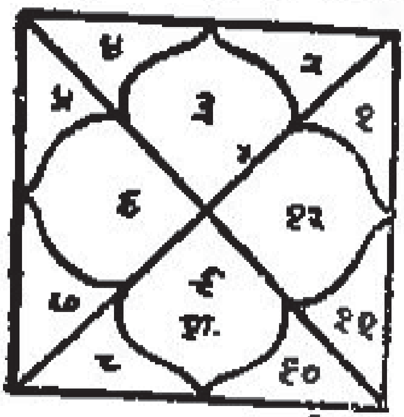

६७२

सातवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख-दुःख तथा हानि-लाभ दोनों की प्राप्ति होती रहती है। जननेन्द्रिय में कष्ट होता है। परन्तु आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि के नवमभाव को देखने से भाग्य की वृद्धि होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक प्रभाव में कुछ न्यूनता के साथ वृद्धि होती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कठिनाइयों के साथ मिलता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रम द्वारा कठिनाइयों पर विजय पाकर तरक्की करता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : शनि

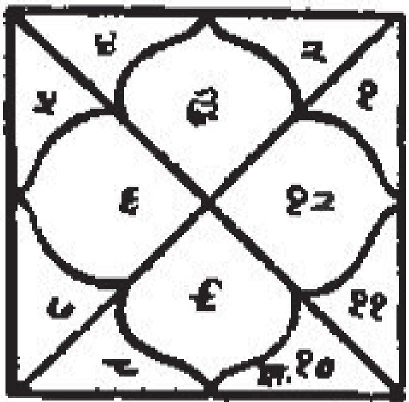

८१३

आठवें भाव में स्वराशि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। भाग्य तथा सम्मान के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। धर्म का पालन भी ठीक से नहीं होता। तीसरी शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय में कमी रहती है। दसवीं उच्च दृष्टि से पंचमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है। ऐसा जातक अपनी वाणी की शक्ति द्वारा भाग्योन्नति करता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : नवमभाव : शनि

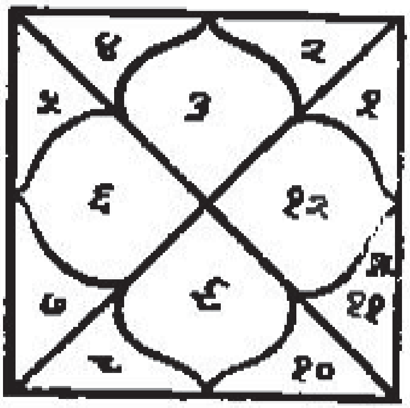

८१४

नवें भाव में स्वराशि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक कुछ कमियों के लाभ भाग्यवान बना रहता है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। धर्म-पालन में रुचि रहती है तथा यश भी मिलता है। तीसरी नीच-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी में कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष से होने वाली परेशानियों पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति बड़े ठाठ का जीवन व्यतीत करता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : दशमभाव : शनि

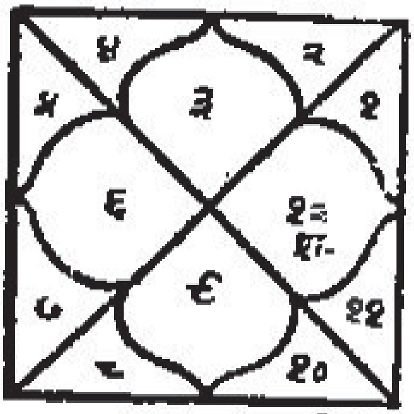

८१५

दसवें भाव मे शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में कमी रहती है, परन्तु राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। तीसरी मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से श्रेष्ठ लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख मिलता है। दसवीं दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा जातक संघर्षपूर्ण जीवन बिताता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मिथुन लग्न : एकादशभाव : शनि

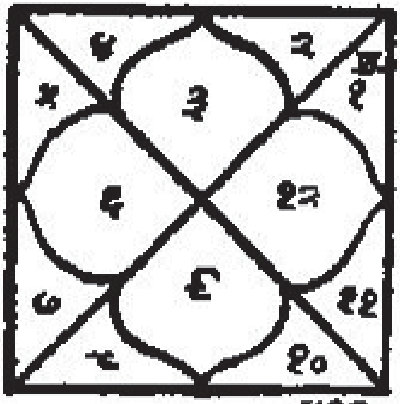

५१६

ग्यारहवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी के मार्ग में परेशानियां आती हैं। भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में की त्रुटियां रहती हैं। यह धन-प्राप्ति के लिए अनुचित मार्ग भी अपनाता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर को कुछ कष्ट भी रहता है तथा जातक भाग्यशाली भी बनता है। सातवीं उच्च दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति होती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि वाले अष्टमभाव को देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। नीच का शनि जातक के जीवन को अनेक संकटों तथा खतरों में डालता रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित शनि का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : शनि

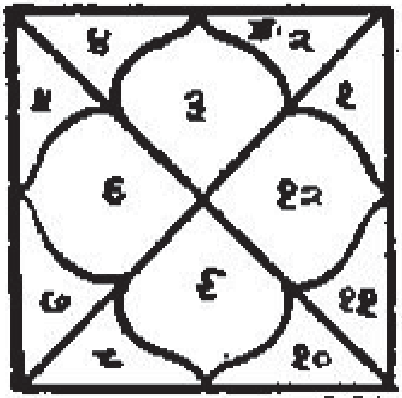

५१७

बारहवें भाव में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन एवं कुटुम्ब-सुख के पक्ष में कमी बनी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष पर कठिनाइयों से बाद विजय मिलती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि के नवम भाव में देखने से भाग्य की वृद्धि होती है तथा जातक धर्म का पालन भी करता है। ऐसा व्यक्ति यश-अपयश तथा सुख-दुःख दोनों ही प्राप्त करता है, परन्तु भाग्यशाली समझा जाता है।

'मिथुन' लग्न में 'राहु'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : प्रथमभाव : राहु

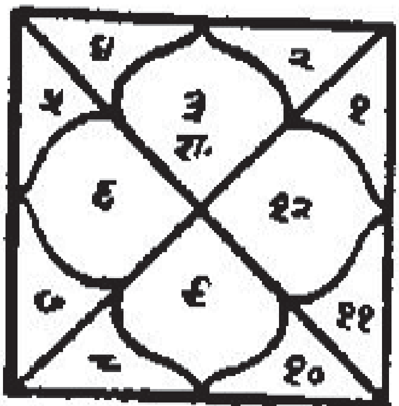

५१८

पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक प्रभावशाली, लम्बे शरीर वाला, विवेकी, स्वार्थी, गुप्त युक्तियों का ज्ञाता तथा बड़ी हिम्मत वाला होता है। यह कष्टसाध्य कर्मों तथा गुप्त युक्तियों के आश्रय से अपनी उन्नति करता है तथा धन एवं सम्मान पाता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : राहु

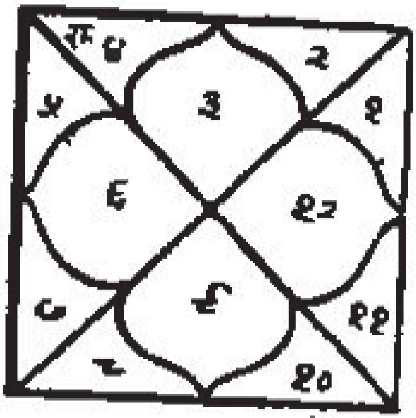

४१९

दूसरे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को धन-सम्पत्ति तथा कौटुम्बिक सुख की बड़ी हानि उठानी पड़ती है। गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम का आश्रय लेने पर भी धन-प्राप्ति के क्षेत्र में सामान्य सफलताएँ ही मिलती हैं। उसे बहुत समय बाद धन का अल्प सुख मिलता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : तृतीयभाव : राहु

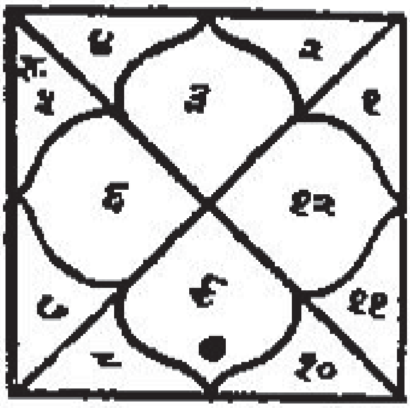

४२०

तीसरे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। वह अपनी उन्नति के लिए बहुत हिम्मत तथा परिश्रम से लगा रहता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा धैर्यवान्, हिम्मती तथा गुप्त युक्तियों से सम्पन्न होता है। परन्तु कभी-कभी उसे बड़े संकटों का सामना भी करना पड़ता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : चतुर्थभाव : राहु

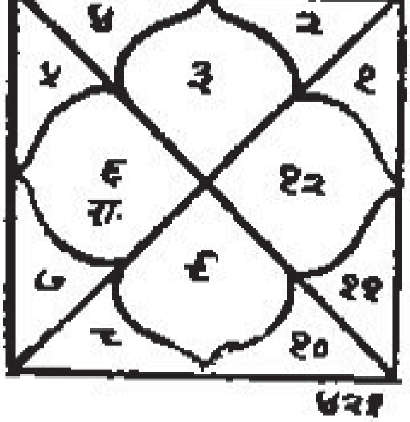

४२१

चौथे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की माता, भूमि, भवन एवं घरेलू सुख में कमी तथा असंतोष की प्राप्ति होती है। वह गुप्त युक्तियों के बल पर सुख-प्राप्ति का प्रयत्न करता है, परन्तु उसकी इच्छी भली-भाँति पूर्ण नहीं हो पाती।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : पंचमभाव : राहु

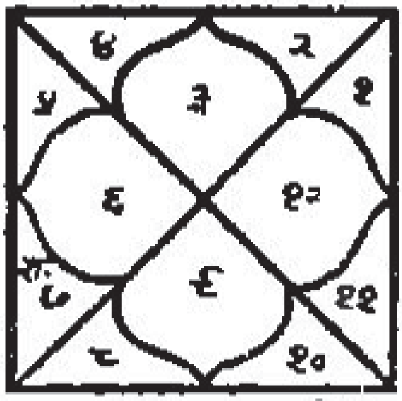

६२२

पाँचवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अनेक कठिनाइयों के बाद विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कष्ट ही बना रहता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों का ज्ञाता-बुद्धिमान, असत्यवादी, प्रभावोत्पादक तथा अनेक प्रकार की चिंताओं से ग्रस्त होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : राहु

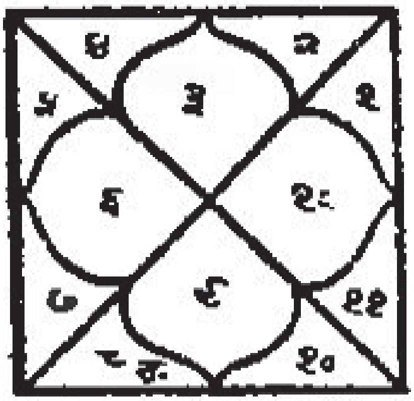

६२३

छठे भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक शत्रु पर अपना विशेष प्रभाव बनाये रखता है तथा उन पर विजय पाता है। ऐसा व्यक्ति अपनी कमजोरियों को प्रकट नहीं होने देता तथा बड़ा साहसी, धैर्यवान, चतुर, पराक्रमी तथा गुप्त युक्तियों का जानकार होता है।

मिथुन' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : राहु

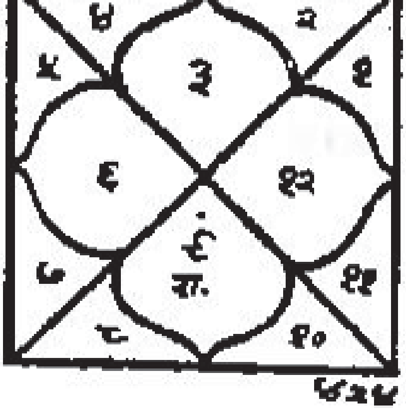

६२४

सातवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की स्त्री को बहुत कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयां आती रहती हैं।

ऐसे व्यक्ति की मूत्रेन्द्रिय में भी कोई विकार होता है। यह गुप्त युक्तियों तथा असत्य-भाषण आदि के अनुचित तरीकों से भी अपना स्वार्थ-साधन करने से नहीं चूकता।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : राहु

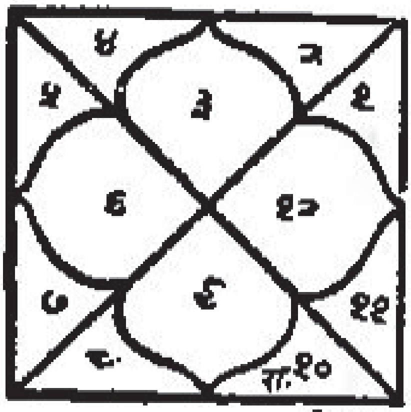

५२५

आठवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पुरातत्त्व एवं आयु के विषय में अनेक प्रकार के संकटों का सामना करना पड़ता है। उसके पेट के निम्न भाग में कोई विकार भी होता है।

ऐसा व्यक्ति कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर सफलता पाने के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा अपनी कठिनाइयों के विषय में किसी को पता नहीं चलने देता।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : नवमभाव : राहु

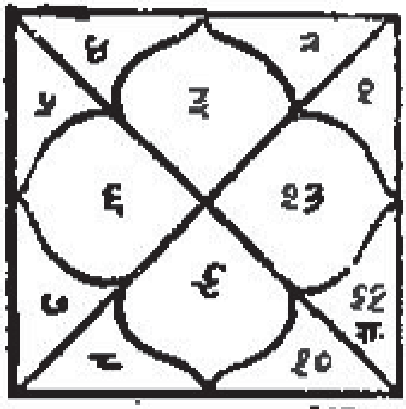

५२६

नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में अनेक कठिनाइयां आती हैं। वह अपने परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर भाग्य की वृद्धि तो करता है, परन्तु पूर्ण सुख-सम्मान प्राप्त नहीं कर पाता। उसका धर्म-पालन भी ढोंग-जैसा ही होता है। कहीं बहुत बाद में उसे थोड़ी-सी सफलता मिल पाती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : दशमभाव : राहु

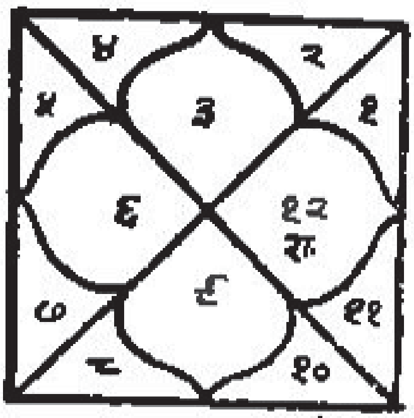

५२७

दसवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा अत्यन्त कठिन परिश्रम के बाद ही थोड़ी-बहुत सफलता मिल पाती है। ऐसे व्यक्ति पर बार-बार संकट आते रहते हैं, अन्त में थोड़ी-तो सफलता भी मिलती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : एकादशभाव : राहु

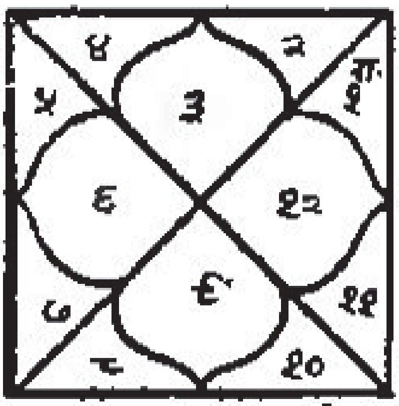

६३८

ग्यारहवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर आमदनी की वृद्धि करता है तथा कठिन परिश्रम द्वारा पर्याप्त धन भी उपार्जित करता है। कभी-कभी उसे घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है परन्तु अन्त में विशेष सफलता भी मिलती है। ऐसा व्यक्ति थोड़े लाभ से सन्तुष्ट रहकर भी विशेष लाभ के लिए नित नई योजनाएँ बनाता रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : राहु

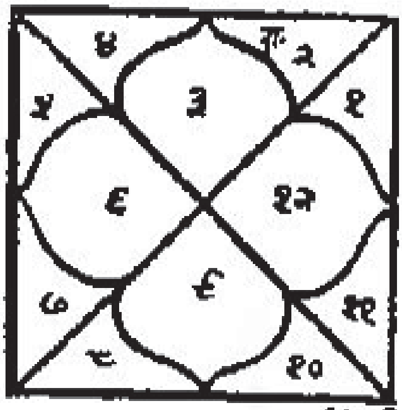

६३९

बारहवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है और इसी कारण उसे कभी-कभी बड़ी कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। उसे बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है।

गुप्त युक्तियों, परिश्रम तथा चातुर्य के बल पर वह अपना खर्च चलाता है तथा बाहरी लोगों की दृष्टि में वह प्रभावशाली बना रहता है।

'मिथुन' लग्न में 'केतु'

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : प्रथमभाव : केतु

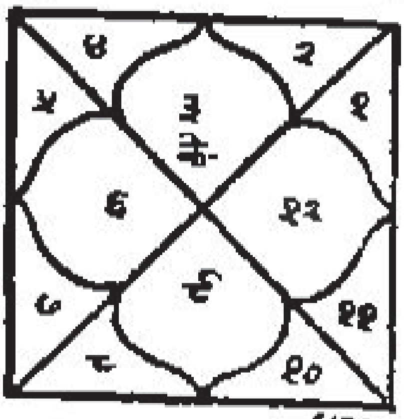

६४०

पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक में शारीरिक सौंदर्य में कमी रहती है। वह गुप्त चिंताओं, रोग, चोट आदि का शिकार बनता रहता है। गुप्त युक्तियों तथा शारीरिक परिश्रम के बल पर वह अपने स्वार्थों की पूर्ति करता है। विवेकी होने पर भी उसमें स्वाभिमान कम होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वितीयभाव : केतु

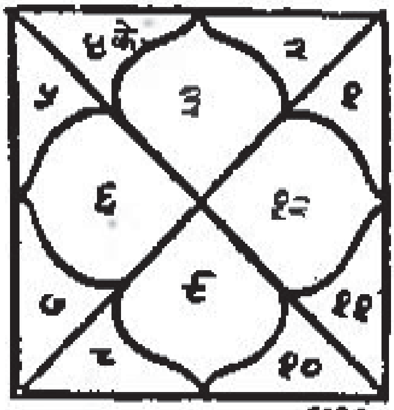

४३१

दूसरे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक धन तथा कुटुम्ब के बारे में चिन्ता-ग्रस्त बना रहता है। धन-संचय न हो पाने से कभी-कभी अत्यधिक कष्ट पाता है तथा कौटुम्बिक कारणों से मानसिक क्लेश का शिकार भी होता है। वह धैर्य, साहस एवं गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर ही अपनी कठिनाइयों पर थोड़ी-बहुत विजय प्राप्त कर पाता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : तृतीय भाव : केतु

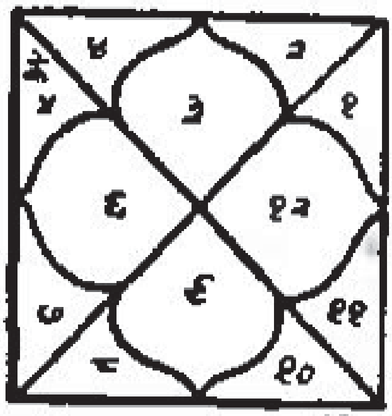

४३२

तीसरे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में तो अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आ जाती है। वह अपने पराक्रम-विषयक कारणों से ही परेशानी उठाता है। ऐसा जातक बड़ा दम्भी, हिम्मती, हठी, बहादुर तथा साहसी होता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : चतुर्थभाव : केतु

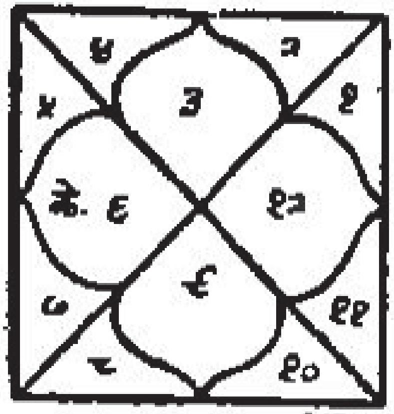

४३३

चौथे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक घरेलू सुखों को पाने के लिए बड़ी चतुराई का आश्रय लेकर सफल होता है। भूमि तथा भवन का सुख भी कुछ कमी के साथ मिलता है। अपने गुप्त साहस एवं धैर्य के बल पर अन्त में उसे सुख-प्राप्ति में सफलता भी मिलती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : पंचमभाव : केतु

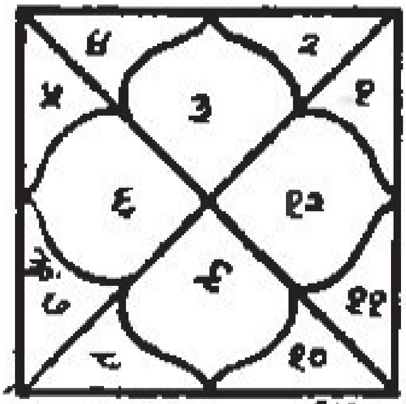

४३७

पाँचवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ आती हैं तथा सन्तान-पक्ष में भी कठिनाइयों के साथ ही सामान्य सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति अपने गुप्त धैर्य की शक्ति, चातुर्य तथा हिम्मत के बल पर ही विद्या के तथा अन्य क्षेत्रों में सफलताएँ प्राप्त करता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : षष्ठभाव : केतु

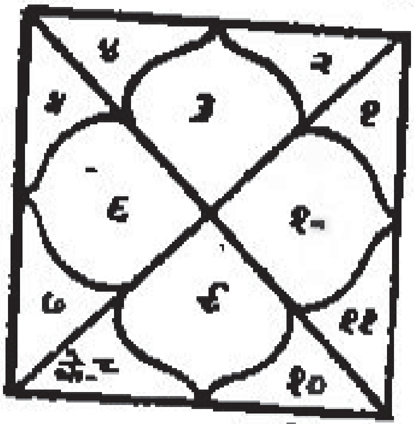

४३५

छठे भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अपनी गुप्त युक्तियों द्वारा शत्रुओं का दमन करने में समर्थ होता है तथा मुकदमे आदि में सफलताएँ प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति अपनी आन्तरिक कमजोरी को छिपाने में कुशल होता है तथा बड़ी हिम्मत से काम लेकर लोगों को आश्चर्य में डाल देता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : सप्तमभाव : केतु

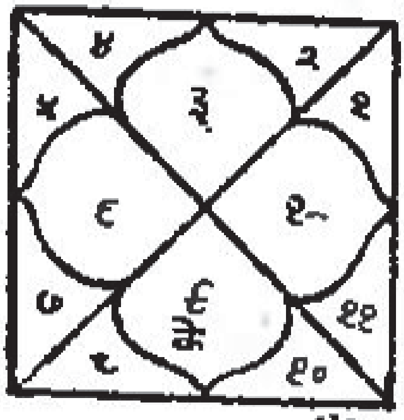

४३६

सातवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलता प्राप्त होती है। उसके जीवन में इन्द्रिय-भोगों की अधिकता रहती है। ऐसा व्यक्ति कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर अत्यधिक उन्नति भी कर लेता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : अष्टमभाव : केतु

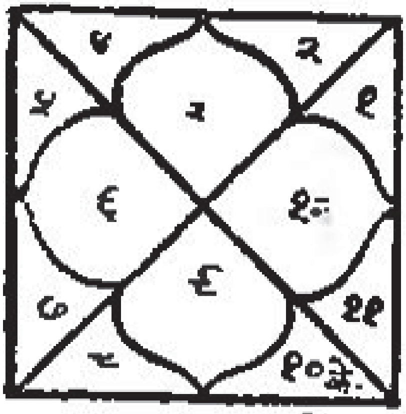

४३७

आठवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की पुरातत्त्व की हानि होती है तथा आयु के सम्बन्ध में भी अनेक बार संकटों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी हिम्मत तथा बहादुरी के बल पर संकट के समय भी धैर्य को नहीं खोता। उसे पेट की कोई बीमारी भी हो सकती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : नवमभाव : केतु

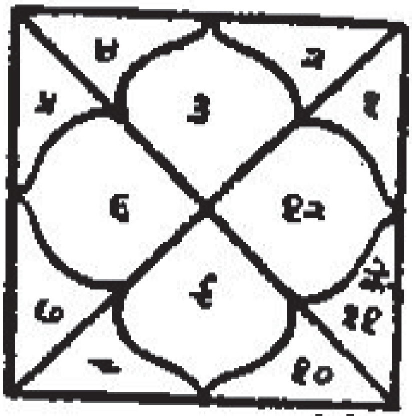

४३८

नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कुछ बाधाएँ आती हैं, परन्तु परिश्रम द्वारा थोड़ी-बहुत सफलता भी मिलती है। ऐसा व्यक्ति धर्म का पूर्ण पालन नहीं कर पाता। वह अपनी गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर सभी क्षेत्रों में न्यूनाधिक सफलताएँ प्राप्त करता रहता है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : दशमभाव : केतु

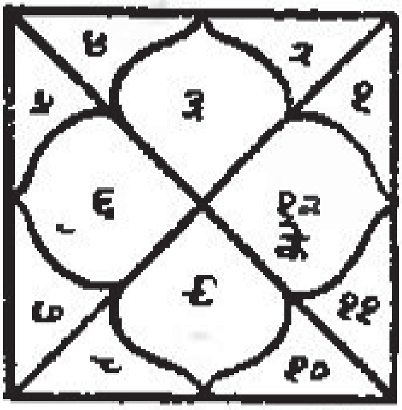

४३९

दसवें भाव में अपने शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मान-प्रतिष्ठा की भी कभी-कभी बड़ी हानि उठानी पड़ती है। गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बाद ही उसे सामान्य सफलता मिल पाती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : एकादशभाव : केतु

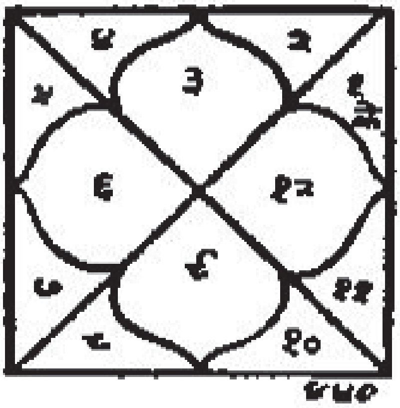

ग्यारहवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की आमदनी के क्षेत्र में कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है। अपने धैर्य, साहस तथा परिश्रम से ही उसे अन्त में कठिनाइयों पर विजय तथा आमदनी के क्षेत्र में थोड़ी-बहुत सफलता मिलती है।

'मिथुन' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मिथुन लग्न : द्वादशभाव : केतु

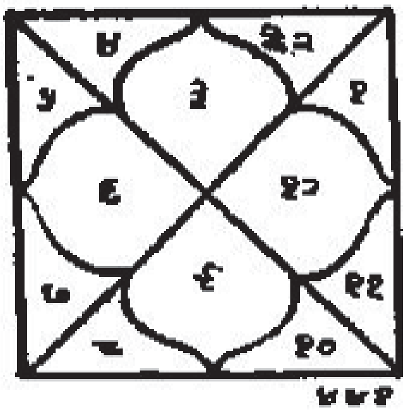

बारहवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण उसे कभी-कभी भारी संकटों का सामना करना पड़ता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी उसे कुछ परेशानी बनी रहती है। परन्तु ऐसा जातक अपनी हिम्मत, गुप्त युक्ति, परिश्रम तथा चतुराई के बल पर येन-केन-प्रकारेण अपना खर्च चलाता रहता है।

'कर्क' लग्न

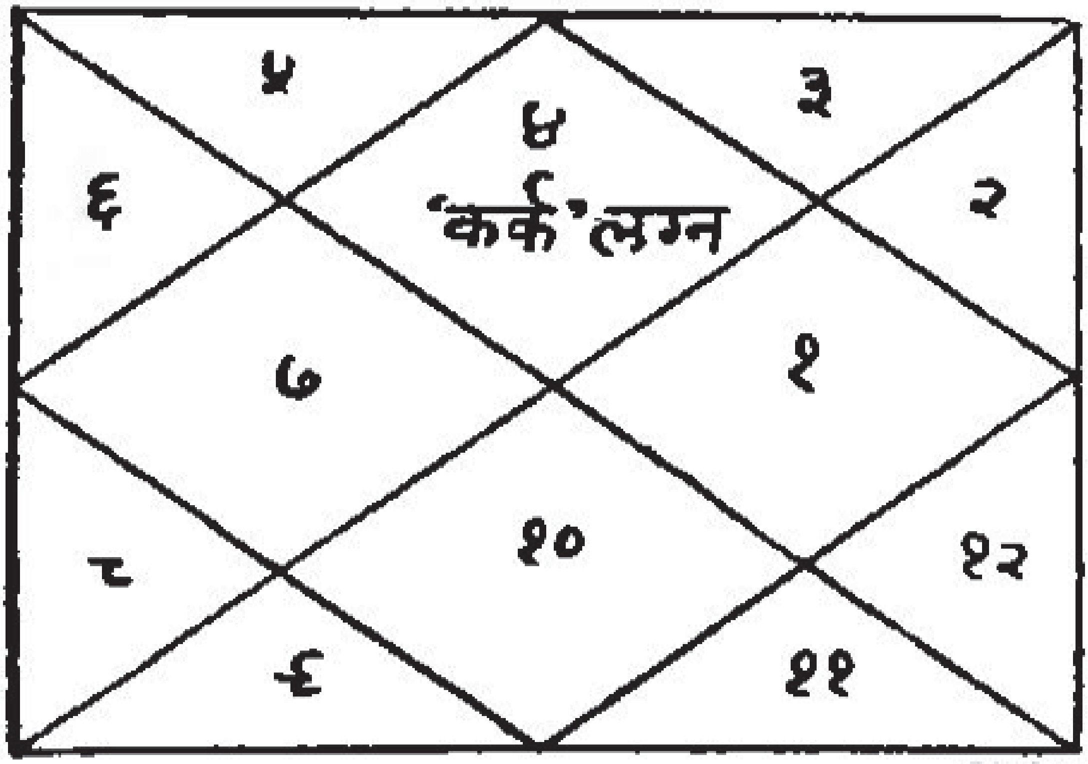

४६२

['कर्क' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'कर्क' लग्न का फलादेश

'कर्क' लग्न में उत्पन्न जातक का शरीर गौर-वर्ण तथा शक्तिशाली होता है। वह पित्त प्रकृति वाला, बुद्धिमान्, धर्मात्मा, उदार, विनम्र, धनी, जलक्रीड़ा-प्रेमी, पवित्र, क्षमाशील तथा मिष्टान्न-भोजी होता है, परन्तु इसके साथ ही वह व्यसनी, अत्यन्त ढीठ, कुटिल-स्वभाव, मित्र-द्रोही तथा कभी-कभी विपरीत-बुद्धि का परिचय देने वाला भी होता है।

इस लग्न वाला व्यक्ति अपने शत्रुओं से पीड़ित रहता है। उसके कन्या-सन्तानें अधिक होती हैं तथा उसे अपना जन्म-स्थान छोड़कर परदेश में निवास करना पड़ता है।

इस लग्न वाले जातक का भाग्योदय १६-१७ वर्ष की आयु में ही हो जाता है।

'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न वालों मे स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४३ से ५५० के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियो में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

●

'कर्क' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४४३ से ४५४ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में सूर्य—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ४४३
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ४४४
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ४४५
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ४४६
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ४४७
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ४४८
(छ) 'तुला' राशि पर हो की संख्या ४४९
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ४५०
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ४५१
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ४५२
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ४५३
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ४५४

'कर्क' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४५५ से ४६६ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ४५५
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ४५६
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ४५७
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ४५८
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ४५९
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ४६०
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ४६१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ४६२
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ४६३
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ४६४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ४६५
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ४६६

'कर्क' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मङ्गल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४६७ से ४७८ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मङ्गल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मङ्गल'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४६७
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४६८
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४६९
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७०
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७१
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७२
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७३
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७४
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७५
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७६
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७७
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७८

'कर्क' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४७९ से ४९० के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४७९
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८०
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८१
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८२
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८३
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८४
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८५
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८६
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८७
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४८८
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित तो हो संख्या ४८९
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९०

'कर्क' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ४९१ से ५०२ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९१
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९२
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो यो संख्या ४९३
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९४
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९५
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९६

(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९८
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ४९९
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५००
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०१
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०२

'कर्क' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५०३ से ५१४ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०३
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०४
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०५
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०६
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०७
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०८
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५०९
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१०
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५११
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१२
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१३
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१४

'कर्क' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५१५ से ५२६ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१५
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१६
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१७
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१८
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५१९
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२०
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२२
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२३
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२५
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२६

'कर्क' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५२७ से ५३८ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२७
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२८
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५२९
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३०
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३१
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३२
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३३
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३४
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३५
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३६
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३७
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३८

'कर्क' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१—'कर्क' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५३९ से ५५० के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५३९
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४०
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४१
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४२
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४३
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४४
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४५
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४६
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४७
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४८
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५४९
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ५५०

●

'कर्क' लग्न में 'सूर्य'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : सूर्य

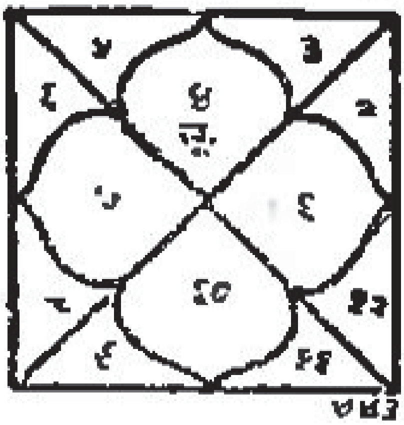

प्रथमभाव में जिस चन्द्रमा की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य, तेज तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। उसे धन तथा कुटुम्ब की शक्ति भी प्राप्त होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

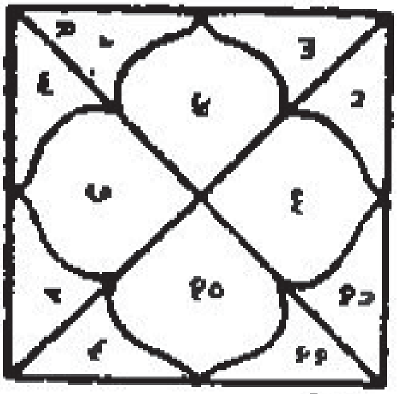

७४७

दूसरे भाव में स्वराशि-स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के धन, कुटुम्ब, यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु में कमी आती है तथा पुरातत्त्व एवं दैनिक चर्या में यो सामान्य कठिनाइयों का शिकार होना पड़ता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : सूर्य

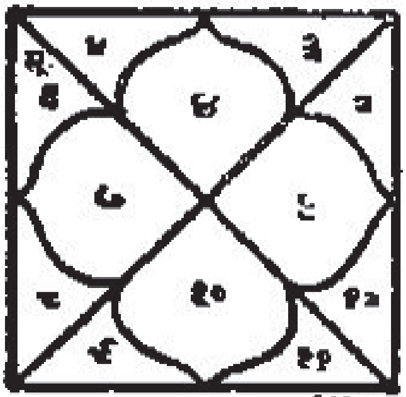

७४८

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख कुछ त्रुटियों के साथ प्राप्त होता है। पराक्रम के द्वारा धन-वृद्धि यो होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक पराक्रम द्वारा भाग्य की वृद्धि तथा धर्म का पालन करता है। उसका प्रभाव एवं सम्मान यो बढ़ता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

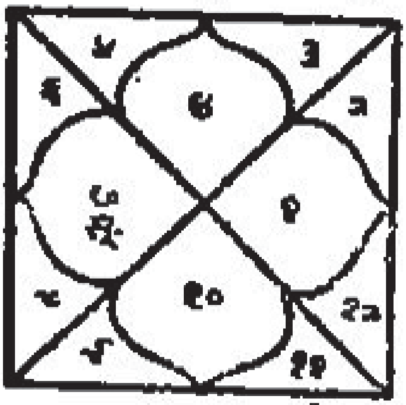

७४९

चौथे भाव में शत्रु शुक्र की राशिस्थ नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक के माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी कम मिलता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, यश तथा धन की प्राप्ति होती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : सूर्य

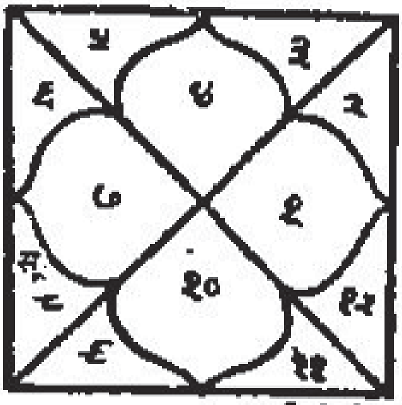

४४७

पाँचवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के सन्तान-सुख में बाधा आती है, परन्तु एक सन्तान अत्यन्त प्रभावशालिनी होती है। विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है तथा धन की वृद्धि भी होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है। ऐसा जातक स्पष्ट वक्ता तथा उग्र स्वभाव का होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

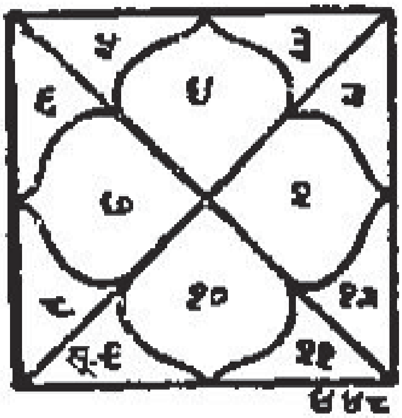

४४८

छठे भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अत्यन्त प्रभाव रखता है, परन्तु धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। ऐसा व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा के आगे धन की चिंता नहीं करता तथा झगड़े एवं परिश्रम के कामों से प्रभाव की वृद्धि करता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

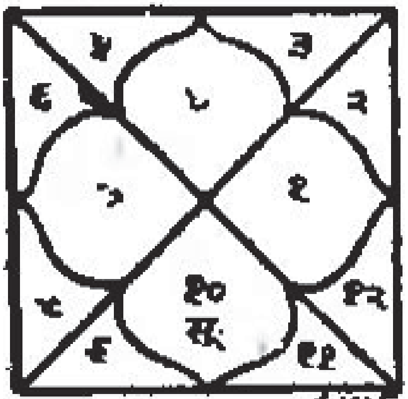

४४९

सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कष्ट होता है। स्त्री से वैमनस्य रहता है तथा व्यवसाय में भी परेशानियाँ आती रहती हैं। मूत्रेन्द्रिय में विकार तथा पारिवारिक कठिनाइयाँ भी रहती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक को प्रतिष्ठा मिलती है तथा शारीरिक प्रभाव भी बना रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

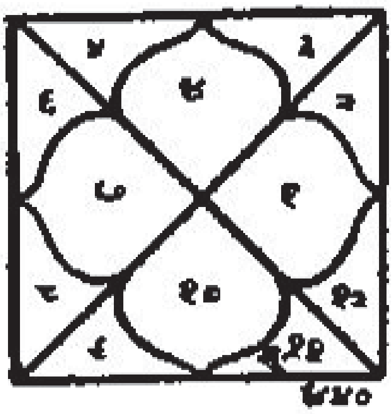

४५०

सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की आयु पर कभी-कभी संकट आते रहते हैं तथा पुरातत्त्व के लाभ में भी कमी आती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के द्वितीयभाव के देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख में कुछ कमी रहती है तथा पेट में भी कोई रोग हो सकता है। ऐसे व्यक्ति का रहन-सहन धनवानों जैसा होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : सूर्य

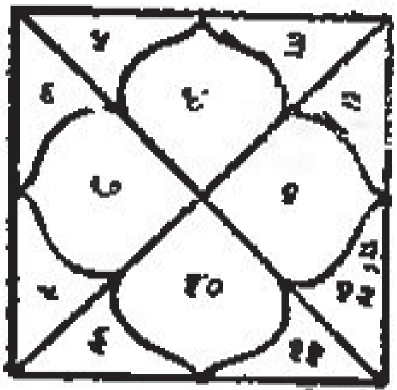

४५१

नवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का भाग्य प्रबल होता है। वह धर्म का पालन भी करता है तथा मान-प्रतिष्ठा भी पाता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति पराक्रमी, सुखी, स्वार्थी तथा परमार्थी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : सूर्य

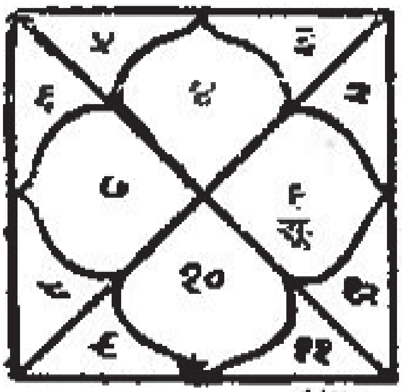

४५२

दसवें भाव में स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, प्रतिष्ठा तथा लाभ की प्राप्ति होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन के साथ ही घरेलू सुख में भी कुछ कमियां बनी रहती हैं।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : सूर्य

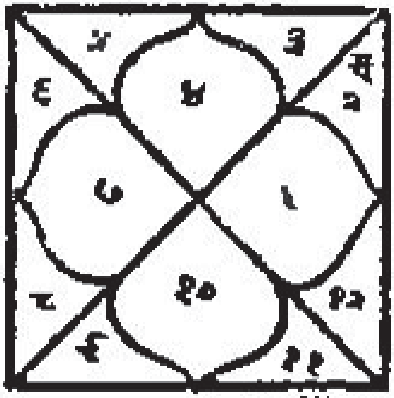

४४३

ग्यारहवें भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को धन का विशेष लाभ होता है, परन्तु कौटुम्बिक सुख में कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या-बुद्धि में प्रवीणता तथा सन्तान-पक्ष से लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति ऐश्वर्यशाली जीवन बिताता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : सूर्य

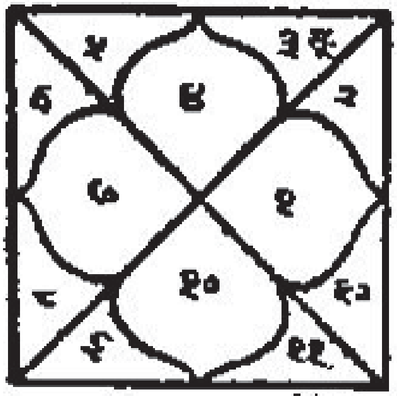

४४४

बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से धन का श्रेष्ठ लाभ होता है, परन्तु खर्च की अधिकता रहती है। वह रईसी ढंग का जीवन बिताता है। धन तथा कौटुम्बिक सुख में कमी बनी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है।

'कर्क' लग्न में 'चन्द्रमा'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

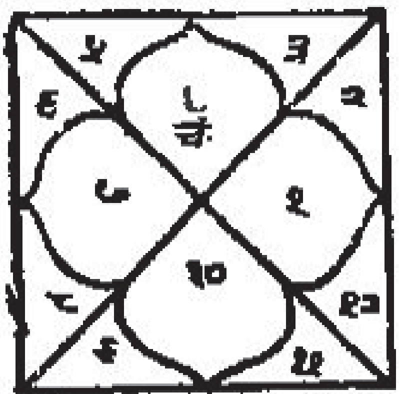

४४५

पहले भाव में स्वराशि में स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सौन्दर्य, स्वास्थ्य, अधिक शक्ति, यश एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति उच्च कोटि का विचारक तथा सुखी होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष में असन्तोषपूर्ण सुख प्राप्त होता है, परन्तु व्यवसाय के क्षेत्र में बड़ी सफलता मिलती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

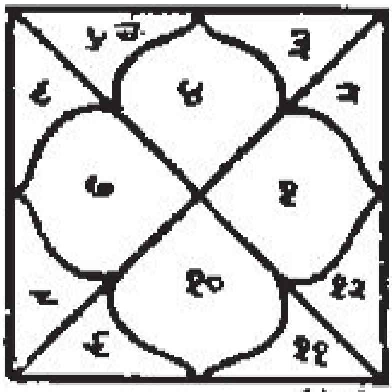

४५६

दूसरे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के साथ धन तथा कौटुम्बिक सुख पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु के विषय में परेशानियाँ आती हैं तथा पुरातत्त्व का लाभ कम होता है। ऐसा व्यक्ति शान-शौकत का जीवन बिताने वाला, प्रतिष्ठित या भाग्यशाली होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

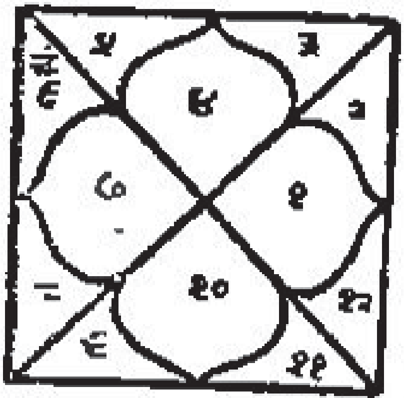

४५७

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख में अत्यन्त वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र दृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की भी पर्याप्त उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति धार्मिक, दानी, उदार, ईश्वर-भक्त, धनी, उत्साही, पराक्रमी तथा पुरुषार्थी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र

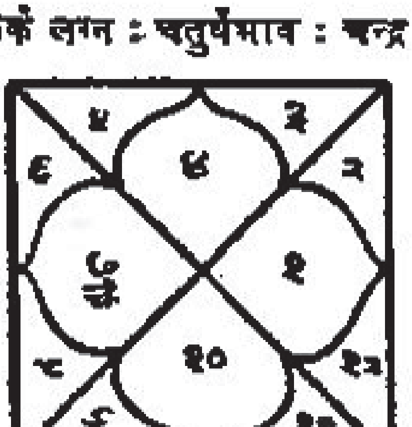

४५८

चौथे भाव में सामान्य-मित्र शुक्र की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि भवन आदि का पर्याप्त सुख उपलब्ध होता है। उसका शरीर सुन्दर तथा मन कोमल होता है।

सातवीं मित्र दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता, सहयोग एवं यश की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक हर प्रकार से सम्पन्न एवं सुखी रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

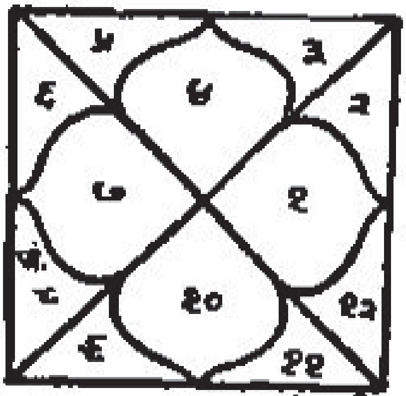

४५९

पाँचवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में कठिनाई से सफलता मिलती है। मन तथा शरीर भी दुर्बल रहता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से एकादशभाव को देखने से गुप्त मानसिक एवं शारीरिक शक्तियों के बल पर आमदनी अच्छी बनी रहती है, परन्तु कुछ अशान्ति का अनुभव भी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

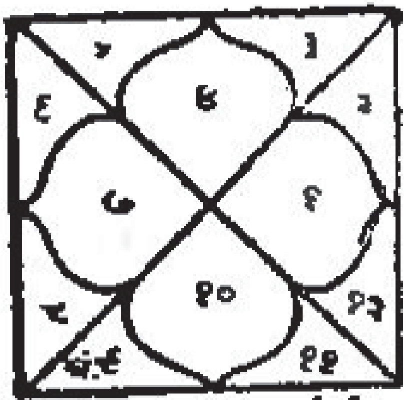

४६०

छठे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में दुर्बलता रहती है और विनम्र बनकर काम निकालना पड़ता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से यश, सम्मान तथा धन प्राप्त होता है एवं खर्च की अधिकता रहती है। ऐसा व्यक्ति गौरवशाली तथा आत्मबली होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

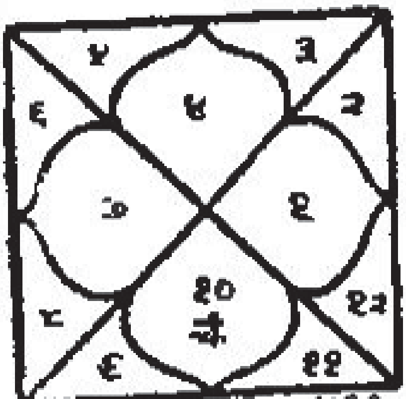

४६१

सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष में कुछ असन्तोष के बाद सफलता मिलती है तथा व्यवसाय पक्ष में भी कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसा व्यक्ति भोगादि में अधिक रुचि रखता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, मनोबल तथा आत्मिक बल की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, विलासी, सुखी तथा सुन्दर होता है।

कर्क लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्कलग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

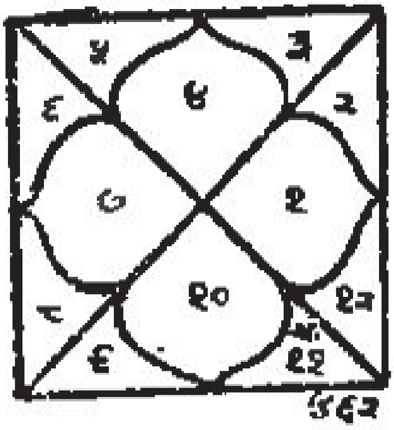

आठवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा पुरातत्त्व का लाभ असन्तोषजनक रहता है, परन्तु आयु की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक अपने शारीरिक श्रम द्वारा धन-जन की वृद्धि करने में समर्थ होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्कलग्न : नवमभाव : चन्द्र

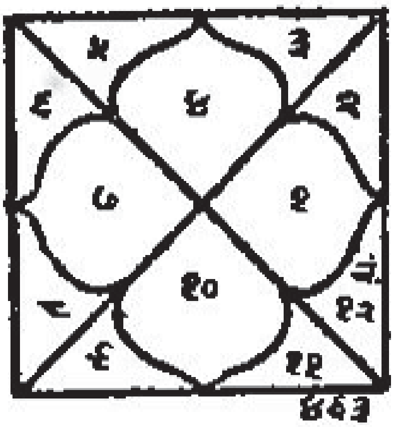

नवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को मन तथा शरीर की अच्छी शक्ति प्राप्त होती है, जिसके कारण वह अपने भाग्य की खूब उन्नति करता है तथा धर्म का पालन भी करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली, धर्मात्मा, सतोगुणी, ईश्वर-भक्त, यशस्वी तथा सज्जन होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्कलग्न : दशमभाव : चन्द्र

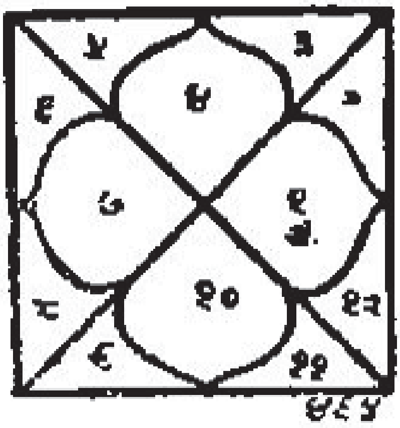

दसवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय पक्ष से प्रभाव, यश तथा लाभ प्राप्त होता है और वह किसी उच्च पद को प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति सुन्दर तथा शक्तिशाली होता है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण जातक को भूमि, भवन आदि का सुख भी मिलता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्कलग्न : एकादशभाव : चन्द्र

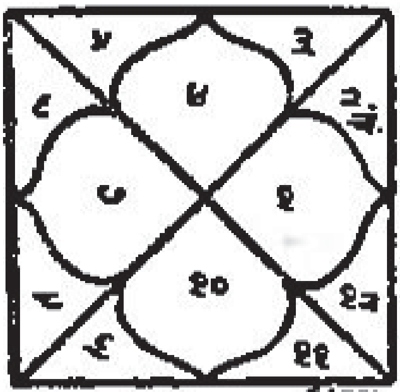

४८५

ग्यारहवें भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव के जातक की शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों एवं सौन्दर्य में वृद्धि होती है तथा आमदनी अच्छी रहती है।

सातवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपने लाभ के लिए कटु शब्दों का प्रयोग करता पाया जाता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : चन्द्र

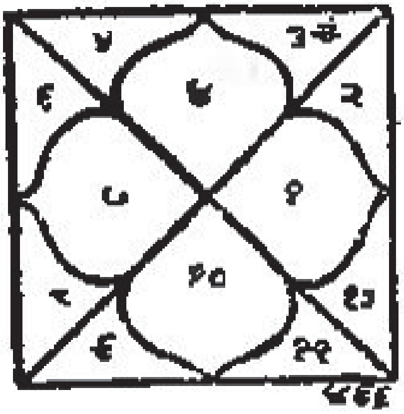

४८६

बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को बाहरी सम्पर्क से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में अपने शान्त स्वभाव के द्वारा प्रभाव-स्थापित करता है, परन्तु मन में कुछ अशान्ति भी बनी रहती है।

ऐसे व्यक्ति का शरीर दुबला-पतला होता है।

'कर्क' लग्न में मंगल

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : मंगल

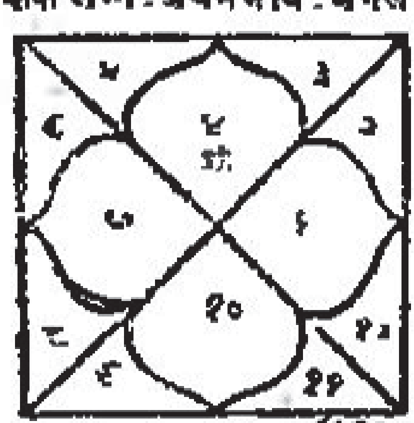

४८७

पहले भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा पिता, राज्य, सन्तान एवं विद्या का पक्ष भी दुर्बल रहता है।

चौथी मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन का सुख मिलता है। सातवीं उच्च दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष में असन्तोष-पूर्ण वृद्धि होती है तथा व्यवसाय में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

आठवीं शत्रु-दृष्टि के अष्टम भाव को देखने से पुरातत्त्व तथा दैनिक जीवन में कमी रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : मंगल

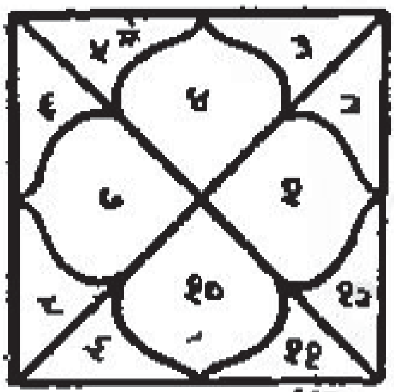

४८८

दूसरे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। राज्य तथा पिता से भी लाभ होता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से विद्या तथा सन्तान की शक्ति मिलने पर भी कुछ कठिनाइयों का अनुभव होता रहता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कमी आती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य, यश तथा धर्म की वृद्धि होती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : मंगल

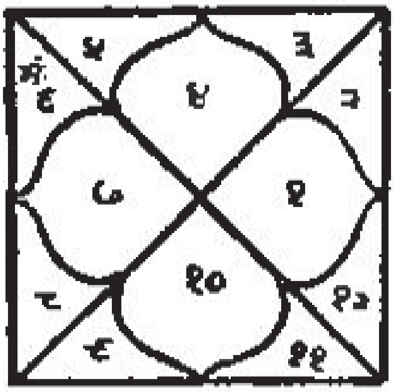

४८९

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है। विद्या तथा सन्तान का लाभ भी होता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक बुद्धि-बल से भाग्यशाली होता है तथा यश एवं धर्म का लाभ करता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। चौथी मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा विजय मिलती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : मंगल

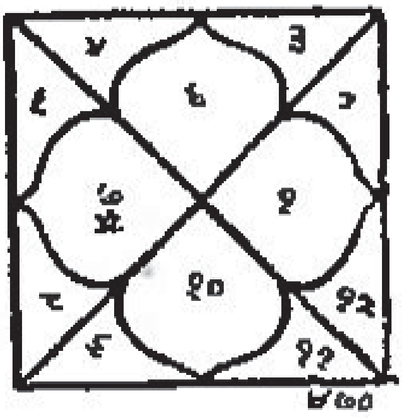

४७०

चौथे भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का सुख मिलता है। विद्या-बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। उच्च दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय का अच्छा लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के दशमभाव को देखने के राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सहयोग तथा यश का लाभ होता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से धन की भी पर्याप्त आमदनी बनी रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : मंगल

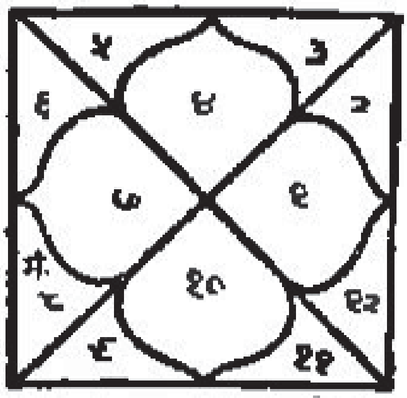

४७१

पाँचवें भाव में स्वराशिस्थ मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का यथेष्ट लाभ होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से कुछ असन्तोष के साथ पुरातत्त्व एवं आयु का लाभ होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से लाभ-प्राप्ति के लिए दिमागी परिश्रम अधिक करना पड़ता है तथा आठवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से यश-धन की प्राप्ति होती रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : मंगल

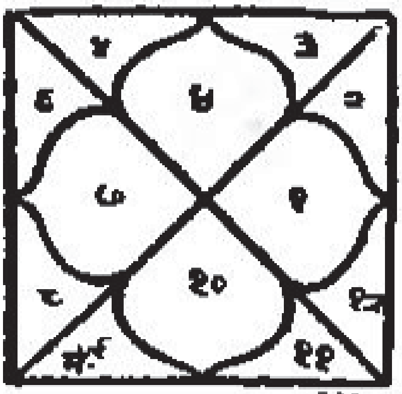

४७२

छठे भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में विजय मिलती है तथा विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का भी श्रेष्ठ लाभ होता है। चौथी मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। आठवीं नीच-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सुख, सौन्दर्य, स्वास्थ्य तथा शान्ति में कुछ कमी बनी रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : मंगल

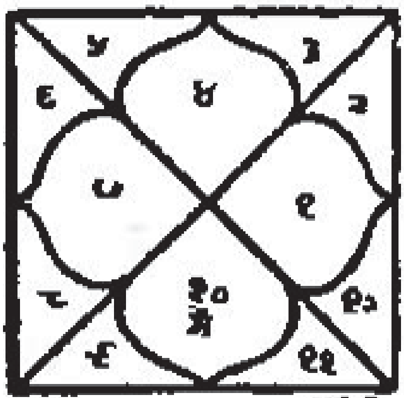

४७३

सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक को अनेक सुन्दर स्त्रियों का लाभ होता है परन्तु उनसे कुछ मतभेद भी रहता है। व्यवसाय में विशेष सफलता मिलती है तथा विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का पक्ष भी अच्छा रहता है।

चौथी दृष्टि से स्वराशि में दशमभाव को देखने से पिता तथा राज्य से सुख, लाभ एवं सम्मान मिलता है। सातवीं नीच दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में कमी रहती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय खूब होता है तथा वाणी भी प्रभावशालिनी होती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : मंगल

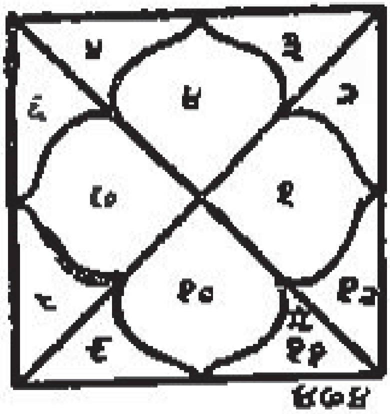

आठवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है, परन्तु विद्या, बुद्धि, सन्तान, पिता तथा राज्य पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है।

चौथी शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से परिश्रम द्वारा लाभ होता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कौटुम्बिक सुख में वृद्धि होती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : मंगल

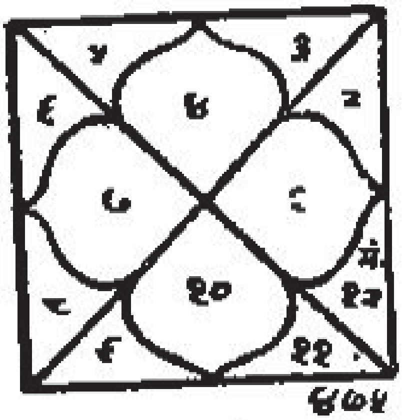

नवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति होती है तथा विद्या, बुद्धि, सन्तान, पिता, राज्य एवं व्यवसाय पक्ष का सुख भी मिलता है।

चौथी मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : मंगल

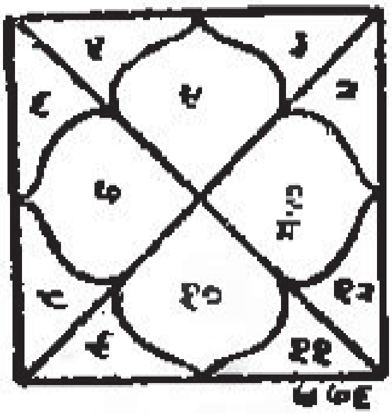

दसवें भाव में स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव के जातक को राज्य, पिता एवं व्यवसाय पक्ष से सुख, यश तथा धन का लाभ होता है। चौथी नीच-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ असन्तोषजनक रहता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि के पंचमभाव को देखने के सन्तान, विद्या एवं बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है तथा कोई उच्च पद भी प्राप्त होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : मंगल

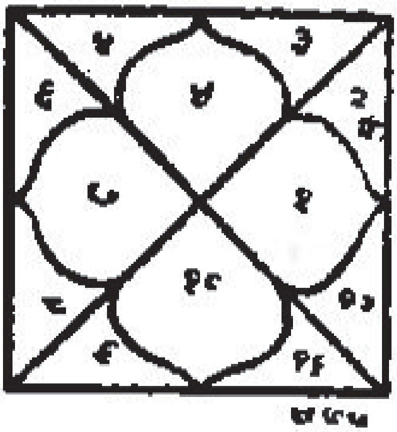

ग्यारहवें भाव में अपने सामान्य मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को कठिन परिश्रम द्वारा पर्याप्त धन लाभ होता है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। चौथी मित्रदृष्टि से द्वितीय-भाव को देखने से भी धन तथा कुटुम्ब के सुख का लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि तथा सन्तान का लाभ होता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा शत्रुजयी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। पिता, राज्य, संतान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कमी का अनुभव होता है।

कर्क लग्न : द्वादशभाव : मंगल

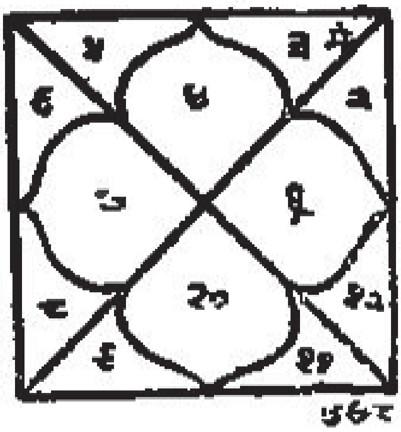

चौथी मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में विजय मिलती है। आठवीं उच्च-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। परन्तु बुद्धिभ्रम तथा मस्तिष्क में परेशानी की स्थिति भी बनी रहती है।

'कर्क' लग्न में 'बुध'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथम भाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथम भाव : बुध

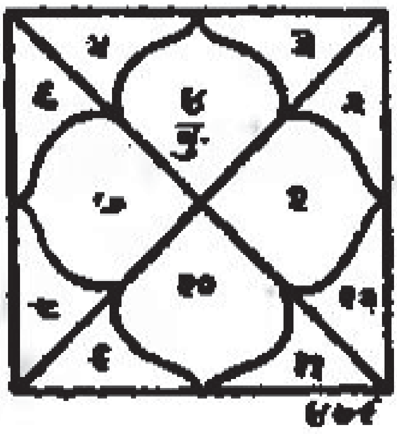

पहले भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल रहता है तथा भाई-बहिन के सुख में कमी आती है, परन्तु पराक्रम एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। बाहरी संबंधों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से सामान्य त्रुटियों के साथ स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव बुध

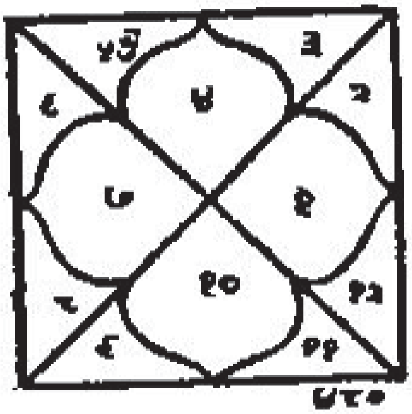

दूसरे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक को धन-संचय के लिए अधिक प्रयत्न करना पड़ता है। भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु का पूर्ण सुख मिलता है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ अपूर्ण रहता है। दैनिक जीवन सुखी तथा प्रभावशाली रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : बुध

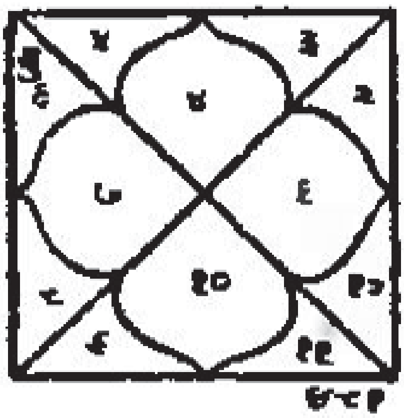

तीसरे भाव में स्वराशि-स्थित बुध के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य कमजोर रहता है तथा धर्म में भी विशेष रुचि नहीं होती। ऐसे व्यक्ति को अपयश भी उठाना पड़ता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : बुध

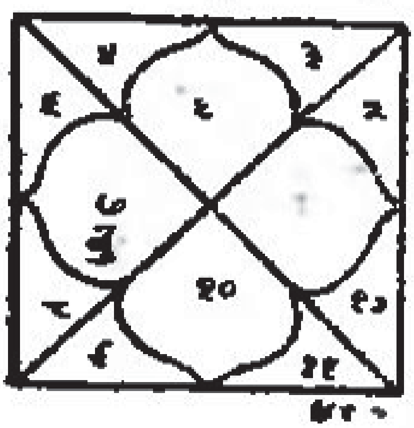

चौथे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव के जातक को माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है, परन्तु भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ एवं सुख मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलताएँ मिलती हैं।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : बुध

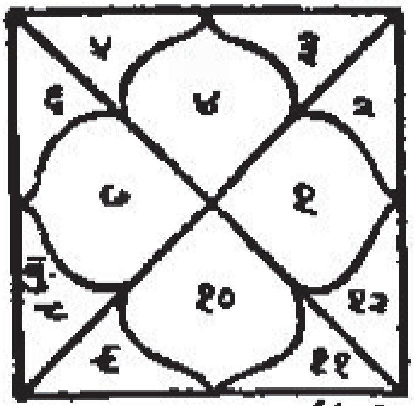

४८३

पाँचवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान तथा हिम्मती होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से बुद्धि-बल द्वारा लाभ होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सुख प्राप्त होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : बुध

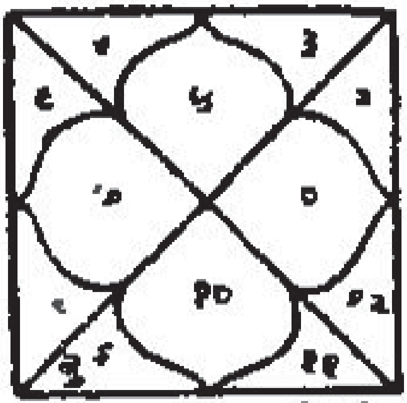

४८४

छठे भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में नम्रता एवं शांति के आश्रय से सफलता प्राप्त करता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी रहती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से सामान्य सम्बन्ध बना रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : बुध

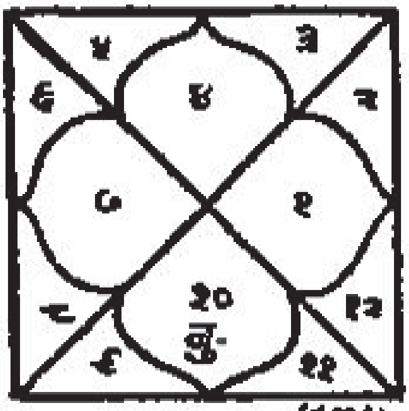

४८५

सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को स्त्री का सुख मिलता है तथा व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक के शरीर में शक्ति तथा दुर्बलता का सामंजस्य रहता है। ऐसा व्यक्ति अधिक खर्चीला होता है तथा बाहरी सम्बन्धों एवं परिश्रम के बल पर उन्नति भी करता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : बुध

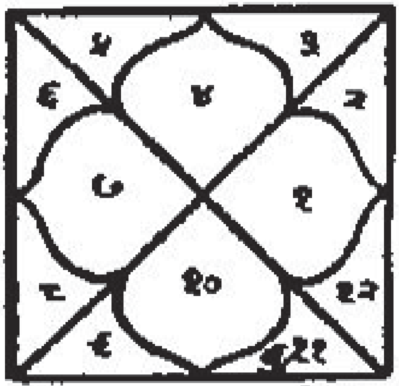

६८६

आठवें भाव में शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व का कुछ कमियों के साथ लाभ होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी आती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से खर्च चलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन का लाभ होता है, परन्तु सुख के व्ययेश होने के कारण खर्च अधिक बना रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : गुरु

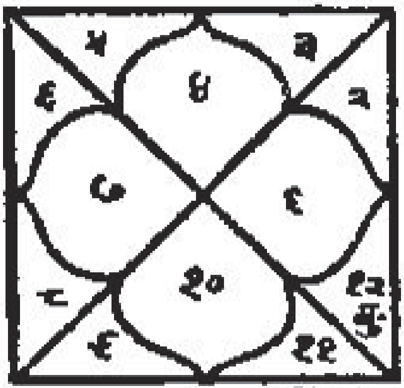

६८७

नवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को धर्म तथा भाग्योन्नति के क्षेत्र में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सामान्य लाभ होता है। खर्च अधिक रहता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पुरुषार्थ की वृद्धि होती है, परन्तु भाग्यो-न्नति में बाधाएँ भी आती रहती हैं।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : बुध

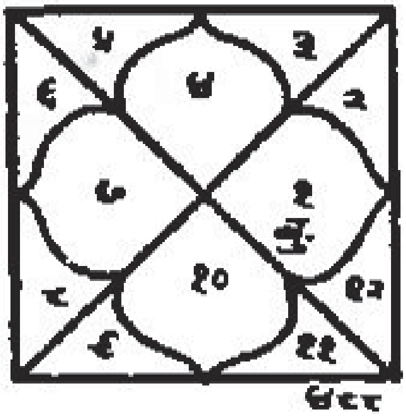

६८८

दसवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलताएँ मिलती हैं, परन्तु भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि के चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं भवन आदि का सामान्य लाभ होता है तथा परिश्रम द्वारा खर्च चलता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : बुध

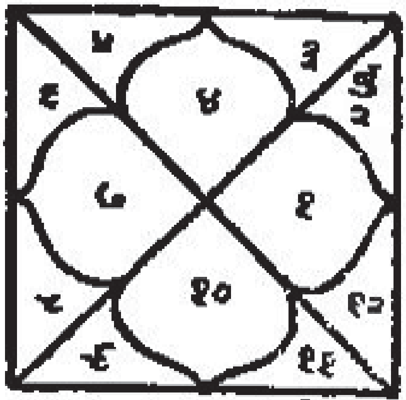

४८९

ग्यारहवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक बना रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण लाभ होता है, परन्तु जातक अपनी बुद्धि, विवेक-शक्ति तथा वाणी के बल पर लाभ कमाता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : बुध

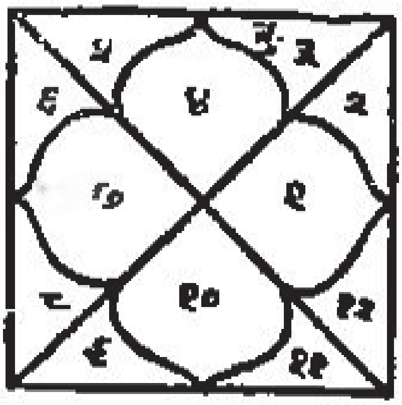

४९०

बारहवें भाव में स्वराशिस्थ बुध के प्रभाव के जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शान्त स्वभाव, पुरुषार्थ एवं व्यय की शक्ति से शत्रुपक्ष में सामान्य सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति धन खर्च करने के बल पर ही अनेक कठिनाइयों पर नियन्त्रण स्थापित कर पाता है।

'कर्क' लग्न में 'गुरु'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथम भाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : गुरु

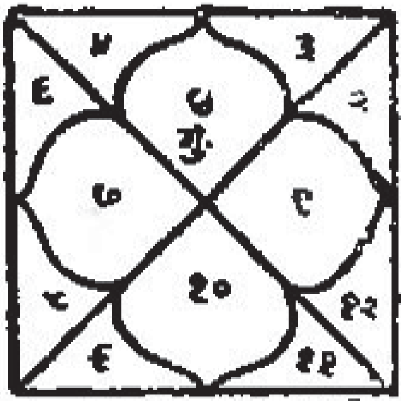

४९१

पहले भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि का पूर्ण सुख मिलता है।

सातवीं नीच दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री पक्ष तथा दैनिक खर्च में कठिनाइयाँ बनी रहती हैं। नवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से भाग्य की शक्ति प्रबल रहती है तथा धर्म का लाभ भी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : गुरु

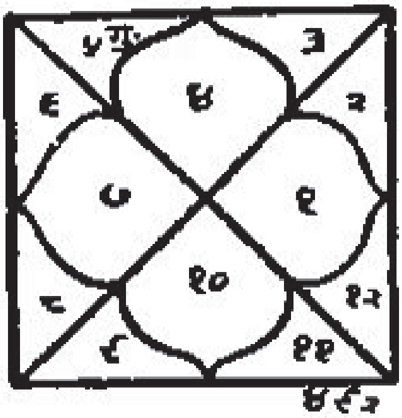

दूसरे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि के षष्ठभाव को देखने से धन की शक्ति द्वारा शत्रु पक्ष पर विजय मिलती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में यश, धन, सहयोग तथा सफलता का लाभ होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : गुरु

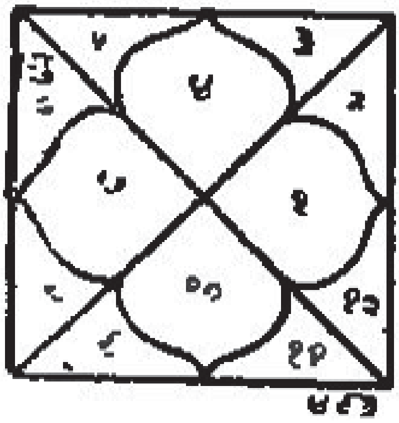

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख मिलता है। पाँचवीं नीच दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हानि तथा क्लेश का शिकार बनना पड़ता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता रहता है। ऐसा व्यक्ति धर्मात्मा, धनी, हिम्मती तथा शत्रुजयी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : गुरु

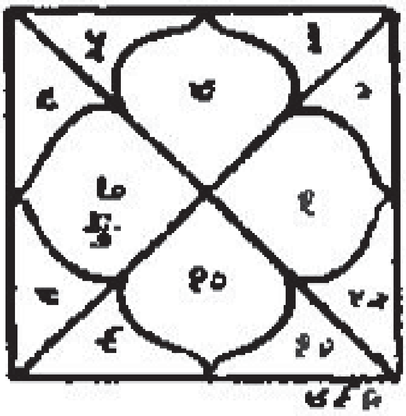

चौथे भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण लाभ होता है। शत्रु पक्ष में शान्ति से सफलता मिलती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम-भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ असन्तोष रहता है।

सातवीं मित्र दृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। नवीं मित्र दृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण बाहरी संबंधों से लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : गुरु

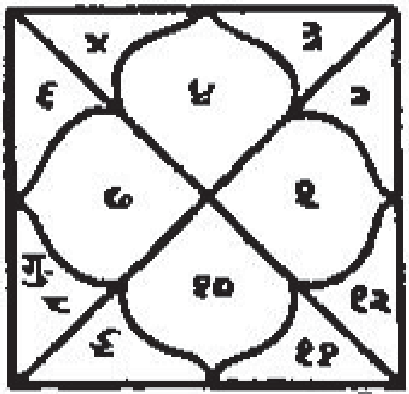

४६५

पाँचवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से बुद्धि तथा सन्तान के सहयोग से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रु दृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। नवीं मित्र दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, आत्मबल तथा यश की वृद्धि होती है। गुरु के षष्ठेश होने के कारण जातक को प्रत्येक क्षेत्र में कुछ परेशानियों के बाद ही सफलता मिलती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : गुरु

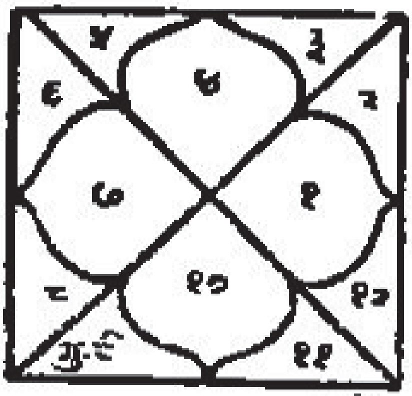

४६६

छठे भाव में स्वराशि स्थित गुरु के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर अत्यधिक प्रभाव स्थापित करता है तथा यशस्वी होता है। परन्तु भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : गुरु

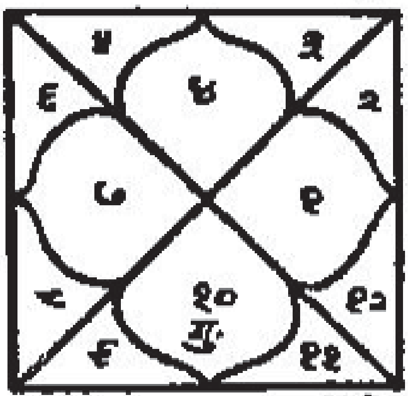

४६७

सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं तथा शत्रु पक्ष से व्यवसाय को हानि पहुँचती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से परिश्रम द्वारा लाभ होता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिन का सुख भी मिलता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : गुरु

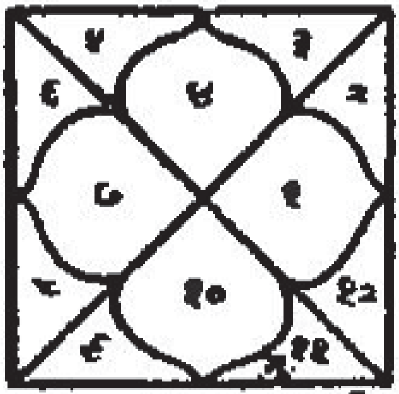

५९८

आठवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का त्रुटिपूर्ण लाभ होता है, परन्तु शत्रु पक्ष से अशान्ति मिलती है तथा भाग्य पक्ष दुर्बल रहता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : गुरु

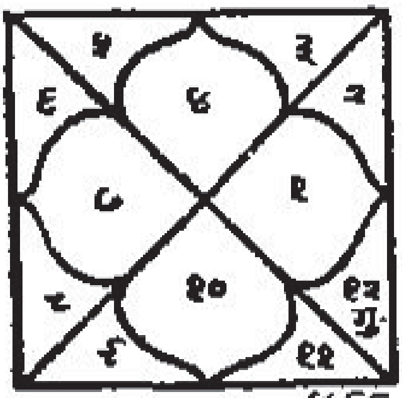

५९९

नवें भाव में स्वराशि-स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। पाँचवीं उच्च दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में भी विशेष सफलता मिलती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : गुरु

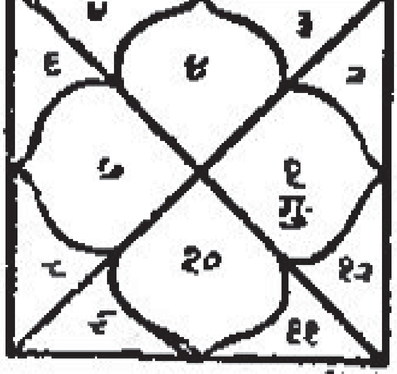

६००

दसवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सफलता, सुख तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब की वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से कुछ असन्तोष के साथ माता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रम तथा झगड़ों के द्वारा उन्नति करता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : गुरु

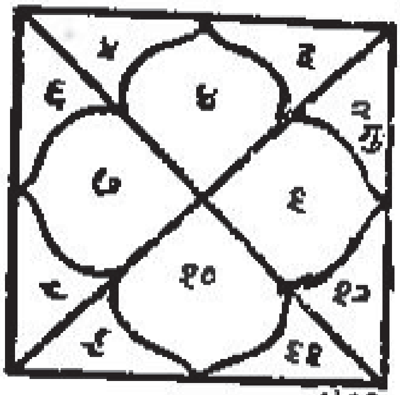

५०१

ग्यारहवें भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा लाभ कमाता है तथा उसे शत्रु पक्ष से भी लाभ होता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख सामान्य कमी के साथ मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। नवीं नीच दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में असन्तोष एवं हानि का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति धनी अवश्य होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : गुरु

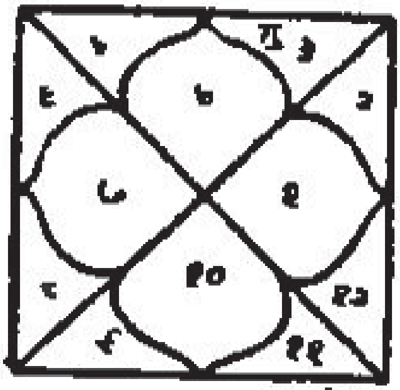

५०२

बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी रहती है। पाँचवीं शत्रु दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख बड़े परिश्रम द्वारा मिलता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठ भाव को देखने से शत्रुपक्ष में सफलता मिलती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

'कर्क' लग्न में 'शुक्र'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : शुक्र

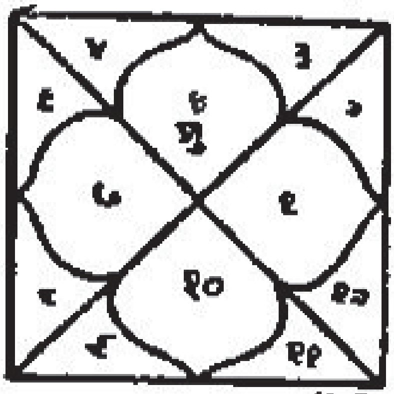

५०३

पहले भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, सुख तथा चातुर्य का लाभ होता है। माता तथा भूमि का सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ होता है तथा भोगादि में खूब रुचि बनी रहती है। ऐसा जातक सुखी, धनी, विलासी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

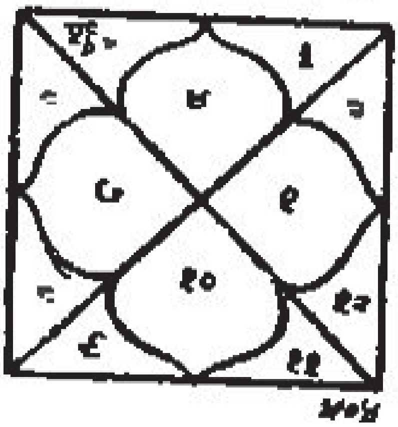

दूसरे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को धन-कुटुम्ब का सामान्य असन्तोष के लाभ सुख प्राप्त होता है तथा भूमि एवं भवन का सुख भी मिलता है। माता के सुख में कुछ कमी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। ऐसा जातक धनी तथा सुखी जीवन बिताता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : शुक्र

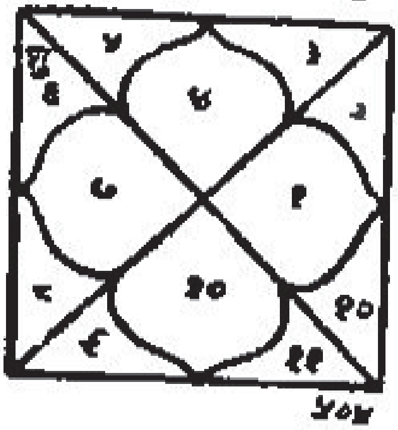

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है। माता के सुख में भी कमी का अनुभव होता है।

सातवीं उच्च दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य की श्रेष्ठ वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी भीतरी कमजोरियों को छिपाकर प्रकट में हिम्मती बना रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

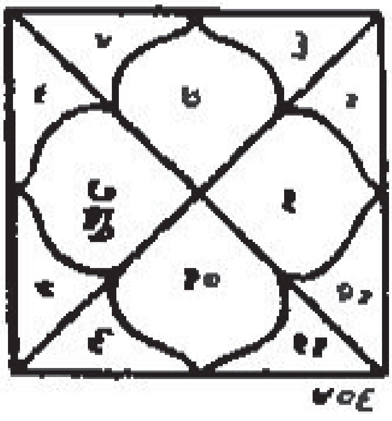

चौथे भाव में स्वराशि-स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है। आय में वृद्धि होने से वह धनी भी बनता है।

सातवी मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता, सुख, यश एवं धन की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा चतुर, प्रतिष्ठित तथा धनी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : शुक्र

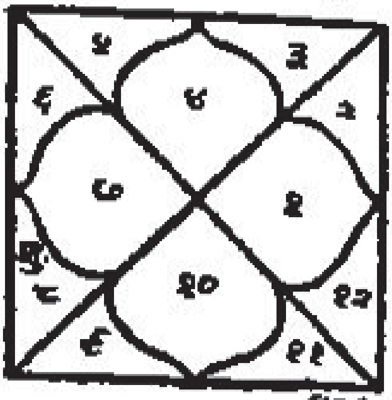

५०७

पाँचवें भाव में सामान्य मित्र मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान का यथेष्ट लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादशभाव को देखने से आमदनी भी अच्छी रहती है तथा धन का लाभ खूब होता है।

ऐसे व्यक्ति को माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : शुक्र

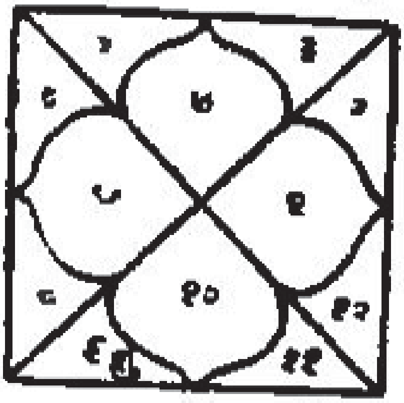

५०८

छठे भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में विजय मिलती है, परन्तु माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी तथा अशान्ति भी रहती है। लाभ के मार्ग में भी परतन्त्रता का योग बनता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण बाहरी सम्बन्धों से सुख तथा लाभ मिलता है तथा खर्च अधिक रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्कलग्न : सप्तमभाव : शुक्र

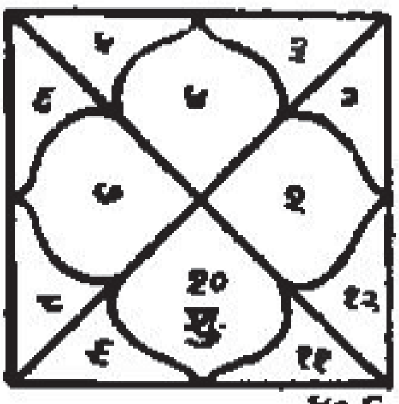

५०९

सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री, व्यवसाय तथा दैनिक आय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव, चातुर्य एवं सुख की प्राप्ति भी होती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : शुक्र

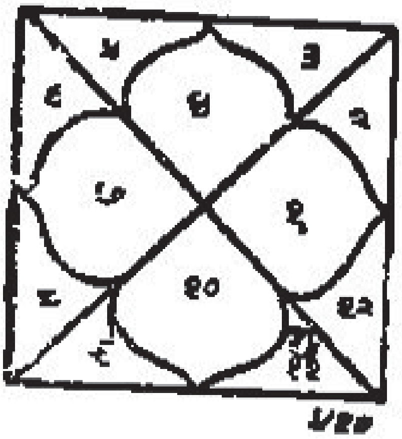

आठवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा परदेश में रहकर उन्नति करता है। घरेलू सुख में कुछ कमी भी रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन-संचय नहीं हो पाता तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : शुक्र

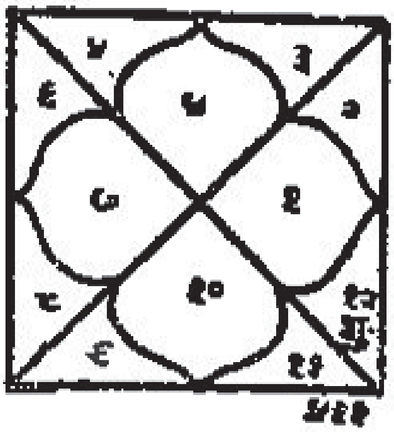

नवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित उच्च शुक्र के प्रभाव से जातक के धर्म तथा भाग्य की विशेष वृद्धि होती है। माता, भूमि तथा भवन का उत्तम सुख भी मिलता है।

सातवीं दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवादी, धनी सुखी तथा सौभाग्यशाली होता है।

कर्क लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : शुक्र

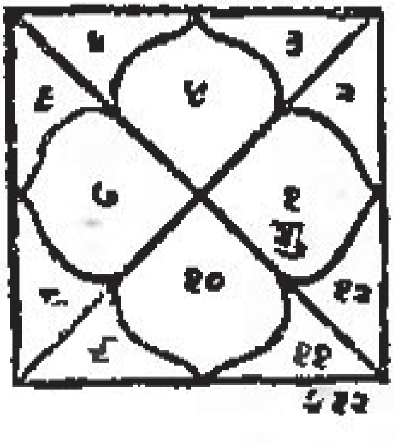

दसवें भाव में सामान्य मित्र मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सफलताएँ मिलती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख भी प्रभूत मात्रा में उपलब्ध होता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, गंभीर, चतुर, बुद्धिमान, शृंगार-प्रिय, प्रेमी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

'कर्क' लग्न : एकादशभाव : शुक्र

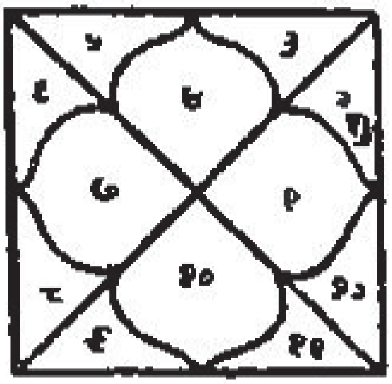

ग्यारहवें भाव में स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को आमदनी अच्छी रहती है तथा माता, भूमि, भवन आदि का सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में भी पूर्ण सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति योग्य, चतुर, धनी, सुखी तथा श्रेष्ठवाणी बोलनेवाला होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : शुक्र

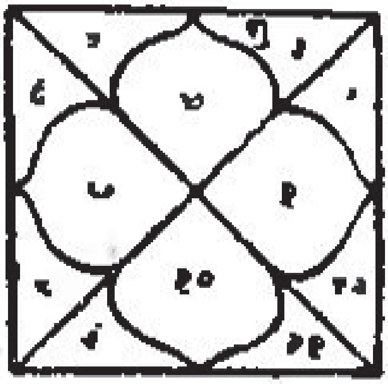

बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सुख एवं लाभ उठाता है तथा उसका खर्च अधिक रहता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है तथा मातृभूमि से अलग भी रहना पड़ता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष में चातुर्य एवं खर्च से काम निकालने में सफलता मिलती है।

'कर्क' लग्न में 'शनि'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : शनि

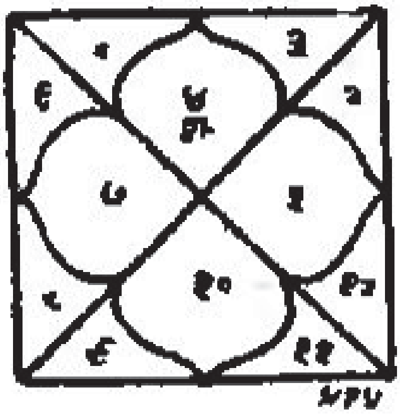

पहले भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है तथा शरीर में रोग भी रहता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन का त्रुटिपूर्ण सुख मिलता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वक्षेत्र में सप्तमभाव को देखने से व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा स्त्री का सुख होने पर भी उससे कुछ परेशानी रहती है। दसवीं नीच-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता तथा राज्य के क्षेत्र में सफलता एवं सम्मान का सामान्य लाभ होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : शनि

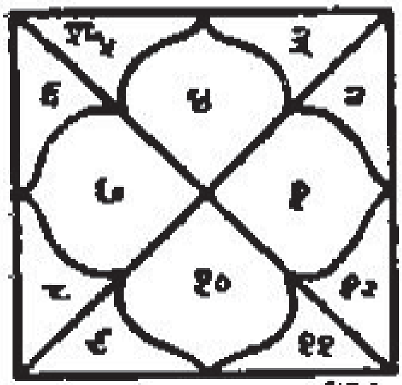

४९६

दूसरे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के क्षेत्र में हानि पहुँचती है। तीसरी उच्च दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख मिलता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु-वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अमीरी ढंग का जीवन तो बिताता है, परन्तु धन तथा पारिवारिक सुख में कमी ही बनी रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : शनि

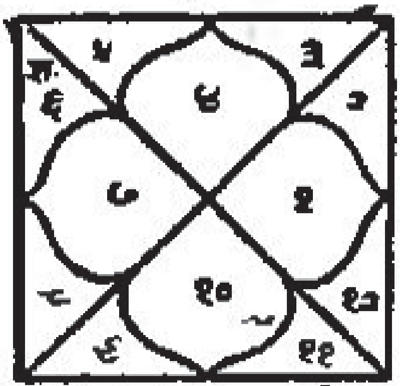

४९७

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों द्वारा परेशानी भी मिलती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान से कष्ट मिलता है तथा विद्या-बुद्धि की कमी रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य में रुकावटें आती हैं तथा धर्म में अरुचि रहती है। बारहवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक रहता है। ऐसा व्यक्ति कुछ क्रोधी स्वभाव का होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : शनि

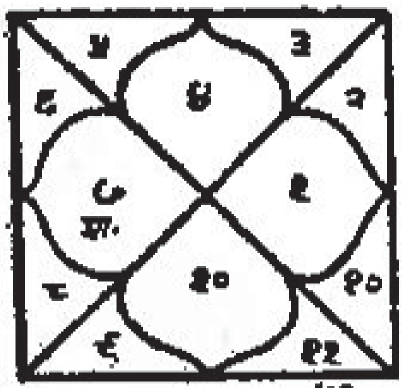

४९८

चौथे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से माता के सुख में कुछ कमी आती है, परन्तु भूमि, भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में प्रभाव रहता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। दसवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में आलस्य तथा रोग रहता है तथा घरेलू सुख में भी कुछ कमी आती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : शनि

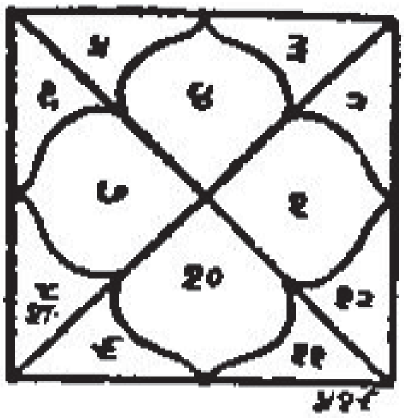

पाँचवें भाव में शत्रु मंगल की राशि में स्थित शनि के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से बुद्धिमती स्त्री मिलती है, परन्तु उसके कारण कुछ कष्ट भी होता है। व्यवसाय में भी बुद्धि-योग से सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय में कमी रहती है तथा कुटुम्ब द्वारा भी परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : शनि

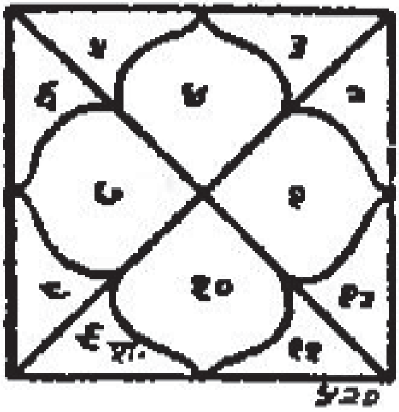

छठे भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में प्रभाव बनाये रखता है परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद ही सफलता मिलती है। तीसरी दृष्टि में स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति बढ़ती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन से वैमनस्य रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : शनि

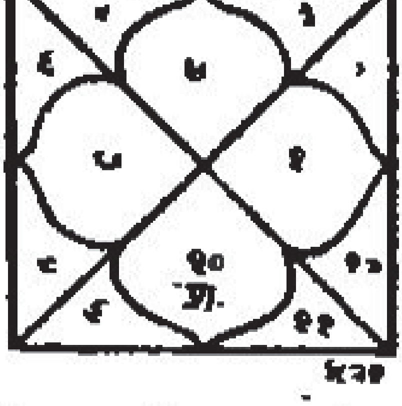

सातवें भाव में स्वराशि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा भोगादि के सुख भी खूब मिलते हैं। तीसरी शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है। दसवीं उच्च-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : शनि

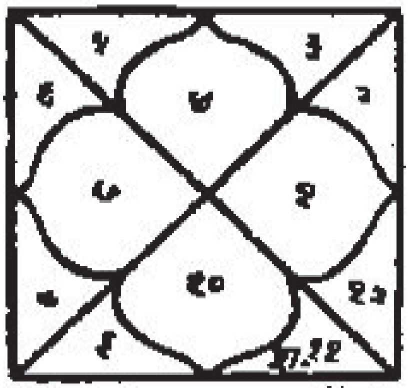

८२२

आठवें भाव में स्वराशि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु बढ़ती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियां बनी रहती हैं। बाहरी स्थान के संबंध से शक्ति भी मिलती है।

तीसरी नीच-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानी रहती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय तथा कुटुम्ब-सुख में कमी आती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का अनुभव होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : शनि

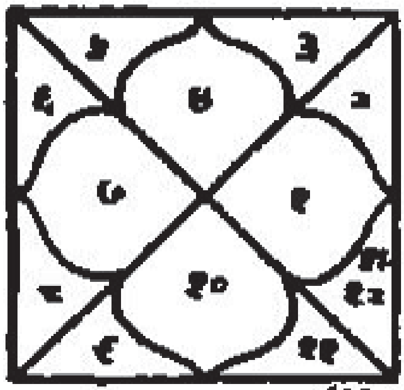

८२३

नवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धर्म-पालन तथा भाग्योन्नति के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां आती हैं, परन्तु आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी बढ़ती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के बाद शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : शनि

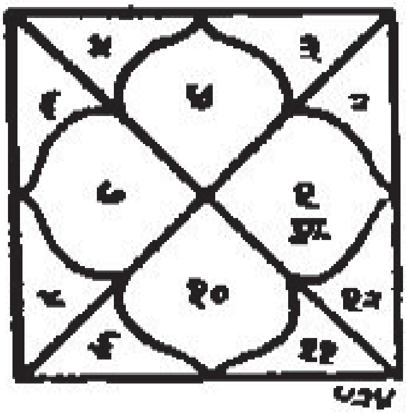

८२४

दसवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयां आती रहती हैं। पुरातत्त्व तथा आयु की हानि भी होती है। तीसरी मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ मिलता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन आदि का सुख मिलता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादश भाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : शनि

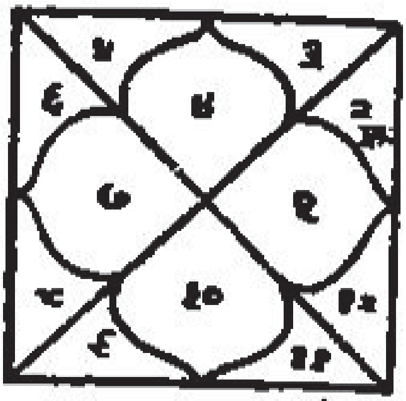

४२५

ग्यारहवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। स्त्री तथा व्यवसाय पक्ष में भी लाभ होता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कष्ट रहता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु बढ़ती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। ऐसा जातक कम पढ़ा-लिखा होने पर भी अपने चातुर्य एवं परिश्रम द्वारा सुखी जीवन व्यतीत करता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : शनि

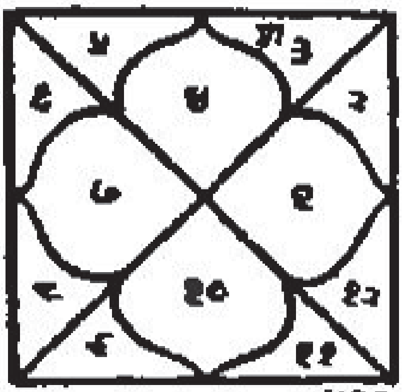

४२६

बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा ख़र्च अधिक रहता है। स्त्री, व्यवसाय, आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में हानि होती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से द्वितीय-भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के पक्ष में भी घोर चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु उत्पात करते रहते हैं, परन्तु उन पर प्रभाव भी बना रहता है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म-पालन में कमी रहती है तथा भाग्य की शक्ति भी क्षीण हो जाती है। परन्तु इन सब कठिनाइयों के बावजूद जातक शानदार जीवन व्यतीत करता है।

'कर्क' लग्न में 'राहु'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : राहु

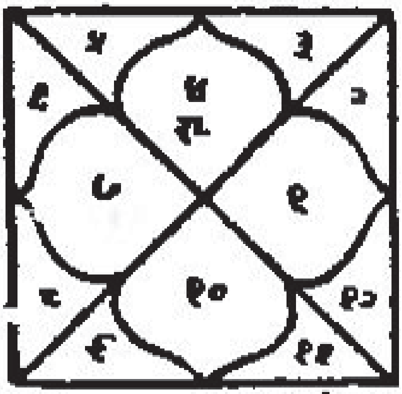

४२७

पहले भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा हृदय चिन्तित बना रहता है। कभी-कभी मृत्युतुल्य कष्टों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु वह गुप्त युक्तियों के बल पर अपने सम्मान को बनाये रखता है तथा उन्नति के लिए कठिन परिश्रम भी करता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : राहु

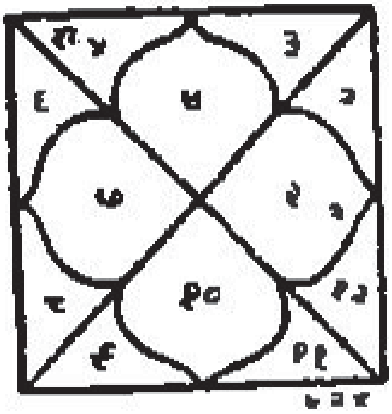

दूसरे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब के सुख की हानि होती है। वह गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर धन की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहता है और कभी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी प्राप्त करता है। उसे अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए सदैव चिंतित बने रहना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी तथा हिम्मती होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : राहु

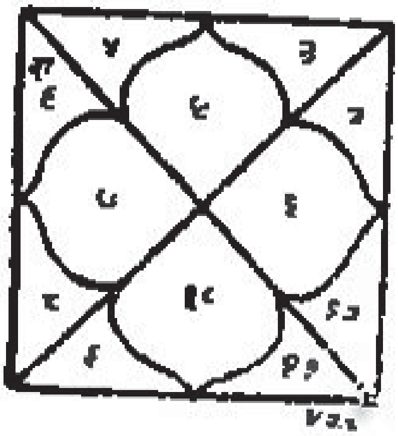

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ भाई-बहिन का सुख भी मिलता है।

ऐसा व्यक्ति अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए कठिन परिश्रम, गुप्त युक्तियों तथा पुरुषार्थ का सहारा लेता है। भीतरी रूप से कमजोर होने पर भी ऊपर से बड़ा हिम्मती दिखाई देता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : राहु

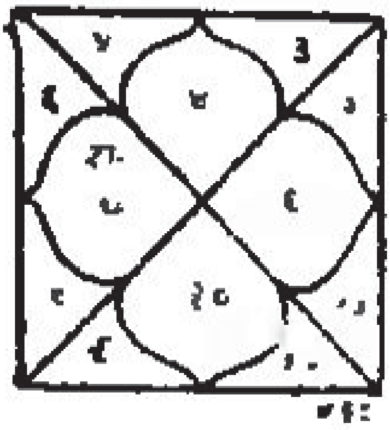

चौथे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कुछ कमी प्राप्त होती है तथा भूमि और भवन का सुख भी अल्प मात्रा में प्राप्त होता है। उसे देश छोड़ कर परदेश में भी रहना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति कभी-कभी असफलताओं का भी विशेष शिकार बनता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : राहु

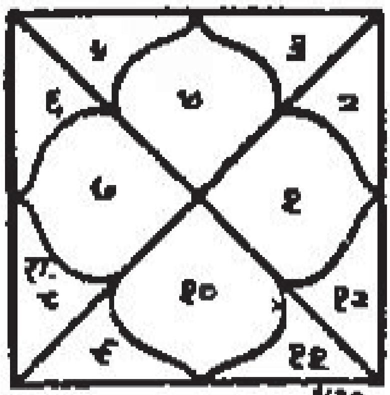

५३१

पाँचवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की विद्याध्ययन में कठिनाई आती है तथा सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है। बहुत समय बीत जाने पर ही सन्तान का सुख मिलता है। कम पढ़-लिखा होने पर भी ऐसा व्यक्ति अपनी बातों से बड़े-बड़े बुद्धिमानों को भी प्रभावित करता है। वह स्वभाव से जिद्दी तथा कानून का जानकार भी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : राहु

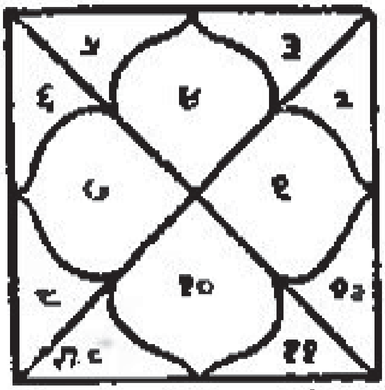

५३२

छठे भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के लिए शत्रु-पक्ष द्वारा कठिनाइयाँ उत्पन्न की जाती हैं, परन्तु वह देश-नीति के आश्रय से उनका दमन करने में सफल हो जाता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों का ज्ञाता, चतुर, स्वार्थी तथा पाप-पुण्य की चिन्ता न करने वाला होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : राहु

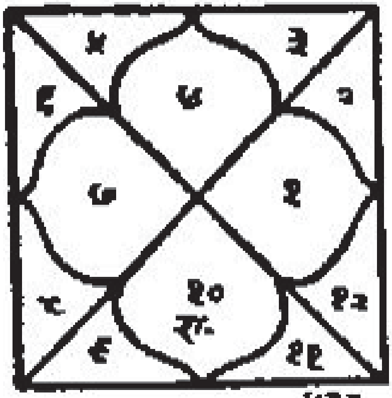

५३३

सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियों तथा कठिनाइयों का शिकार होना पड़ता है। उसकी इन्द्रिय में विकार होता है। घरेलू मामलों में उसे कभी-कभी घोर कष्ट उठाना पड़ता है, परन्तु अन्त में सफलता भी प्राप्त कर लेता है।

‘कर्क’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : राहु

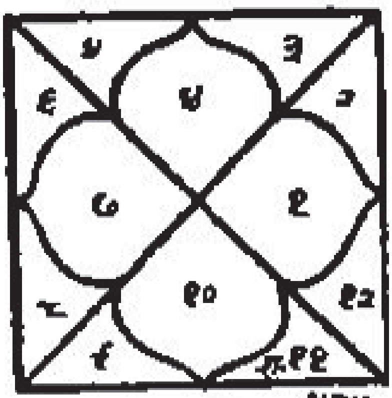

४३४

सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आयु के बारे में कभी-कभी चिन्ताजनक स्थितियों का मुकाबला करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि भी होती है। वह उदर-विकार से ग्रस्त रहता है। जीवन-निर्वाह के लिए उसे अनेक गुप्त युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है।

‘कर्क’ लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : राहु

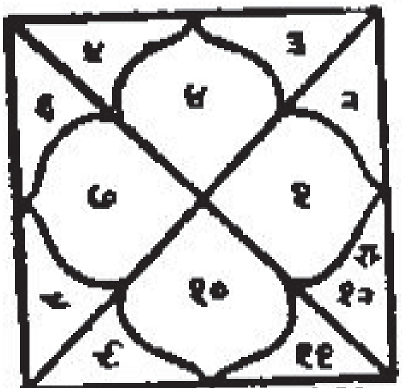

४३५

नवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म का भी यथावत् पालन नहीं हो पाता।

उसे कभी-कभी बड़े संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु गुप्त युक्तियों तथा परिश्रम के बल पर कुछ सफलता को प्राप्त करता है।

‘कर्क’ लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘राहु’ का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : राहु

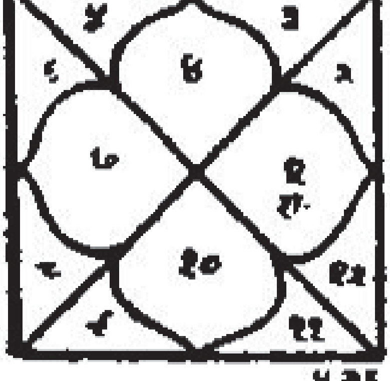

४३६

दसवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। अनेक कष्टों को भोगने तथा अनेक बार निराश होने के बाद वह अपने परिश्रम, धैर्य तथा बहादुरी से थोड़ी बहुत उन्नति करता तथा प्रतिष्ठा को बढ़ाता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : राहु

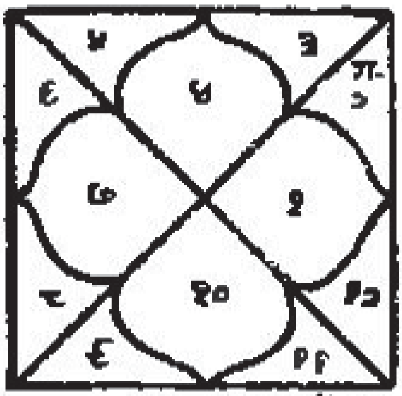

४३७

ग्यारहवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को बड़ी चतुराई के साथ यथेष्ट धन का लाभ होता है, परन्तु कभी-कभी सामान्य कठिनाइयां भी उठानी पड़ती हैं तथा संकटों का सामना करना पड़ता है। कभी कभी आकस्मिक रूप से भी धन-लाभ होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : राहु

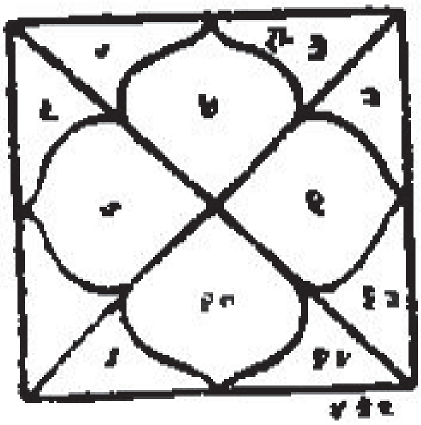

४३८

बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि में स्थित राहु के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के संबंध से गुप्त युक्तियों के बल पर लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है। वह परदेश में विशेष सम्मान एवं ख्याति प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति अपनी कमजोरियों को प्रकट नहीं करता तथा बड़ी चतुराई तथा बुद्धिमानी से उन्नति एवं सफलता प्राप्त करता है।

'कर्क' लग्न में 'केतु'

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : प्रथमभाव : केतु

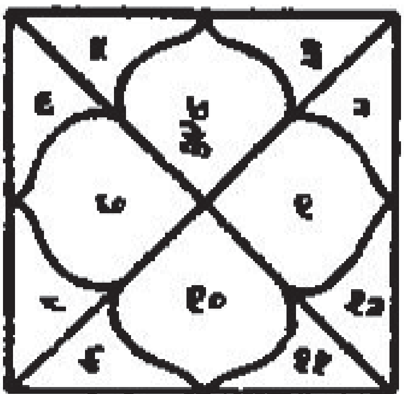

४३९

पहले भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शरीर पर किसी गहरी चोट अथवा घाव का निशान बनता है। शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी आती है। चेचक की बीमारी हो सकती है तथा कभी-कभी मृत्युतुल्य कष्ट भी भोगना पड़ता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वितीयभाव : केतु

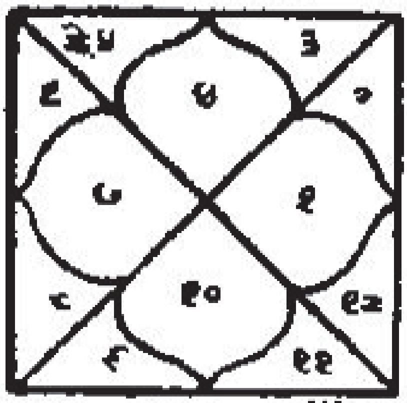

४४०

दूसरे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के धन की अत्यधिक हानि होती है तथा उसी के कारण बड़े संकटों का सामना भी करना पड़ता है। कुटुम्ब से क्लेश मिलता है। ऐसा व्यक्ति ऋण लेकर अपना काम चलाता है तथा परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों द्वारा अपने प्रभाव की रक्षा करता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : तृतीयभाव : केतु

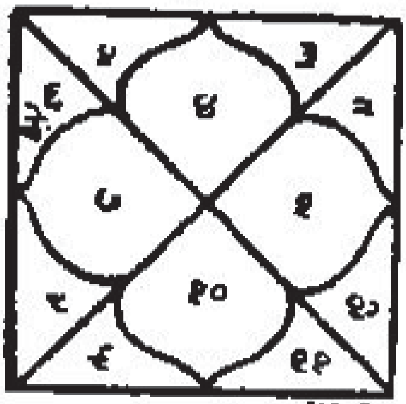

४४१

तीसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है। वह गुप्त युक्तियों, विवेक तथा कठिन परिश्रम द्वारा सफलता प्राप्त करता है।

ऐसा व्यक्ति उद्दण्ड स्वभाव तथा उग्र प्रकृति का होता है। भाई-बहिनों के सुख में भी कमी रहती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : चतुर्थभाव : केतु

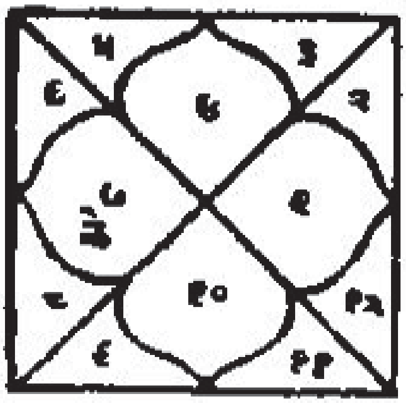

४४२

चौथे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी रहती है तथा परदेश में जाकर रहना पड़ता है। बार-बार स्थान का परिवर्तन भी करना पड़ता है। कभी-कभी घोर संकट भी आ जाते हैं। अन्त में, उसे सामान्य सुख का लाभ भी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : पंचमभाव : केतु

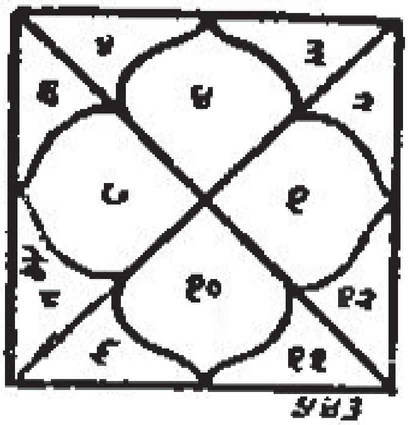

पांचवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्याध्ययन में भी कठिनाइयाँ आती हैं। परन्तु ऐसा व्यक्ति चतुर, चालाक तथा बातूनी होने के कारण अपनी अयोग्यता को छिपाकर दूसरों पर प्रभाव डालने में सफल हो जाता है। वह सन्तोषी तथा शीलयुक्त भी नहीं होता।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : षष्ठभाव : केतु

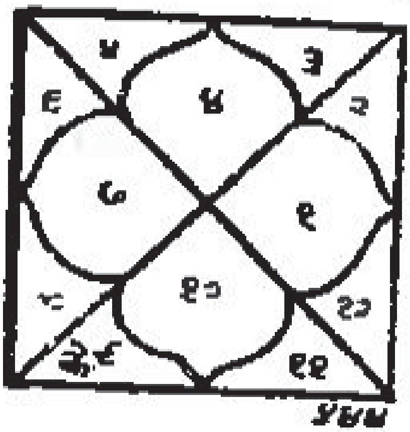

छठे भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में बड़ी सफलताएँ मिलती हैं। वह कठिन स्थितियों में भी अपने धैर्य तथा साहस को नहीं छोड़ता। ऐसा व्यक्ति स्वस्थ शरीर का, साहसी तथा परिश्रमी होता है, परन्तु उसमें दया, शील, सौजन्य आदि सद्गुण नहीं होते।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : सप्तमभाव : केतु

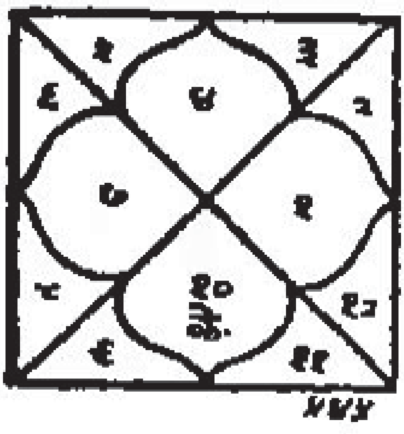

सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों तथा हानियों का सामना करना पड़ता है। मूत्रेन्द्रिय में विकार होता है। विषयेच्छा अधिक रहती है। वह भोगी, जिद्दी, हठी तथा कठिन परिश्रमी होता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : अष्टमभाव : केतु

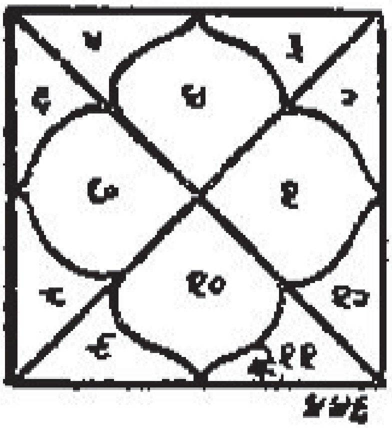

आठवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को आयु-पक्ष में अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्ट होते हैं तथा पुरातत्त्व की हानि भी होती है। पेट शिकार-ग्रस्त रहता है। धन का संकट तथा गुप्त चिन्ताएँ रहती हैं। ऐसा व्यक्ति गुप्त रूप से अपनी उन्नति तथा सुख के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : नवमभाव : केतु

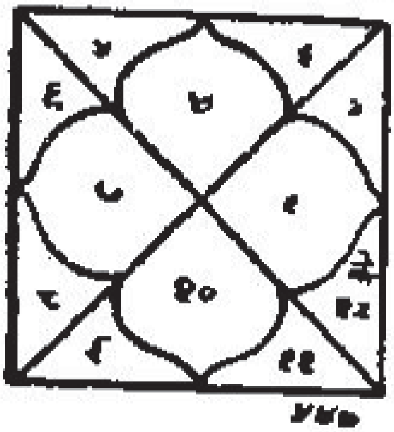

नवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी भाग्योन्नति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कभी-कभी बड़े संकटों तथा विफलताओं का शिकार भी होना पड़ता है।

वह गुप्त रूप से अपनी उन्नति के लिए प्रयत्न करता है, परन्तु भाग्योन्नति बड़ी धीमी गति से ही होती है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : दशमभाव : केतु

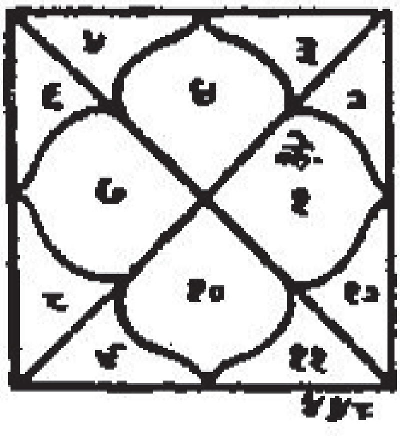

दसवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। यश तथा प्रतिष्ठा को धक्का भी लगता है परन्तु वह अपनी गुप्त युक्ति एवं परिश्रम द्वारा पुनः प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : एकादशभाव : केतु

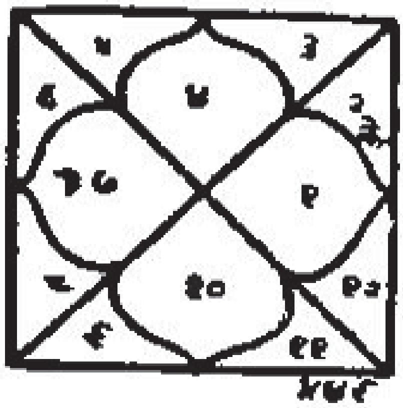

ग्यारहवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक आर्थिक लाभ पाने के लिए कठोर परिश्रम करता है तथा परिश्रम, चतुराई एवं गुप्त युक्तियों के बल पर लाभ में वृद्धि भी करता है।

ऐसे व्यक्ति को बारम्बार संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह कभी हिम्मत नहीं हारता तथा परिश्रम से भी नहीं चुराता।

'कर्क' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

कर्क लग्न : द्वादशभाव : केतु

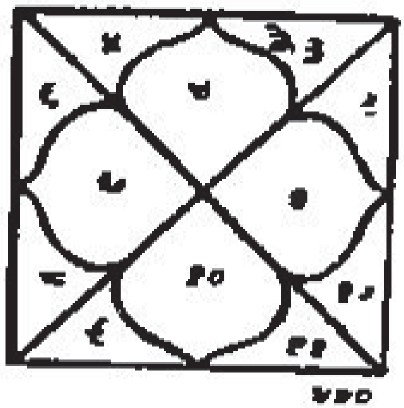

बारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को खर्च के बारे में बहुत परेशानी उठानी पड़ती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी कष्ट ही मिलता है।

ऐसा जातक गुप्त युक्तियों से काम लेनेवाला, परिश्रमी तथा भीतर-ही-भीतर दुःखी रहने वाला होता है।

'कर्क' लग्न समाप्त

'सिंह' लग्न

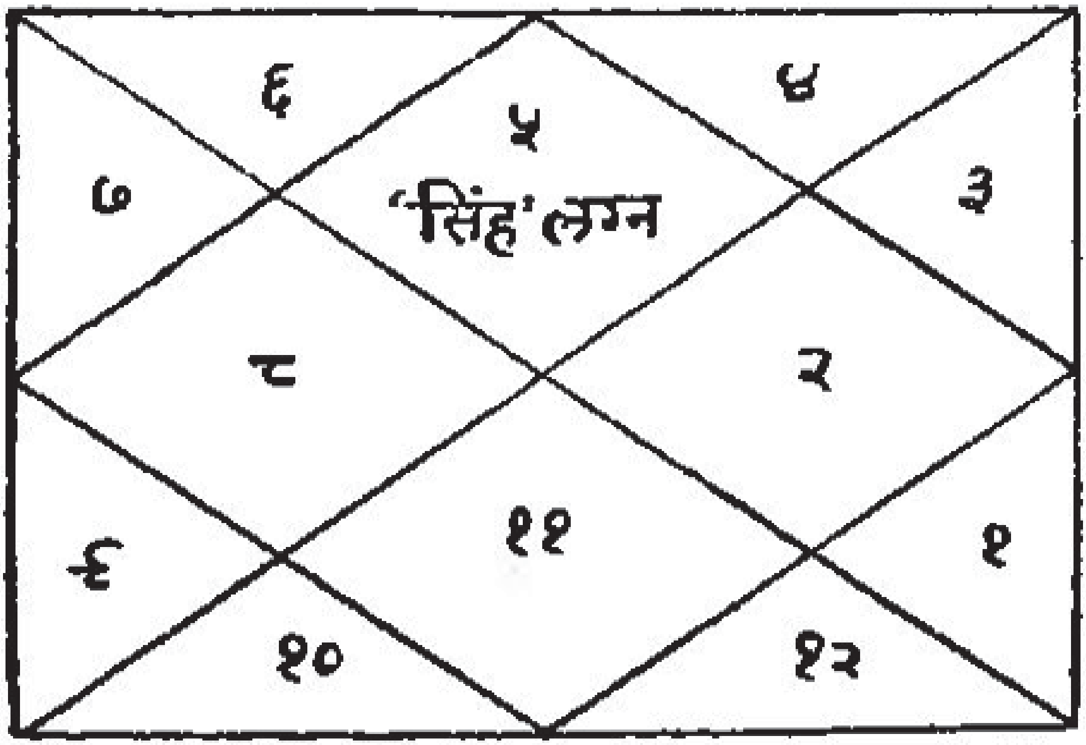

५५१

['सिंह' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक-पृथक वर्णन]

'सिंह' लग्न का फलादेश

'सिंह' लग्न में जन्म लेने वाले जातक के शरीर का रंग पाण्डुवर्ण होता है। वह पित्त एवं वायु के विकार से पीड़ित रहता है। ऐसा व्यक्ति रजोगुणी, वीर, साहसी, अत्यन्त पराक्रमी, अहंकारी, क्रोधी, उग्रस्वभाव, अस्त्र-शस्त्र विद्या में निपुण ढीठ, भोगी, तीक्ष्णबुद्धि, घुड़सवारी से प्रेम रखने वाला तथा मांस एवं रसीली वस्तुओं का भोजन करने वाला होता है।

इसके हाथ बड़े होते हैं तथा छाती चौड़ी होती है। यह उदार तथा साधु-सन्त-सेवी भी होता है।

इस लग्न वाला जातक अपनी प्रारंभिक अवस्था में सुखी, मध्यावस्था में दुःखी तथा अन्तिमावस्था में पूर्ण सुखी रहता है। इसका भाग्योदय २१ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। सिंह लग्न वाला व्यक्ति जहाँ प्रबल पराक्रमी होता है,

जहाँ आलसी भी पाया जाता है, परन्तु समय पड़ने पर यह अपना कमाल प्रदर्शित कर दिखाता है।

'सिंह' लग्न वालों के अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण कुण्डली संख्या ५५२ से ६५६ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'सिंह' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१. 'सिंह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५५२ से ५६३ के बीच देखना चाहिए।

२. 'सिंह' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ५५२
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ५५३
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ५५४
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ५५५
(च) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ५५६
(छ) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ५५७
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ५५८
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ५५९
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ५६०
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ५६१
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ५६२
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ५६३

'सिंह' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१. 'सिंह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५६४ से ५७५ के बीच देखना चाहिए।

२. 'सिंह' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ५६४
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ५६५
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ५६६
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ५६७
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ५६८
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ५६९
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ५७०
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ५७१
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ५७२
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ५७३
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ५७४
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ५७५

'सिंह' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१. 'सिंह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५७६ से ५८७ के बीच देखना चाहिए।

२. 'सिंह' लग्नवालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ५७६
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ५७७
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ५७८
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ५७९
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ५८०
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ५८१
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ५८२
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ५८३
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ५८४
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ५८५
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ५८६
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ५८७

'सिंह' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१. 'सिंह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ५८८ से ५९९ के बीच देखना चाहिए।

२. 'सिंह' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ५८८
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ५८९
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ५९०
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ५९१
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ५९२
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ५९३
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ५९४
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ५९५
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ५९६
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ५९७
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ५९८
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ५९९

'सिंह' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१. 'सिंह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६०० से ६११ के बीच देखना चाहिए।

२. 'सिंह' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६००
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६०१
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६०२
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६०३

(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६०४
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६०५
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६०६
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६०७
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६०८
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६०९
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६१०
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६११

'सिंह' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१. 'सिंह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६१२ से ६२३ के बीच देखना चाहिए।

'सिंह' लग्नवालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६१२
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६१३
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६१४
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६१५
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६१६
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६१७
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६१८
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६१९
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६२०
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६२१
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६२२
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६२३

'सिंह' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१. 'सिंह' लग्नवालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२४ से ६३५ के बीच देखना चाहिए।

२. 'सिंह' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६२४
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६२५
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६२६
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६२७
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६२८
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६२९
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६३०
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६३१
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६३२
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६३३
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६३४
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६३५

'सिंह' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१ 'सिंह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६३६ से ६४७ के बीच देखना चाहिए।

२. 'सिंह' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६३६
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६३७
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६३८
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६३९
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६४०
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६४१
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६४२
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६४३
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६४४
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६४५
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६४६
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६४७

'सिंह' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१. 'सिंह' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६४८ से ६५९ के बीच देखना चाहिए।

२. 'सिंह' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६४८
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६४९
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६५०
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६५१
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६५२
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६५३
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६५४
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६५५
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६५६
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६५७
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६५८
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६५९

'सिंह' लग्न में 'सूर्य'

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित सूर्य का फलादेश

सिंह लग्न : प्रथमभाव : सूर्य

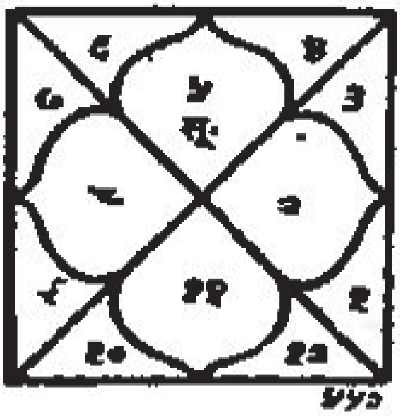

६६०

पहले भाव में स्वराशि-स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शारीरिक शक्ति, आत्मबल तथा सौन्दर्य का लाभ प्राप्त करता है। वह बड़ा हिम्मती तथा लम्बे कद का होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से जातक को स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं तथा असन्तोष बना रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

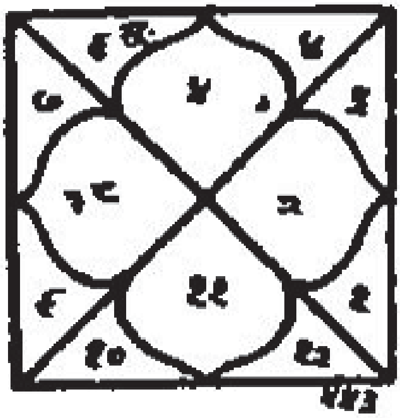

४४३

दूसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब के सुख में वृद्धि होती है, परन्तु उसी के कारण कुछ परतंत्रता का अनुभव भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा जातक समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति समझा जाता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : तृतीयभाव : सूर्य

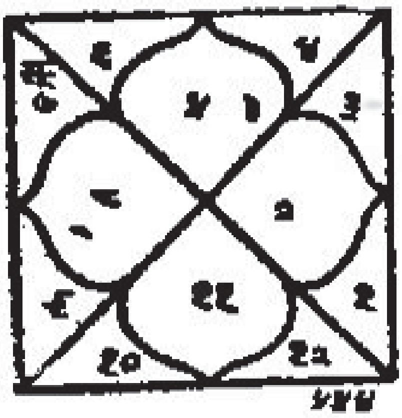

४४४

तीसरे भाव में शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातकों का भाई-बहिनों से वैमनस्य रहता है तथा पराक्रम में कुछ कमी आती है। फिर भी वह जातक बड़ा हिम्मती होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक के भाग्य में वृद्धि होती है तथा वह धर्म में भी आस्था रखता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

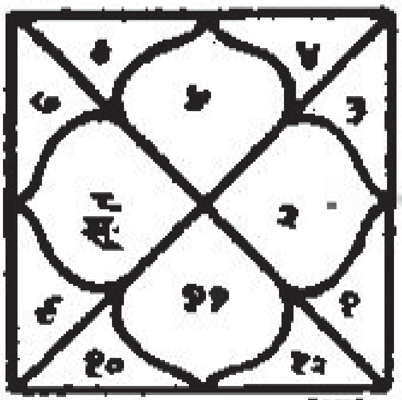

४४५

चौथे भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन आदि का सुख प्राप्त होता है तथा शरीर सुखी रहता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण जातक का पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक प्रयत्न करने पर ही सफलता मिलती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : पंचमभाव : सूर्य

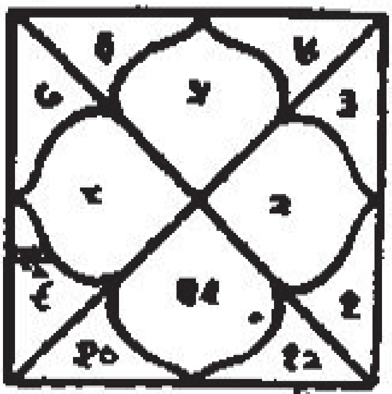

२४६

पाँचवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा संतान के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलती है। यह आत्मज्ञानी तथा उग्र मस्तिष्क वाला होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से बुद्धि-बल द्वारा पर्याप्त आमदनी होती है। ऐसा व्यक्ति अहंकारी भी होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

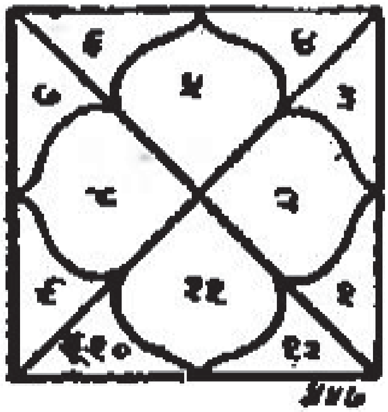

२४७

छठे भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है तथा कठिनाइयों से घबराता नहीं है। शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा रोग एवं परतंत्रता के योग भी बनते हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थान के संबंध से भी लाभ होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

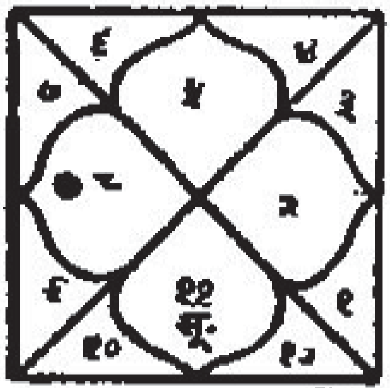

२४८

सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का स्त्री-पक्ष से वैमनस्य रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है।

सातवीं दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति एवं स्वाभिमान में वृद्धि होती है और वह अपने यश का विस्तार भी करता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

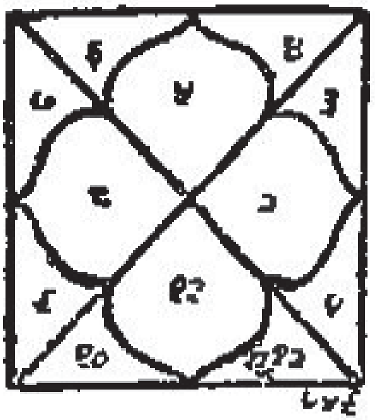

आठवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है।

सातवीं दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से कठिन परिश्रम द्वारा धन एवं कौटुम्बिक सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति क्रोधी स्वभाव का होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : नवमभाव : सूर्य

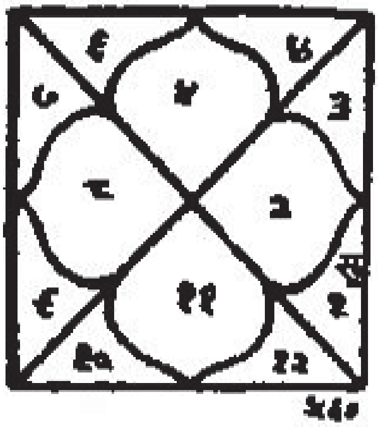

नवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक की भाग्य-शक्ति प्रबल होती है तथा धर्म में भी अभिरुचि बनी रहती है।

सातवीं नीच दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से जातक को भाई-बहिनों से असन्तोष रहता है तथा पराक्रम के बारे में ऐसा व्यक्ति लापरवाह रहता है। स्थूल शरीर वाला भाग्यवान तथा ईश्वर-भक्त होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : दशमभाव : सूर्य

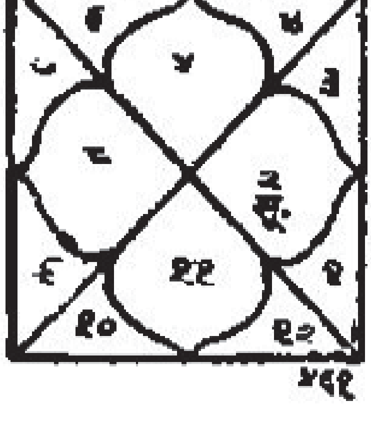

दसवें भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का पिता से वैमनस्य रहता है, परन्तु राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति एवं मान-प्रतिष्ठा का लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख भी मिलता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : एकादशभाव : सूर्य

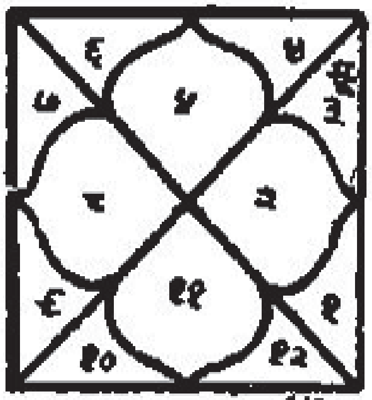

५६२

ग्यारहवें भाव में मित्र बुध की राशि में स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है तथा शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान का सुख भी यथेष्ट मिलता है। ऐसे व्यक्ति की वाणी में कुछ उग्रता रहती है और वह स्वार्थी भी होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : सूर्य

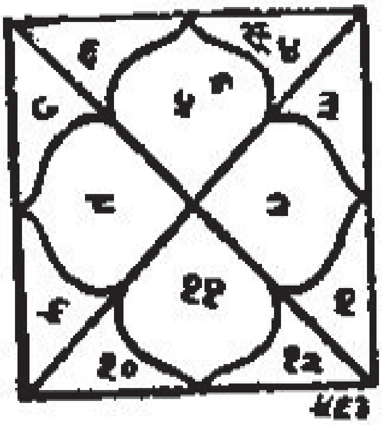

५६३

बारहवें भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल बना रहता है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्च पर प्रभाव बना रहता है। जातक भ्रमण का शौकीन भी होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष पर प्रभाव बना रहता है तथा अनेक कठिनाइयों के बावजूद शत्रुओं पर विजय पाता है।

'सिंह' लग्न में 'चन्द्रमा'

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

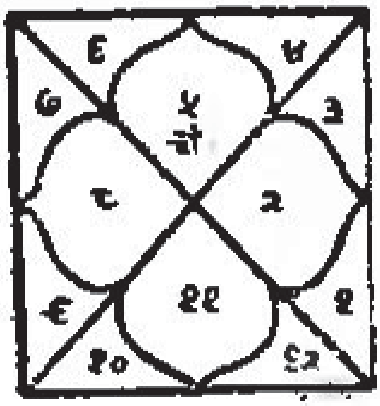

पहले भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शरीर से दुर्बल, भ्रमण-प्रिय तथा कुछ चिन्तित बना रहने वाला होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों तथा हानि का सामना पड़ता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

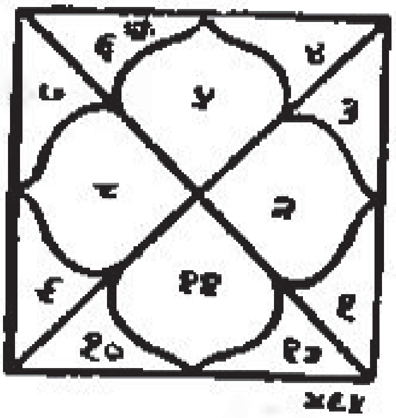

दूसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को धन की अल्प हानि होती है। उसका रहन-सहन ठाठदार होता है। कुटुम्ब से भी कुछ असन्तोष रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ तथा सुख मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु-वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी कुछ कमी के साथ लाभ होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

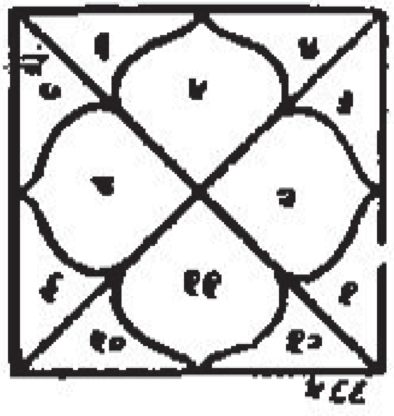

तीसरे भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी रहती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है तथा खर्च आराम से चलता रहता है। अन्य लोगों की दृष्टि में ऐसा व्यक्ति धनी तथा सुखी समझा जाता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र

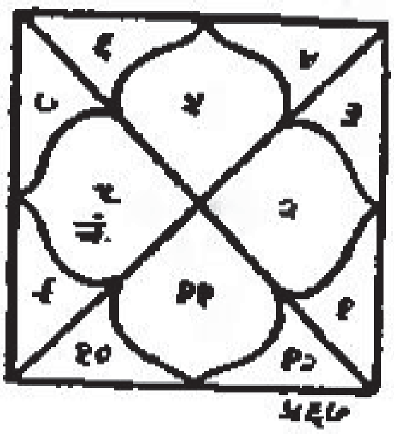

चौथे भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन आदि का सुख कुछ कष्ट के साथ अल्प परिमाण में मिलता है तथा घरेलू खर्चों से परेशानी बनी रहती है।

सातवीं उच्च दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सुख तथा सफलता की प्राप्ति होती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

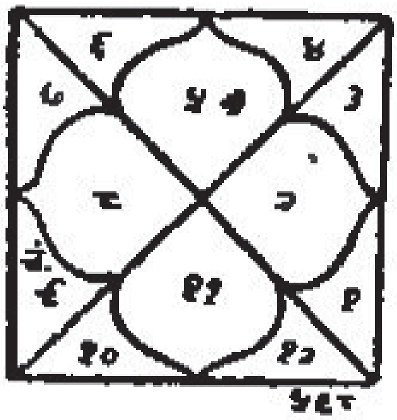

पाँचवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में बाधाएँ रहती हैं। खर्च की चिन्ता से मस्तिष्क परेशान भी रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से जातक बुद्धि-बल से आमदनी के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है, परन्तु उसे कुछ असन्तोष भी बना रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

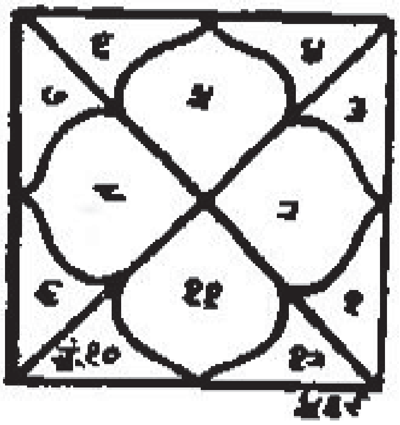

छठे भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष द्वारा उत्पन्न झगड़ों तथा रोग आदि में खर्च अधिक करना पड़ता है, जिससे मन दुःखी बना रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादशभाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा आय कम रहते हुए भी अधिक खर्च होता है। वह खर्च के द्वारा ही शत्रु-पक्ष में सफलता भी पाता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

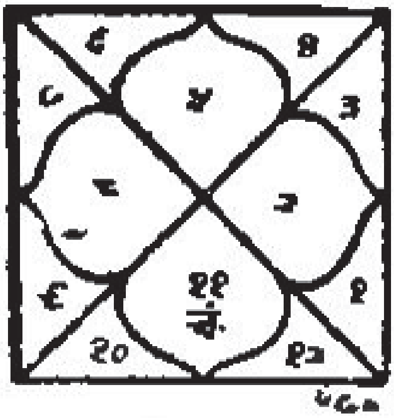

सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है तथा घरेलू खर्च चलाने में कठिनाई आती है। बाहरी स्थानों के सम्पर्क से लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शरीर दुर्बल तथा रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

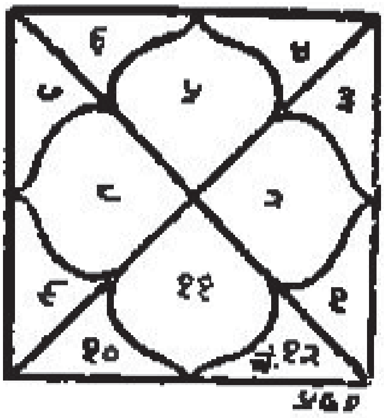

आठवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में हानि तथा चिन्ता के अवसर उपस्थित होते हैं। पेट में विकार रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन की भी कुछ हानि होती है तथा कौटुम्बिक सुख भी अल्प परिमाण में प्राप्त होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली से 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : नवमभाव : चन्द्र

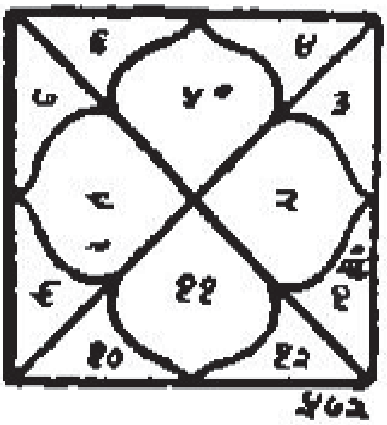

नवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के भाग्य की वृद्धि होती है, परन्तु धर्म-पालन में कमी रहती है।

सातवीं सम-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में भी कुछ कमी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति मानसिक दुर्बलता का शिकार भी होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : दशमभाव : चन्द्र

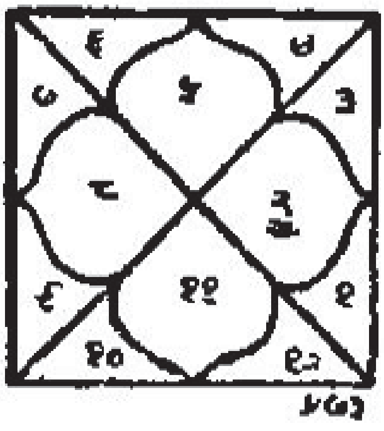

दसवें भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक पैतृक सम्पत्ति का अधिक व्यय करता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलताएं प्राप्त करता है।

सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है तथा खर्च की अधिकता से मन अशान्त बना रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : एकादशभाव : चन्द्र

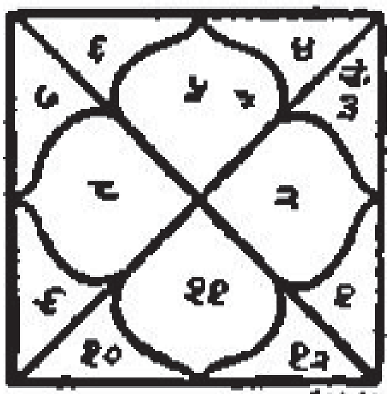

५७४

ग्यारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु खर्च भी अधिक बना रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में भी कुछ कमी रहती है। बाहरी तौर पर ऐसा जातक धनी समझा जाता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : चन्द्र

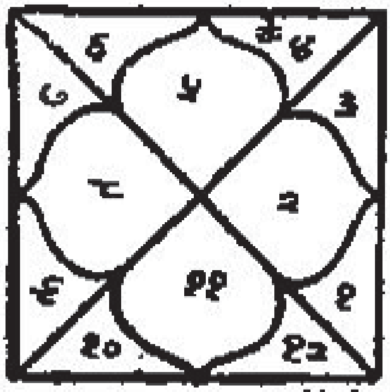

५७५

बारहवें भाव में स्वराशि में स्थित व्ययेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से यश, सुख तथा लाभ की प्राप्ति होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक अपने मनोबल तथा खर्च के बल पर शत्रु-पक्ष पर विजय पाता तथा प्रभाव स्थापित करता है, परन्तु झगड़े-मुकद्दमे आदि में खर्च बहुत होता है।

'सिंह' लग्न में 'मंगल'

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिंह लग्न : प्रथमभाव : मंगल

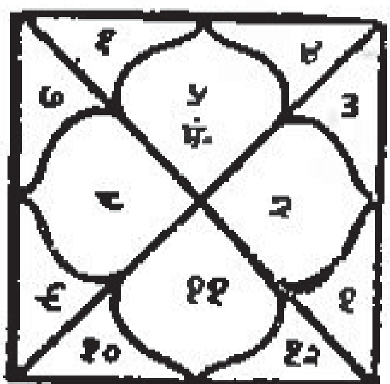

५७६

पहले भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। वह भाग्यवान्, धर्मात्मा तथा ईश्वर-भक्त भी होता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि के चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन का सुख मिलता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियाँ आती हैं। आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ प्राप्त होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वितीयभाव : मंगल

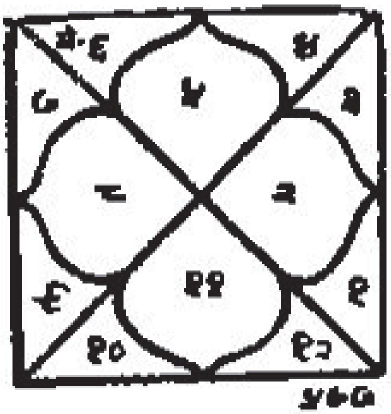

दूसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। परन्तु माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी रहती है। चौथी मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के पक्ष में सफलता मिलती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि के नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की भी वृद्धि होती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिंह लग्न : तृतीयभाव : मंगल

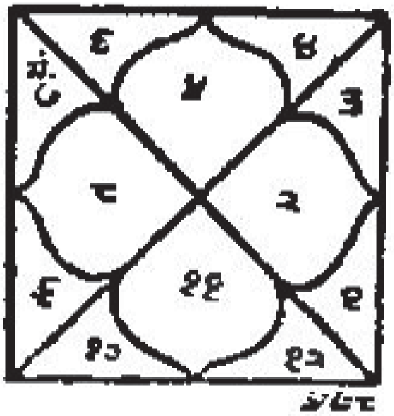

तीसरे भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। चौथी उच्चदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष पर विजय प्राप्त होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की उन्नति होती है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सहयोग, सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिंह लग्न : चतुर्थभाव : मंगल

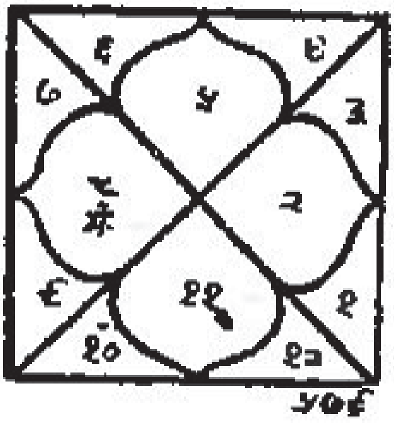

चौथे भाव में स्वराशि स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भूमि, भवन एवं माता का सुख प्राप्त होता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता तथा राज्य के क्षेत्र में सहयोग एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी की खूब वृद्धि होती रहती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिंह लग्न : पंचमभाव : मंगल

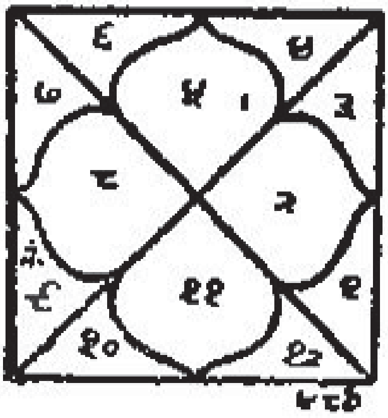

पांचवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतान का लाभ होता है। चौथी मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्व का लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव से देखने से आमदनी खूब रहती है। आठवीं नीच-दृष्टि से द्वादश-भाव को देखने से खर्च की परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध भी निर्बल रहते हैं।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिंह लग्न : षष्ठभाव : मंगल

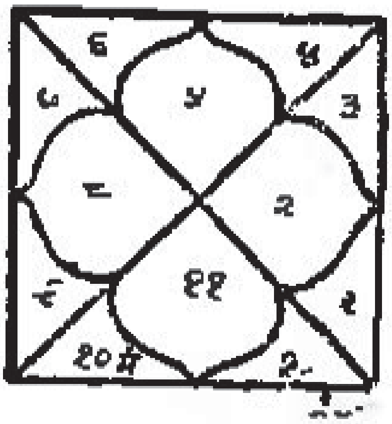

छठे भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित उच्च मंगल के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है तथा भाग्य की शक्ति से सुख प्राप्त होता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च की परेशानी रहती है तथा बाहरी सम्बन्ध कम-जोर रहते हैं। आठवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक प्रभाव, सौन्दर्य एवं सुख की वृद्धि होती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिंह लग्न : सप्तमभाव : मंगल

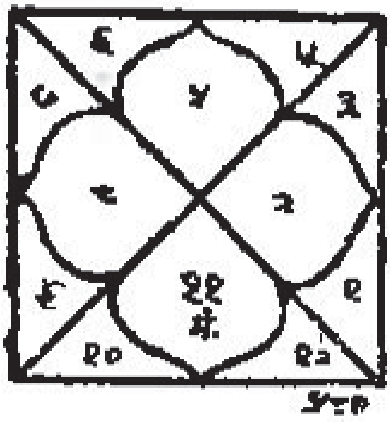

सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। चौथी शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से कुछ मतभेद रहता है परन्तु पिता, राज्य तथा व्यवसाय द्वारा लाभ एवं सफलता की प्राप्ति भी होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं सौभाग्य का लाभ होता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिंह लग्न : अष्टमभाव : मंगल

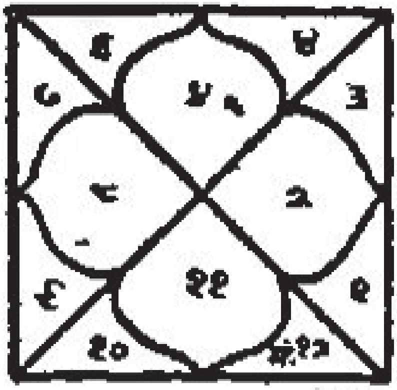

५८६

आठवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है। परन्तु भाग्य तथा धर्म के पक्ष में कमी रहती है। चौथी मित्र-दृष्टि से एकादश-भाव को देखने से आमदनी खूब होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीभाव को देखने से कौटुम्बिक सुख तथा धन का लाभ भी होता है।

आठवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है। आठवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से जातक सुखी जीवन बिताता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिंह लग्न : नवमभाव : मंगल

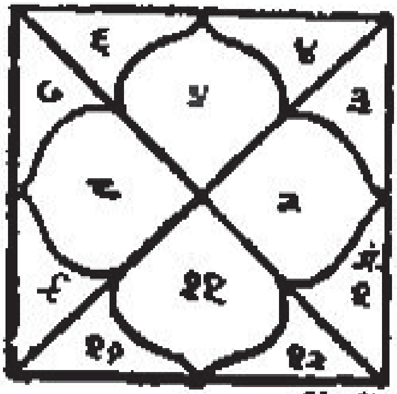

५८७

नवें भाव में स्वराशि-स्थित मंगल के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। चौथी नीच दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च की अधिकता से कष्ट प्राप्त होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से भी परेशानी होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन का सुख असन्तोषजनक रहता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिंहलग्न : दशमभाव : मंगल

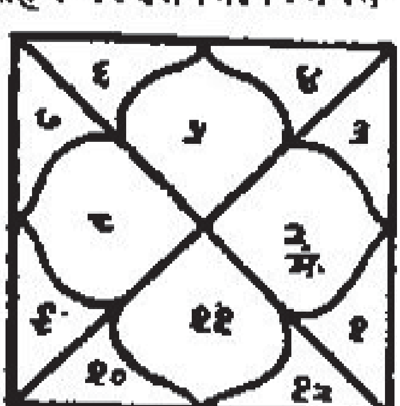

५८८

दसवें भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति, सफलता एवं सम्मान के योग प्राप्त होते हैं। चौथी मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक प्रभाव तथा सौभाग्य में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा मकान आदि का सुख मिलता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिंह लग्न : एकादशभाव : मंगल

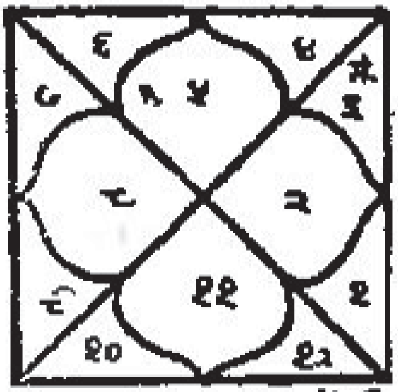

२८६

ग्यारहवें भाव में मित्र बुध की राशि में स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आय में वृद्धि होती है तथा माता, भूमि, भवन आदि का सुख भी मिलता है। चौथी मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आठवीं उच्चदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु तथा रोगों पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति बड़ा प्रभावशाली, धनी तथा शत्रुजयी होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : मंगल

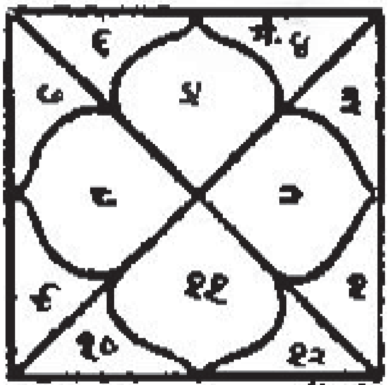

२८७

बारहवें भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को खर्च के बारे में कठिनाई उठानी पड़ती है तथा बाहरी सम्बन्धों से कष्ट मिलता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में भी हानि पहुँचती है। चौथी शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं उच्चदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुओं पर विजय मिलती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख प्राप्त होता है।

'सिंह' लग्न में 'बुध'

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

सिंह लग्न : प्रथमभाव : बुध

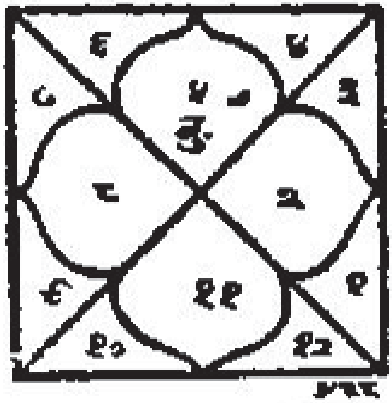

२८८

पहले भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति विवेकी, दानी, भोगी तथा धनी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से व्यवसाय तथा स्त्री के पक्ष में भी उन्नति, सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वितीयभाव : बुध

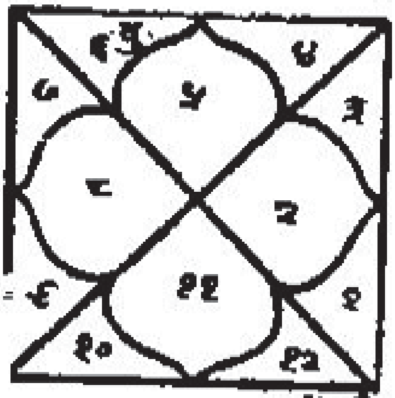

५८९

दूसरे भाव में स्वराशि स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख की वृद्धि होती है। भाई-बहिनों का यथेष्ट सुख भी मिलता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के बारे में अनेक संकटों तथा चिन्ताओं का शिकार बनना पड़ता है। पेट की बीमारी रहती है तथा दैनिक जीवन भी असन्तोषजनक बना रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली से 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

सिंह लग्न : तृतीयभाव : बुध

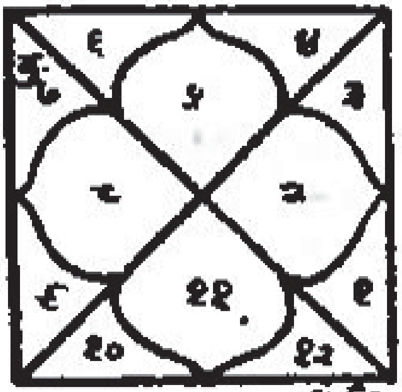

५९०

तीसरे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म का पालन भी होता है।

ऐसा व्यक्ति धनी, धर्मात्मा, पराक्रमी, यशस्वी तथा सुखी होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

सिंह लग्न : चतुर्थभाव : बुध

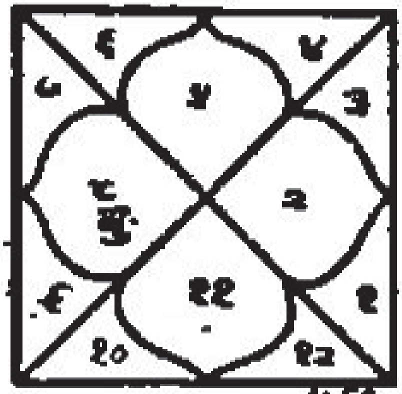

५९१

चौथे भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन का पर्याप्त सुख मिलता है तथा धन का संचय होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, व्यवसाय तथा पिता के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा लाभ मिलता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

सिंह लग्न : पंचमभाव : बुध

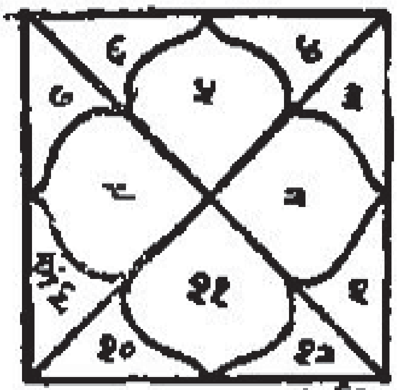

कुं० ६२

पांचवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है। साथ ही, धन की उन्नति भी होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादशभाव को देखने से आमदनी बहुत अच्छी रहती है। ऐसा जातक धनी, सुखी, विद्वान्, सज्जन तथा स्वार्थी होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

सिंह लग्न : षष्ठभाव : बुध

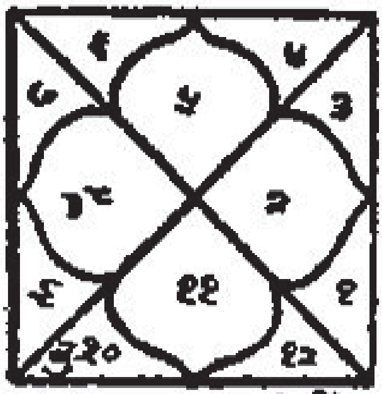

कुं० ६३

छठे भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में नम्रता एवं धन की शक्ति से सफलता प्राप्त करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव में देखने से खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। कौटुम्बिक सुख की प्राप्ति कम ही होती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

सिंह लग्न : सप्तमभाव : बुध

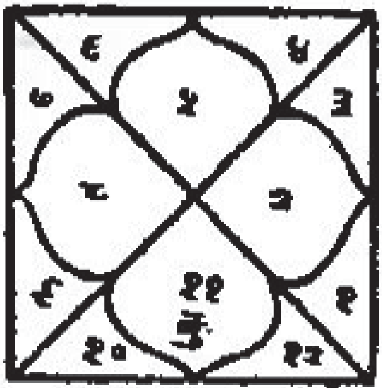

कुं० ६४

सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ होता है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक के शारीरिक सौन्दर्य, आत्मिक बल, विवेक तथा यश की वृद्धि होती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

सिंह लग्न : अष्टमभाव : बुध

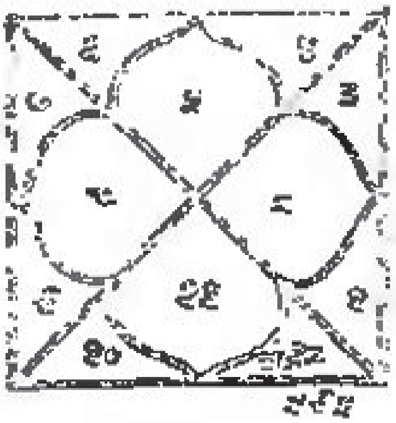

आठवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को आयु-पक्ष में संकटों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि भी होती है।

सातवीं उच्च दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन की कमी रहते हुए भी दैनिक खर्च-र्च. पूर्ति होती है तथा कौटुम्बिक सुख चिन्तनीय रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

सिंह लग्न : नवमभाव : बुध

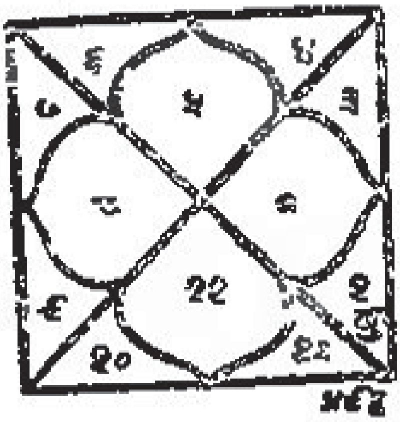

नवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। वह धनी, सुखी, ईमानदार, उदार, सज्जन तथा ईश्वर-भक्त होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। ऐसा जातक बड़ा यशस्वी होता है तथा निरन्तर उन्नति करता रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

सिंह लग्न : दशमभाव : बुध

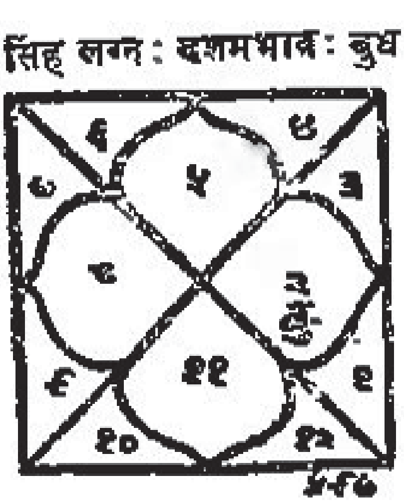

दसवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य व्यवसाय के क्षेत्र में पर्याप्त सफलताएँ मिलती हैं तथा धन तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा मकान आदि का सुख भी मिलता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

सिंह लग्न : एकादशभाव : बुध

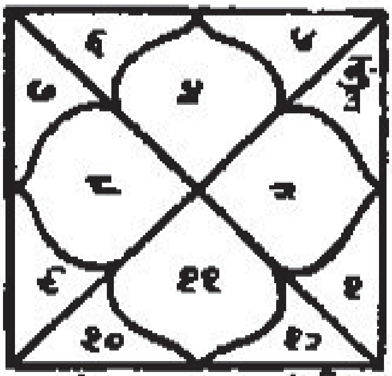

१९८

ग्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित गुरु से प्रभाव से जातक को यथेष्ट लाभ होता है तथा धन, यश एवं सुख की वृद्धि होती रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, यशस्वी, विद्वान् तथा सन्ततिवान् होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : गुरु

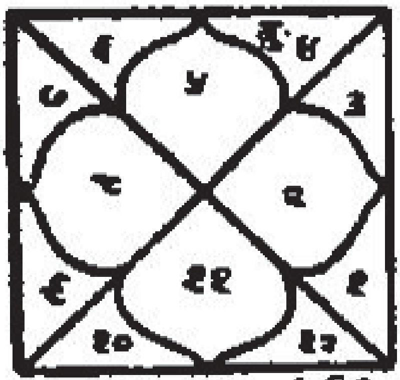

१९९

बारहवें भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में धन तथा विवेक द्वारा सफलता प्राप्त होती है, परन्तु झगड़े-टंटों के कारण उसे हानि भी उठानी पड़ती है।

'सिंह' लग्न में 'गुरु'

'सिंह' लग्न की कुण्डली से 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सिंह लग्न : प्रथमभाव : गुरु

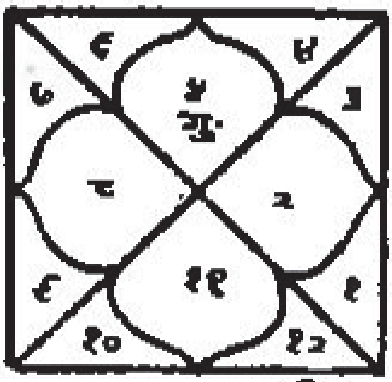

२००

पहले भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित गुरु से प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव तथा दीर्घायु की प्राप्ति होती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ असन्तोष रहता है। नवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वितीयभाव : गुरु

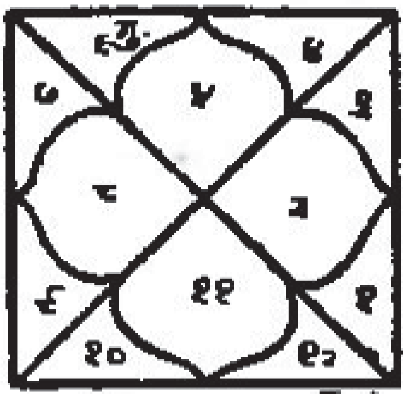

८०१

दूसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को धन तथा कौटुम्बिक सुख की प्राप्ति होती है, परन्तु सन्तान के पक्ष से कुछ कष्ट मिलता है। पाँचवीं नीच-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष तथा ननसाल में हानि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से मतभेद रहता है तथा व्यवसाय एवं राजकीय क्षेत्र में असन्तोष बना रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के-'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सिंह लग्न : तृतीयभाव : गुरु

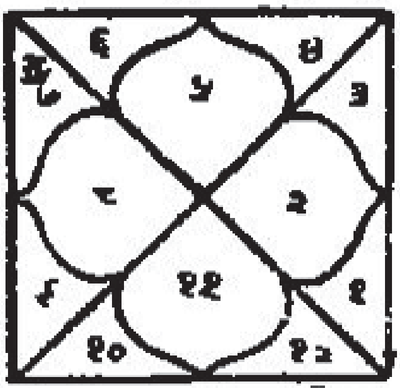

८०२

तीसरे भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का भाई-बहिनों से मतभेद रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। सन्तान का सुख कुछ कठिनाई से मिलता है तथा आयु का लाभ होता है।

पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से बुद्धि बल से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ खूब होता है। ऐसा जातक प्रत्येक क्षेत्र में साहसी होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सिंह लग्न : चतुर्थभाव : गुरु

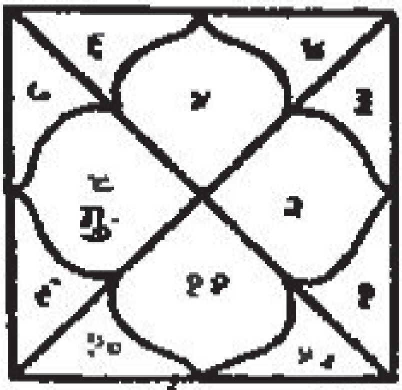

८०३

चौथे भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है, परन्तु विद्या एवं सन्तान के पक्ष में लाभ होता है।

पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि के अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय से पूर्ण लाभ नहीं होता। नवीं उच्च दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ एवं सुख मिलता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सिंह लग्न : पंचमभाव : गुरु

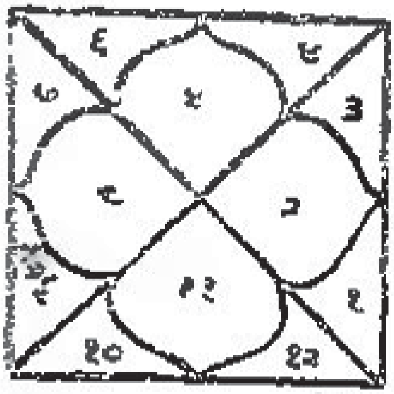

६०४

पाँचवें भाव में स्वराशि-स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की विद्या-बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में सफलता मिलती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। साथ ही पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है। नवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सुख, मनोबल, यश, सुख तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है, परन्तु गुरु के अष्टमेश होने के कारण सुख-दुःख दोनों का अनुभव होता रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली से 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सिंह लग्न : षष्ठभाव : गुरु

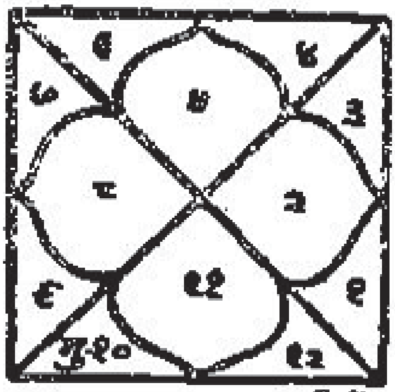

६०५

छठे भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष से चिन्ता रहती है। विद्या तथा सन्तान का पक्ष भी दुर्बल रहता है। पुरातत्त्व की हानि होती है तथा दैनिक जीवन के सुख में भी कमी आती है।

पाँचवीं दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है। सातवीं उच्च दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से बाहरी सम्बन्धों से श्रेष्ठ लाभ होता है तथा व्यय अधिक रहता है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन एवं कुटुम्ब की सामान्य वृद्धि होती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सिंह लग्न : सप्तमभाव : गुरु

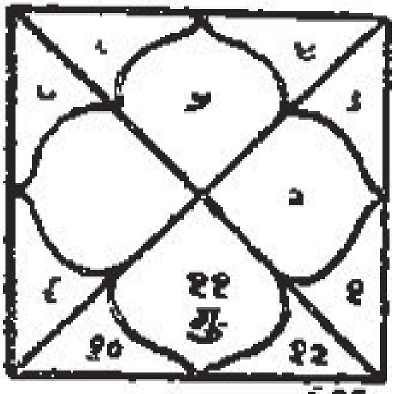

६०६

सातवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का स्त्री से वैमनस्य रहता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियों का अनुभव होता है। विद्या तथा सन्तान के पक्ष में सामान्य सफलता मिलती है। आयु भी वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ मिलता है।

पाँचवीं दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आर्थिक लाभ अच्छा रहता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की कुछ वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से वैमनस्य रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सिंह लग्न : अष्टमभाव : गुरु

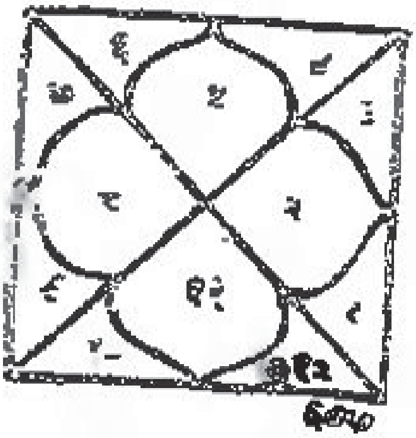

आठवें भाव में स्वराशि-स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व में वृद्धि होती है, परन्तु सन्तान के पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या, बुद्धि में भी कुछ कमी रहती है।

पाँचवीं उच्च दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है। सातवीं मित्र दृष्टि द्वितीयभाव को देखने से जातक धन-वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है। नवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमियों के साथ सफलता मिलती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सिंह लग्न : नवमभाव : गुरु

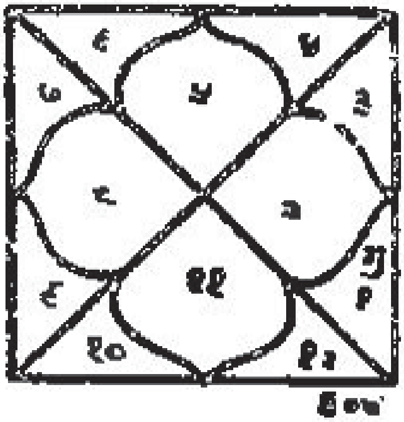

नवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। पुरातत्त्व के क्षेत्र में सफलता मिलती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक प्रभाव, सुख एवं मनोबल की प्राप्ति होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों से असन्तोष रहता है, परन्तु पराक्रम बढ़ता है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि का यथेष्ट लाभ होता है, परन्तु गुरु के अष्टमेश होने के कारण हर क्षेत्र में कुछ कमी का अनुभव भी अवश्य होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सिंह लग्न : दशमभाव : गुरु

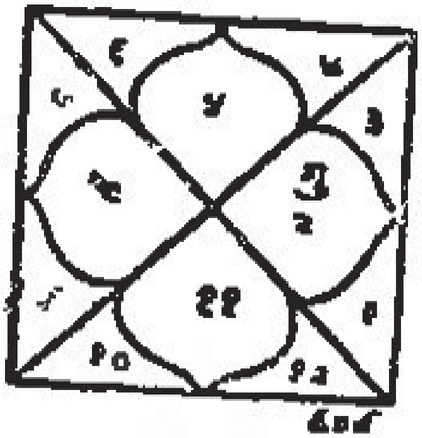

दसवें भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता-पक्ष में हानि तथा राज्य के पक्ष में सम्मान मिलता है। विद्या, बुद्धि, सन्तान तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है।

पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सामान्य सुख मिलता है। नवीं नीच-दृष्टि से षष्ठभाव से देखने से शत्रु-पक्ष से परेशानी होती है तथा झगड़े-झंझटों के कारण चिंताएं घेरे रहती हैं।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सिंह लग्न : एकादशभाव : गुरु

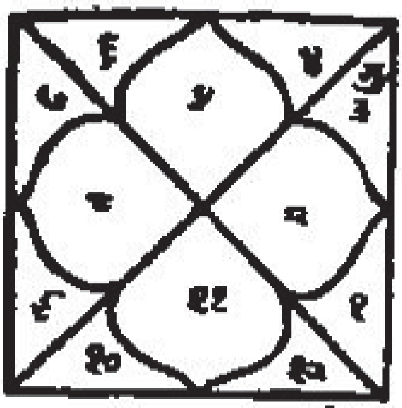

६८०

ग्यारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की आमदनी बढ़ती है। आयु तथा पुरातत्त्व की भी वृद्धि होती है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से मतभेद रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से सन्तान, विद्या एवं बुद्धि का लाभ मिलता है। नवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियाँ आती रहती हैं।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : गुरु

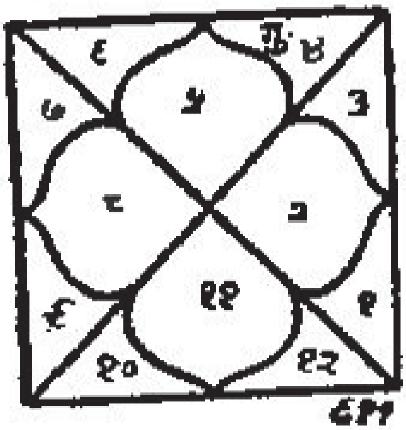

६८१

बारहवें भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि में स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से लाभ मिलता है। विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है।

पाँचवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन आदि का सुख प्राप्त होता है। सातवीं नीच-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष से परेशानी बनी रहती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु की विशेष शक्ति मिलती है तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

'सिंह' लग्न में 'शुक्र'

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : प्रथमभाव : शुक्र

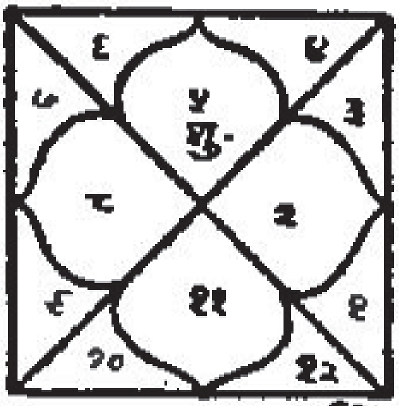

६८२

पहले भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, शृंगार, यश तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है। भाई-बहिन एवं पिता से मतभेद रहते हुए भी सुख मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के पक्ष में सफलता मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय में लाभ होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली से 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

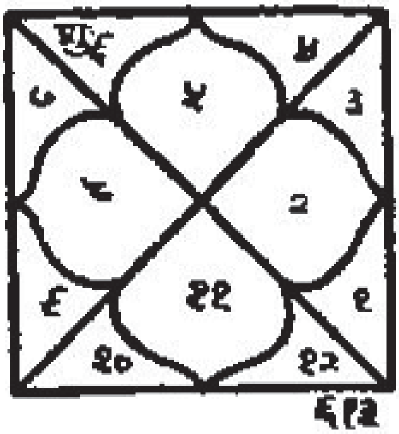

दूसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को धन तथा कौटुम्बिक सुख अल्प मात्रा में प्राप्त होता है। पिता, व्यवसाय, राज्य तथा पराक्रम के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है।

सातवीं उच्च दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति ऐश्वर्य-शालियों जैसा जीवन व्यतीत करता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : तृतीयभाव : शुक्र

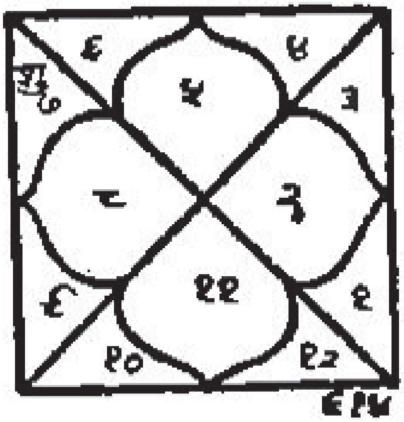

तीसरे भाव में स्वराशि-स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय द्वारा भी लाभ प्राप्त होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा भाग्य तथा धर्म की वृद्धि करता है। वह बड़ा चतुर, योग्य तथा परिश्रमी भी होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

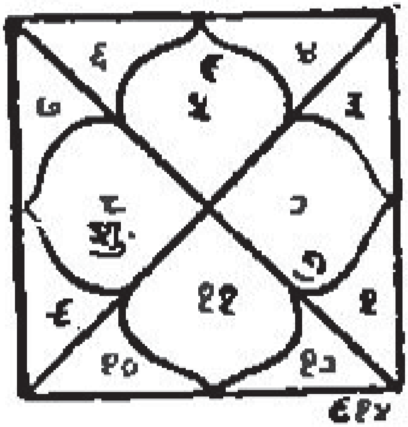

चौथे भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का माता के साथ सामान्य मतभेद रहता है, परन्तु भूमि एवं भवन का लाभ प्राप्त होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ, सफलता तथा यश की प्राप्ति होती है। भाई-बहिन का सुख भी यथेष्ट मिलता है तथा रहन-सहन भी रईसों-जैसा होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : पंचमभाव : शुक्र

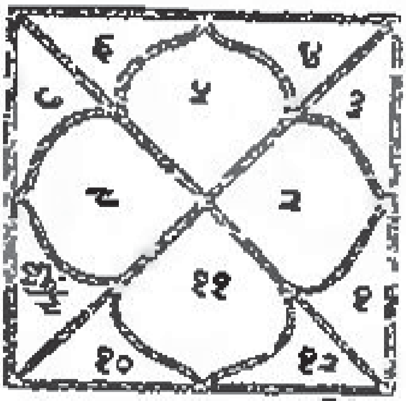

६२६

पाँचवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। भाई-बहिन एवं पिता का सुख भी प्राप्त होता है। वह अपनी योग्यता एवं चातुर्य के बल पर सर्वत्र सम्मानित भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से परिश्रम द्वारा पर्याप्त लाभ होता है तथा राज्य-पक्ष में भी सम्मान, सुख एवं लाभ मिलता है। ऐसा व्यक्ति राजनीतिज्ञ, सुखी, धनी, यशस्वी तथा चतुर होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : षष्ठभाव : शुक्र

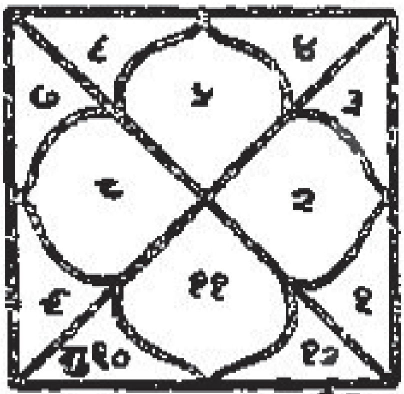

६२७

छठे भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक बड़ा चतुर, प्रभावशाली तथा शत्रुओं पर विजय पाने वाला होता है। पिता के साथ सामान्य मतभेद रहता है, परन्तु राज्य-पक्ष में उन्नति एवं सफलता मिलती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से सुख और लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों के बल पर सफलताएँ प्राप्त करता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : सप्तमभाव : शुक्र

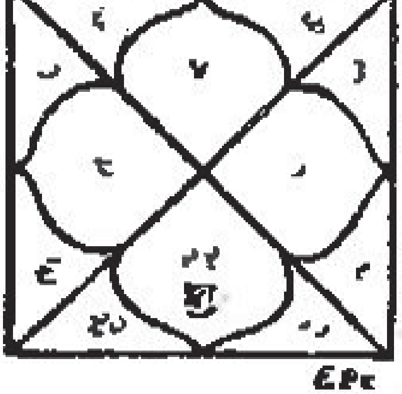

६२८

सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है तथा भाई-बहिन एवं पिता का सुख भी मिलता है। वह कुशलतापूर्वक गृहस्थी का संचालन करता है तथा यश प्राप्त करता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से जातक को शारीरिक शक्ति, प्रभाव, मनोबल तथा हिम्मत की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बहादुर तथा हुकूमत करने वाला होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : अष्टमभाव : शुक्र

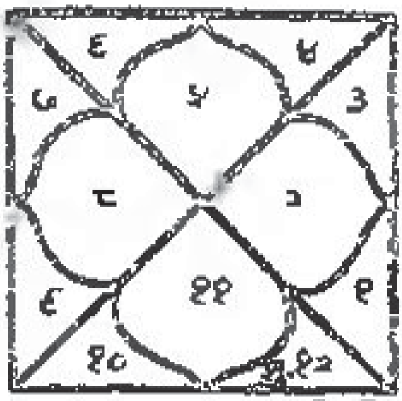

६२९

आठवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्व का लाभ होता है तथा भाई-बहिन एवं पिता से सुख में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। दैनिक जीवन में वह बड़ा प्रभावशाली रहता है। राज्य-पक्ष में भी सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन के संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ कमी बनी रहती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : नवमभाव : शुक्र

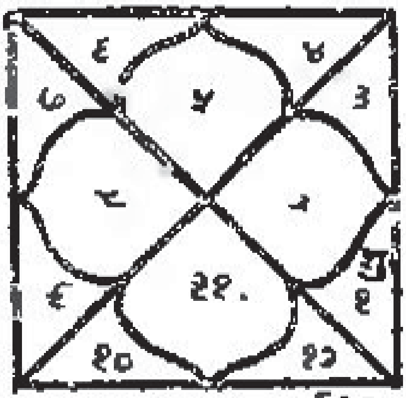

६३०

नवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, सुख तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, परिश्रमी, यशस्वी, चतुर तथा हिम्मत वाला होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : दशमभाव : शुक्र

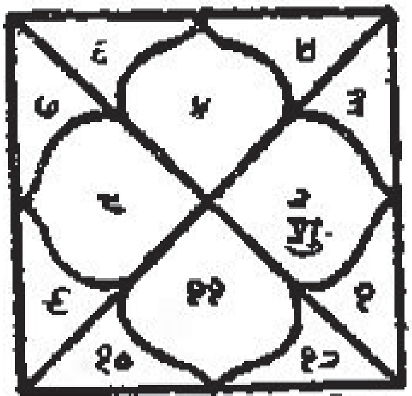

६३१

दसवें भाव में स्वराशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलताएँ मिलती हैं तथा यश, सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है। भाई-बहिनों का सुख भी पर्याप्त रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, मकान तथा भूमि का अच्छा सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति चतुर, प्रभावशाली, परिश्रमी तथा भाग्यवान् होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : एकादशभाव : शुक्र

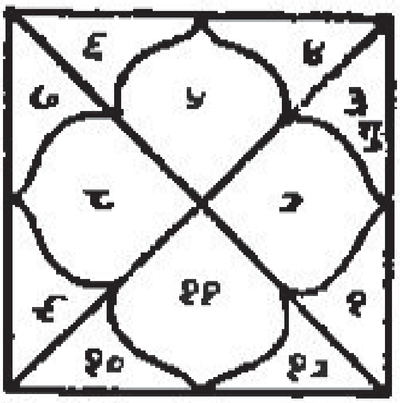

६२२

ग्यारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी में खूब वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन एवं पिता का श्रेष्ठ सुख भी मिलता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का भी विशेष लाभ होता है।

ऐसा व्यक्ति अपनी वाणी द्वारा सबको प्रभावित करने वाला, सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : शुक्र

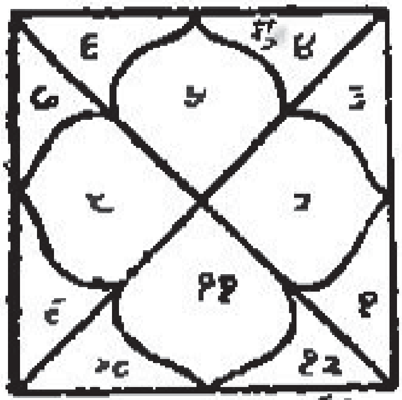

६२३

बारहवें भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थान के सम्बन्ध से लाभ होता है। पिता तथा भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक शत्रु-पक्ष में चातुर्य द्वारा प्रभावशाली बना रहता है तथा अपनी हिम्मत से सभी झगड़ों में विजय प्राप्त करता है।

'सिंह' लग्न में 'शनि'

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

सिंह लग्न : प्रथमभाव : शनि

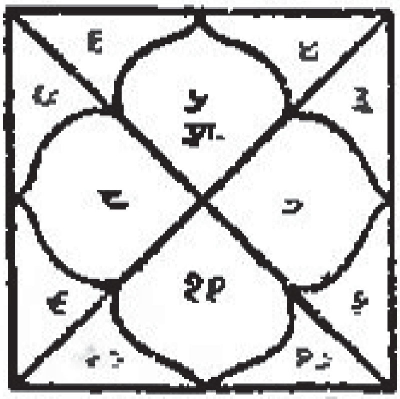

६२४

पहले भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को शारीरिक कष्ट, रोगादि होते हैं, परन्तु शत्रु-पक्ष पर कुछ प्रभाव बना रहता है। तीसरी उच्च-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के सप्तमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख प्राप्त होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के लाभ, यश तथा सुख प्राप्त होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

सिंह लग्न : पंचमभाव : शनि

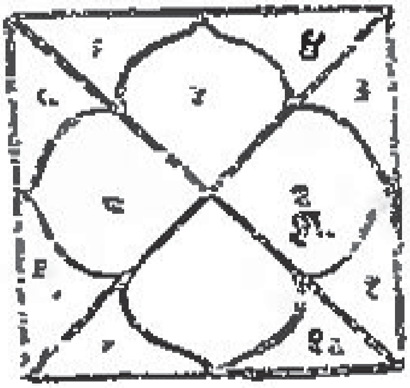

पाँचवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में कुछ परेशानी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय से सुख मिलता है। स्त्री बुद्धिमती होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आय में वृद्धि होती है। दसवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन की वृद्धि होती है तथा सामान्य कौटुम्बिक सुख भी मिलता है। ऐसा जातक बड़ा विषयी होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

सिंह लग्न : षष्ठभाव : शनि

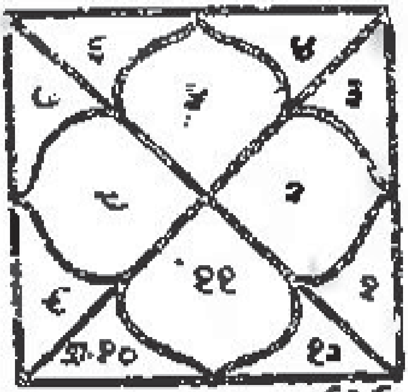

६२६

छठे भाव में स्वराशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर प्रभावी रहता है तथा ननसाल से भी शक्ति प्राप्त करता है। दैनिक खर्च के संचालन में तथा स्त्री-पक्ष से कुछ असन्तोष रहता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है, परन्तु आयु के विषय में कुछ अशान्ति रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक होता है, जिससे परेशानी रहती है। दसवीं उच्चदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख मिलता है। ऐसा व्यक्ति हिम्मत से कठिनाइयों पर विजय पाता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

सिंह लग्न : सप्तमभाव : शनि

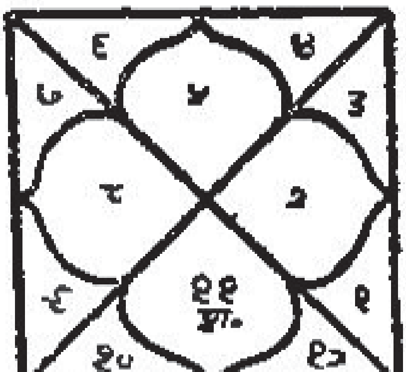

६३०

सातवें भाव में स्वराशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष तथा दैनिक व्यवसाय में कठिनाइयाँ बनी रहती हैं। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है। तीसरी नीचदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की कुछ हानि होती है तथा यश में कमी आती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं मानसिक शक्ति का ह्रास होता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में भी कमी आ जाती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वितीयभाव : शनि

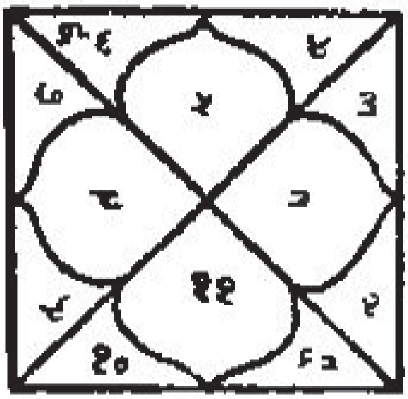

६२४

दूसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के क्षेत्र में हानि-लाभ दोनों की प्राप्ति होती है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बाधाएँ आती हैं। तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ कमी रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के विषय में असन्तोष रहता है। दसवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी में वृद्धि होती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन सुख-दुःखपूर्ण बना रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

सिंहलग्न : तृतीयभाव : शनि

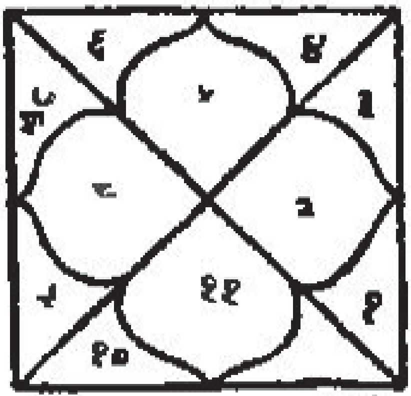

६२६

तीसरे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के प्रभाव तथा पराक्रम में बहुत वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा स्त्री-पक्ष पर विशेष प्रभाव बना रहता है। दैनिक आमदनी भी अच्छी रहती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ रहती हैं।

सातवीं नीचदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी आती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण परेशानी भी रहती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

सिंहलग्न : चतुर्थभाव : शनि

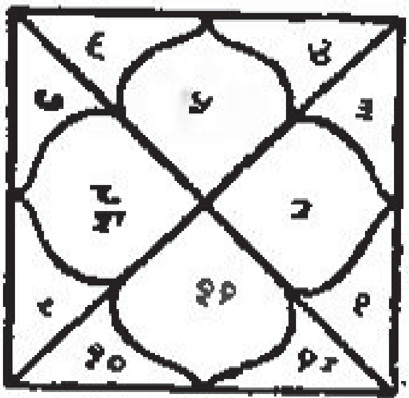

६२७

चौथे भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है। स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी असन्तोष रहता है।

तीसरी दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष पर प्रभाव रहता है, परन्तु कुछ कठिनाइयों के साथ शत्रुओं पर विजय मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। दसवीं दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में रोग रहता है तथा सौन्दर्य में कुछ कमी आती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

सिंह लग्न : एकादशभाव : शनि

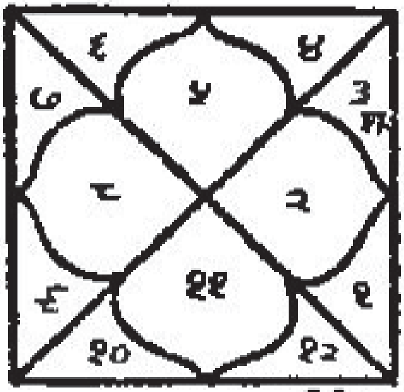

६३४

ग्यारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब रहती है। शत्रु-पक्ष से भी विशेष लाभ होता है। कुछ परेशानियों के साथ स्त्री का सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी अच्छी सफलता मिलती है।

तीसरी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा रोग का शिकार बनना पड़ता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से पुरातत्त्व में कमी आती है तथा आयु के विषय में भी चिन्ताएँ बढ़ जाती हैं।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : शनि

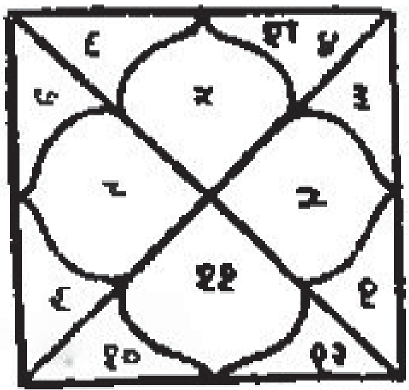

६३५

बारहवें भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी संबंधों से कुछ लाभ होता है। शत्रुपक्ष से परेशानी भी मिलती है।

तीसरी मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-जन की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। दसवीं नीच-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म की भी हानि होती है। ऐसा व्यक्ति स्त्री-पक्ष तथा व्यवसाय से कष्ट पाने वाला, अपयशी तथा रोगी होता है।

'सिंह' लग्न में 'राहु'

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

सिंह लग्न : प्रथमभाव : राहु

६३६

पहले भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव के जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा सुख में कमी आती है तथा कभी-कभी घोर कष्टों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों तथा साहस के सहारे आगे बढ़ता है तथा भीतरी चिन्ताओं से चिन्तित भी बना रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वितीयभाव : राहु

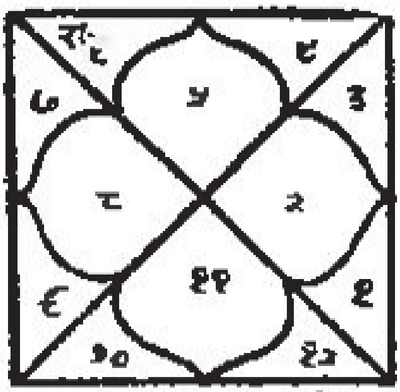

६३७

दूसरे भाव में मित्र बुध को राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के सुख में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। कभी-कभी उसे घोर आर्थिक कष्ट भी उठाना पड़ता है तथा ऋण-ग्रस्त भी होना पड़ता है तो कभी आकस्मिक धन का लाभ भी होता रहता है। ऐसा व्यक्ति चतुर तथा चालाक होता है तथा धन-वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम करता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

सिंह लग्न : तृतीयभाव : राहु

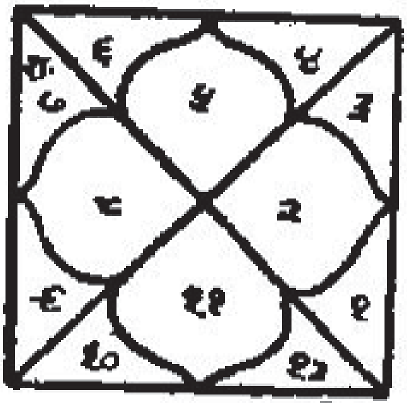

६३८

तीसरे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन की ओर से कुछ कष्ट प्राप्त होता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, धैर्यवान् तथा परिश्रमी होता है। वह गुप्त युक्तियों द्वारा गंभीरतापूर्वक अपनी स्वार्थ-सिद्धि करता है तथा दृढ़ निश्चयी होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

सिंह लग्न : चतुर्थभाव : राहु

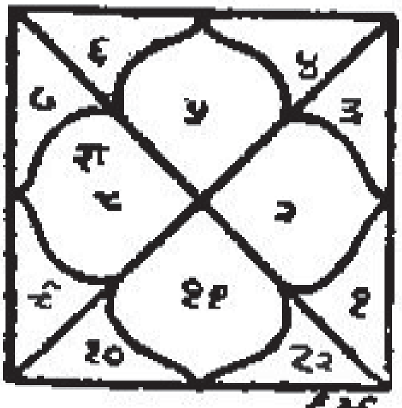

६३९

चौथे भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को मातृ पक्ष से कष्ट मिलता है तथा भूमि, भवन आदि के सुख में बाधा उत्पन्न होती है। उसे परदेश में जाकर रहना पड़ता है। परन्तु वह हिम्मत, गुप्त युक्ति एवं धीरज के साथ सुख के साधनों को जुटाता तथा संकटों का सामना करता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

सिंह लग्न : पंचमभाव : राहु

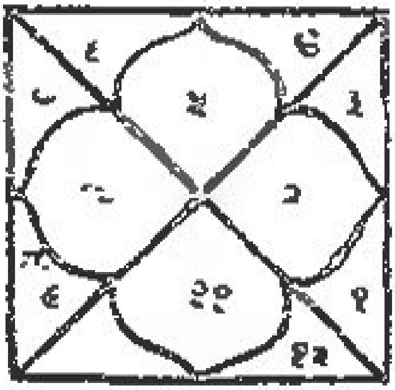

पाँचवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या की कमी रहती है। वह युक्ति-बल से अपनी अयोग्यता को छिपाने का प्रयत्न करता है। परन्तु उसकी वाणी में विनम्रता, शिष्टता एवं सत्य का अभाव रहता है। वह गुप्त युक्तियों से स्वार्थ-सिद्धि करता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

सिंह लग्न : षष्ठभाव : राहु

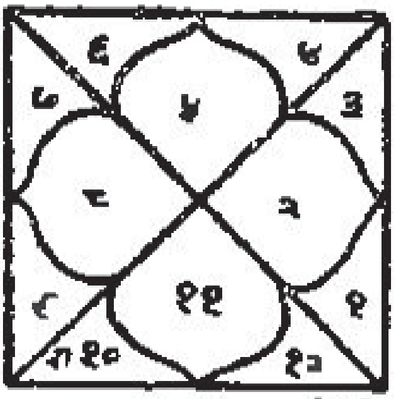

छठे भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक युक्ति-बल से शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे शत्रुओं द्वारा अधिक परेशान भी किया जाता है। वह बड़ा हिम्मती, बहादुर, धैर्यवान् तथा साहसी होता है। झगड़े के समय वह अपनी बहादुरी का प्रदर्शन करता है। उसे अपनी ननसाल के पक्ष से हानि भी उठानी पड़ती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

सिंह लग्न : सप्तमभाव : राहु

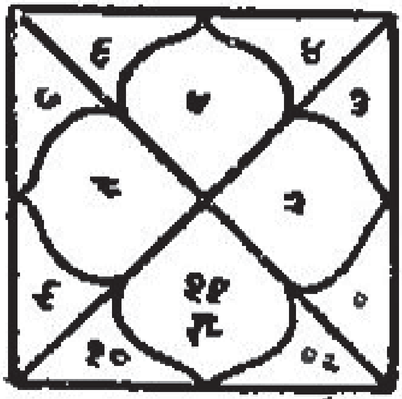

सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी ओर परेशानियाँ आती रहती हैं, परन्तु वह बड़ी हिम्मत तथा धैर्य के साथ उनका मुकाबला करता है। कभी-कभी संकटों से बहुत घिर जाता है, किन्तु गुप्त युक्तियों द्वारा उन्हें पार कर जाता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

सिंह लग्न : अष्टमभाव : राहु

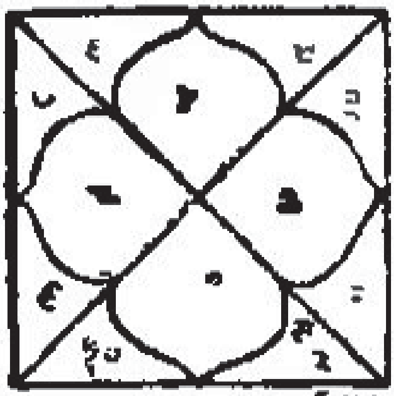

६७७

आठवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने जीवन में अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है। उसके पेट के निम्न भाग में विकार रहता है तथा उसे चिन्ताएँ एवं परेशानियाँ घेरे रहती हैं। उसे पुरातत्त्व की हानि भी उठानी पड़ती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

सिंह लग्न : नवमभाव : राहु

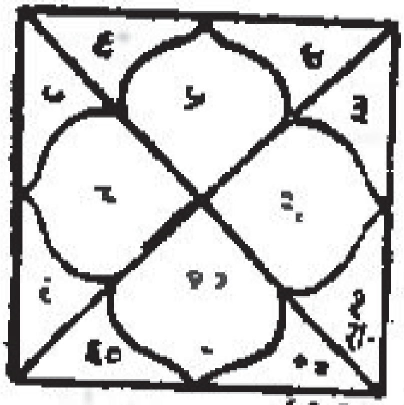

६७८

नवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में अनेक बार रुकावटें आती हैं तथा परेशानियाँ उठ खड़ी होती हैं। उसे धर्म-पालन में अरुचि रहती है।

ऐसा व्यक्ति अपने भाग्य की वृद्धि के लिए अनेक प्रकार की युक्तियों का सहारा लेता है तथा धैर्यवान्, हिम्मती एवं साहसी होने के कारण परेशानियों को हटाने में कुछ सफल भी हो जाता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

सिंह लग्न : दशमभाव : राहु

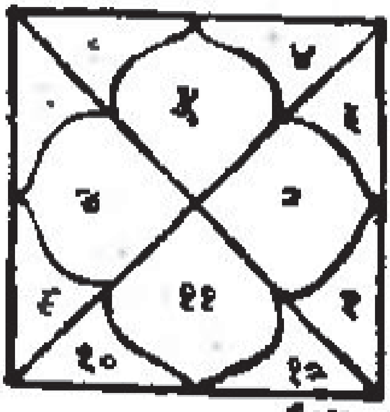

६७९

दसवें भाव में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में कमी रहती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। परन्तु गुप्त युक्तियों के बल पर वह अनेक कठिनाइयों को पार कर जाता है तथा कुछ उन्नति भी प्राप्त कर लेता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

सिंह लग्न : एकादशभाव : राहु

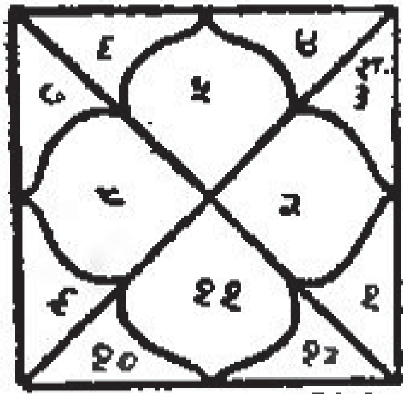

६५९

ग्यारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव के जातक की आमदनी में बहुत वृद्धि होती है तथा कभी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी होता है। वह अपने धैर्य, साहस, परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर लाभ को बढ़ाता रहता है, परन्तु कभी-कभी उसे हानि भी उठानी पड़ती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : राहु

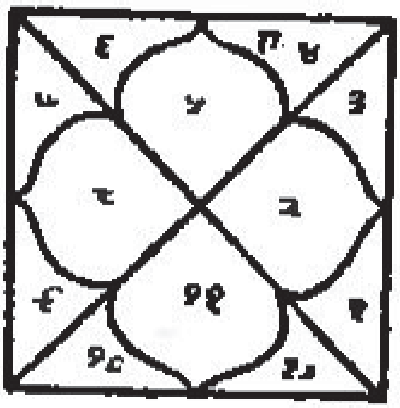

६६०

बारहवें भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने के लिए हर समय चिन्तित रहना पड़ता है तथा कभी-कभी घोर कष्टों का सामना भी करना पड़ता है।

उसे बाहरी सम्बन्धों से भी हानि पहुँचती है। परन्तु गुप्त युक्तियों, परिश्रम तथा साहस के बल पर वह थोड़ी-बहुत सफलता भी प्राप्त कर लेता है।

'सिंह' लग्न में 'केतु' का फलादेश

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

सिंह लग्न : प्रथमभाव : केतु

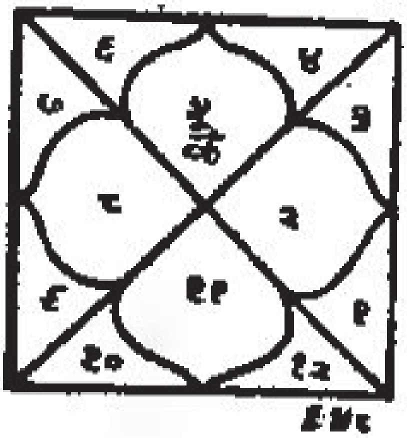

६६१

पहले भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य में कमी आती है तथा कभी बाहरी चोट भी लगती है, जिसका शरीर पर स्थायी चिह्न बन जाता है।

ऐसा व्यक्ति भीतर के काफी चिन्तित रहता है तथा सुख पाने के लिए कठिन परिश्रम करता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

सिंह लग्न: द्वितीयभाव: केतु

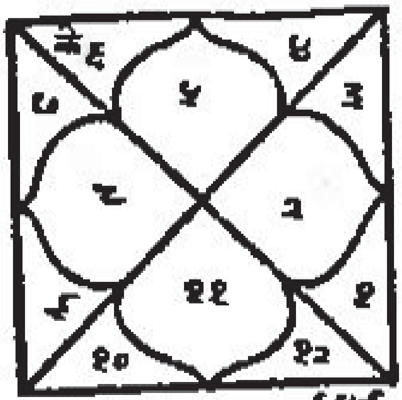

६७९

दूसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की धन-संचय में कमी रहती है, जिसके कारण उसे अनेक कठिनाइयों तथा चिन्ताओं का सामना करना पड़ता है। वह धन-वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा गुप्त युक्तियों के आश्रय से प्रतिष्ठा को बढ़ाने का प्रयत्न भी करता है। उसे पूर्ण कौटुम्बिक सुख भी प्राप्त नहीं होता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

सिंह लग्न: तृतीयभाव: केतु

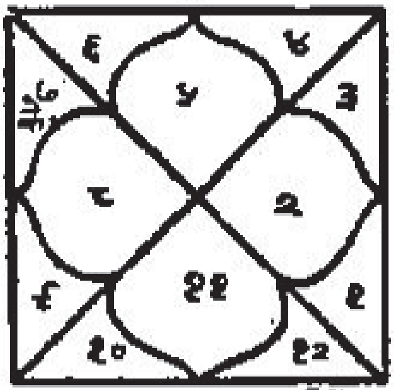

६८०

तीसरे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों से कष्ट प्राप्त होता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

ऐसा व्यक्ति निडर, साहसी, पराक्रमी, परिश्रमी, चतुर तथा शक्तिशाली होता है, साथ ही हठी तथा लापरवाह भी रहता है। वह प्रत्येक कार्य को अपने बाहुबल से ही पूरा करता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

सिंह लग्न: चतुर्थभाव: केतु

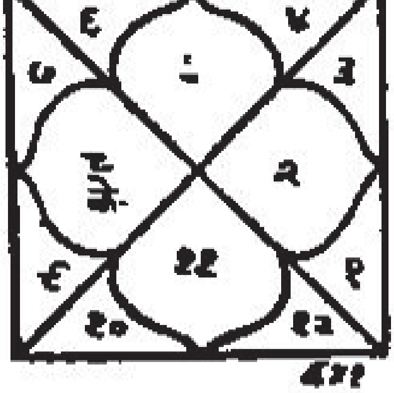

६८१

चौथे भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की माता के सुख में कमी आती है। घरेलू सुख में अशान्ति रहती है तथा भूमि-भवन का सुख भी नहीं मिलता। उसे परदेश में जाकर रहना पड़ता है।

ऐसा व्यक्ति कठिन परिश्रमी तथा गुप्त युक्तियों का प्रयोग करने वाला होता है, फिर भी प्रायः परेशान ही बना रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

सिंह लग्न : पंचमभाव : केतु

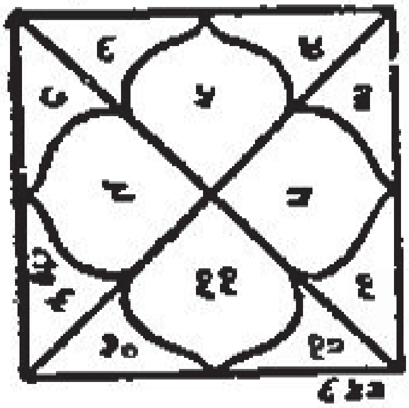

६४२

पाँचवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष से शक्ति मिलती है, परन्तु कभी-कभी कष्ट भी उठाने पड़ते हैं। विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में परिश्रम करने पर भी अधिक सफलता नहीं मिलती। ऐसा व्यक्ति स्वयं को बुद्धिमान् भी समझता है, परन्तु उसकी वाणी में प्रभाव नहीं होता।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

सिंह लग्न : षष्ठभाव : केतु

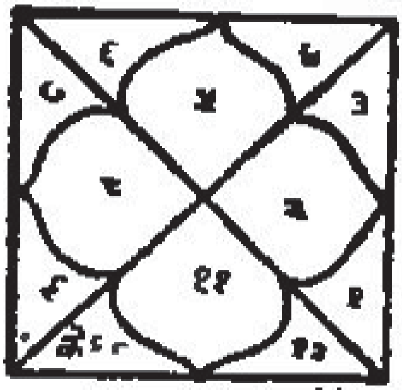

६४३

छठे भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम द्वारा शत्रु पर विजय प्राप्त करता है। वह बड़ा हिम्मती तथा धैर्यवान् होता है। गुप्त युक्तियों तथा आन्तरिक साहस के बल पर वह निरन्तर आगे बढ़ने का प्रयत्न करता है तथा मुसीबतें आने पर भी घबराता नहीं है। उसे अपने ननसाल पक्ष से हानि भी उठानी पड़ती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

सिंह लग्न : सप्तमभाव : केतु

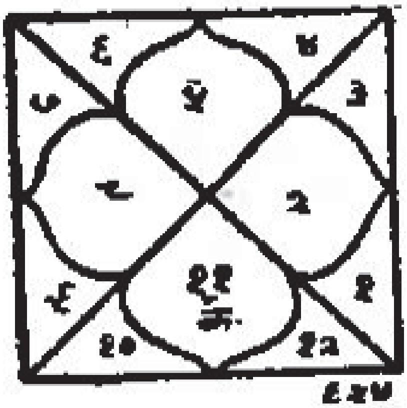

६४४

सातवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री-सुख तथा व्यवसाय-पक्ष में कमी का सामना करना होता है। वह अपने साहस, धैर्य तथा गुप्त युक्तियों के बल पर गृहस्थी को चलाता है। कभी-कभी बड़ी मुसीबतों में भी फँसता है, परन्तु धैर्य तथा साहस को नहीं छोड़ता और अन्त में सफलता पाकर ही रहता है। उसकी मूत्रेन्द्रिय में विकार होने की संभावना भी रहती है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

सिंह लग्न : अष्टमभाव : केतु

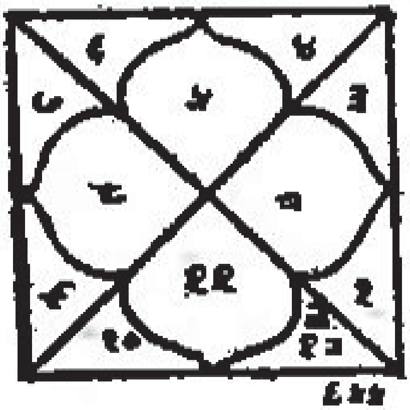

६४५

आठवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को जीवन में अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि भी उठानी पड़ती है। वह सदैव चिन्तित रहता है, फिर भी धैर्य और साहस को नहीं छोड़ता। और परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर वह कठिनाइयों पर विजय पाता है। उसके पेट के निम्न भाग में कुछ विकार भी रहता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

सिंह लग्न : नवमभाव : केतु

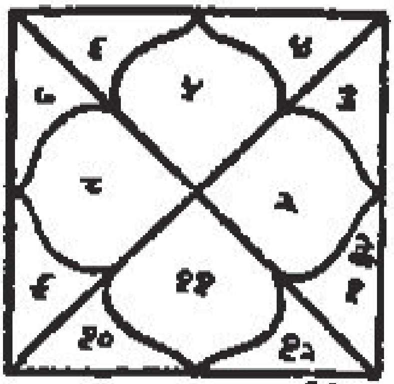

६५६

नवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में बाधाएँ आती हैं तथा धर्म के पक्ष में भी कमजोरी रहती है।

वह कठिन परिश्रम करने पर भी यशस्वी नहीं बन पाता तथा कभी-कभी घोर संकटों में पड़ जाता है। भाग्यहीन होने पर भी वह अपने परिश्रम, धैर्य, साहस तथा गुप्त युक्तियों के बल पर कुछ सफलता एवं शक्ति प्राप्त कर लेता है।

'सिंह' लग्न' की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का 'फलादेश

सिंह लग्न : दशमभाव : केतु

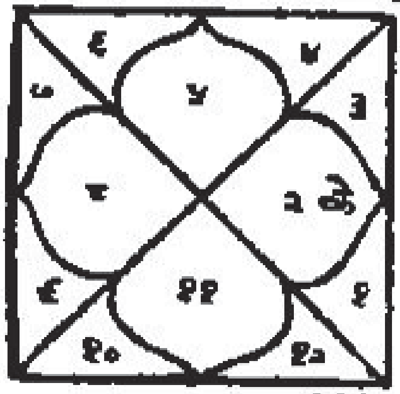

६५७

दसवें भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता से कुछ कष्ट मिलता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए घोर परिश्रम करना पड़ता है।

वह अपने धैर्य, साहस, चातुर्य, बुद्धि-बल तथा परिश्रम द्वारा कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ता है और तरक्की भी करता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

सिंह लग्न : एकादशभाव : केतु

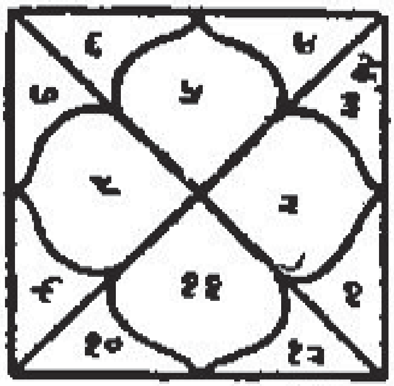

६५८

ग्यारहवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को धन की कमी का दुःख विशेष रूप से अनुभव होता है तथा वह अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए घोर परिश्रम तथा संघर्ष करता है। वह लाभ उठाने के लिए उचित-अनुचित का विचार भी नहीं करता तथा गुप्त युक्तियों एवं धैर्य के बल पर कठिनाइयों को पार कर लेता है।

'सिंह' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु का फलादेश

सिंह लग्न : द्वादशभाव : केतु

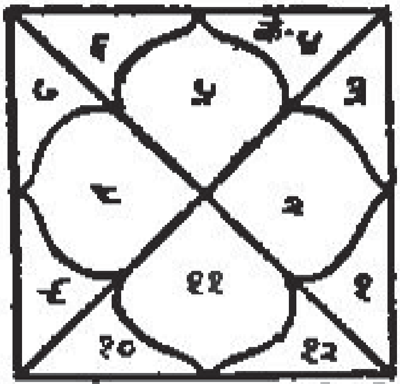

६५९

बारहवें भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अपने खर्च को बड़ी कठिनाई से चला पाता है। उसे मानसिक चिन्ताएँ तथा परेशानियाँ घेरे रहती हैं। वह अनेक बार संकटों तथा हानियों का सामना करता है, परन्तु अपने गुप्त धैर्य, युक्तिबल, परिश्रम तथा साहस के बल पर उन कठिनाइयों पर विजय पाता हुआ अपने काम को जैसे-तैसे चलाता रहता है।

'कन्या' लग्न

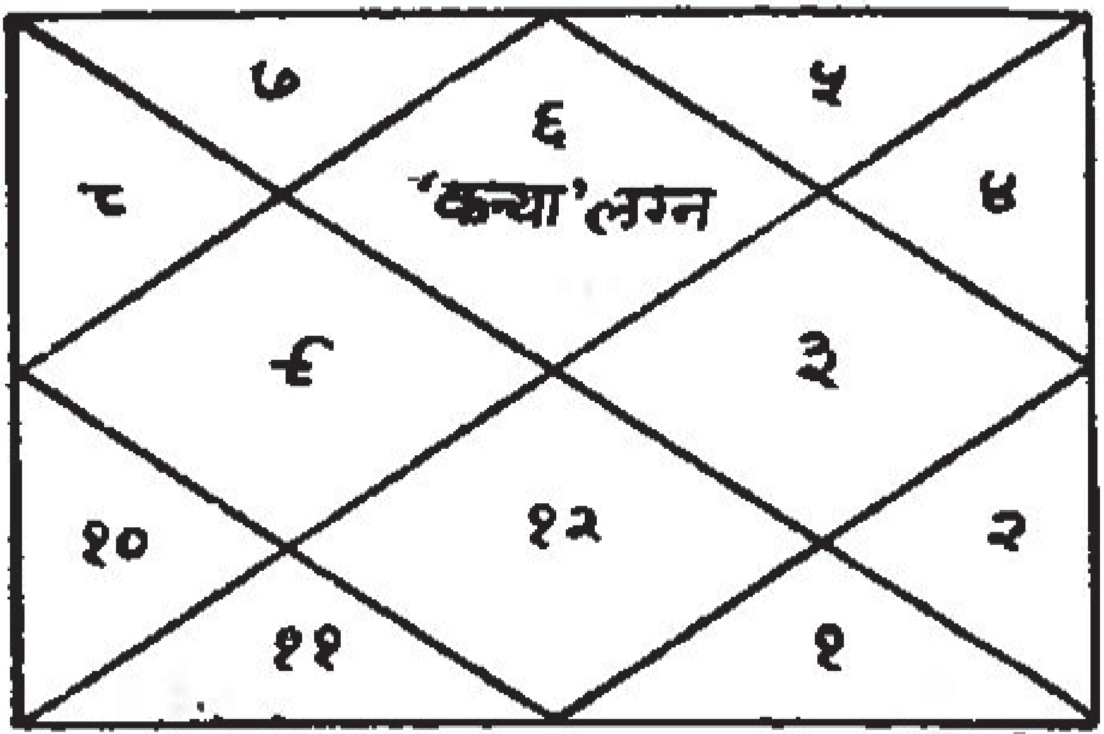

६६०

['कन्या' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न ग्रहों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'कन्या लग्न' का फलादेश

'कन्या' लग्न में जन्म लेने वाले जातक का शरीर सामान्य अथवा स्थूल और सुन्दर होता है। इसकी आँखें बड़ी-बड़ी होती हैं। यह कफ एवं पित्त प्रकृतिवाला, सत्यभाषी, प्रियवादी, गंभीर, भावुक-मिजाज, अपने मन की बात को छिपाने वाला, सदैव प्रसन्न रहने वाला, चतुर, काम-क्रीड़ा-कुशल, मायावी, भोगी, विचारशील, डरपोक, यात्रा-प्रेमी, गणितज्ञ, धर्म में रुचि रखने वाला तथा अनेक प्रकार के गुणों तथा कला-कौशलों से युक्त होता है।

इसे सुन्दर स्त्री प्राप्त होती है तथा कन्या-सन्तति अधिक होती है। यह भ्रातु-द्रोही तथा स्त्री द्वारा पराजित भी होता है।

इस लग्न वाला जातक बाल्यावस्था में सुखी, मध्यमावस्था में सामान्य तथा अन्तिमावस्था में दुःख भोगने वाला होता है। इसका भाग्योदय २४ से ३६ वर्ष की आयु के बीच होता है। इसी अवधि में यह अपने धर्म तथा ऐश्वर्य की वृद्धि करता है, परन्तु यह अन्त तक नहीं टिक पाता।

'कन्या' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६१ से ७६८ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'कन्या' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६६१ से ६७२ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों की अपनी गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६६१
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६६२
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६६३
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६६४
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६६५
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६६६
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६६७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६६८
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६६९
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६७०
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६७१
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६७२

'कन्या' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६७३ से ६८४ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६७३
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६७४
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६७५
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६७६
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६७७
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६७८
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६७९
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६८०
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६८१
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६८२
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६८३
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६८४

'कन्या' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६८५ से ६९६ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६८५
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६८६
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६८७
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ६८८
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ६८९
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ६९०
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ६९१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ६९२
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ६९३
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ६९४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ६९५
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ६९६

'कन्या' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६९७ से ७०८ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ६९७

(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ६९८

(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ६९९

(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७००

(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७०१

(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७०२

(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७०३

(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७०४

(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७०५

(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७०६

(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७०७

(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७०८

'कन्या' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७०९ से ७२० के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७०९

(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७१०

(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७११

(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७१२
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७१३
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७१४
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७१५
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७१६
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७१७
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७१८
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७१९
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७२०

'कन्या' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२१ से ७३२ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७२१
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७२२
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७२३
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७२४
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७२५
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७२६
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७२७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७२८
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७२९
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७३०
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७३१
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७३२

'कन्या' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७३३ से ७४४ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७३३
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७३४
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७३५
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७३६
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७३७
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७३८
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७३९
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७४०
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७४१
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७४२
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७४३
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७४४

'कन्या' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७४५ से ७५६ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७४५
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७४६
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७४७
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७४८
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७४९
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७५०
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७५१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७५२
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७५३
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७५४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७५५
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७५६

'कन्या' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१—'कन्या' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ७५७ से ७६८ के बीच देखना चाहिए।

२—'कन्या' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ७५७
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ७५८
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ७५९
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ७६०
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ७६१
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ७६२
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ७६३
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ७६४
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ७६५
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ७६६
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ७६७
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ७६८

'कन्या' लग्न में 'सूर्य'

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : सूर्य

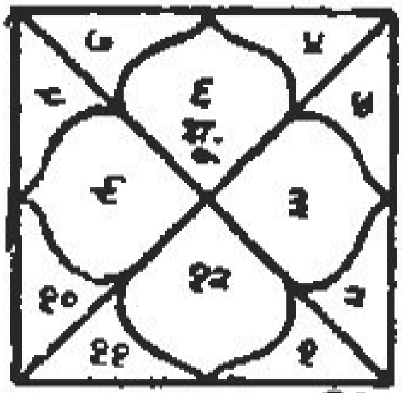

६६१

पहले भाव में जिस बुध की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक दुर्बल शरीर वाला, खूब खर्च करने वाला तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त करने वाला होता है। परन्तु कभी-कभी खर्च के कारण उसे परेशानी उठानी पड़ती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ हानि का सामना भी करना पड़ता है तथा असन्तोष भी बना रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

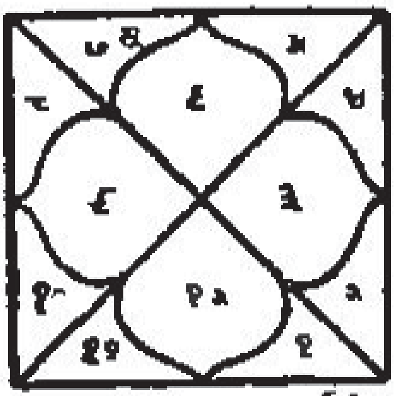

६६२

दूसरे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक की धन तथा कुटुम्ब की हानि होती है। बाहरी स्थानों से आर्थिक लाभ कम होता है, तथा खर्च के कारण परेशानी भी होती है।

सातवीं दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक को पुरातत्त्व तथा आयु का लाभ प्राप्त होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : सूर्य

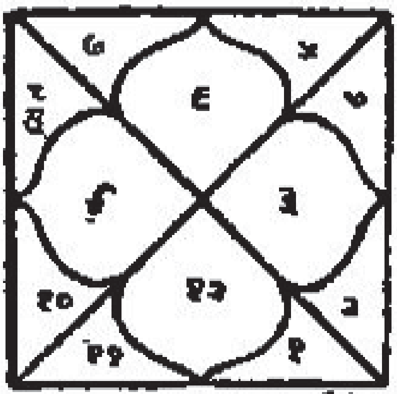

६६३

तीसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ न्यूनता आती है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ द्वारा जीवन में सफलताएँ प्राप्त करता है तथा अत्यन्त हिम्मती और प्रभावशाली होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन सामान्य ढंग से व्यतीत होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

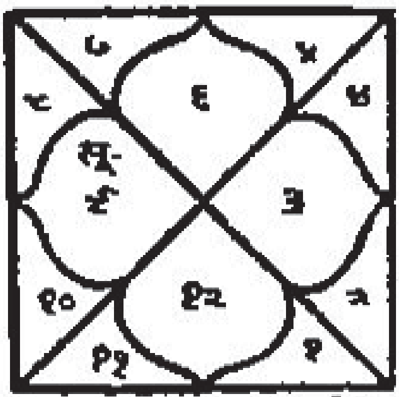

६६४

चौथे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। उसे बाहरी स्थानों से सुख तथा खर्च के लिए धन प्राप्त होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय-पक्ष से भी कुछ असन्तोष रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : सूर्य

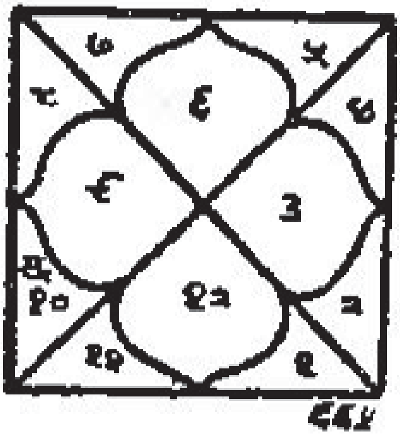

पाँचवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि तथा सन्तान में कमी रहती है तथा खर्च चलाने के लिए दिमाग में परेशानी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण सामान्य लाभ होता रहता है। ऐसा व्यक्ति चक्करदार बातें करने वाला तथा चंचल होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

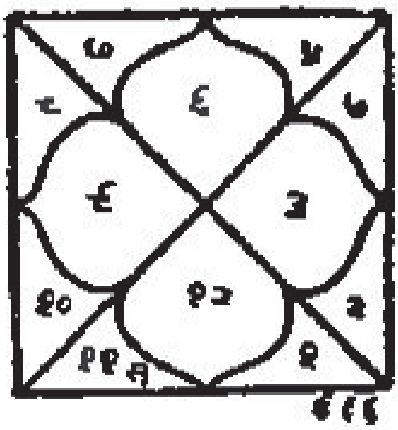

छठे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक शत्रुओं से परेशान रहता है तथा अधिक खर्च करके ही उन पर प्रभाव स्थापित कर पाता है। वह परिश्रम द्वारा अपना खर्च चलाता है तथा बाहरी सम्बन्धों से सामान्य लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक बना रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

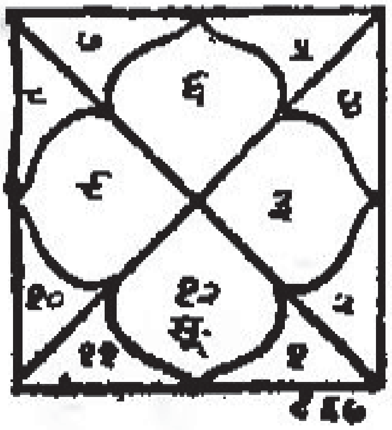

सातवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है। बाहरी स्थानों से लाभ के अतिरिक्त हानि भी होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के जातक का शरीर दुर्बल होता है तथा वह स्वभाव से चंचल, क्रोधी एवं धन की ओर से चिन्तित बना रहने वाला होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

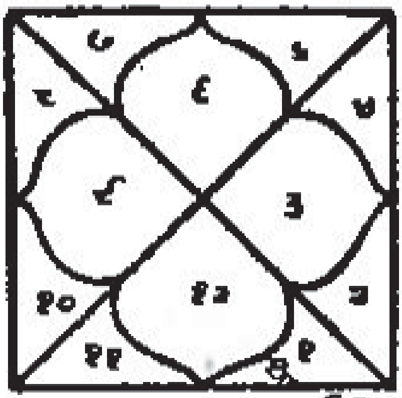

६६८

आठवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित उच्च 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आयु एवं पुरातत्त्व में कुछ कठिनाइयों के साथ वृद्धि होती है। खर्च की अधिकता एवं बाहरी संबंधों से लाभ होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन की हानि होती है एवं कौटुम्बिक सुख में कमी आती है। ऐसी गृह-स्थिति का जातक धन के विषय में बहुत चिन्तित बना रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : सूर्य

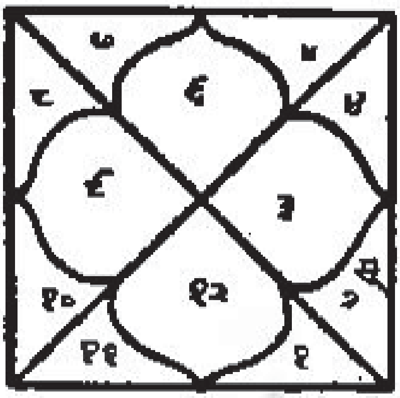

६६९

नवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी रहती है। ऐसे लोग प्रायः नास्तिक होते हैं। उन्हें बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख में कमी रहती है तथा पराक्रम की भी अधिक वृद्धि नहीं होती।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव : सूर्य

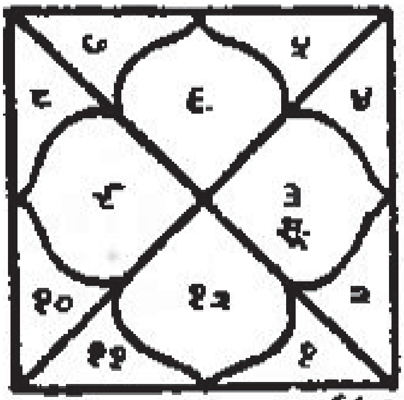

६७०

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में भी कुछ कमी बनी रहती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : सूर्य

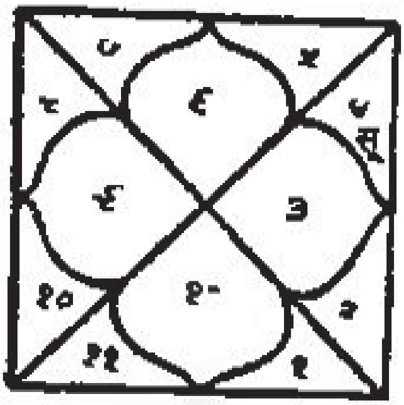

६७१

ग्यारहवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की पर्याप्त आमदनी होते हुए भी खर्च चलाने की चिन्ता बनी रहती है तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से लाभ, सुख तथा सम्मान मिलता है।

सातवीं शत्रु दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का क्षेत्र भी कमजोर रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : सूर्य

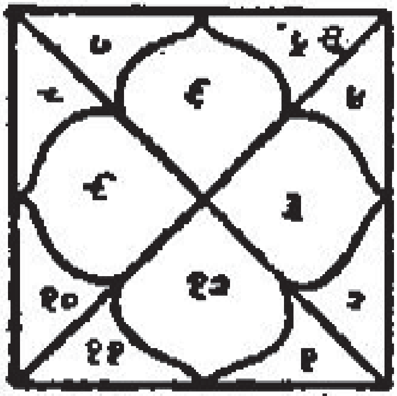

६७२

बारहवें भाव में स्वराशि-स्थित सूर्य के प्रभाव जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से लाभ एवं सम्मान भी मिलता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रुपक्ष एवं रोग आदि से काफी परेशानी होती है तथा खर्च भी अधिक होता है। फिर भी जातक अपना साहस बनाये रख कर शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित कर लेता है।

'कन्या' लग्न में 'चन्द्रमा'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

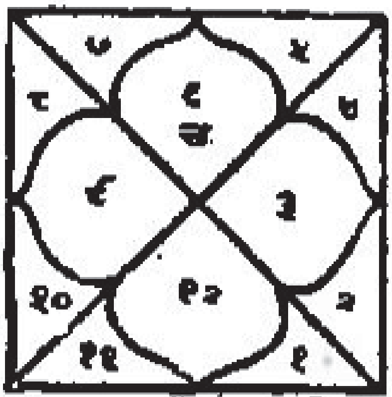

६७३

पहले भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, प्रसन्नता एवं मनोबल का लाभ होता है। वह परिश्रम द्वारा धन तथा यश कमाता है और प्रभावशाली बनता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से सुन्दरी स्त्री मिलती है तथा स्त्री-पक्ष एवं व्यवसाय से यथेष्ट लाभ होता है।

न्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

न्या लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

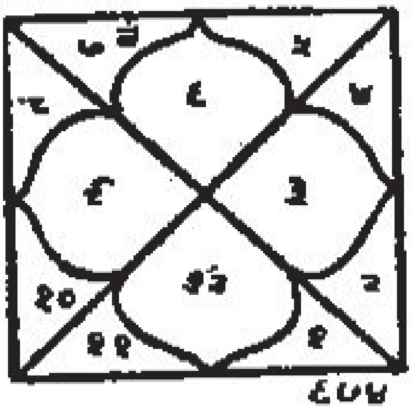

६०४

दूसरे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के धन-कुटुम्ब में वृद्धि होती है तथा धन का संचय भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से पुरातत्त्व एवं आयु में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, सम्पन्न तथा यशस्वी जीवन बिताता है।

न्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

न्या लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

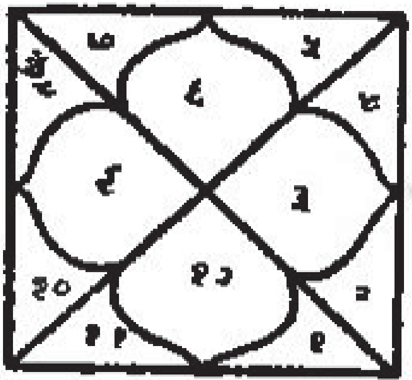

६०५

तीसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर नीच के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में कमी आती है, धनोपार्जन में कठिनाइयाँ आती हैं तथा चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

सातवीं उच्च दृष्टि से नवमभाव को देखने से परिश्रम द्वारा भाग्योन्नति होती है तथा धर्म-पालन में भी रुचि बनी रहती है।

न्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

न्या लग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र

चौथे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन आदि का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है और सर्वंव प्रसन्न बना रहता है।

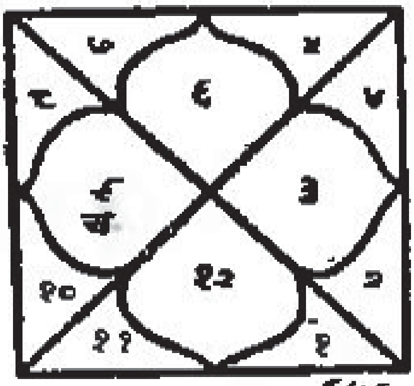

६०६

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी यश, सम्मान, सफलता, उन्नति एवं प्रभाव की वृद्धि होती है।

न्या' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

न्या लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

पाँचवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की सन्तान तथा विद्या-बुद्धि पक्ष की वृद्धि होती है तथा उसी के द्वारा धन-लाभ भी होता है।

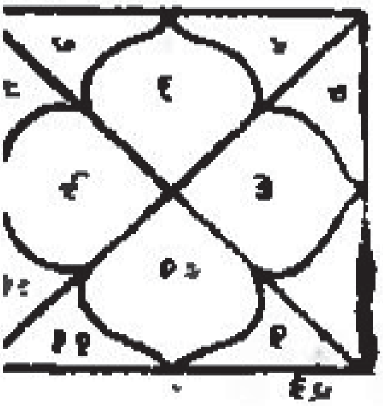

६०७

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादशभाव को देखने से आमदनी में भी वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी जीवन बिताता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

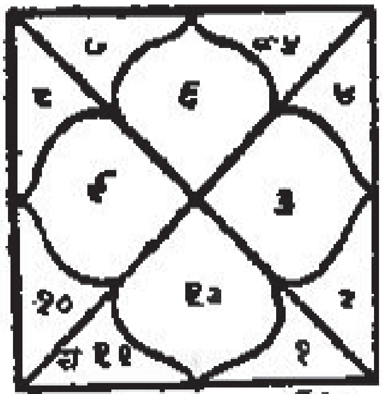

६७८

छठे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष द्वारा मानसिक अशान्ति बनी रहती है, परन्तु वह अपनी विनम्रता द्वारा शत्रु-पक्ष पर सफलता पाता है और उससे लाभ भी उठाता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी मिलता रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

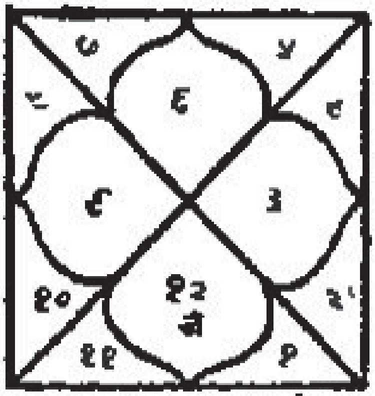

६७९

सातवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को सुन्दर पत्नी मिलती है, भोगादि के श्रेष्ठ साधन प्राप्त होते हैं तथा व्यवसाय में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, शक्ति एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक सुन्दर, स्वस्थ, सुखी तथा सम्पन्न होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

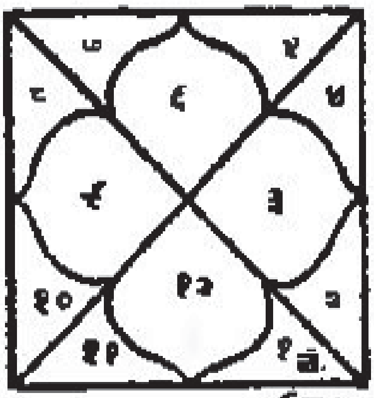

६८०

आठवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की दीर्घायु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। भाव के सातवीं में कुछ कठिनाइयां आती हैं, परन्तु बाहरी स्थानों से लाभ होता है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : चन्द्र

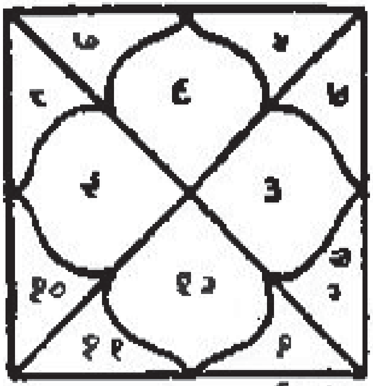

९२६

नवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को धन का यथेष्ट लाभ होता है तथा आकस्मिक दैवी सहायताएँ भी मिलती रहती हैं।

सातवीं नीच-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी आती है तथा पराक्रम की भी अधिक वृद्धि नहीं हो पाती।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव : चन्द्र

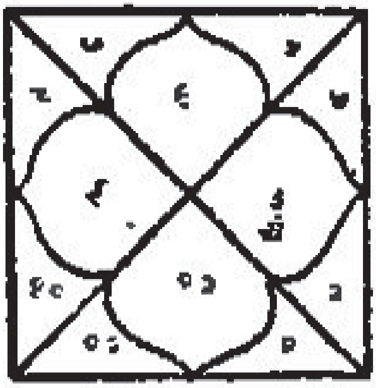

९२७

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' से प्रभाव से जातक को राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष से पूर्ण लाभ तथा सम्मान मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से भूमि, भवन तथा माता का सुख भी पर्याप्त मिलता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : चन्द्र

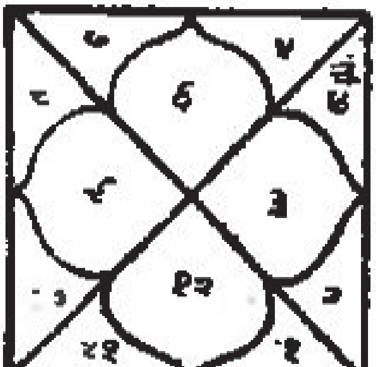

९८३

ग्यारहवें भाव में स्वराशिस्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है और वह अपने मनोबल द्वारा पर्याप्त धन कमाता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या में कमी रहती है तथा सन्तानों से वैमनस्य रहता है, परन्तु वह अपनी चतुराई द्वारा अन्य क्षेत्रों में उन्नति करता रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : चन्द्र

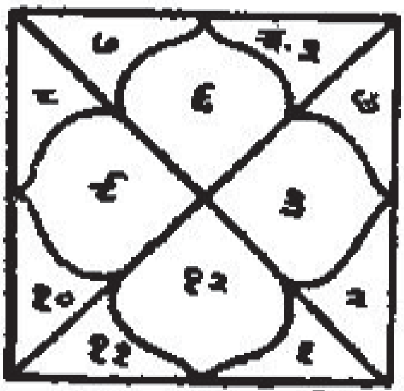

६२५

बारहवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से पर्याप्त लाभ भी होता है। खर्च के कारण कभी-कभी मन में चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में धन के खर्च एवं विनम्रता से सफलता मिलती है। बीमारी तथा अन्य झगड़ों में भी खर्च होता है।

'कन्या' लग्न में मंगल

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : मंगल

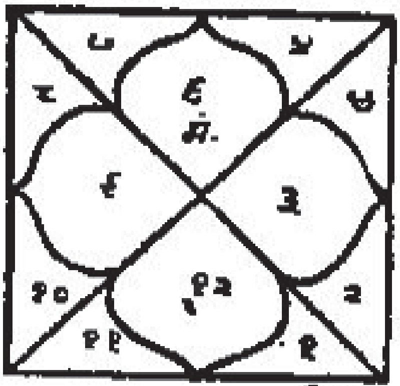

६२४

पहले भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'मंगल' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। चौथी मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कुछ कमी आती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। आठवीं दृष्टि से स्वराशि के अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन संघर्षपूर्ण रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : मंगल

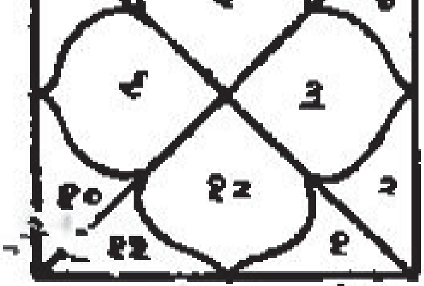

६८६

दूसरे भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी आती है। परन्तु धन का लाभ होता है। चौथी उच्च दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में प्रयत्न करने से लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। नवीं शत्रु-दृष्टि से देखने से धर्म-पालन तथा भाग्योन्नति में कुछ कमियाँ बनी रहती हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : मंगल

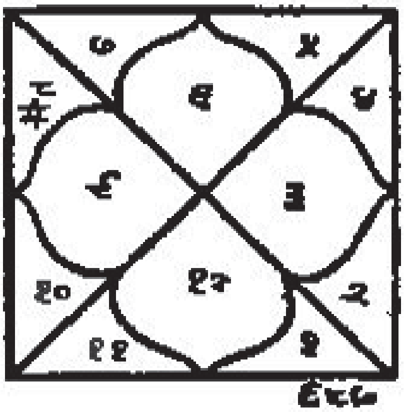

तीसरे भाव में स्वराशि-स्थित व्ययेश 'मंगल' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में तो वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। आयु तथा पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है।

चौथी शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव के देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवम-भाव को देखने से भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में कठिनाइयाँ आती हैं। आठवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक परिश्रम करने पर भी थोड़ी सफलता मिलती है तथा पिता का सुख भी कम ही रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : मंगल

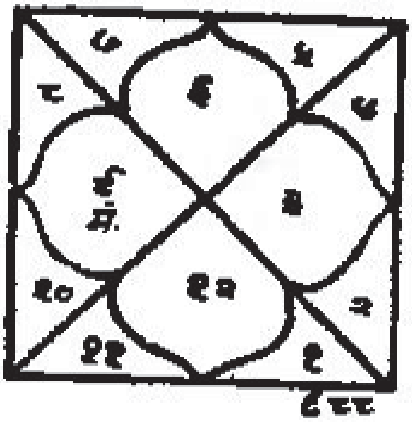

चौथे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'मंगल' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा भाई-बहिनों के सुख में कमी आती है, परन्तु पुरातत्त्व का लाभ होता है।

चौथी मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

आठवीं नीच-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ के मार्ग में रुकावटें आती हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : मंगल

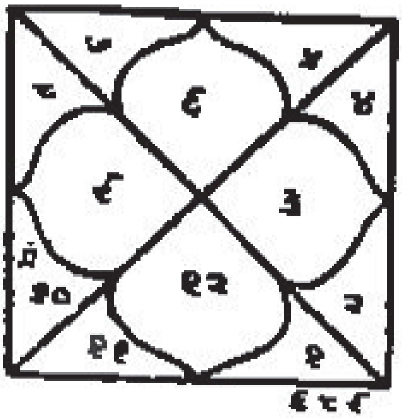

पाँचवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान-पक्ष की शक्ति तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति बढ़ती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आय के मार्ग में कठिनाइयाँ आती हैं। आठवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा प्रभाव बढ़ता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : मंगल

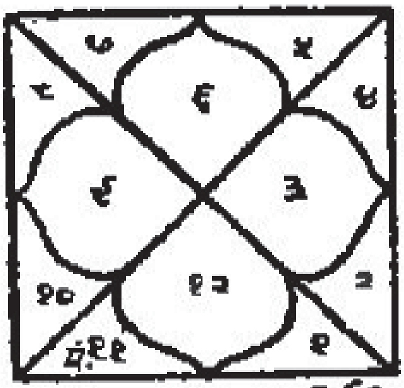

६६०

छठे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर विजय पाता है। वह परिश्रमी तथा पुरुषार्थी होता है, परन्तु भाई-बहिनों में कुछ विरोध रहता है। आयु तथा पुरातत्त्व का अच्छा लाभ होता है।

चौथी शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कमजोरी रहती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक स्वास्थ्य में कमी तथा रक्त-विकार आदि रोग रहते हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : मंगल

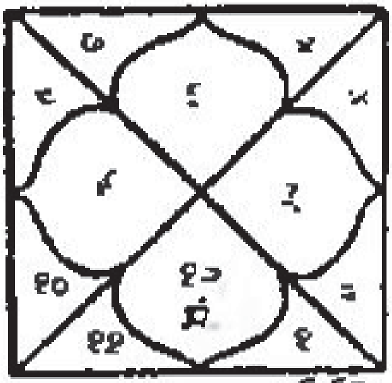

६६१

सातवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कष्ट मिलता है तथा आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहिनों के सुख में न्यूनाधिकता बनी रहती है।

चौथी मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथम-भाव को देखने से शरीर में कुछ परेशानियाँ रहती हैं। आठवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीय-भाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी बनी रहती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : मंगल

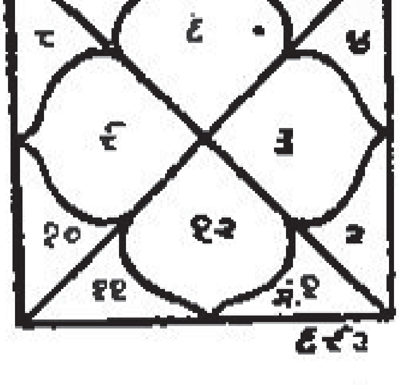

६६२

आठवें भाव में स्वराशि में स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। चौथी नीच दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ असंतोष रहता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि के तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है तथा गुप्त हिम्मत बढ़ती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : मंगल

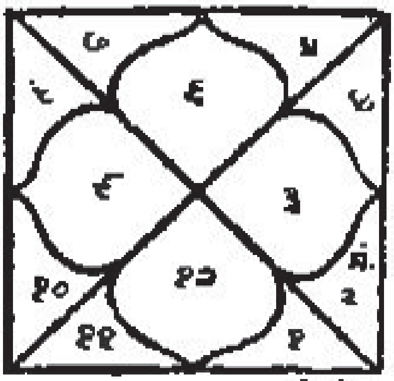

६८३

नवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित षष्टमेश 'मंगल' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म के पक्ष में कुछ कमी आती है तथा आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। चौथी मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्च अधिक रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले तृतीय भाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा कुछ कठिनाइयों के साथ भाई-बहिनों का सुख मिलता है। आठवीं मित्र दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से कुछ कमी के साथ माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है। सामान्यतः जीवन शानदार बना रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव : मंगल

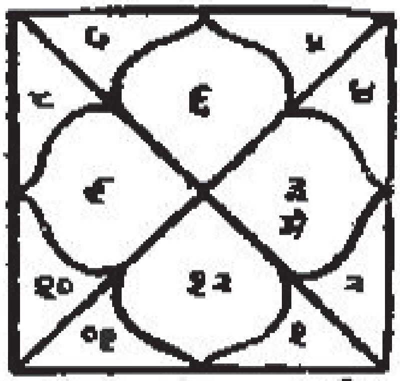

६८४

दसवें भाव में शत्रु 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है।

चौथी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर विकार-ग्रस्त रहता है, जब कि हिम्मत बढ़ी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। आठवीं उच्चदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है तथा विद्या-बुद्धि की पर्याप्त वृद्धि होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : मंगल

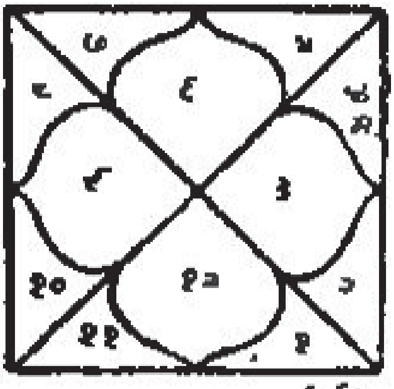

६८५

ग्यारहवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को लाभके क्षेत्र में कुछ कठिनाई आती है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कमी आती है। सातवीं उच्च दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या एवं बुद्धि की उन्नति होती है तथा सन्तान के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

आठवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। ऐसा जातक बड़ा हिम्मती, बहुत बोलने वाला तथा बहादुर होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : मंगल

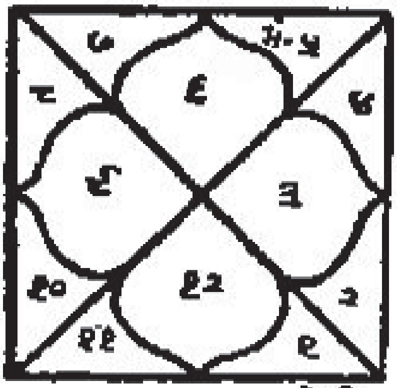

६८६

बारहवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से कुछ शक्ति भी मिलती है। आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं। चौथी दृष्टि से स्वराशि वाले तृतीयभाव को देखने से पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख में सामान्य वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुपक्ष पर कुछ कठिनाइयों के बाद प्रभाव स्थापित हो पाता है। आठवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री पक्ष में कुछ कठिनाई रहती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम तथा कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है।

'कन्या' लग्न में 'बुध'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : बुध

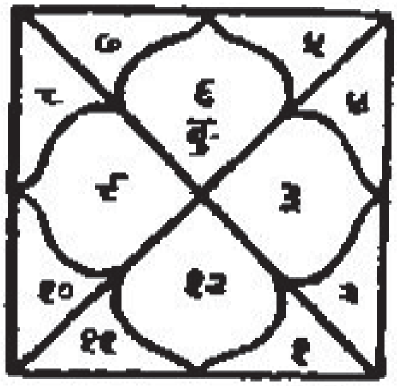

६८७

पहले भाव में स्वराशि-स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के शरीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है। राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक आय के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति अत्यधिक स्वाभिमानी होता है, इस कारण व्यवसाय में अधिक उन्नति नहीं कर पाता।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : बुध

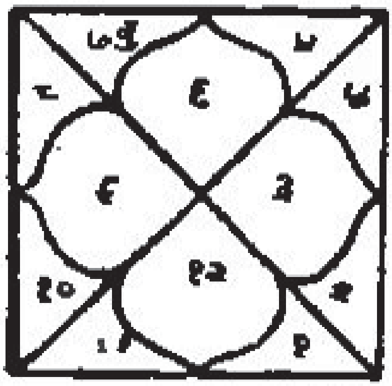

६८८

दूसरे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख में वृद्धि होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है।

ऐसे व्यक्ति का रहन-सहन ऐश्वर्यशाली होता है। वह धनी तथा सुखी भी रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : बुध

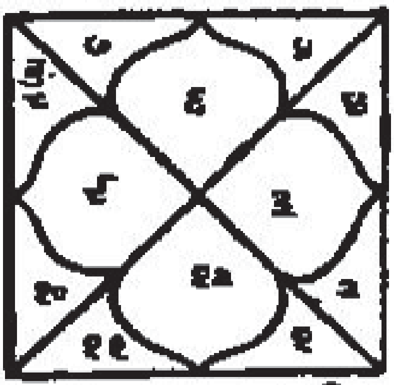

८९९

तीसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है। राज्य, व्यवसाय तथा पिता के पक्ष में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य की उन्नति होती है।

ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, धर्मात्मा, यशस्वी तथा प्रभावशाली होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : बुध

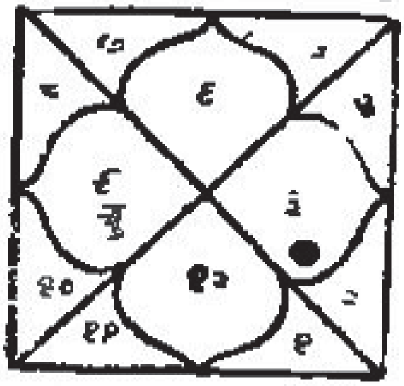

९००

चौथे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। शारीरिक सौन्दर्य तथा सुख में भी वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादशभाव को देखने से राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सब प्रकार की सफलताएँ प्राप्त होती हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : बुध

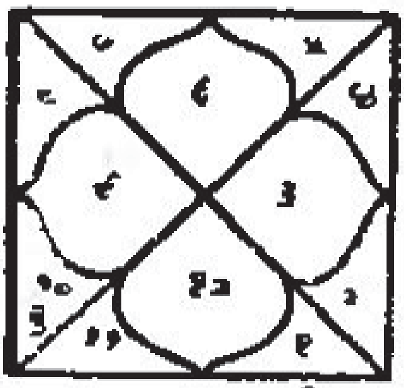

९०१

पाँचवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का पर्याप्त सुख मिलता है और उच्च पद की प्राप्ति होती है।

सातवीं समदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ वृद्धि होती है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

ऐसा व्यक्ति सुन्दर, सुखी, धनी तथा स्वाभिमानी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : बुध

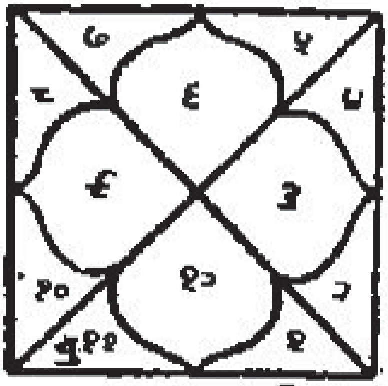

७०१

छठे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में विवेक एवं युक्तियों के द्वारा सफलताएँ मिलती हैं। ननसाल-पक्ष से भी लाभ होता है। परन्तु शारीरिक सौन्दर्य तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ असन्तोष रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से अच्छा लाभ एवं सुख प्राप्त होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : बुध

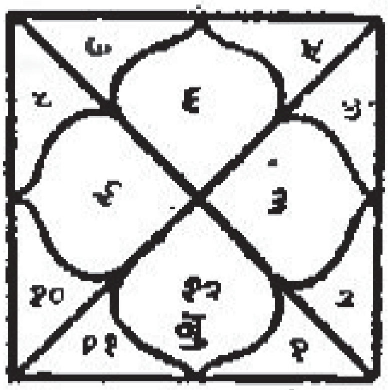

७०२

सातवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक अपनी पत्नी के व्यक्तित्व के समक्ष स्वयं को कुछ हीन-सा अनुभव करता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिन परिश्रम करना पड़ता है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलताएँ प्राप्त होती हैं।

सातवीं उच्चदृष्टि से स्वराशि वाले प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव एवं मानसिक सुख-शान्ति में भी कुछ कमी रहती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : बुध

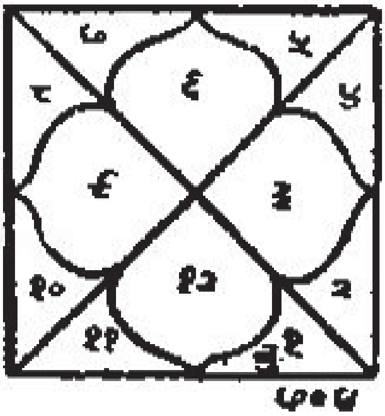

७०३

आठवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं। बाहरी सम्बन्धों से आजीविका चलती रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण गुप्त युक्तियों के आश्रय से धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब से प्रेम रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : बुध

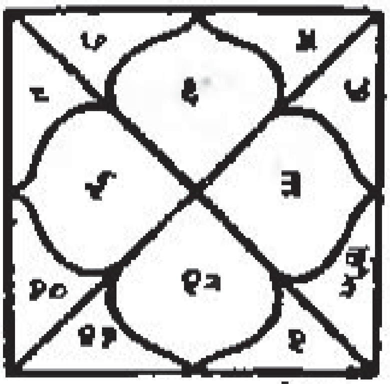

७०५

नवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है तथा राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सज्जन, सुखी, यशस्वी तथा धनी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्यालग्न : दशमभाव : बुध

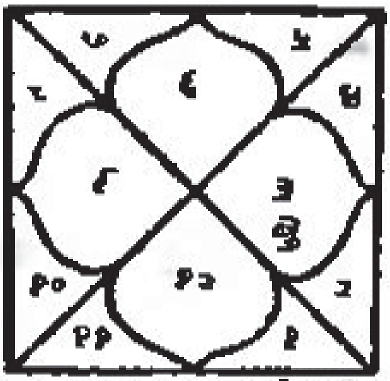

७०६

दसवें भाव में स्वक्षेत्री 'बुध' के प्रभाव से जातक को राज्य, पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता, यश तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति सुन्दर, यशस्वी, स्वाभिमानी तथा सुखी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन आदि का सुख भी पर्याप्त उपलब्ध होता है। घरेलू जीवन सुख, शान्ति तथा ऐश्वर्य से पूर्ण रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादश भाव : बुध

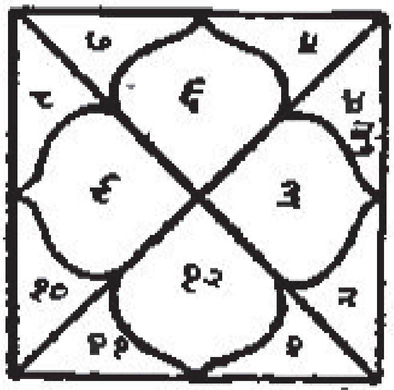

७०७

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ प्राप्त होती हैं। शारीरिक सौन्दर्य, मनोबल एवं सुख में भी वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में भी विशेष उन्नति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी, विद्वान् तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

कन्यालग्न : द्वादशभाव : बुध

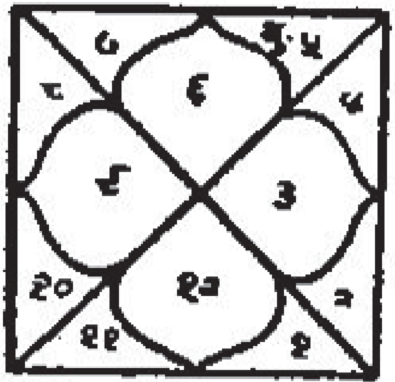

७०८

बारहवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्पर्क से सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। परन्तु पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में असन्तोष रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति दूरदर्शी, विवेकी तथा बुद्धिमान् होता है।

'कन्या' लग्न में 'गुरु'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्यालग्न : प्रथमभाव : बुध

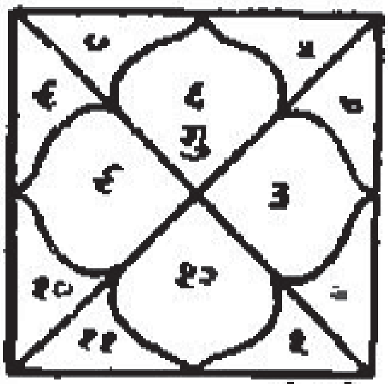

७०९

पहले भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। पाँचवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती रहती हैं। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखने से स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख मिलता है। नवीं समदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति एवं धर्म के क्षेत्र में बाधाएँ आती रहती हैं। परन्तु ऐसा व्यक्ति सज्जन तथा धनी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्यालग्न : द्वितीयभाव : बुध

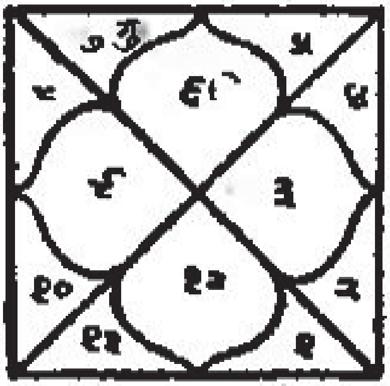

७१०

दूसरे भाव में सामान्य शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को धन, कुटुम्ब का सुख मिलता है, परन्तु माता एवं स्त्री के सुख में कुछ बाधाएं आती हैं जबकि व्यवसाय-पक्ष की उन्नति होती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ, यश तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्यालग्न : तृतीयभाव : गुरु

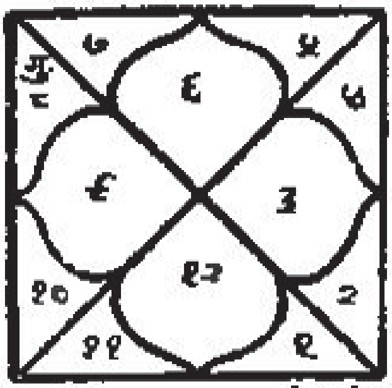

७११

तीसरे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है और माता, भूमि तथा भवन का सुख भी प्राप्त होता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी सफलताएँ मिलती हैं। स्त्री सुन्दर मिलती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ रुकावटों के साथ उन्नति होती है। नवीं उच्चदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी बहुत अच्छी रहती है। ऐसा जातक धनी तथा सुखी रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली से 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : गुरु

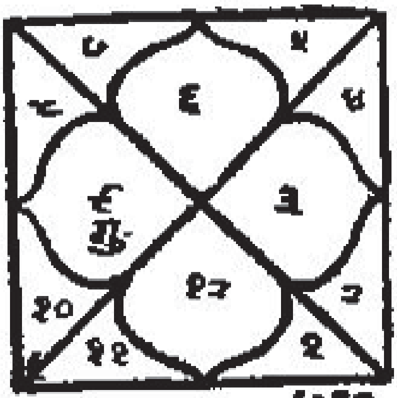

७१२

चौथे भाव में स्वक्षेत्री 'गुरु' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख मिलता है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

पाँचवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएं मिलती रहती हैं। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में लाभ मिलता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्यालग्न : पंचमभाव : गुरु

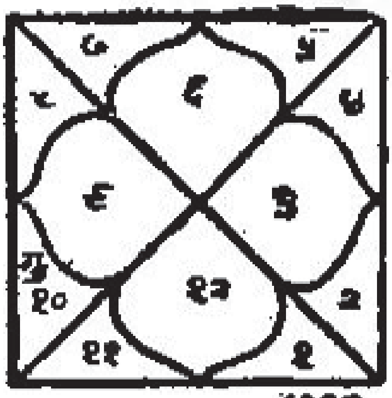

७१३

पाँचवें भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को सन्तान पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि में कमी रहती है। मातृ-पक्ष भी कमजोर रहता है। पाँचवी शत्रु-दृष्टि से नवम-भाव को देखने से भाग्य एवं धर्म की सामान्य वृद्धि होती है। सातवीं उच्च-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी में वृद्धि होती है तथा नवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक, शक्ति, सम्मान, प्रभाव एवं कार्य-कुशलता में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी तथा सामान्य धनी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : गुरु

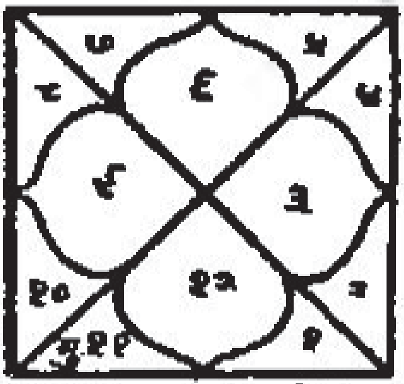

७१४

छठे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में नम्रता से काम निकालता है। माता, भूमि एवं भवन के सुख में भी कमी रहती है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ सफलताओं, सुख तथा यश की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। नवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है तथा धन-संचय के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : गुरु

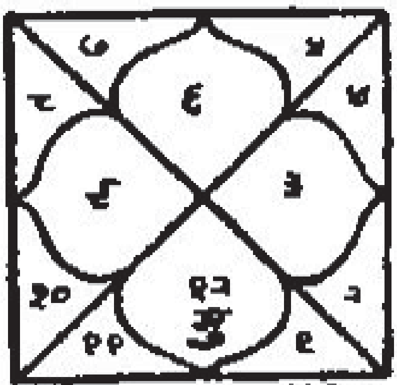

७१५

सातवें भाव में स्वक्षेत्री 'गुरु' के प्रभाव से जातक को स्त्री एवं व्यवसाय-पक्ष में पर्याप्त लाभ मिलता है। माता, भूमि तथा मकान का यथेष्ट सुख भी प्राप्त होता है। पाँचवीं उच्चदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी में बहुत वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक-सुख, मान एवं सौन्दर्य की प्राप्ति होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : गुरु

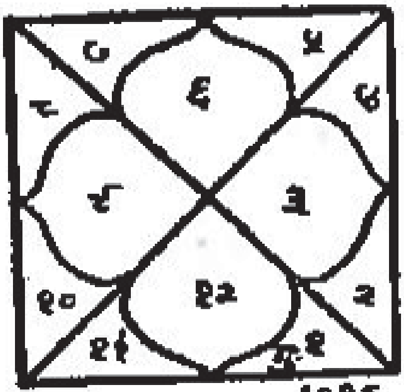

७१६

आठवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के सुख में कुछ कमी आती है।

पाँचवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी आती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ परेशानियों के साथ मिलता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : गुरु

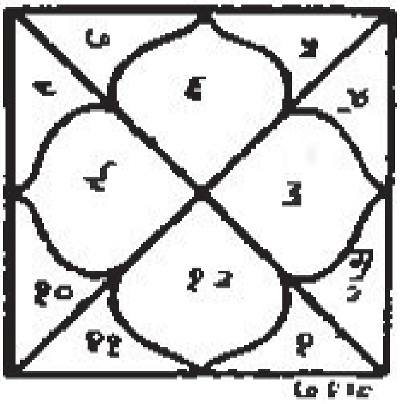

नवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कुछ कमी रहती है, परन्तु माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से सुख-सम्मान की वृद्धि होती है तथा भोगेच्छा प्रबल रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। नवीं नीच-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या तथा सन्तान के पक्ष में कुछ कमजोरी आती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव : गुरु

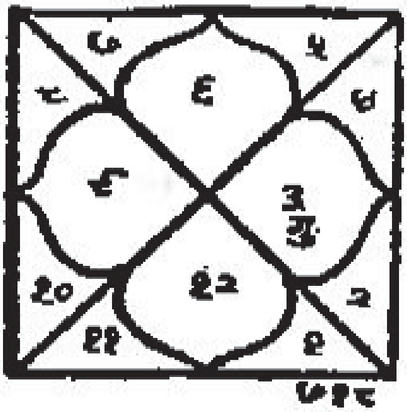

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय से लाभ होता है। स्त्री सुन्दर तथा प्रभावशाली मिलती है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन, कुटुम्ब का सामान्य लाभ होता है।

सातवीं दृष्टि अपनी राशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है।

नवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष में शान्ति-नीति से विजय मिलती है तथा उससे लाभ भी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : गुरु

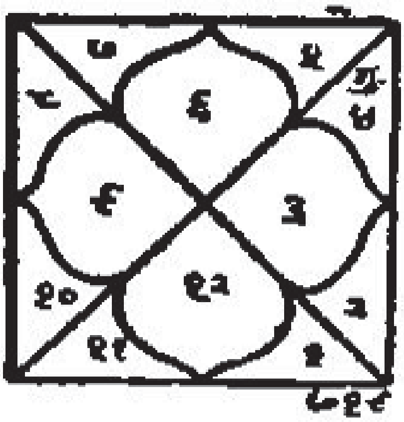

ग्यारहवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की आमदनी बढ़ती है तथा माता, भूमि एवं मकान का यथेष्ट सुख भी मिलता है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम एवं भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से परेशानी रहती है तथा विद्या-बुद्धि में कमी आती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखने से सुन्दर तथा योग्य पत्नी मिलती है। भोगादि का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय में भी उन्नति होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : गुरु

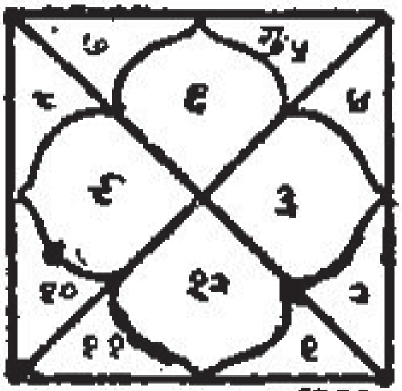

७२०

बारहवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ भी मिलता है। स्त्री के सुख में कमी आती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सामान्य सुख मिलता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष में नम्रता से काम निकालना पड़ता है। नवीं मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा जातक सामान्यत: सुखी जीवन बिताता है।

'कन्या' लग्न में 'शुक्र'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : शुक्र

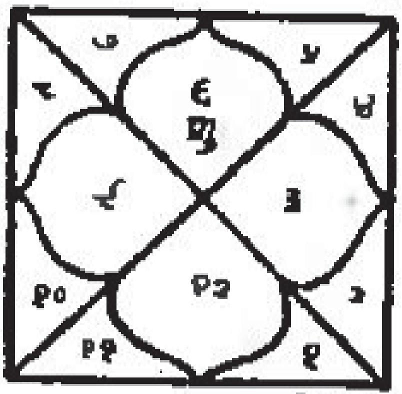

७२१

पहले भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ कमी रहती है और वह अधर्म-पूर्वक भी धन कमाने का प्रयत्न करता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री सुन्दर तथा भाग्यवान् मिलती है तथा व्यवसाय एवं भोगादि में भी पर्याप्त सफलता प्राप्त होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

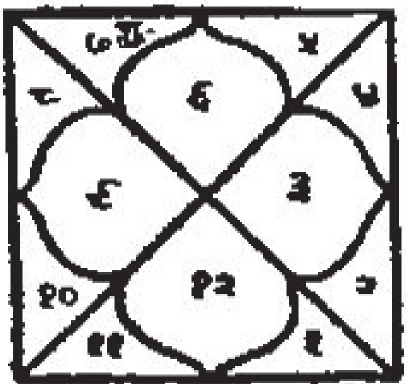

७२२

दूसरे भाव में स्वराशि स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है। वह भाग्यवान्, यशस्वी तथा धर्मात्मा भी होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति चतुर, धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : तृतीयभाव : शुक्र

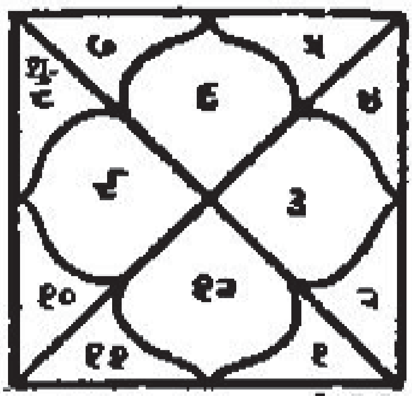

७२३

तीसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का अच्छा सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है। कौटुम्बिक सुख को भी वह बढ़ाता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म में बहुत वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बहुत सुखी, धनी, धर्मात्मा तथा भाग्यशाली होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

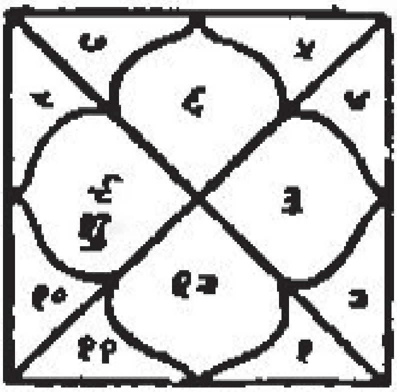

७२४

चौथे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट लाभ होता है तथा धन एवं कुटुम्ब का सुख भी मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धर्म का पालन भी करता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : शुक्र

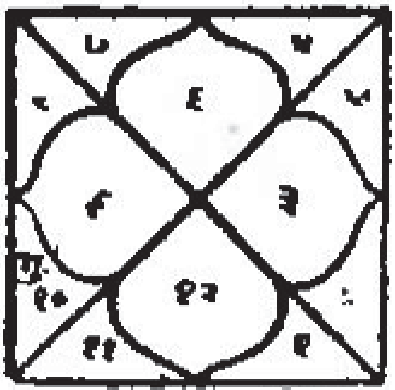

७२५

पाँचवें भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से श्रेष्ठ लाभ होता है तथा विद्या-बुद्धि की वृद्धि के साथ धन, धर्म तथा भाग्य की वृद्धि भी होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से जातक अपनी बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर आमदनी को बढ़ाता है तथा निरन्तर उन्नति करता रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : शुक्र

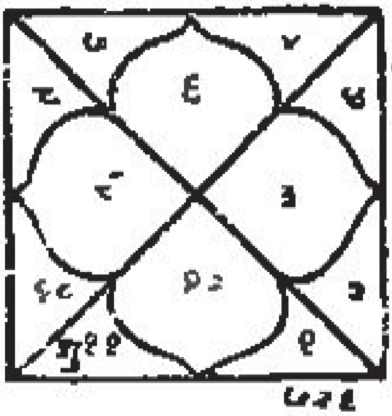

छठे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के भाग्य, धन तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ कमी आती है तथा धर्म में भी अरुचि रहती है, फिर भी वह अपनी चतुराई द्वारा भाग्य तथा धन की वृद्धि करता है तथा परिश्रम द्वारा शत्रु-पक्ष में सफलताएँ पाता है। उसे झगड़े-मुकद्दमों से भी लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : सप्तमभाव : शुक्र

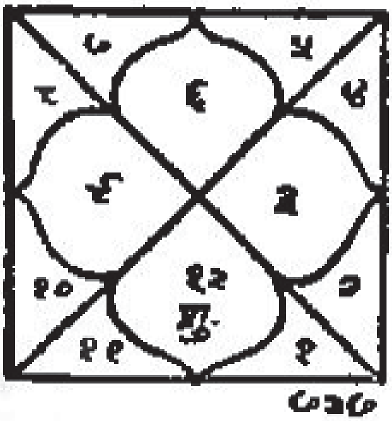

सातवें भाव में सामान्य शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति भोगी, धर्मात्मा, सुखी तथा भाग्यवान् होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आती है। ऐसा व्यक्ति धन-वृद्धि के लिए शारीरिक सुखों की चिन्ता नहीं करता।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : शुक्र

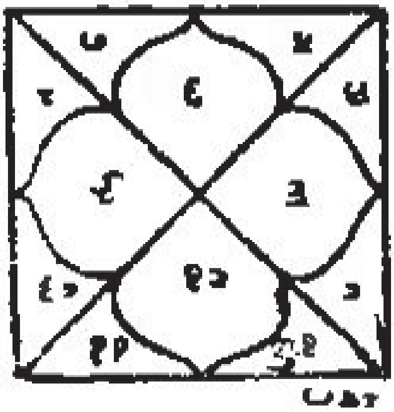

आठवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का भाग्य कमजोर रहता है तथा धन-संचय में भी कठिनाइयाँ आती हैं। धर्म का समुचित पालन भी नहीं हो पाता। पर आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

सातवीं मित्र दृष्टि से स्वराशि वाले द्वितीय भाव को देखने से जातक गुप्त चातुर्य एवं कठोर परिश्रम द्वारा धन-संचय करता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : नवमभाव : शुक्र

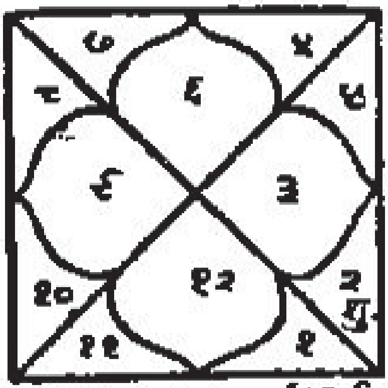

७२९

नवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक बड़ा भाग्यशाली तथा धर्मात्मा होता है। उसके धन, सम्मान तथा यश में भी वृद्धि होती है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों की शक्ति तथा पुरुषार्थ में वृद्धि होती है। साथ ही धन एवं कुटुम्ब का पूर्ण सुख भी मिलता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव

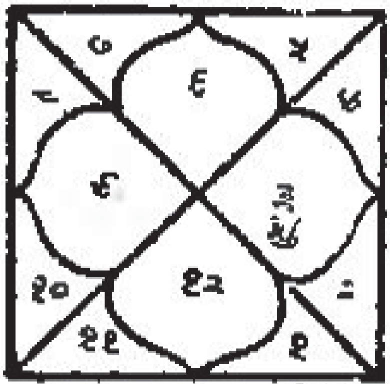

७३०

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित शुक्र' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा 'व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सुख, सम्मान तथा सफलताएँ प्राप्त होती हैं। वह अपने अच्छे कर्मों से धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि करता है।

सातवीं सामान्य शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन आदि का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली-में 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : शुक्र

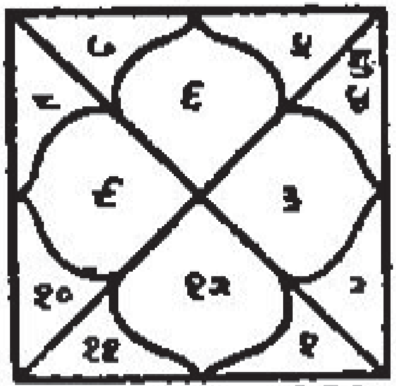

७३१

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। वह धनी, कुटुम्बवाला, धर्मात्मा, भाग्यशाली तथा न्यायी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या-बुद्धि की उन्नति होती है तथा सन्तान-पक्ष में सुख मिलता है।

ऐसा व्यक्ति प्रभावयुक्त वाणी का धनी, चतुर, निपुण, सुखी तथा यशस्वी होता है

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : शुक्र

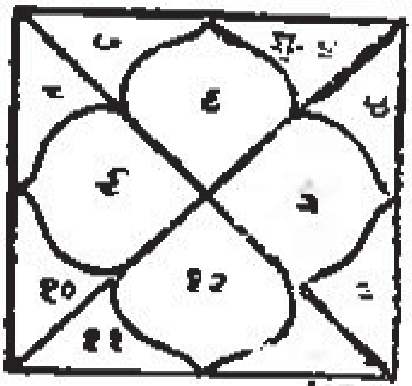

८३२

बारहवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, बाहरी सम्बन्धों से हानि होती है, धन-संचय नहीं हो पाता तथा भाग्योन्नति में व्यवधान पड़ता है। कौटुम्बिक सुख में भी कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष एवं झगड़े-मुकदमों में सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

'कन्या' लग्न में 'शनि'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : शनि

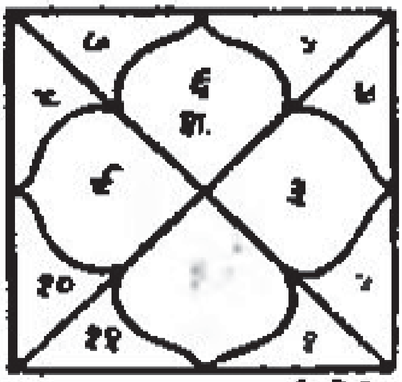

८३३

पहले भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक का शरीर रोगी रहता है। विद्या-बुद्धि तथा सन्तान का सुख प्राप्त होता है, परन्तु सन्तान से वैमनस्य रहता है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख में कुछ कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री से कुछ वैमनस्य रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक मेहनत करनी पड़ती है। दसवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता की ओर से सामान्य परेशानी रहती है तथा राज्य एवं व्यापार के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : शनि

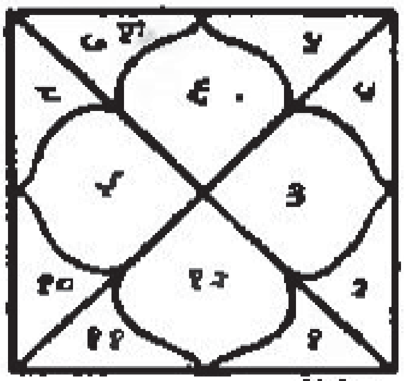

८३४

दूसरे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक विद्या-बुद्धि का सुख प्राप्त करता है तथा सन्तान से वैमनस्य रहता है।

तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है।

सातवीं नीच दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व को कुछ हानि होती है।

दसवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति प्रत्येक क्षेत्र में संघर्षशील रहता है तथा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्यालग्न : तृतीयभाव : शनि

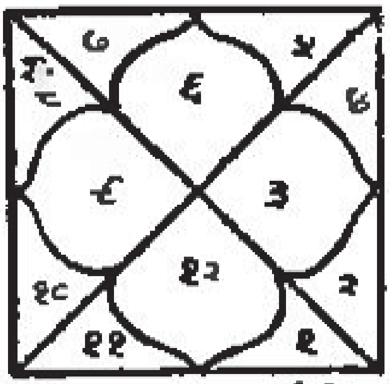

७३४

तीसरे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों से परेशानी रहती है, पर शत्रुपक्ष पर विजय मिलती है और पराक्रम की वृद्धि होती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि के पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि का लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष में सामान्य कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से परिश्रम द्वारा भाग्योन्नति होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च में कठिनाई का अनुभव होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से असन्तोष रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : चतुर्थभाव : शनि

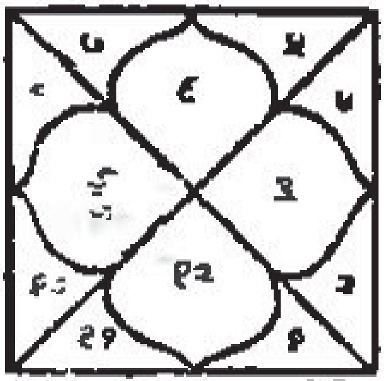

७३५

चौथे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है तथा सन्तान के पक्ष से भी परेशानी रहती है, परन्तु विद्या-बुद्धि का लाभ होता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा झगड़ों से सुख-दुःख दोनों ही मिलते हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम द्वारा सफलता मिलती है। दसवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से परिश्रम एवं प्रभाव की वृद्धि होती है, परन्तु शरीर कुछ अस्वस्थ बना रहता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : पंचमभाव : शनि

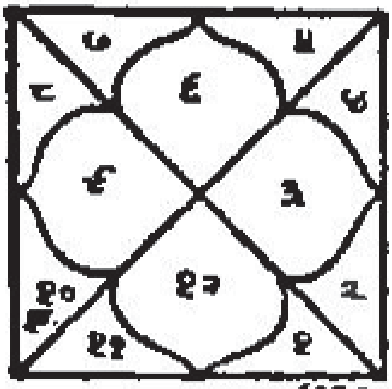

७३६

पाँचवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ विद्या-बुद्धि एवं सन्तान का लाभ होता है, परन्तु सन्तान से कुछ परेशानी भी होती है। शत्रु-पक्ष में उसे गुप्त युक्तियों से विजय मिलती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा व्यवसाय में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से परिश्रम द्वारा लाभ होता है। दसवीं उच्च दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति संघर्षपूर्ण सुखी-सम्पन्न जीवन बिताता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : षष्ठभाव : शनि

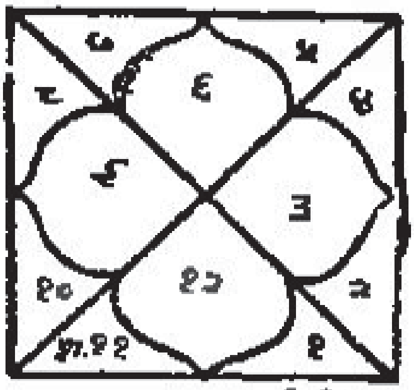

७३८.

छठे भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपने बुद्धि-बल से सफलता पाता है, परन्तु विद्या एवं सन्तान के पक्ष में सामान्य कठिनाइयाँ आती हैं। तीसरी नीच दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु पर अनेक बार संकट आते हैं तथा पुरातत्त्व की हानि होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च की परेशानी रहती है, तथा बाहरी सम्बन्ध भी सुखद नहीं रहते। दसवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों द्वारा कष्ट मिलता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्यालग्न : सप्तमभाव : शनि

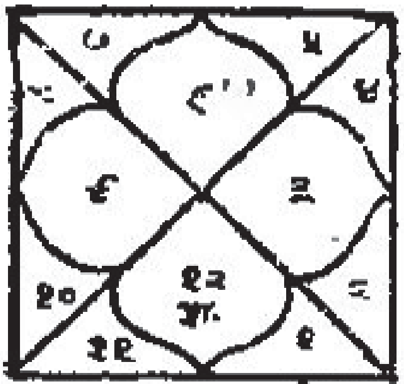

७३९

सातवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र मे कठिनाइयाँ आती हैं तथा मूत्रेन्द्रिय में विकार भी होता है। सन्तान के पक्ष से भी परेशानी रहती है, परन्तु शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। तीसरी मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से जातक बुद्धि-बल द्वारा भाग्योन्नति करता हुआ धर्म का पालन भी करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव से देखने से शरीर में रोग रहता है, परन्तु प्रभाव की वृद्धि होती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी आती है। ऐसा जातक अपने जन्म-स्थान में परेशानी का अनुभव करता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : अष्टमभाव : शनि

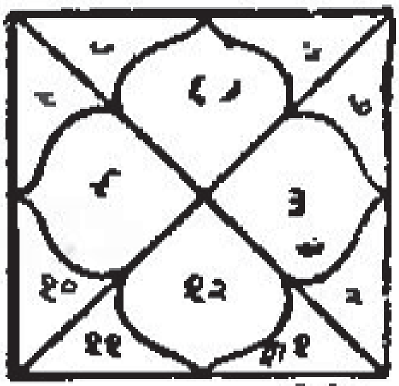

७४०

आठवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आयु पर अनेक बार संकट आते हैं तथा पुरातत्त्व की हानि होती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि के दशमभाव को देखने से पिता तथा राज्य-पक्ष में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं, किन्तु व्यवसाय के क्षेत्र में बुद्धि-बल से सामान्य सफलता मिलती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-सचय के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है। दसवीं दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है। विद्या कम रहती है परन्तु चातुर्य अधिक होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्यालग्न : नवमभाव : शनि

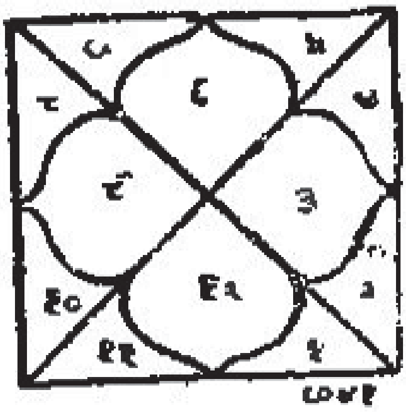

नवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक बुद्धि-बल से भाग्योन्नति करता तथा स्वधर्म का सामान्य परिपालन करता है। संतान तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि के षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में विजय मिलती है तथा झगड़ों से लाभ होता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा चतुर, नीतिज्ञ. प्रभावशाली तथा हिम्मती होता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : दशमभाव : शनि

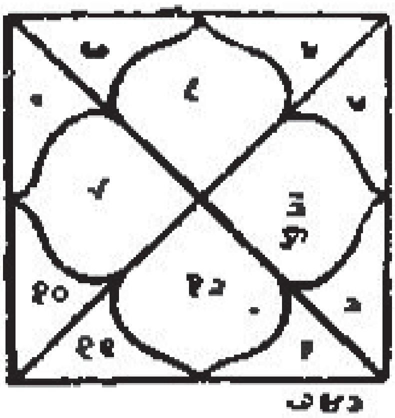

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को पिता-पक्ष से परेशानी रहती है, परन्तु राज्य-पक्ष से सम्मान एवं व्यवसाय-पक्ष से लाभ होता है। विद्या तथा सन्तान का भी सुख मिलता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च के मामले में असन्तोष रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी सुखदायी नहीं रहता।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता एवं भूमि के सुख में कुछ कमी रहती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के सुख में कमी आती है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कठिन परिश्रम से ही सफलता मिलती है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : एकादशभाव : शनि

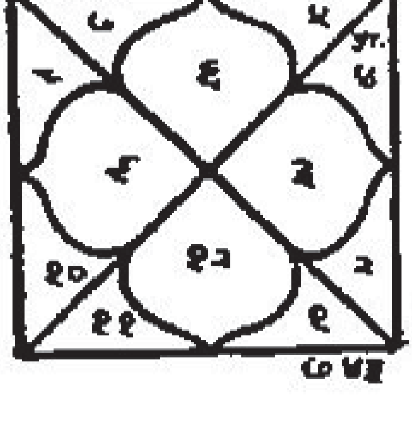

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आमदनी में खूब वृद्धि होती है तथा शत्रु-पक्ष से भी लाभ होता है। तीसरी मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में रोग रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि की शक्ति प्राप्त होती है। दसवीं नीच-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से पुरातत्त्व की हानि होती है तथा आयु पर भी अनेक संकट आते हैं।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' में स्थित 'शनि' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वादशभाव : शनि

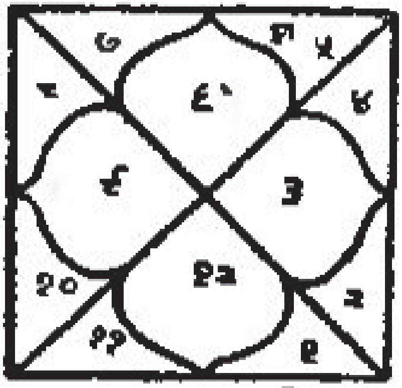

७४४

बारहवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से परेशानी रहती है। तीसरी उच्च-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि विशेष प्रयत्न करने से होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है, परन्तु रोगादि से कुछ कष्ट होता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से बुद्धि-योग द्वारा भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म मे रुचि भी रहती है। ऐसा व्यक्ति शान-शौकत में खूब खर्च करता है।

'कन्या' लग्न में 'राहु'

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : प्रथमभाव : राहु

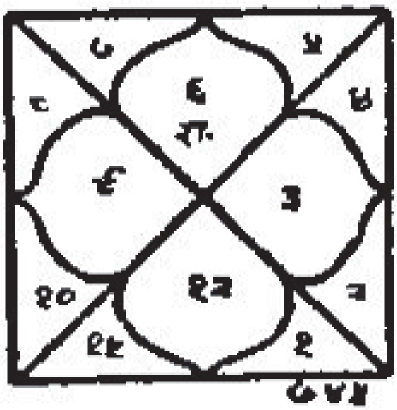

७४५

पहले भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शारीरिक दृष्टि से शक्तिशाली, दृढ़ मनोबल वाला तथा स्वाभिमानी होता है, परन्तु कभी-कभी उसे शारीरिक कष्ट भी उठाने पड़ते हैं। वह गहरी सूझ-बूझ वाला तथा कठोर परिश्रमी होता है। मानसिक रूप से चिन्तित रहते हुए भी बड़े धैर्य से काम लेकर उन्नति करता है।

'कन्या' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

कन्या लग्न : द्वितीयभाव : राहु

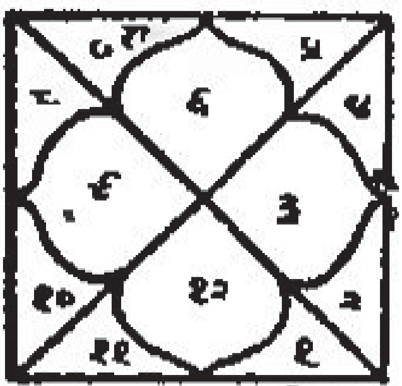

७४६

दूसरे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक धन-कुटुम्ब की ओर से परेशान रहता है। वह गुप्त प्रयत्न तथा कठिन परिश्रम द्वारा कुछ धन-संचय भी करता है तथा प्रकट रूप में धनवान् भी समझा जाता है। कभी-कभी उसे आकस्मिक लाभ तथा हानि—दोनों ही होते हैं।